राष्ट्रीय सेमिनार

डॉ. राममनोहर लोहिया का दर्शन

Philosophy of Dr. Ram Manohar Lohia

24, 25 एवं 26 मार्च, 2017

आयोजक

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

डॉ0 लोहिया के दर्शन ने समाजवाद को नई दिशा दी– राज्यपाल

मुविवि में ''डॉ0 राम मनोहर लोहिया का दर्शन'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के तत्वावधान में ''डॉ0 राम मनोहर लोहिया का दर्शन'' विषय पर आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री रामनाईक जी, विशिष्ट अतिथि संविधान विशेषज्ञ एवं लोकसभा के पूर्व महासचिव पद्मभूषण डॉ0 सुभाष सी. कश्यप जी रहे। इस अवसर पर कुलपति प्रो0 एम0पी0 दुबे, आई0सी0पी0आर0 के अध्यक्ष प्रो0 एस. आर. भट्ट जी एवं संगोष्ठी संयोजक, प्रो0 गोपीनाथ जी मंच पर विराजमान थे।

आई0सी0पी0आर0 के अध्यक्ष प्रो0 एस.आर. भट्ट जी ने संगोष्ठी के बारे में दो शव्द कहा, प्रो0 गोपीनाथ पिल्लई ने संगोष्ठी की रूपरेखा प्रस्तुत कीं सेमिनार संयोजक डॉ0 जी0के0 द्विवेदी ने अतिथियों का स्वागत किया संचालन डॉ0 रामजी मिश्र एवं सुश्री मारिषा ने तथा धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ0 राजेश कुमार पाण्डेय ने किया। इस अवसर पर इलाहाबाद राज्य विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 राजेन्द्र प्रसाद, नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 के0बी0 पाण्डेय, प्रो0 गिरिराज किशोर, प्रो0 आनन्द कुमार, प्रो0 स्मिथ, डॉ0 सुधीर सिंह, प्रो0 महेश विक्रम सिंह, प्रो0 कृष्ण गोपाल, प्रो0 सुब्रत मुखर्जी, डॉ0 प्रभाकर आदि उपस्थित रहे।



माननीय श्री राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री राम नाईक जी को तिलक लगाकर स्वागत करते हुए श्री परमानन्द उपाध्याय साथ में कुलपति, प्रो0 एम0पी0 दुबे, एवं पद्मभूषण डॉ0 सुभाष सी. कश्यप जी हाथ मिलाते हुए माननीय श्री राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री राम नाईक जी ।



संचालन करते हुए डॉ0 रामजी मिश्र, सुश्री मारिषा एवं बन्देमातरम् व कुलगीत के समय खड़े मा0 अतिथिगण।







दीप प्रज्ज्वलित कर संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए माननीय श्री राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री राम नाईक जी एवं विशिष्ट अतिथि पद्मभूषण डॉ0 सुभाष सी. कश्यप जी साथ कुलपति प्रो0 एम.पी. दुबे जी तथा प्रो0 गोपीनाथ पिल्लई जी।



माननीय अतिथियों को पुष्पगुच्छ देकर स्वागत करते हुए कुलपति प्रो0 एम.पी. दुबे जी एवं सेमिनार संयोजक डॉ0 जी0के0 द्विवेदी।



कुलपति प्रो0 एम.पी. दुबे जी पुष्पगुच्छ देकर स्वागत करते हुए सेमिनार संयोजक डॉ0 जी0के0 द्विवेदी।





संगोष्ठी की रूपरेखा

प्रस्तुत करते हुए

प्रो0 गोपीनाथ पिल्लई जी।





भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के चेयरमैन प्रो0 एस0आर0 भटट ने कहा कि वर्तमान में लोहिया के नवसमाजवाद को नए सिरे से समझने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि भारत के विकास के लिए और मौखिक स्तर पर पहचान के लिए यह आवश्यक है कि हम अपने भारतीय विचारकों जैसे पं0 दीन दयाल उपाध्याय और डॉ0 राम मनोहर लोहिया के दर्शन को वर्तमान समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में देखें और नए समाधान खोजें।



कुलपति प्रो0 एम0पी0 दुबे ने कहा कि भारतीय दर्शन अनेक विद्वानों के विचारों से परिपूर्ण हैं। राममनोहर लोहिया का समाजवाद, समानता और वैचारिक क्रान्ति का दर्शन रहा है। लोहिया जी का दर्शन महात्मा गांधी से प्रभावित था। वह समाज और व्यक्ति में सुधार चाहते थे। उन्होंने कहा कि लोहिया जी का सप्त क्रांति का सिद्धान्त आज भी प्रासंगिक है। वह सिर्फ स्थानीय स्तर पर नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर समाजवाद की परिकल्पना को देखते हैं।



माननीय अतिथियों को अंगवस्त्र एवं स्मृतिचिन्ह प्रदान करते हुए कुलपति प्रो0 एम.पी. दुबे।

विशिष्ट अतिथि संविधान विशेषज्ञ एवं लोकसभा के पूर्व महासचिव डॉ0 सुभाष कश्यप ने लोहिया जी के साथ के संस्मरणों को याद करते हुए उनके जीवन–दर्शन के अनेक पहलुओं को उजागर किया। उन्होंने कहा कि लोहिया जी जितना अपने छात्र जीवन में सजग और वैचारिक रूप से समृद्ध थे उतने ही लोकसभा में कुशल वक्ता के रूप में उन्होंने प्रसिद्धि पायी। लोहिया जी में ये खूबी थी कि वे किसी भी गम्भीर वातावरण को अपने सरल एवं सहज व्यवहार से खुशनुमा बना देते थे। लोहिया जी ने रामचरित मानस के प्रशासनिक पक्षों एवं राजनैतिक समझ को माना। वे रामचरितमानस को एक राजनीतिशास्त्र के रूप में देखते थे। लोहिया जी आम जनमानस के बीच में रहकर आमजन की भलाई के लिए सदैव प्रयासरत रहते थे। डॉ0 कश्यप ने कहा कि सहृदय एवं पारदर्शी व्यक्तित्व के स्वामी लोहिया जी अपनी बातों को स्पष्टता एवं तर्कों के साथ रखते थे।









मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री रामनाईक ने कहा कि राम मनोहर लोहिया का दर्शन सिर्फ विचारों का मन्थन ही नहीं वर्तमान सामायिक समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत करता है। दार्शनिक लोहिया जी ने तत्कालीन आर्थिक विषयों पर जो गहन अध्ययन प्रस्तुत किया उसने समाजवाद को नई दिशा दी। श्री नाईक ने कहा कि जिस काल खण्ड में सिर्फ साम्यवादी एवं पूंजीवादी विचारधारा का वर्चस्व था उस समय अपने विचारों एवं तर्कों के आधार पर लोहिया जी ने समाज को नई दिशा दी। उन्होंने कहा कि लोहिया जी को मातृभाषा से प्यार था। उनके जीवन पर तुलसीदास के मानववाद और गांधी के दर्शन का स्पष्ट प्रभाव था। भारतीय संस्कृति के पोषक लोहिया जी का जीवन कथनी और करनी में समान था। जैसा उनका विचार था वैसा ही आचार और व्यवहार था। राज्यपाल श्री नाईक ने कहा कि यहाँ तक कि लोहिया जी अपने विचारों के विरोधी और भिन्न प्रकार के विचार रखने वालों के बीच सामन्जस्य रखना जानते थे। उन्होंने विपक्ष में एकता के सिद्धान्त को समाज के सामने लाते हुए वैचारिक रूप से समृद्ध भारत की नींव रखी। श्री नाईक ने कहा कि भारत में सभी भाषाओं का सम्मान करना, स्थानीय भाषाओं को उचित स्थान दिलाने के साथ ही सत्ता के स्तर पर विकेन्द्रीकरण की नीति के पक्षधर रहे।









धन्यवाद ज्ञापन करते हुए
कुलसचिव
डॉ0 राजेश कुमार पाण्डेय

पत्रकारों से वार्ता करते हुए
माननीय श्री राज्यपाल एवं
कुलाधिपति
श्री राम नाईक जी









माननीय श्री राज्यपाल एवं कुलाधिपति
श्री राम नाईक जी को हेलीपैड पर विदा
करते हुए कुलपति जी।

राष्ट्रीय सेमिनार

डॉ. राममनोहर लोहिया का दर्शन
Philosophy of Dr. Ram Manohar Lohia
24, 25 एवं 26 मार्च, 2017

आयोजक

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं
उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

टेक्निकल सत्र

दिनांक 24–25 मार्च, 2017





संगोष्ठी में बोलते हुए प्रो0 आनन्द कुमार, समाज शास्त्र विभाग, जे.एन.यू. नई दिल्ली एवं उपस्थित प्रतिभागीगण।





संगोष्ठी में प्रतिभागियों के जिज्ञासु प्रश्नों का जबाब देते प्रो0 आनन्द कुमार, समाज शास्त्र विभाग, जे.एन.यू. नई दिल्ली





संगोष्ठी में बोलते हुए भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के चेयरमैन प्रो0 एस0आर0 भट्ट







सभागार में बैठे हुए प्रतिभागीगण।



संगोष्ठी में बोलते हुए विशिष्ट वक्ता एवं सभागार में बैठे हुए प्रतिभागीगण।

UPRTOU

NEWS FROM THE WEEK:

24 March 2017



भारतीय अस्मिता की खोज में युवा पीढ़ी का सही मार्गदर्शन करें शिक्षक –डॉ0 कश्यप

मुविवि में राजर्षि टण्डन स्मृति व्याख्यानमाला का आयोजन

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के तत्वावधान में शुक्रवार को लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन स्मृति व्याख्यानमाला के त्रयोदश पुष्प का आयोजन किया गया। व्याख्यानमाला के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता लोकसभा के पूर्व महासचिव पदमभूषण डॉ0 सुभाष कश्यप जी एवं अध्यक्षता कुलपति प्रो0 एम0पी0 दुबे जी ने की।

प्रारम्भ में अतिथियों का स्वागत मानविकी विद्याशाखा के निदेशक डॉ0 आर0पी0एस0 यादव ने किया। संचालन डॉ0 रामजी मिश्र तथा धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ0 आर0के0 पाण्डेय ने किया। इस अवसर पर श्रोताओं ने डॉ0 सुभाष कश्यप से भारतीय अस्मिता से सम्बन्धित कई जिज्ञासु प्रश्न कियें जिसका उन्होंने समाधान प्रस्तुत किया।



बैठे हुए माननीय अतिथि एवं संचालन करते हुए डॉ0 रामजी मिश्र,



दीप प्रज्ज्वलित कर संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए माननीय अतिथि एवं सभागार में उपस्थित स्रोतागण।



पदमभूषण डॉ0 सुभाष कश्यप जी को पुष्पगुच्छ देकर स्वागत करते हुए कुलपति प्रो0 एम.पी. दुबे जी ।



कुलपति प्रो0 एम.पी. दुबे जी को पुष्पगुच्छ देकर स्वागत करते मानविकी विद्याशाखा के निदेशक डॉ0 आर0पी0एस0 यादव















व्याख्यान माला के बारे में बताते हुए
एवं
अतिथियों का स्वागत
करते हुए
मानविकी विद्याशाखा
के
निदेशक डॉ0 आर0पी0एस0 यादव
तथा सभागार में बैठे हुए स्रोतागण।









पदमभूषण डॉ0 सुभाष कश्यप जी को अंगवस्त्र एवं स्मृतिचिन्ह प्रदान करते हुए कुलपति प्रो0 एम.पी. दुबे।



मा0 कुलपति जी को अंगवस्त्र एवं स्मृतिचिन्ह प्रदान करते हुए निदेशक डॉ0 आर0पी0एस0 यादव एवं डॉ0 अतुल मिश्रा।

व्याख्यानमाला के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता लोकसभा के पूर्व महासचिव पदमभूषण डॉ0 सुभाष कश्यप ने ''भारतीय अस्मिता की खोज'' विषय पर व्याख्यान देते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति और मूल्य भौगोलिक सीमाओं के अधीन नहीं अपितु विदेशों में भी पुष्पित एवं पल्लवित हो रहे हैं। भारतीय अस्मिता की खोज करनी है तो सांस्कृतिक परम्पराओं, मूल्यों एवं आध्यात्मिकता की समझ को विकसित करना होगा। वैश्विक स्तर पर अपने संस्मरणों को साझा करते हुए डॉ0 कश्यप ने बताया कि फिजी, इण्डोनेशिया, कम्बोज, थाईलैण्ड, मारीशस आदि देशों में भारतीय संस्कृति एवं विरासत के अंश दिखाई पड़ते हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान में अनेक चुनौतियां हैं। व्यक्ति सत्ता, सम्पदा और सफलता के लालच में मूल्यों का अवमूल्यन कर रहा है। वर्तमान दौर संक्रमण काल और कठिन परिस्थितियों का है । वसुधैव कुटुम्बकम की धारणा वैश्विक बाजार में परिवर्तित होती दिखाई दे रही है। ऐसे में आवश्यकता है कि विभिन्नता से एकता की ओर अनन्त यात्रा और भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों की रक्षा की जाये। उन्होंने कहा कि वर्तमान पीढ़ी खासकर शिक्षकों की अहम जिम्मेदारी है कि वह भारतीय अस्मिता की खोज में युवा पीढ़ी का सही मार्गदर्शन करें।



अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो0 एम0पी0 दुबे ने कहा कि भारतीय संस्कृति में मूल्यों का बहुत महत्व है प्राचीन शिक्षा व्यवस्था मूल्य आधारित और अभ्यासपूर्ण थी। कालान्तर में जो चुनौतियां आयी हैं उन्हें दूर करना और भारतीय संस्कृति की रक्षा करना हमारा दायित्व है। इसके लिये आवश्यक है वर्तमान शिक्षा प्रणालियों की चुनौतियों और कमियों को दूर करने के लिए मूल्य आधारित शिक्षा की व्यवस्था की जाये।





धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कुलसचिव डॉ0 राजेश कुमार पाण्डेय

वर्ष 4 अंक 202
पृष्ठ 20+4=24
इलाहाबाद, शनिवार
25 मार्च 2017
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 5.00

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

दैनिक जागरण



आगे बढ़ा माल्या के प्रत्यर्पण का मामला 17

वीजा आवेदकों से अमेरिका मांग सकता है रिकॉर्ड 17

www.jagran.com

दिल्ली • उत्तर प्रदेश • मध्य प्रदेश • हरियाणा • उत्तराखण्ड • बिहार • झारखण्ड • पंजाब • जम्मू-कश्मीर • हिमाचल प्रदेश • पश्चिम बंगाल से प्रकाशित

मेनिफेस्टो पर हो काम : राज्यपाल



जागरण संवाददाता, इलाहाबाद : राज्यपाल रामनाईक ने कहा कि सरकार को अपने घोषणापत्र के अनुरूप काम करना चाहिए। गांधी टंडन मुक्त विश्वविद्यालय पहुंचे राज्यपाल ने कहा कि 'मुक्त-दुरस्थ कानून व्यवस्था सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिए। एंटी रोमियो दल के बारे में सवाल को टालते हुए उन्होंने कहा कि अभी किसी तरह के विवाद पैदा नहीं किए जाने चाहिए और सरकार को समय दिया जाना चाहिए।

राज्यपाल ने शुक्रवार को राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के वसुधा परिसर स्थित क्षेत्रीय केंद्र के भवन का उद्घाटन किया। उन्होंने 'डॉ. राम मनोहर लोहिया का दर्शन' पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ किया। राज्यपाल ने डॉ. लोहिया के जरिये सभी को सामंजस्य सुझाए। लोहिया मातृभाषा में शिक्षा के हिमायती थे। राजनीति में भिन्न विचार वालों के साथ कैसे व्यवहार किया जाता है यह लोहिया से सीखा जा सकता है। डॉ. लोहिया के दर्शन पर विचार करना चाहिए। कहा कि सरकार ने जो आश्वासन दिए थे, उनके अनुरूप काम शुरू कर दिया है। कानून व्यवस्था के साथ ही प्रशासन और शिक्षा के क्षेत्र में भी प्राथमिकता से काम होना चाहिए। संवाहिता पेज...06



उप्र राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय में संगोष्ठी को संबोधित करते राज्यपाल राम नाईक।

लोहिया के दर्शन में तुलसी व गांधी का प्रभाव : नाईक

जागरण संवाददाता, इलाहाबाद : डॉ. राममनोहर लोहिया की जयंती से एक दिन पहले राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में 'डॉ. राम मनोहर लोहिया का दर्शन' विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी शुरू हुई। उद्घाटन करते हुए उप्र प्रदेश के राज्यपाल रामनाईक ने कहा कि लोहिया के दर्शन में गांधी और तुलसीदास का प्रभाव साफ झलकता है।

अपने मुख्य अतिथि वक्तव्य में उन्होंने कहा कि वे विचारक नहीं हैं, लेकिन अपने संस्मरण के आधार पर डॉ. लोहिया पर विचार प्रस्तुत कर रहे हैं। कहा कि जिस कालखंड में महात्मा गांधी और पुरुषोत्तम दास टंडन का वर्चस्व था, उस समय डॉ. लोहिया ने अपनेपन विचारों का खाद आखिर कर समाजवाद को जन्म दिया था। उन्होंने गोरखपुर में अपने गुरुकुलवास के एक संस्मरण का जिक्र करते हुए बताया कि डॉ. लोहिया की कमरे और कपड़े एक जैसे थे। वे खादर धारण करते थे। साथ ही समाज के विकेंद्रीकरण के हिमायती थे। चौखंभा राज्य इसी सोच का परिणाम है। जिस पर मौजूदा समय में व्यवस्था चल भी रही है।

विशिष्ट अतिथि संविधान विशेषज्ञ एवं लोकसभा के पूर्व महासचिव पद्मभूषण डॉ. सुभाष कश्यप ने डॉ. लोहिया के संस्मरणों को सुनाते हुए उनके जीवन-दर्शन के अनेक अनछुए पहलू उजागर किया। कहा कि डॉ. लोहिया छात्र जीवन से सजग और वैचारिक रूप से समृद्ध थे। वे गांधीवादी होने के बावजूद अपने सरल एवं सहज व्यवहार से सभी को खुशनुमा बना देते थे। वे राजनीतिज्ञों को राजनीतिशास्त्र के रूप में देखते थे। कुलपति प्रो. एमपी दुबे ने कहा कि भारतीय दर्शन अनेक विद्वानों के विचारों से परिपूर्ण है। राममनोहर लोहिया का समाजवाद, समानता और वैचारिक क्रांति का दर्शन था है। पर समाज और व्यक्ति में सुधार चाहते थे। उनका गरम क्रांति का सिद्धांत आज भी प्रासंगिक है। कहा कि यह कृषि ही सही वैचारिक समाजवाद के हिमायती थे। भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के चेयरमैन प्रो. एसआर भट्ट ने कहा कि दर्शनशास्त्र में लोहिया के राजसमाजवाद को नए सिरे से समझने की जरूरत है। भारतीय विचारकों जैसे प., दीन दयाल उपाध्याय और डॉ. लोहिया के दर्शन को वर्तमान समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में देखने और समाधान तलाशने की जरूरत है। ओएसडी-प्रवास के प्रो. गोपीनाथ पिल्लई ने संगोष्ठी की रूपरेखा प्रस्तुत की। मोडरेटर डॉ. जोके द्विवेदी ने अतिथियों का स्वागत किया। संचालन डॉ. रामजी मित्र एवं धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ. राजेश पाण्डेय ने किया।



न्यायमूर्ति गिरिधर मालवीय से मिले गवर्नर

इलाहाबाद : राज्यपाल राम नाईक शुक्रवार की शाम न्यायमूर्ति गिरिधर मालवीय ने मिलने उनके जीएलटी स्थित आवास पहुंचे। उन्होंने न्यायमूर्ति मालवीय के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी ली। राज्यपाल करीब 40 मिनट तक रुके। इस दौरान उनके सामाजिक मुद्दों पर लंबी चर्चा हुई। सूत्रों के मुताबिक चर्चा पुरानी यादें ताजा हुई। साथ साथ में भोजन किया। जाते समय न्यायमूर्ति मालवीय ने राज्यपाल रामनाईक को दुपट्टा पुस्तकें भेंट की। इससे पहले राज्यपाल का स्वागत न्यायमूर्ति गिरिधर मालवीय के साथ उनकी पत्नी कांता मालवीय, बेटी रुचि पांडेय व दामाद दीपक पांडेय ने किया।

जज टाउन स्थित न्यायमूर्ति गिरिधर मालवीय के आवास पर पहुंचे राज्यपाल रामनाईक।

इस दौरान मौजूद(बीच में) सुभाष कश्यप, पूर्वोत्तर रेलवे के कुलपति प्रो. एमपी दुबे।

अन्य गिरि, कमिश्नर कौशलराज शर्मा व अन्य वरिष्ठ अधिकारी।

रामाजवादी पार्टी की सरकार के पतन पर हो बोले

लोहिया के विचार ही नहीं, आचार भी अपनाएं

उप्र राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोले राज्यपाल रामनाईक

इलाहाबाद। प्रदेश के राज्यपाल राम नाईक का मानना है कि विचार और आचार एक जैसे होने चाहिए। शुक्रवार को उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में 'डॉ. राम मनोहर लोहिया का दर्शन' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन करने पहुंचे राज्यपाल राम नाईक इशारों में ही यूपी में हुए सत्ता परिवर्तन के बारे में बहुत कुछ बोल गए। कहा कि जिन्होंने लोहिया के विचारों को अपनाया, उन्हें आचार भी वैसा ही रखना चाहिए। वह सलाह दे गए कि इस बिंदु को यूपी में हुए सत्ता परिवर्तन से जोड़कर संगोष्ठी में मुद्दे पर मंथन किया जाना चाहिए, हो सकता है कि भविष्य में कुछ सुधार हो।

उन्होंने कहा कि राम मनोहर लोहिया का दर्शन सिर्फ विचारों का मथन नहीं, वर्तमान सामायिक समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत करता है। दार्शनिक लोहियाजी ने तत्कालीन आर्थिक विषयों पर जो गहन अध्ययन प्रस्तुत किया, उसने समाजवाद को नई दिशा दी। उन्हें मातृभाषा से प्यार था। जैसा उनका विचार था, वैसा ही आचार और व्यवहार था। यहां तक कि वह अपने विचारों के विरोधी और भिन्न प्रकार के विचार रखने वालों के बीच सामंजस्य रखना जानते थे। उन्होंने विपक्ष में एकता के सिद्धांत को समाज के सामने लाते हुए वैचारिक रूप से समृद्ध भारत की नींव रखी। भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली और उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विवि के संयुक्त तत्वधान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में खास यह रहा कि बीच-बीच में विषय से इतर पंडित दीन दयाल उपाध्याय पर भी चर्चा होती रही। कुलपति प्रो. एमपी दुबे ने कहा कि भारतीय दर्शन अनेक विद्वानों के विचारों से परिपूर्ण हैं।



राज्यपाल ने किया विवि के क्षेत्रीय केंद्र का उद्घाटन

इलाहाबाद। राज्यपाल राम नाईक ने शुक्रवार को राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में स्थित नवनिर्मित क्षेत्रीय केंद्र इलाहबाद के भवन का उद्घाटन भी किया। गौरतलब है कि इस केंद्र का शिलान्यास भी उन्होंने ही किया था। क्षेत्रीय केंद्र में शिक्षार्थियों की हर तरह की समस्याओं का समाधान किया जाएगा। साथ ही उन्हें नई जानकारियों से अवगत कराया जाएगा। इस मौके पर राज्यपाल ने वहां पौधरोपण भी किया। उद्घाटन समारोह में कुलपति प्रो. एमपी दुबे, कुलसचिव डॉ. राजेश पांडेय, क्षेत्रीय केंद्र की निदेशक डॉ. पूर्णिमा शर्मा आदि मौजूद रहे।

सरकार ने जो आश्वासन दिए, उन पर काम करना चाहिए:नाईक

इलाहाबाद। प्रदेश में तमाम चयन आयोगों में भर्तियों एवं इंटरव्यू पर रोक लगाए जाने और नई सरकार के अन्य कामकाज के बारे में राज्यपाल राम नाईक ने कहा कि जब भी नई सरकार आती है तो पिछले तीन-चार माह में हुए कार्यों का निरीक्षण करती है। सरकार को अपना काम काज करने देना चाहिए। सरकार ने जो आश्वासन दिए थे, अब उन पर काम भी करके दिखाना चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार ने काम शुरू भी कर दिया है और समय बीतने के साथ जनता इसका मूल्यांकन करेगी।

संविधान विशेषज्ञ डॉ. कश्यप ने लोहिया के कुछ वर्तमान अनुयायियों पर कसा तंज

इससे पहले लोकसभा के पूर्व महासचिव एवं संविधान विशेषज्ञ डॉ. सुभाष कश्यप ने अपने उद्बोधन में डॉ. राम मनोहर लोहिया के कुछ वर्तमान अनुयायियों पर तंज कसते हुए कहा है कि लोहिया जी कुछ अनुयायियों को पीछे छोड़ गए हैं। अगर वर्तमान में ऐसे अनुयायियों के चलन को देखते हुए डॉ. लोहिया के बारे में आंकलन करेंगे तो यह लोहिया जी के साथ अन्याय होगा। उन्होंने कहा कि लोहिया जितना अपने छात्र जीवन में सजग व वैचारिक रूप से समृद्ध थे, उतनी ही प्रसिद्धि उन्होंने लोकसभा में कुशल वक्ता के रूप में पाई। आईसीपीआर के प्रो. गोपीनाथ पिल्लई ने संगोष्ठी की रूपरेखा प्रस्तुत की। संयोजक डॉ. जोके द्विवेदी ने अतिथियों का स्वागत किया। संचालन डॉ. रामजी मित्र एवं धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ. राजेश पाण्डेय ने किया।

राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का राज्यपाल राम नाईक ने किया उद्घाटन

लोहिया के विचार की तरह ही थे उनके आचार

बोले गवर्नर

इलाहाबाद | प्रमुख संवाददाता

सूबे के राज्यपाल राम नाईक ने शुक्रवार को राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में 'डॉ. राम मनोहर लोहिया का दर्शन' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि कई बार व्यक्ति के विचार तो अच्छे दिखते हैं लेकिन उसका आचार विचारों के अनुकूल नहीं होता। डॉ. लोहिया का जैसा विचार था, वैसा ही उनका आचार भी था। वह जैसा बोलते थे, वैसा ही करते थे।

सत्ता की हार के विश्लेषण का सुझाव: राज्यपाल ने यूपी चुनाव नतीजों का हवाला देते हुए संगोष्ठी में देशभर से जुटे दार्शनिकों को सूबे में हुए सत्ता परिवर्तन का विश्लेषण करने का सुझाव दिया। कहा कि यह संगोष्ठी डॉ. लोहिया पर है और हाल ही में सूबे में सत्ता की सरकार परिवर्तित हुई है इसलिए इसमें चर्चा की दृष्टि से यह विषय भी अहम हो सकता है।

इसका विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाला जाना चाहिए। भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद (आईसीपीआर) के सहयोग से आयोजित संगोष्ठी में राज्यपाल ने कहा कि डॉ. लोहिया का दर्शन सिर्फ विचारों का मंथन ही नहीं, वर्तमान सामयिक समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत करता है। दार्शनिक लोहिया जी ने तत्कालीन आर्थिक विषयों पर जो गहन अध्ययन प्रस्तुत किया, उसने समाजवाद को नई दिशा दी। डॉ. लोहिया को मातृभाषा से प्यार था। उनके जीवन पर तुलसीदास के मानववाद और गांधी के दर्शन का स्पष्ट प्रभाव था।



शुक्रवार को फाफामऊ स्थित राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय में यमुना परिसर स्थित क्षेत्रीय केंद्र के नए भवन का उद्घाटन राज्यपाल राम नाईक ने किया। इस मौके पर कुलपति प्रो. एमपी दुबे और विश्वविद्यालय के पदाधिकारी मौजूद रहे।

क्षेत्रीय केंद्र के भवन का किया उद्घाटन

संगोष्ठी का उद्घाटन करने से पूर्व राज्यपाल ने राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के इलाहाबाद क्षेत्रीय केंद्र के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन भी किया। यह भवन फाफामऊ में बनाया गया है। अभी तक क्षेत्रीय केंद्र किराए के भवन में संचालित था। कुलपति प्रो. एमपी दुबे ने बताया कि किराए के भवन में चल रहे बाकी क्षेत्रीय केंद्रों का अपना भवन बनाने के लिए भी प्रयास चल रहा है।

सरकार को पूरा करना चाहिए वादा: गवर्नर

लोक सेवा आयोग की भर्तियों की सीबीआई से जांच कराने की प्रतियोगियों की मांग संबंधी सवाल पर राज्यपाल ने कहा कि जो भी नई सरकार बनती है, वह पूर्ववर्ती सरकारों द्वारा तीन या छह माह में लिए गए फैसलों का विश्लेषण करती है। कहा कि सूबे की भाजपा सरकार ने अपने घोषणा पत्र के जरिए जनता से जो वादा किया है, उसके मुताबिक काम करते हुए वादे को पूरा करना चाहिए।

श्रीखंड, कढ़ी और रसमलाई का किया सेवन: मुक्त विश्वविद्यालय के कार्यक्रम के बाद राज्यपाल जार्जटाउन स्थित न्यायमूर्ति गिरधर मालवीय के आवास पर गए। वहां उन्होंने भोजन किया। राज्यपाल के लिए कई स्वादिष्ट व्यंजन बनाए गए थे। उन्होंने श्रीखंड, कढ़ी और रसमलाई सहित अन्य व्यंजनों का सेवन किया। फिर वापस लखनऊ चले गए। उनके साथ डॉ. सुभाष कश्यप और मुक्त विवि के कुलपति प्रो. एमपी दुबे भी थे।

फालोवरों से न करें लोहिया का आकलन

संविधान विशेषज्ञ पद्मभूषण डॉ. सुभाष कश्यप ने डॉ. लोहिया के साथ बिताए दिनों को याद करते हुए कई रोचक संस्मरण सुनाए। उन्होंने कटाक्ष करते हुए प्रतिभागियों को सुझाव दिया कि वे डॉ. लोहिया के विचारों का आकलन उनके फालोवरों के चाल-चलन से कतई न करें।

उन्होंने कहा कि डॉ. लोहिया ने रामचरित मानस के प्रशासनिक पक्षों एवं राजनैतिक समझ को माना। वह आम जनमानस के बीच में रहकर उनकी भलाई के लिए सदैव प्रयासरत रहते थे। कुलपति प्रो. एमपी दुबे ने कहा कि डॉ. लोहिया का समाजवाद, समानता और वैचारिक क्रांति का दर्शन रहा है।

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष प्रो. एसआर भट्ट ने कहा कि वर्तमान में डॉ. लोहिया के नवसमाजवाद को नए सिरे से समझने की जरूरत है। प्रो. गोपीनाथ पिल्लई ने संगोष्ठी की रूपरेखा प्रस्तुत की। संयोजक डॉ. जीके द्विवेदी ने स्वागत, संचालन डॉ. रामजी मिश्र एवं सुबी मारिया और धन्यवाद ज्ञापन रजिस्ट्रार डॉ. राजेश पांडेय ने किया। कार्यक्रम में इलाहाबाद राज्य विवि के वीसी प्रो. राजेन्द्र प्रसाद, एनजीबीयू के वीसी प्रो. केबी पांडेय, प्रो. गिरिराज किशोर, प्रो. आनन्द कुमार, प्रो. स्मिथ, डॉ. सुधीर सिंह, प्रो. महेश विक्रम सिंह, प्रो. कृष्ण गोपाल, प्रो. सुब्रत मुखर्जी, डॉ. प्रभाकर आदि उपस्थित थे।

युवाओं का मार्गदर्शन करें शिक्षक

इलाहाबाद | प्रमुख संवाददाता

राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में शुक्रवार को राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन स्मृति व्याख्यानमाला के तहत लोकसभा के पूर्व महासचिव पद्मभूषण डॉ. सुभाष कश्यप का व्याख्यान हुआ।

'भारतीय अस्मिता की खोज' विषयक व्याख्यान में उन्होंने कहा कि भारतीय अस्मिता की खोज करनी है तो सांस्कृतिक परंपराओं, मूल्यों एवं आध्यात्मिकता की समझ विकसित करनी होगी। वर्तमान में सत्ता, संपदा और सफलता के लालच में मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा है। ऐसे में शिक्षकों की अहम जिम्मेदारी है कि वे भारतीय अस्मिता की खोज में युवा पीढ़ी का सही मार्गदर्शन करें। अध्यक्षता कर रहे मुक्त विवि के कुलपति प्रो. एमपी दुबे ने कहा कि वर्तमान शिक्षा प्रणालियों की चुनौतियों और कमियों को दूर करने के लिए मूल्य आधारित शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए। अतिथियों का स्वागत मानविकी विद्याशाखा के निदेशक डॉ. आरपीएस यादव ने किया।



राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में शुक्रवार को कुलपति प्रो. एमपी दुबे और राज्यपाल राम नाईक ने संविधानविद् डॉ. सुभाष कश्यप को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया।

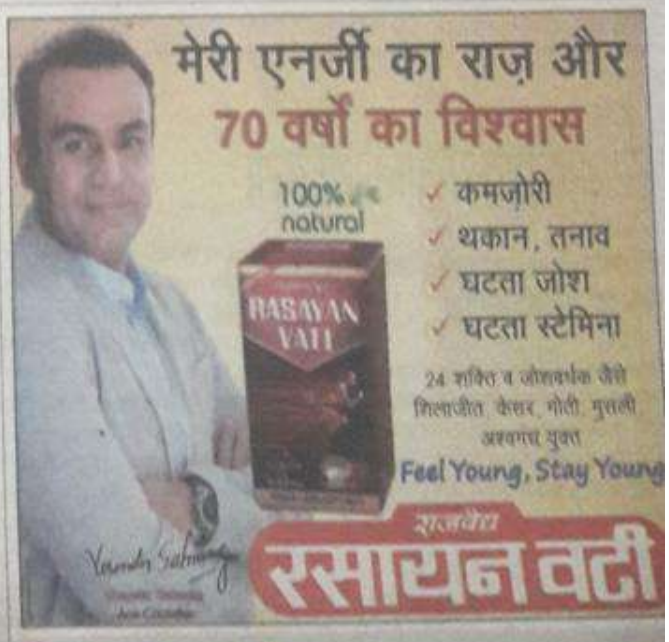
मेरी एनर्जी का राज़ और
70 वर्षों का विश्वास
100% natural
✓ कमज़ोरी
✓ थकान, तनाव
✓ घटता जोश
✓ घटता स्टेमिना
24 शक्ति व जोशवर्धक जैसे शिलाजीत, केसर, मोती, मुसली अश्वगंध युक्त
Feel Young, Stay Young
राजवैद्य
रसायन वटी

सहारा | WW

अपना शहर

इलाहाबाद

3

लखनऊ। ● शनिवार ● 25 मार्च 2017

दार्शनिक राममनोहर लोहिया जी
विषयों पर गहन अध्ययन प्रस्तु
को एक नई दिशा दी।

डॉ. लोहिया के दर्शन ने समाजवाद को दी नई दिशा

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

इलाहाबाद।

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के तत्वावधान में आयोजित 'डॉ. राम मनोहर लोहिया का दर्शन' विषयक संगोष्ठी का शुक्रवार को उद्घाटन करते

राज्यपाल राम नाईक ने किया मुक्त विवि के क्षेत्रीय केन्द्र का उद्घाटन

हुये मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के राज्यपाल राम नाईक ने कहा कि राम मनोहर लोहिया का दर्शन सिर्फ विचारों का मन्थन ही नहीं, वर्तमान सामाजिक समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत करता है। दार्शनिक लोहिया जी ने तत्कालीन आर्थिक विषयों पर जो गहन अध्ययन प्रस्तुत किया उसने समाजवाद को नई दिशा दी।

श्री नाईक ने कहा कि जिस काल खण्ड में सिर्फ साम्यवादी एवं पूंजीवादी विचारधारा का वर्चस्व था, उस समय अपने विचारों एवं तर्कों के आधार पर लोहिया जी ने समाज को नई दिशा दी। कहा कि लोहिया जी को मातृभाषा से प्यार था। उनके जीवन पर तुलसीदास के मानवाद और गांधी के दर्शन का स्पष्ट प्रभाव था। भारतीय संस्कृति के पोषक लोहिया जी का जीवन कथनी और करनी के अंतर से समान था। जैसा उनका विचार था वैसा ही आचार और व्यवहार था। राज्यपाल श्री नाईक ने कहा कि यहां तक कि लोहिया जी अपने विचारों के विरोधी और भिन्न प्रकार के विचार रखने वालों के बीच सामंजस्य रखना



फाफामऊ में मुक्त विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय कार्यालय भवन का उद्घाटन करते राज्यपाल राम नाईक। फोटो : एसएनबी

जानते थे। संविधान विशेषज्ञ एवं लोकसभा के पूर्व महासचिव डॉ. सुभाष कश्यप ने विशिष्ट अतिथि के रूप में लोहिया जी के साथ के संस्करणों को याद करते हुए उनके जीवन-दर्शन के अनेक पहलुओं को उजागर किया। उन्होंने कहा कि लोहिया जी जितना अपने छात्र जीवन में सजग और वैचारिक रूप से समृद्ध थे उतने ही लोकसभा में कुशल वक्ता के रूप में उन्होंने प्रसिद्धि पायी। लोहिया जी में ये खूबी थी कि वे किसी भी गम्भीर वातावरण को अपने सरल एवं सहज व्यवहार से खुशनुमा बना देते थे। लोहिया जी ने रामचरित मानस के प्रशासनिक पक्षों एवं राजनैतिक समझ को माना। वे रामचरितमानस को एक राजनीतिशास्त्र के रूप में देखते थे। कुलपति प्रो. एमपी दुबे ने कहा कि भारतीय दर्शन अनेक विद्वानों के विचारों से परिपूर्ण हैं।

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के चेयरमैन प्रो. एसआर भट्ट ने कहा कि वर्तमान में लोहिया के नवसमाजवाद को नए सिरे से समझने की जरूरत है। आईसीपीआर के प्रो. गोपीनाथ पिल्लई ने संगोष्ठी की रूपरेखा प्रस्तुत की। सेमिनार संयोजक डॉ. जीके द्विवेदी ने अतिथियों का स्वागत किया। संचालन डॉ. रामजी मिश्र एवं सुश्री मारिशा ने किया।

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विवि के यमुना परिसर स्थित नवनिर्मित क्षेत्रीय केन्द्र इलाहाबाद के भवन का उद्घाटन शुक्रवार को प्रदेश के राज्यपाल राम नाईक ने किया। इस केन्द्र का शिलान्यास भी राज्यपाल श्री नाईक ने किया था। इस भवन में अब इलाहाबाद केन्द्र से अधिकृत अध्ययन केन्द्रों के शिक्षार्थियों की हर तरह की समस्याओं का समाधान किया जाएगा और उन्हें नई जानकारियों से भी अवगत कराया जाएगा। राज्यपाल श्री नाईक ने क्षेत्रीय केन्द्र का भ्रमण किया तथा वहां उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी प्राप्त की। केन्द्र का निर्माण सी एण्ड डीएस द्वारा किया गया। विश्वविद्यालय का यह केन्द्र वाई-फाई सुविधा से सम्पन्न होगा।

तीन महीने बाद करना चाहिए कार्यों का मूल्यांकन

इलाहाबाद। उत्तर प्रदेश के राज्यपाल राम नाईक ने लोक सेवा आयोग उत्तर प्रदेश की भर्तियों पर धांधली को लेकर बड़ा बयान दिया है । गवर्नर ने कहा है की नई सरकार आई है जो धांधलियों की जांच करेगी ताकि आयोग को भ्रष्टाचार मुक्त किया जा सके। उन्होंने यह भी कहा है की सूबे की नई सरकार का काम दिखने लगा है। सरकार अपने संकल्प पत्र के मुताबिक कार्य कर रही है, कानून व्यवस्था उसकी प्राथमिकता होनी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार साल के अंतिम के तीन महीने के बाद कार्यों का मूल्यांकन करना चाहिए। नई सरकार को वक्त देना होगा।

---

he pioneer

MARCH 25, 2017

Lohia respected all Indian languages, says Ram Naik



Uttar Pradesh Governor Ram Naik being presented a memento by the UPRTOU Vice-Chancellor, Prof MP Dube, during a seminar on Dr Ram Manohar Lohia there on Friday



Governor Ram Naik attending a national seminar at UPRTOU in Allahabad on Friday — Pioneer

PIONEER NEWS SERVICE ■ ALLAHABAD

Inaugurating the three-day-long national symposium on 'Dr Ram Manohar Lohia ka Darshan' organised by the Uttar Pradesh Rajarshi Tandon Open University (UPRTOU) here on Friday, the UP Governor, Ram Naik, said that the aforesaid topic was not only meant for debate but it would also help in solving the contemporary problems being faced by all sections of the society. The profound study which was presented by the philosopher, Lohia, on the erstwhile financial affairs provided a new direction to socialism. Naik said that Lohia respected all the languages in India and also got the local language its due place in society. Besides, he had always supported the fiduciary policy of decentralisation. Speaking on the occasion, its Vice-Chancellor, Prof MP Dube, said that the Indian philosophy was replete with the ideas of many scholars. The philosophy of the Lohia was inspired by the Father of Nation, Mahatma Gandhi. He wanted the changes, both in society as well as human beings. Prof Gopinath Pillai of the ICPR presented the outline of the seminar while its convener, Dr GK Dwivedi, welcomed the guests and Dr Ramji Mishra conducted it. The vote of thanks was proposed by the Registrar, Dr Rajesh Pandey.

The programme was also attended by the Vice-Chancellor of the Allahabad State University, Prof Rajendra Pradad, the V-C of Nehru Gram Bharti University, Prof KP Pandey, Prof Giriraj Kishore, Prof Anand Kumar, Prof Smith, Dr Sudhir Singh, Prof Mahesh Vikram Singh, Prof Krishna Gopal, Prof Subrat Mukherji, Dr Prabhakar and others. Meanwhile the Uttar Pradesh Governor, Ram Naik, inaugurated the newly-constructed regional centre situated at the Yamuna premises of the UPRTOU here on Friday. It may be pointed out here that the foundation-laying of the aforesaid premises had also been carried out by the Governor, Ram Naik. Now all the problems of the students of the authorised study centres will be sorted out in the aforesaid building. Besides the students will be apprised of the latest information there. The UP Governor also took a round of the regional centre and sought information about the facilities being provided to the students there. The construction of the aforesaid regional centre was made by the C&DS. This regional centre of the varsity will be equipped with Wi-Fi facility. The Governor also planted saplings on the occasion. He was accompanied by the UPRTOU's V-C, Prof MP Duby, the Registrar, Dr Rajesh Kumar Pandey, the Director of the Allahabad Regional Centre, Dr Purnima Sharma, and others.

दैनिक जागरण Allahabad, 25 March 2017

योगी को अभी मौका दिया जाना चाहिए

allahabad@inext.co.in

ALLAHABAD (24 March): राज्यपाल राम नाईक ने कहा है कि योगी ने अभी काम की शुरुआत की है. किसी बात पर टोकना अभी ठीक नहीं है. उन्होंने शुक्रवार को यह दिग्गड़ी पंटी रोमियो दल द्वारा सामान्य युवकों के उत्पीड़न के सवाल पर की. वह यहां यूपीआरटीओयू में आयोजित प्रोग्राम में हिस्सा लेने के लिए पहुंचे थे. यहां सेमीनार में भाग लेने के बाद वह जस्टिस गिरधर मालवीय के आवास पर स्वास्थ्य के बारे में जानकारी लेने पहुंचे. यहां उन्होंने करीब 40 मिनट बिताए. दोनों के बीच अनेक सामाजिक मुद्दों पर लंबी चर्चा हुई. चर्चा के दौरान कई पुराने यादें ताजा हुईं. सबने साथ में भोजन किया. वापसी में जस्टिस मालवीय ने राज्यपाल रामनाईक को कुछ पुस्तकें भेंट की. राज्यपाल का स्वागत जस्टिस मालवीय के साथ उनकी पत्नी कांता मालवीय, बेटी रुचि भार्गव व दामाद दीपक भार्गव ने किया. उनके साथ संविधानविद् सुभाष कश्यप भी पहुंचे थे.

PIC. DAINIK JAGRAN/ NEXT



अपने आवास पर गवर्नर का हेलकम करते जस्टिस गिरधर मालवीय.

इलाहाबाद

डेली न्यूज

5

लोहिया के दर्शन ने समाजवाद को दी नई दिशा : राज्यपाल

युवा पीढ़ी का सही मार्गदर्शन करें शिक्षक : डॉ. कश्यप



राज्यपाल ने किया क्षेत्रीय केन्द्र का उद्घाटन



यमुना परिसर में क्षेत्रीय केन्द्र, इलाहाबाद के नवनिर्मित भवन के उद्घाटन की एक झलक
दिनांक 24 मार्च, 2017



















UPRTOU

NEWS FROM THE WEEK:

26 March 2017

राष्ट्रीय सेमिनार

डॉ. राममनोहर लोहिया का दर्शन

Philosophy of Dr. Ram Manohar Lohia

24, 25 एवं 26 मार्च, 2017

आयोजक

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

टेक्निकल सत्र

दिनांक 26 मार्च, 2017



संगोष्ठी में बोलते हुए संगोष्ठी संयोजक प्रो0 गोपीनाथ पिल्लई एवं उपस्थित प्रतिभागीगण।



संगोष्ठी में बोलते हुए विशिष्ट वक्ता एवं सभागार में बैठे हुए प्रतिभागीगण।















संगोष्ठी

में

बोलते हुए

विशिष्ट वक्ता

एवं

सभागार में बैठे हुए प्रतिभागीगण।

UPRTOU

NEWS FROM THE WEEK:

26 March 2017

राष्ट्रीय सेमिनार

डॉ. राममनोहर लोहिया का दर्शन
Philosophy of Dr. Ram Manohar Lohia
24, 25 एवं 26 मार्च, 2017

आयोजक
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं
उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

समापन सत्र

दिनांक 26 मार्च, 2017

राजनीतिक गुलामी से ज्यादा घातक मानसिक गुलामी– प्रो. आनन्द कुमार

''डॉ0 राम मनोहर लोहिया का दर्शन'' विशय पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के सरस्वती परिसर के लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी ''डॉ0 राम मनोहर लोहिया का दर्शन'' का समापन रविवार को हुआ। समापन सत्र के मुख्य अतिथि प्रख्यात समाजशास्त्री तथा जे.एन.यू. के प्रो. आनन्द कुमार एवं अध्यक्षता कुलपति एम.पी.दुबे जी ने की।

अतिथियों का स्वागत निदेशक, विज्ञान विद्याशाखा डॉ. आशुतोष गुप्ता ने किया । विश्वविद्यालय के बारे में आयोजन सचिव डॉ. जी.के. द्ववेदी ने जानकारी दी। तीन दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार की रिपोर्ट संयोजक डॉ. गोपीनाथ पिल्लई, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली ने प्रस्तुत की। संगोष्ठी का संचालन सह–आयोजन सचिव डॉ. श्रुति एवं धन्यवाद् ज्ञापन सह–आयोजन सचिव डॉ. अतुल कुमार मिश्रा ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर देश के विभिन्न भागों से 125 प्रतिभागियों ने शोध पत्र प्रस्तुत किये।



संगोष्ठी का संचालन करती हुई सह–आयोजन सचिव डॉ. श्रुति



अतिथियों का स्वागत करते हुए निदेशक, विज्ञान विद्याशाखा डॉ. आशुतोष गुप्ता





अतिथियों को पुष्पगुच्छ प्रदान करती हुई असि. प्रोफेसर डॉ0 रुचि बाजपेई







तीन दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए संयोजक डॉ. गोपीनाथ पिल्लई,







विश्वविद्यालय के बारे में बताते हुए आयोजन सचिव डॉ. जी.के. द्ववेदी



मुख्य अतिथि प्रख्यात समाजशास्त्री तथा जे.एन.यू. के प्रो. आनन्द कुमार ने कहा कि राजनीतिक गुलामी से ज्यादा घातक मानसिक गुलामी है। समाज में परिवर्तन लाने के लिए तीन नीतियां आवश्यक हैं। भाषा नीति, दाम नीति एवं दास नीति। प्रो. कुमार ने कहा कि भाषा के विकास के साथ–साथ आर्थिक समानता और सामाजिक समानता आवश्यक है तभी शोषण से मुक्ति मिल सकती है। भाषा एक सांस्कृतिक पूंजी है। भाषा समृद्धि होगी तो संस्कृति भी समृद्ध होगी। उन्होंने भोजपुरी एवं मैथिली भाषा की वकालत करते हुए कहा कि इन्हें भी संविधान की आंठवी अनुसूची में शामिल किया जाना चाहिए।

प्रो. कुमार ने कहा कि सरकारी काम–काज लोक भाषा में होने चाहिए न कि आंग्ल भाषा में। प्रो. कुमार ने कहा कि डॉ. लोहिया ने चित्रकूट में रामायण मेले की शुरुआत की, जो कि एक सांस्कृतिक मेला है जिसमें समाज के सभी जाति, पंथ एवं वर्ग के लोग आज भी सम्मिलित होते हैं। उन्होनें कहा कि लोहिया जी का व्यक्तित्व करिश्माई था। 1942 में जब कांग्रेसी जेल चले गये तो डॉ. लोहिया ने कई युवाओं के साथ स्वतंत्रता आंदोलन कमान संभाली।





धन्यवाद् ज्ञापन करते हुए सह–आयोजन सचिव डॉ. अतुल कुमार मिश्रा

हिन्दुस्तान 04
इलाहाबाद • सोमवार • 27 मार्च 2017

राजनीतिक गुलामी से ज्यादा घातक है मानसिक दासता

इलाहाबाद | प्रमुख संवाददाता

संगोष्ठी

- मुक्त विवि में डॉ. लोहिया का दर्शन विषय पर आयोजित संगोष्ठी का हुआ समापन
- तीन दिवसीय संगोष्ठी के दौरान पढ़े गए 125 से ज्यादा शोध पत्र

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय में 'डॉ. राम मनोहर लोहिया का दर्शन' विषय पर आयोजित संगोष्ठी का रविवार को समापन हुआ। समापन सत्र के मुख्य अतिथि समाजशास्त्री जेएनयू के प्रो. आनन्द कुमार रहे। उन्होंने कहा कि राजनीतिक गुलामी से ज्यादा घातक मानसिक गुलामी है।

कहा कि समाज में परिवर्तन लाने के लिए तीन नीतियां आवश्यक हैं। भाषा नीति, दाम नीति एवं दास नीति। प्रो. कुमार ने कहा कि भाषा के विकास के साथ-साथ आर्थिक समानता और सामाजिक समानता आवश्यक है। तभी शोषण से मुक्ति मिल सकती है। भाषा एक सांस्कृतिक पूंजी है। भाषा समृद्धि होगी तो संस्कृति भी समृद्ध होगी। उन्होंने भोजपुरी एवं मैथिली भाषा की वकालत करते हुए कहा कि इन्हें भी संविधान की आंठवी अनुसूची में शामिल किया जाना चाहिए।

डॉ. आलोक कुमार सिंह ने कहा कि डॉ. लोहिया सरकार बनाने वाले नहीं बल्कि समाज बनाने वाले योद्धा थे लेकिन आज के समय में लोग सरकार बनाने की तिकड़म करते हैं समाज बनाने का प्रयास नहीं।

अध्यक्षता कुलपति प्रो. एमपी दुबे ने की। अतिथियों का स्वागत निदेशक विज्ञान विद्याशाखा डॉ. आशुतोष गुप्ता ने किया। मुक्त विश्वविद्यालय के बारे में विस्तृत जानकारी आयोजन सचिव डॉ. जीके द्विवेदी ने दी।

तीन दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार की रिपोर्ट संयोजक डॉ. गोपीनाथ पिल्लई ने प्रस्तुत की। संगोष्ठी का संचालन सह-आयोजन सचिव डॉ. श्रुति एवं धन्यवाद ज्ञापन सह-आयोजन सचिव डॉ. अतुल कुमार मिश्रा ने किया। संगोष्ठी में पर देश के विभिन्न भागों से आए 125 प्रतिभागियों ने अपने-अपने शोध पत्र भी प्रस्तुत किए।

6
दैनिक जागरण
इलाहाबाद, 27 मार्च 2017

'राजनीतिक से मानसिक गुलामी घातक'

जासं, इलाहाबाद : उप्र राजर्षि टंडन मुक्त विवि में 'डॉ. राममनोहर लोहिया का दर्शन' विषय पर चल रही तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का रविवार को समापन हो गया। समापन सत्र के मुख्य अतिथि जेएनयू के प्रो. आनंद कुमार ने कहा कि मानसिक गुलामी राजनीतिक गुलामी से कहीं ज्यादा घातक है। उन्होंने कहा कि समाज में परिवर्तन के लिए तीन नीतियां आवश्यक हैं।

उन्होंने डॉ. लोहिया का संदर्भ लेते हुए कहा कि भाष के विकास के साथ साथ आर्थिक समानता व सामाजिक समानता आवश्यक है। भाषा समृद्ध होगी तभी संस्कृति भी समृद्ध होगी। उन्होंने भोजपुरी और मैथिली भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की जरूरत पर जोर दिया। इस दौरान उन्होंने अंग्रेजी की जगह सरकारी कामकाज में लोकभाषा के इस्तेमाल की भी वकालत की। डॉ. आलोक सिंह ने कहा कि डॉ. लोहिया सरकार बनाने वाले नहीं बल्कि समाज बनाने वाले योद्धा थे। अध्यक्षता कर रहे प्रो. एमपी दुबे ने अतिथियों का आभार जताया। संयोजक डॉ. गोपीनाथ पिल्लई ने सेमीनार की रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस मौके पर निदेशक विज्ञान विद्या शाखा डॉ. आशुतोष गुप्ता, डॉ. जीके द्विवेदी, अतुल कुमार मिश्र आदि मौजूद रहे। कुल 125 प्रतिभागियों ने इन तीन दिनों में अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए।

Report

Of

U.P. Inter University Youth Festival

Yuva - Sangam

25th April, 2017

Funded by

U. P. State Government

&

Organized by

U. P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad

U.P. Inter University Youth Festival

Yuva - Sangam

25th April, 2017

Funded by

U. P. State Government

&
Organized by

U. P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad

Patron
Prof. M. P. Dube
Hon'ble Vice Chancellor, U.P.R.T.O.U., Allahabad

Dr. Shruti
Convener

Dr. G.K. Dwivedi
Organizing Secretary

Venue
Saraswati Parisar (Academic Block)
U. P. Rajarshi Tandon Open University, Shantipuram, Sector – F, Phafamau, Allahabad
www.uprtou.ac.in

मुविवि में युवा संगम की तैयारियां जोरों पर

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय में युवा संगम की तैयारियां जोरों पर है। अभी तक पूरे प्रदेश भर से 20 से अधिक टीमों ने रजिस्ट्रेशन करा लिया है। उ0प्र0 अन्तरविश्वविद्यालय यूथ फेस्टिवल का आयोजन आगामी 25 अप्रैल 2017 को विश्वविद्यालय के सरस्वती परिसर में किया जाएगा। माननीय कुलपति जी के निदेशानुसार युवा संगम की तैयारी के सम्बन्ध में दिनांक 24 अप्रैल 2017 को 3:30 बजे कुलसचिव डॉ0 गिरिजा शंकर शुक्ल ने विश्वविद्यालय के सभी निदेशक, वित्त अधिकारी एवं आयोजक मण्डल सदस्यों के साथ बैठक कर युवा संगम की तैयारी की समीक्षा की तथा युवा संगम में शामिल हो रही टीमों के ठहरने के लिए उचित प्रबन्ध करने के लिए आवश्यक दिशा निर्देश दिये। इस युवा संगम के रंगारंग कार्यक्रम के आयोजन को लेकर विश्वविद्यालय परिवार के लोगो में काफी उत्साह है।

इस आयोजन में सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश के विश्वविद्यालयों के साथ ही महाविद्यालयों की टीम प्रतिभाग करेगी। प्रत्येक टीम में आठ प्रतिभागी होंगे। एक टीम के दो सदस्य एक स्पर्धा में भाग ले सकते हैं। प्रत्येक स्पर्धा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाणपत्र भी प्रदान किया जाएगा।

युवा संगम में ओवरआल विजेता टीम एवं उपविजेता टीम को राजर्षि ट्राफी/शील्ड प्रदान की जायेगी। युवा संगम में संस्कृति के विभिन्न रंगरूप दिखाई देंगे। यूथ फेस्टिवल में रंगोली (अल्पना), कोलाज, मेंहदी, सोलोसांग (भक्ति, देशभक्ति एवं प्रेरणादायी) प्लेइंग म्यूजिक(म्युजिकल इन्स्ट्रूमेन्टस), शार्ट प्ले, फैंसी ड्रेस (राष्ट्रीय एकता), स्लोगन राइटिंग, स्पॉट पेंटिंग, निबन्ध लेखन तथा पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता रखी गयी है। इलाहाबाद में पहली बार होने जा रहे युवा–संगम में प्रतिभाग करने वाले युवा छात्र छात्राओं में उमंग एवं जोश का माहौल है।



युवा संगम की तैयारी के सम्बन्ध में बैठक करते हुए कुलसचिव, विश्वविद्यालय के सभी निदेशक एवं आयोजक मण्डल सदस्यगण।

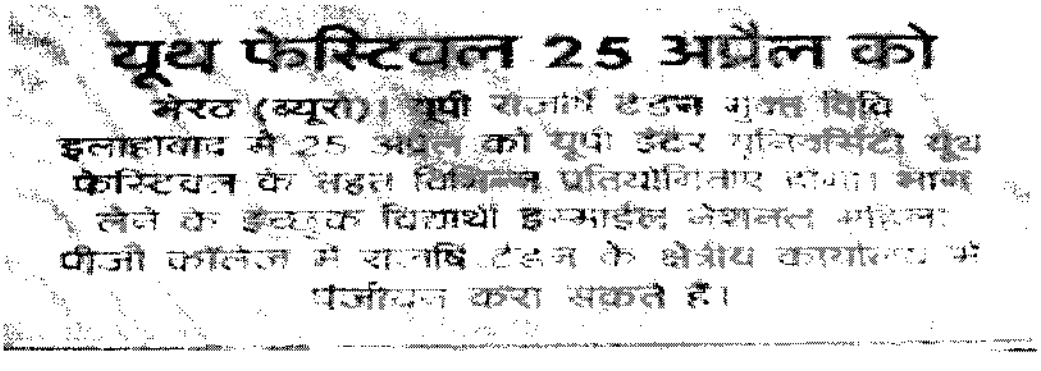

यूथ फेस्टिवल 25 अप्रैल को

मेरठ (ब्यूरो)। यूपी राजर्षि टंडन मुक्त विवि इलाहाबाद में 25 अप्रैल को यूपी इंटर यूनिवर्सिटी यूथ फेस्टिवल के तहत विभिन्न प्रतियोगिताएं होंगी। भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी इन्फाईल नेशनल कॉलेज पीजी कॉलेज में दाखिले के क्षेत्रीय कार्यालय में पंजीकरण करा सकते हैं।

दिनांक 25 अप्रैल, 2017 को उ0प्र0 अन्तरविश्वविद्यालय यूथ फेस्टिवल (युवा संगम) का रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन

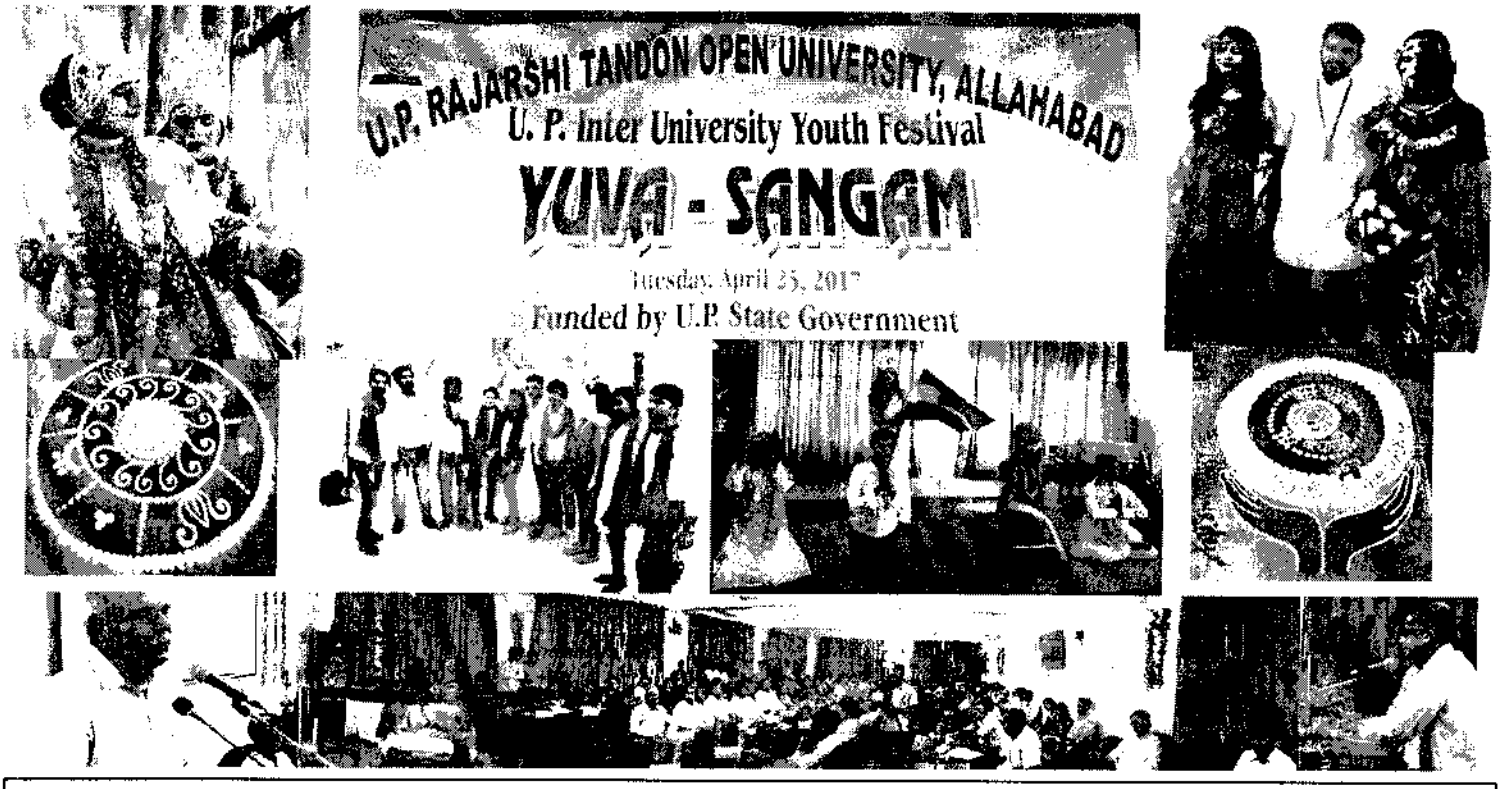

मुविवि में युवा संगम का रंगारंग आयोजन
ओवर आल विजेता ट्राफी काशी विद्यापीठ के नाम

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय में मंगलवार को उ0प्र0 अन्तरविश्वविद्यालय यूथ फेस्टिवल (युवा संगम) का रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किया गया। उदघाटन सत्र में मुख्य अतिथि नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय इलाहाबाद के कुलपति प्रो0 लल्लन सिंह जी एवं अध्यक्षता कुलपति प्रो0 एम0पी0 दुबे जी ने की।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ0 श्रुति, आयोजन सचिव डॉ0 जी0 के0 द्विवेदी, सह--संयोजक, डॉ0 अतुल मिश्रा एवं सह–आयोजन सचिव डॉ0 अलका वर्मा की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

युवा संगम का संचालन एवं अतिथियों का स्वागत संयोजक डॉ0 श्रुति ने किया। युवा संगम एवं विश्वविद्यालय के बारे में आयोजन सचिव डॉ0 जी0के0 द्विवेदी ने जानकारी दी तथा धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ0 गिरिजा शंकर शुक्ला ने किया।

इस अवसर पर यूथ फेस्टिवल में रंगोली (अल्पना), कोलाज, मेंहदी, सोलोसांग (भक्ति, देशभक्ति एवं प्रेरणादायी) प्लेइंग म्यूजिक(म्युजिकल इन्स्ट्रूमेन्टस्), शार्ट प्ले, फैंसी ड्रेस (राष्ट्रीय एकता), स्लोगन राइटिंग, स्पॉट पेंटिंग, निबन्ध लेखन तथा पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता आयोजित की गयी। जिसमें गांधी शान्ति निकेतन डिग्री कालेज, इलाहाबाद, ग्रामोदय आश्रम पी0जी0 कालेज, अम्बेडकरनगर , विद्यावती देवी महाविद्यालय, देवरिया, मां सुकाली देवी डिग्री कालेज, देवरिया, बुद्धा पी0जी0 कालेज, कुशीनगर, रामपाल मौर्या पी0जी0 कालेज, फतेहपुर, कृषक पी0जी0 कालेज मऊ,, एस0पी0एस0 स्मारक पी0जी0 कालेज, अम्बेडकरनगर, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, शुआट्स, नैनी, इलाहाबाद, पी0जी0 कालेज पटटी, प्रतापगढ़, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, डी0वी0एस0 डिग्री कालेज, बरना, प्रतापगढ़, सुखदेव प्रसाद त्रिपाठी महाविद्यालय कुशीनगर, श्री मुरली मनोहर टाउन पी0जी0 कालेज, बलिया, महात्मा बुद्ध महाविद्यालय, कौशाम्बी, श्री रतिराम महाविद्यालय, मथुरा, डी0एस0एन0 पी0जी0कालेज,उन्नाव तथा पूर्वांचल पी0जी0कालेज, आजमगढ़ के लगभग 120 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।



नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय इलाहाबाद के कुलपति प्रो0 लल्लन सिंह जी से वार्ता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 एम0पी0 दुबे जी एवं साथ में बैठे हुए कुलसचिवश्र डॉ. गिरिजा शंकर शुक्ल जी।

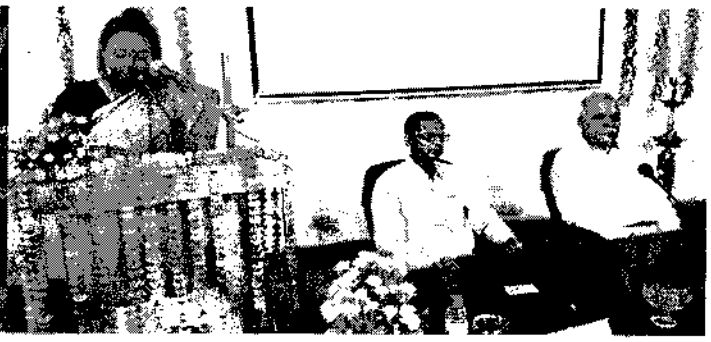

युवा संगम का संचालन एवं अतिथियों का स्वागत करती हुई संयोजक डॉ0 श्रुति एवं मंच पर बैठे हुए माननीय अतिथि।







माननीय मुख्य अतिथि को पुष्पगुच्छ देकर स्वागत करती हुई सह–आयोजन सचिव डॉ0 अलका वर्मा एवं माननीय कुलपति जी को पुष्पगुच्छ देकर स्वागत करते हुए सह–संयोजक, डॉ0 अतुल मिश्रा



दीप प्रज्ज्वलित कर युवा संगम कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मा0 अतिथिगण एवं सभागार में बैठे हुए प्रतिभागीगण।





सरस्वती वन्दना के समय खड़े हुए मा0 अतिथिगण एवं सभागार में उपस्थित प्रतिभागीगण।





युवा संगम एवं विश्वविद्यालय के बारे में जानकारी देते हुए आयोजन सचिव डॉ0 जी0के0 द्विवेदी





मा0 अतिथि को अंगवस्त्र व स्मृति चिन्ह देते हुए
मा0 कुलपति जी।



मा0 कुलपति जी को
अंगवस्त्र व स्मृति चिन्ह
देते हुए
आयोजन समिति के
सदस्यगण।

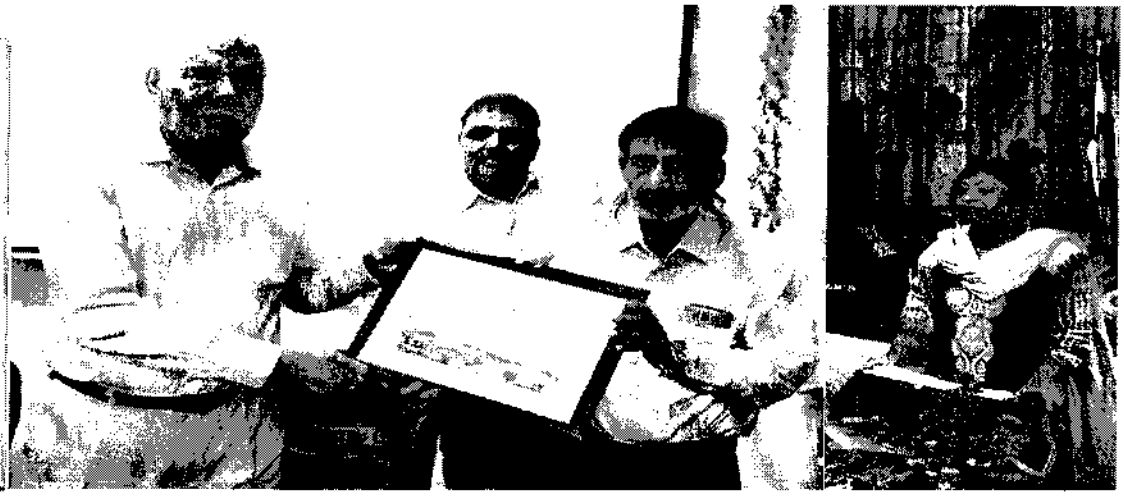

उदघाटन सत्र में मुख्य अतिथि नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय इलाहाबाद के कुलपति प्रो0 लल्लन सिंह ने कहा कि वैश्विक स्तर पर जो–जो देश अपनी विरासत एवं संस्कृति का प्रसार–प्रचार कर रहे हैं वह अमिट छाप छोड़ रहे हैं ऐसे में विश्वविद्यालय स्तर पर होने वाली इस तरह की प्रतियोगिताएं युवाओं के लिए उनकी प्रतिभाओं को तरासने का एक अच्छा मंच है। इन प्रतियोगिताओं में विभिन्न जाति, धर्म एवं भाषाओं को एक मंच पर देखा जा सकता है। ऐसे कार्यक्रम अनेकता में एकता के प्रतीक हैं। दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में ऐसी पहल सराहनीय है यहां युवाओं को एक मंत्र मिला है और उनकी प्रतिभाएं निखर कर सामने आ रहीं हैं।









अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो0 एम0पी0 दुबे ने देश की युवा शक्ति को याद करते हुए कहा कि इतिहास गवाह है कि वैश्विक स्तर पर जितने भी आन्दोलन हुए हैं उनकी सफलता में युवाओं की अहम भागीदारी है उन्होंने कहा कि कोई बाह्य आक्रमणकारी सर्वप्रथम सांस्कृतिक धरोहरों पर हमला करता है। राजनीतिक और भौतिक गुलामी से खतरनाक मानसिक गुलामी होती है। हमारे देश के युवाओं को अपनी संस्कृति, भाषा, रीति–रिवाज एवं परम्पराओं से रूबरू होना चाहिए और उसकी रक्षा करनी चाहिए। वर्तमान में युवा दिग्भ्रमित और तनाव में हैं। प्रो0 दुबे ने कहा कि युवाओं की शक्ति को सकारात्मक दिशा में लाने में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की अहम भूमिका है। भारत के गांव–गांव में छोटे–छोटे नुक्कड़ नाटक, रासलीला, रामलीला और अन्य कार्यक्रमों के द्वारा लोगों में नई जनचेतना का संचार किया जाता रहा है। इसी क्रम में विश्वविद्यालय स्तर पर अब पुराने लोकगीतों,मूल्यों और आदर्शों को जन–जन तक पहुंचाने के लिए युवा संगम जैसे कार्यक्रम होते रहने चाहिए ऐसे कार्यक्रमों की भागीदारी से युवाओं में रचनात्मक और कियात्मक क्षमताएं बढ़ती है।



धन्यवाद ज्ञापन देते हुए कुलसचिव, डॉ0 गिरिजा शंकर शुक्ल जी।

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय में मंगलवार को उ0प्र0 अन्तरविश्वविद्यालय यूथ फेस्टिवल (युवा संगम) का रंगारंग कार्यक्रम में होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं के जज के रुप में प्रो0 जे0एन0 मिश्रा, पूर्व कुलसचिव, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, डॉ0 नमिता यादव, एसोसिएट प्रोफेसर, म्युजिक वोकल, राजर्षि टण्डन गर्ल्स डिग्री कालेज, इलाहाबाद डॉ0 शहाला हसन, एसोसिएट प्रोफेसर, डिपार्टमेन्ट आफ पेन्टिंग, हमीदिया गर्ल्स डिग्री कालेज, इलाहाबाद, डॉ0 ज्योति मिश्रा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, डिपार्टमेन्ट आफ म्युजिक एण्ड परफारमिंग आर्ट, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, डॉ0 प्रियंका केसरवानी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, डिपार्टमेन्ट आफ टेक्सटाइल एण्ड अपैरल डिजाइनिंग, शुआट्स नैनी, इलाहाबाद, डॉ0 जया मिश्रा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, डिपार्टमेन्ट आफ म्युजिक, नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, प्रो0 पी0के0 पाण्डेय, प्रोफेसर, शिक्षा विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, प्रो0 सुधान्शु त्रिपाठी, प्रोफेसर, समाज विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 ओमजी गुप्ता, निदेशक, प्रबन्धन अध्ययन विद्याशाखा, उ.प्र. रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 पी0पी0 दुबे, निदेशक, कृषि विज्ञान विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 आर0पी0एस0 यादव, निदेशक, मानविकी विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 आशुतोष गुप्ता, निदेशक, विज्ञान विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 गिरिजा शंकर शुक्ला, निदेशक, स्वास्थ्य विज्ञान विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 टी0एन0 दुबे, पुस्तकालाध्यक्ष, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 इति तिवारी, एसोसिएट प्रोफेसर, समाज विज्ञान विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 रूचि बाजपेई, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, मानविकी विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 श्रुति, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, विज्ञान विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 जी.के. द्विवेदी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षा विद्याशाखा, उ.प्र. रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 रजना श्रीवास्तव, परामर्शदाता, शिक्षा विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0राजेश कुमार पाण्डेय, उपकुलसचिव, उ.प्र. रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 रामजी मिश्रा, परामर्शदाता, आडिया वीडियो लैब, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, श्री एस0पी0 सिंह वित्त अधिकारी उ.प्र.रा.ट.मु. वि.वि., इलाहाबाद उपस्थित रहे।

विभिन्न कार्यक्रमों के सफल संचालन हेतु इवेन्ट डायरेक्टर के रुप में प्रो0 पी0के0 पाण्डेय, शिक्षा विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, प्रो0 सुधान्शु त्रिपाठी, प्रोफेसर, समाज विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 ओमजी गुप्ता, निदेशक, प्रबन्धन अध्ययन विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 पी0पी0 दुबे, निदेशक, कृषि विज्ञान विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 आर0पी0एस0 यादव, निदेशक, मानविकी विद्याशाखा, उ. प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 आशुतोष गुप्ता, निदेशक, विज्ञान विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 गिरिजा शंकर शुक्ला, निदेशक, स्वास्थ्य विज्ञान विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 टी0एन0 दुबे, पुस्तकालाध्यक्ष, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 इति तिवारी, एसोसिएट प्रोफेसर, समाज विज्ञान विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 संतोषा कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर, समाज विज्ञान विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 रंजना श्रीवास्तव, परामर्शदाता, शिक्षा विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 रामजी मिश्रा, परामर्शदाता, आडिया वीडियो लैब, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद उपस्थित रहे।

साथ ही इवेन्ट कोआर्डिनेटर के रुप में डॉ0 ज्ञानप्रकाश यादव, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, प्रबन्धन अध्ययन विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 देवेश रंजन त्रिपाठी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, प्रबन्धन अध्ययन विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 मुकेश कुमार, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षा विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 दिनेश सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षा विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 सुनील कुमार, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाज विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 साधना श्रीवास्तव, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, मानविकी विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 सतीश चन्द्र जैसल, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, मानविकी विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, सुश्री मारिषा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, विज्ञान विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, श्री मनोज कुमार बलवन्त, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, विज्ञान विद्याशाखा, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 आर0जे0 मौर्या, सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 यू0एन0 तिवारी, परामर्शदाता, शिक्षा विद्याशाखा उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 शैलेश यादव, परामर्शदाता, शिक्षा विद्याशाखा उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 रिमता अग्रवाल, परामर्शदाता, मानविकी विद्याशाखा उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 दीपशिखा श्रीवास्तव परामर्शदाता, समाज विज्ञान विद्याशाखा उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 अतुल मिश्रा परामर्शदाता, मानविकी विद्याशाखा उ.प्र.रा. ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 रमेश यादव, परामर्शदाता, समाज विज्ञान विद्याशाखा उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 अलका वर्मा, परामर्शदाता, समाज विज्ञान विद्याशाखा उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 गौरव संकल्प, परामर्शदाता, प्रबन्धन अध्ययन विद्याशाखा उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 दिनेश कुमार गुप्ता, परामर्शदाता, विज्ञान विद्याशाखा उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 अब्दुल हफीज, परामर्शदाता, मानविकी, विद्याशाखा उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, डॉ0 पूर्णिमा शर्मा, क्षेत्रीय केन्द्र निदेशक, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, श्री नीरज मिश्रा, टेक्निकल आफिसर, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, श्री शिवम मिश्रा, टेक्निकल आफिसर, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद, धीरज रावत टेक्निकल आफिसर, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद एवं शहबाज अहमद, टेक्निकल आफिसर, उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., इलाहाबाद उपस्थित रहे।

इवेन्ट मेम्बर के रूप में श्रीमती सीमा सिंह, श्रीमती रितु केसरवानी, श्री ज्योर्तिमय भट्टाचार्या, श्री राजेश पाठक, श्री सत्यवीर राम त्रिपाठी, श्रीमती पूर्णिमा भटटाचार्या, श्री श्रवण कुमार दूबे, श्री आलोक श्रीवास्तव, श्री दिलीप त्रिपाठी, श्री ईश्वरनाथ विश्वकर्मा, श्री सुधीर तिवारी ने अपने दायित्वों का निर्वहन किया। साथ ही चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों में श्री राहुल यादव, श्री वीरेन्द्र कुमार, श्री बालकृष्ण तिवारी, श्री अर्जुन कुशवाहा, श्री श्याम लाल यादव, श्री राज पुष्पाकर, श्री अमित शर्मा, श्री मंजीत, श्री राजू बारी, श्री रामानन्द यादव, श्री रामप्रसाद पाल ने सफल आयोजन हेतु कार्य किया।



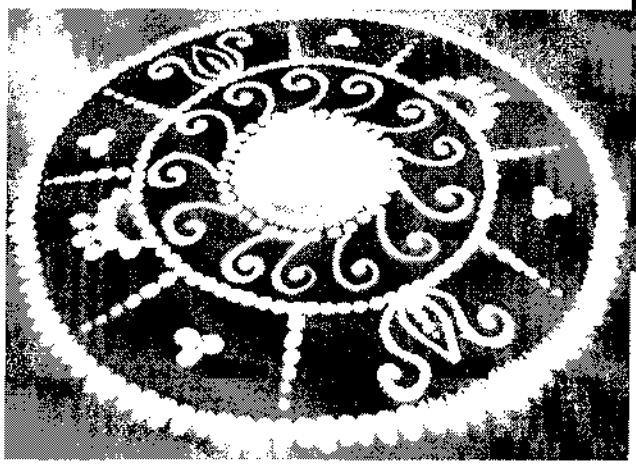
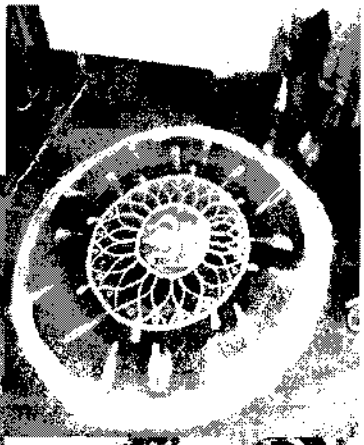
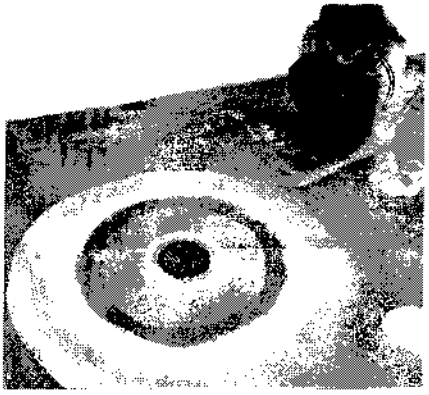






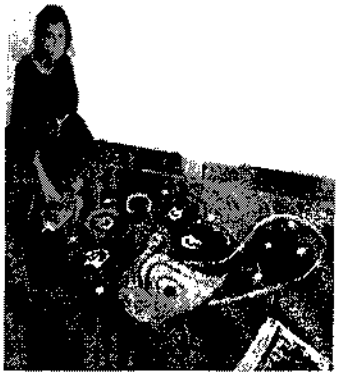



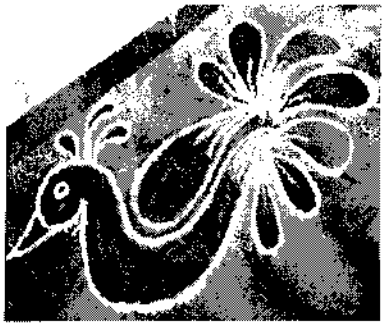
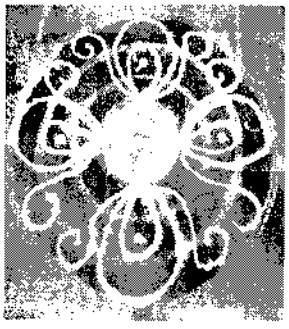
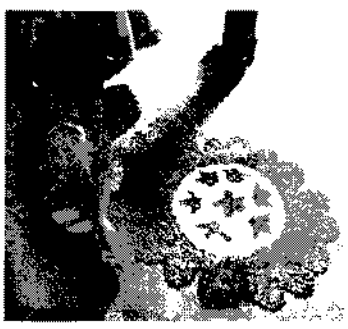

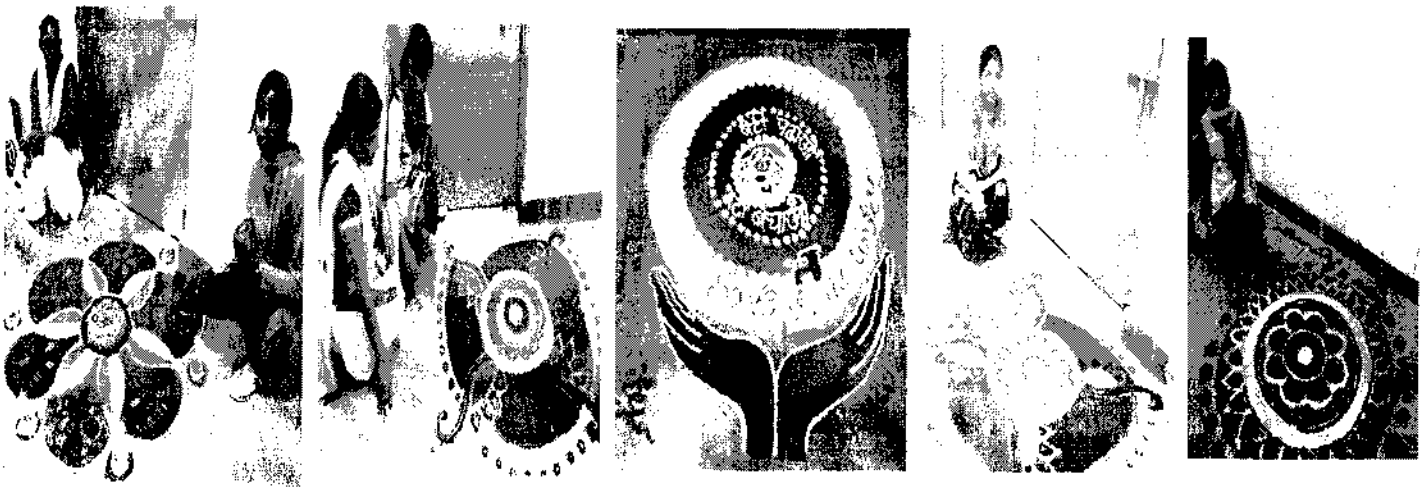





रंगोली प्रतियोगिता की कार्यक्रम निदेशक, डॉ0 रंजना श्रीवास्तव, कार्यक्रम समन्वयक, सुश्री मारिषा एवं डॉ0 अलका वर्मा, कार्यक्रम सदस्य, श्रीमती सीमा सिंह रही।
रंगोली प्रतियोगिता के जज डॉ0 प्रियंका केशरवानी, डॉ0 इति तिवारी, डॉ0 श्रुति एवं डॉ0 रंजना श्रीवास्तव रही।

रंगोली प्रतियोगिता में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी के अतुल कुमार को प्रथम स्थान, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर की प्रीती यादव को द्वितीय स्थान तथा महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी की रोशनी को तृतीय स्थान मिला।



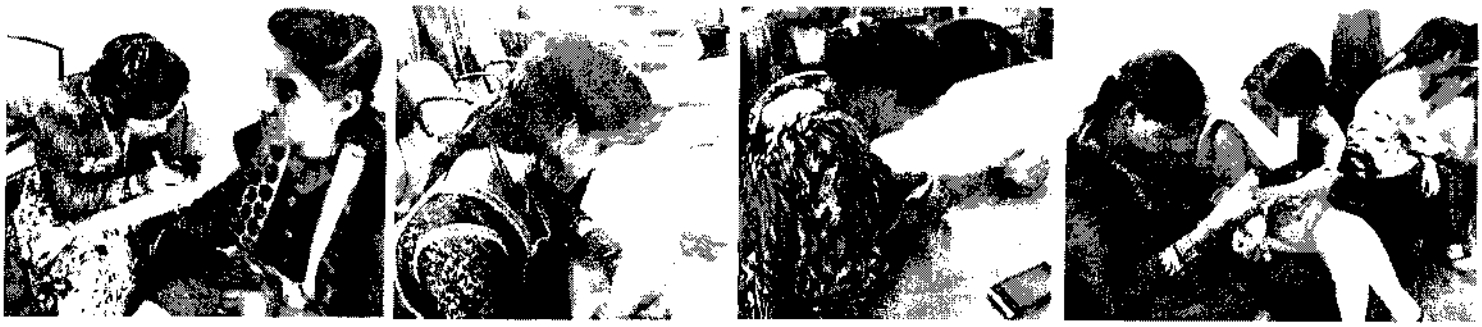



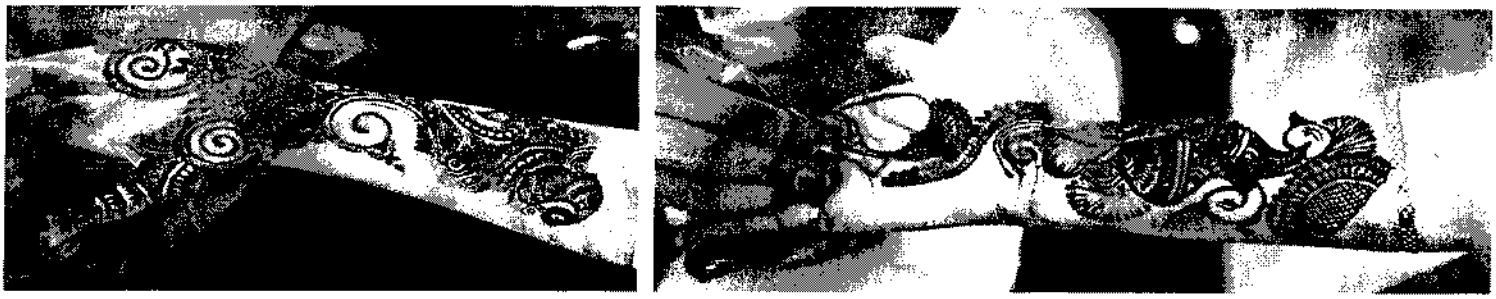



मेंहदी प्रतियोगिता की कार्यक्रम निदेशक, डॉ0 इति तिवारी, कार्यक्रम समन्वयक, डॉ0 साधना श्रीवास्तव एवं डॉ0 दीप शिखा श्रीवास्तव, कार्यक्रम सदस्य, श्रीमती रीतू केशरवानी रही।

रंगोली प्रतियोगिता के जज डॉ0 प्रियंका केशरवानी, डॉ0 इति तिवारी, डॉ0 श्रुति एवं डॉ0 रंजना श्रीवास्तव रही।

मेंहदी प्रतियोगिता में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी के अमित को प्रथम स्थान एवं इसी विश्वविद्यालय की अंकिता कुमारी को द्वितीय स्थान तथा श्री रतिराम महाविद्यालय, मथुरा की प्रियंका शर्मा को तृतीय स्थान मिला।





फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता की कार्यक्रम निदेशक, डॉ0 गिरिजा शंकर शुक्ल, कार्यक्रम समन्वयक, डॉ0 स्मिता अग्रवाल एवं डॉ0 पूर्णिमा शर्मा, कार्यक्रम सदस्य, श्रीमती पूर्णिमा भट्टाचार्या रही।

फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता के जज डॉ0 गिरिजा शंकर शुक्ल, डॉ0 ज्योति मिश्रा, डॉ0 प्रियंका केशरवानी, डॉ0 इति तिवारी एवं डॉ0 रंजना श्रीवास्तव रही।







सोलो सांग प्रतियोगिता



सोलो सांग प्रतियोगिता की कार्यक्रम निदेशक, डॉ0 ओमजी गुप्ता कार्यक्रम समन्वयक, डॉ0 आर.जे. मौर्या एवं डॉ0 सुनील कुमार कार्यक्रम सदस्य, श्री ज्यार्तिमय भट्टाचार्या रहे।

सोलो सांग प्रतियोगिता के जज प्रो0 पी.के. पाण्डेय, डॉ0 ओमजी गुप्ता, डॉ0 पी.पी. दुबे डॉ0 ज्योति मिश्रा, डॉ0 नमिता यादव, एवं डॉ0 जया मिश्रा रही।











सोलो सांग में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी के संदीप पाण्डेय प्रथम स्थान पर रहे जबकि द्वितीय एवं तृतीय स्थान बुद्धा पी0जी0 कालेज, कुशीनगर के रविशंकर पाठक एवं अतुल कुमार भट्ट ने प्राप्त किया।









शार्ट प्ले प्रतियोगिता की कार्यक्रम निदेशक, डॉ0 आर.पी.एस. यादव, कार्यक्रम समन्वयक, डॉ0 एस.सी. जैसल, डॉ0 शैलेश यादव एवं श्री शिवम मिश्रा, कार्यक्रम सदस्य, श्री सत्यवीर राम त्रिपाठी रहे।

शार्ट प्ले प्रतियोगिता के जज डॉ0 गिरिजा शंकर शुक्ल, डॉ0 ज्योति मिश्रा डॉ0 आर.पी.एस. यादव एवं डॉ0 टी.एन. दुबे रहे।

शार्ट प्ले में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी की टीम को प्रथम स्थान, पूर्वांच वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर की टीम को द्वितीय स्थान एवं शुआट्स नैनी की टीम को तृतीय स्थान मिला।

कोलाज प्रतियोगिता



कोलाज प्रतियोगिता की कार्यक्रम निदेशक, डॉ0 पी.पी. दुबे, कार्यक्रम समन्वयक, डॉ0 दिनेश सिंह एवं डॉ0 अलका वर्मा कार्यक्रम सदस्य, श्री आलोक श्रीवास्तव रहे।

कोलाज प्रतियोगिता के जज डॉ0 आर.पी.एस. यादव, डॉ0 टी.एन. दुबे, डॉ0 प्रियंका केशरवानी एवं डॉ0 राजेश कुमार पाण्डेय रहे।



कोलाज में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी की नेहा सिंह, अमित कुमार गुप्ता एवं अंकिता ने प्राप्त किया।

पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता



पोस्टर मेकिंग एवं विषय

- सूचना एवं प्रौद्योगिकी के बढ़ते कदम
- उत्तर प्रदेश की विकास यात्रा
- बालिका शिक्षा

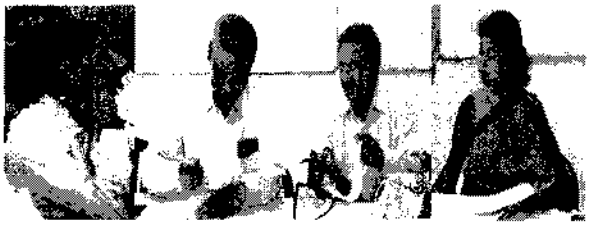

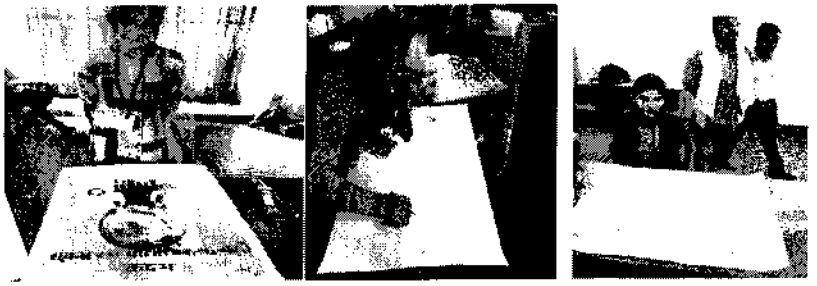

पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता की कार्यक्रम निदेशक, डॉ0 रामजी मिश्रा एवं डॉ0 सन्तोषा कुमार कार्यक्रम समन्वयक, डॉ0 मुकेश कुमार एवं डॉ0 गौरव संकल्प कार्यक्रम सदस्य, श्री एस.के. दुबे रहे।

पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता के जज डॉ0 आशुतोष गुप्ता, डॉ0 जी0के0 द्विवेदी, श्री एस.पी. सिंह डॉ0 नमिता यादव एवं डॉ0 शहाला हसन रही।

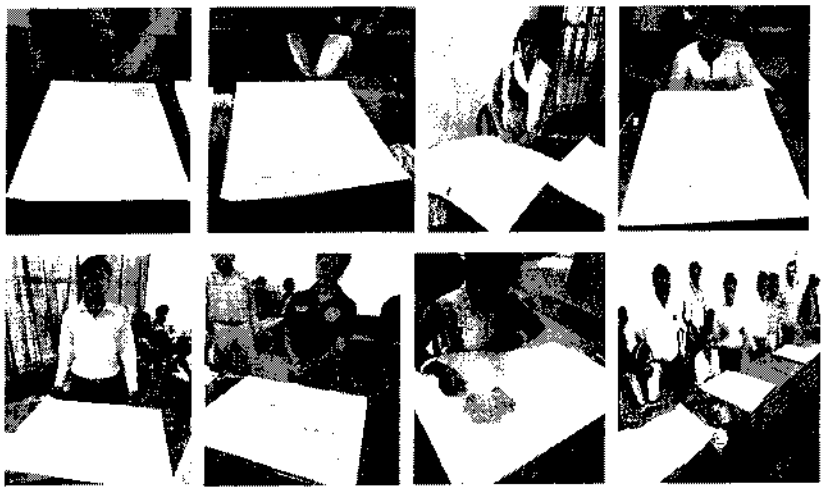

पोस्टर मेकिंग में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी की नेहा सिंह प्रथम, राम मनोहर लोहिया विश्वविद्यालय, फैजाबाद की कविता पाठक को द्वितीय एवं वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर की कृतिका सिंह तीसरे स्थान पर रहीं।

स्पाट पेन्टिंग प्रतियोगिता





स्पाट पेन्टिंग हेतु विषय

- नशा उन्मूलन
- बेटी बचाओं
- कैशलेस सोसाइटी





स्पाट पेन्टिंग प्रतियोगिता की कार्यक्रम निदेशक, डॉ0 आशुतोष गुप्ता कार्यक्रम समन्वयक, डॉ0 ज्ञान प्रकाश यादव एवं डॉ0 यू.एन. तिवारी कार्यक्रम सदस्य, श्री आलोक श्रीवास्तव रहे।

स्पाट पेन्टिंग प्रतियोगिता के जज डॉ0 आशुतोष गुप्ता, श्री एस.पी. सिंह डॉ0 नमिता यादव, डॉ0 जी0के0 द्विवेदी, एवं डॉ0 शहाला हसन रही।













स्पाट पेन्टिंग में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी के राजकुमार को प्रथम एवं इसी विश्वविद्यालय के निखिलेश कुमार प्रजापति को द्वितीय स्थान मिला। तीसरे स्थान पर बुद्धा पी0जी0 कालेज, कुशीनगर के अंकुर कुमार रहे।

म्युजिक (Instrumental) प्रतियोगिता





म्युजिक (Instrumental) प्रतियोगिता की कार्यक्रम निदेशक, प्रो0 पी.के. पाण्डेय कार्यक्रम समन्वयक डॉ0 देवेश रंजन त्रिपाठी एवं शहवाज अहमद कार्यक्रम सदस्य, श्री राजेश पाठक रहे।

म्युजिक (Instrumental) प्रतियोगिता के जज प्रो0 पी.के. पाण्डेय, डॉ0 ओमजी गुप्ता, डॉ0 पी.पी. दुबे डॉ0 ज्योति मिश्रा, डॉ0 नमिता यादव, एवं डॉ0 जया मिश्रा रही।











म्युजिक (Instrumental) में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी के सुधीर गौतम ने बांसुरी बजाकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान हारमोनियम में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी के संदीप पाण्डेय एवं तृतीय स्थान हारमोनियम में ही बुद्धा पी0जी0 कालेज कुशीनगर के अतुल कुमार भारती ने प्राप्त किया।

निबन्ध प्रतियोगिता



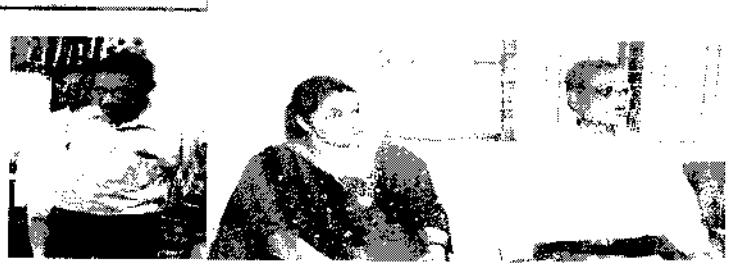

निबन्ध प्रतियोगिता हेतु विषय

- योग शिक्षा का महत्व
- स्वस्थ एवं स्वच्छ भारत
- गंगा स्वच्छता अभियान

निबन्ध प्रतियोगिता की कार्यक्रम निदेशक, डॉ0 टी.एन. दुबे कार्यक्रम समन्वयक डॉ0 अतुल मिश्रा, डॉ0 डी.के. गुप्ता, डॉ0 अब्दुल हफीज एवं श्री धीरज रावत कार्यक्रम सदस्य, श्री श्री दिलीप त्रिपाठी एवं श्री ईश्वर नाथ विश्वकर्मा रहे।

निबन्ध प्रतियोगिता के जज प्रो0 जे.एन. मिश्रा, प्रो0 सुधांशु त्रिपाठी, डॉ0 रामजी मिश्रा एवं डॉ0 रुचि बाजपेई रही।




निबन्ध प्रतियोगिता में रामपाल मौर्या पी0जी0 कालेज, फतेहपुर के शैल प्रताप सिंह प्रथम स्थान पर रहे जबकि द्वितीय एवं तृतीय स्थान महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी की सुरभि श्रीवास्तव एवं अम्बर मणि मिश्रा ने प्राप्त किया।

स्लोगन राइटिंग प्रतियोगिता



स्लोगन राइटिंग प्रतियोगिता हेतु विषय

- पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धि





स्लोगन राइटिंग प्रतियोगिता की कार्यक्रम निदेशक, प्रो0 सुधांशु त्रिपाठी कार्यक्रम समन्वयक डॉ0 रमेश यादव, श्री मनोज कुमार बलवन्त एवं श्री नीरज मिश्रा कार्यक्रम सदस्य, श्री सुधीर तिवारी रहे।

स्लोगन राइटिंग प्रतियोगिता के जज प्रो0 जे.एन. मिश्रा, प्रो0 सुधांशु त्रिपाठी, डॉ0 रामजी मिश्रा एवं डॉ0 रुचि बाजपेई रही।

स्लोगन राइटिंग में वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर की पूजा सिंह प्रथम स्थान पर, शुआट्स नैनी, इलाहाबाद के आकाश बरनवाल द्वितीय स्थान एवं महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी की सुरभि श्रीवास्तव तृतीय स्थान पर रही।

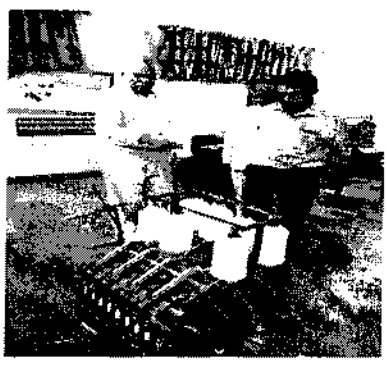

ई–चरखा का निरीक्षण करते हुए मा0 कुलपति जी तथा साथ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व कुलसचिव, प्रो0 जे0एन0 मिश्रा जी एवं विश्वविद्यालय के वरिष्ठ परामर्शदाता, डॉ0 रामजी मिश्र।

समापन सत्र

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय में मंगलवार को उ0प्र0 अन्तरविश्वविद्यालय यूथ फेस्टिवल (युवा संगम) का रंगारंग कार्यक्रम का समापन हुआ। समापन सत्र के अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति, प्रो0 एम0पी0 दुबे जी रहे।

युवा संगम में ओवरआल विजेता टीम एवं उपविजेता टीम को राजर्षि ट्राफी/शील्ड प्रदान की गयी। युवा संगम में ओवरआल विजेता टीम की राजर्षि ट्राफी/शील्ड महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी को कुलपति प्रो0 एम0पी0 दुबे ने प्रदान की, जबकि उपविजेता टीम की राजर्षि ट्राफी/शील्ड वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर को प्रदान किया गया। मेंहदी एवं रंगोली प्रतियोगिता में भी छात्राओं को पछाड़ते हुए छात्रों ने पहले स्थान पर बाजी मारी। इस रंगारंग कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के शिक्षकों, कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने प्रतिभागियों का उत्साह वर्धन किया।

युवा संगम के समापन सत्र का संचालन एवं अतिथि का स्वागत संयोजक डॉ0 श्रुति ने किया। तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रोफेसर सुधांशु त्रिपाठी जी ने किया।



समापन सत्र का संचालन करती हुई कार्यक्रम संयोजक डॉ0 श्रुति तथा बैठे हुए विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति, प्रो0 एम0पी0 दुबे जी।

विजेता प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र व पदक से सम्मानित करते हुए माननीय कुलपति, प्रो0 एम0पी0 दुबे जी।

















युवा संगम

में ओवरआल विजेता टीम को

राजर्षि ट्राफी/शील्ड

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी

को देते हुए

माननीय कुलपति,

प्रो० एम०पी० दुबे जी।

युवा संगम

में उपविजेता टीम को

राजर्षि ट्राफी/शील्ड

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय,
जौनपुर

को देते हुए

माननीय कुलपति,

प्रो० एम०पी० दुबे जी।





कार्यक्रम
के सफल आयोजन
पर
प्रतिभागियो को बधाई देते
हुए
विश्वविद्यालय के
माननीय कुलपति,
प्रोफेसर एम.पी. दुबे जी।



धन्यवाद ज्ञापन देते हुए प्रोफेसर सुधांशु त्रिपाठी



ग्रुप फोटोग्राफ कराते हुए पदक प्राप्त विजेता।



उ0प्र0 राज्य सरकार द्वारा अनुदानित युवा संगम में ओवरआल विजेता टीम एवं उपविजेता टीम को राजर्षि ट्राफी/शील्ड प्रदान की गयी। युवा संगम में ओवरआल विजेता टीम की राजर्षि ट्राफी/शील्ड महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी को कुलपति प्रो0 एम0पी0 दुबे ने प्रदान की, जबकि उपविजेता टीम की राजर्षि ट्राफी/शील्ड वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर को प्रदान किया गया। मेंहदी एवं रंगोली प्रतियोगिता में भी छात्राओं को पछाड़ते हुए छात्रों ने पहले स्थान पर बाजी मारी। इस रंगारंग कार्यकम में विश्वविद्यालय के शिक्षकों, कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने प्रतिभागियों का उत्साह वर्धन किया।

मेंहदी प्रतियोगिता में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी के अमित को प्रथम स्थान एवं इसी विश्वविद्यालय की अंकिता कुमारी को द्वितीय स्थान तथा श्री रतिराम महाविद्यालय, मथुरा की प्रियंका शर्मा को तृतीय स्थान मिला। रंगोली प्रतियोगिता में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी के अतुल कुमार को प्रथम स्थान, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर की प्रीती यादव को द्वितीय स्थान तथा महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी की रोशनी को तृतीय स्थान मिला। कोलाज में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी की नेहा सिंह, अमित कुमार गुप्ता एवं अंकिता ने प्राप्त किया। स्पाट पेन्टिंग में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी के राजकुमार को प्रथम एवं इसी विश्वविद्यालय के निखिलेश कुमार प्रजापति को द्वितीय स्थान मिला। तीसरे स्थान पर बुद्धा पी0जी0 कालेज, कुशीनगर के अंकुर कुमार रहे। पोस्टर मेकिंग में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी की नेहा सिंह प्रथम, राम मनोहर लोहिया विश्वविद्यालय, फैजाबाद की कविता पाठक को द्वितीय एवं वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर की कृतिका सिंह तीसरे स्थान पर रहीं। निबन्ध प्रतियोगिता में रामपाल मौर्या पी0जी0 कालेज, फतेहपुर के शैल प्रताप सिंह प्रथम स्थान पर रहे जबकि द्वितीय एवं तृतीय स्थान महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी की सुरभि श्रीवास्तव एवं अम्बर मणि मिश्रा ने प्राप्त किया।

स्लोगन राइटिंग में वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर की पूजा सिंह प्रथम स्थान पर, शुआट्स नैनी, इलाहाबाद के आकाश बरनवाल द्वितीय स्थान एवं महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी की सुरभि श्रीवास्तव तृतीय स्थान पर रही। फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता में श्री रतिराम महाविद्यालय, मथुरा की शालू शर्मा प्रथम, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी की श्वेता विश्वकर्मा द्वितीय एवं वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर की निधि धानुक तृतीय स्थान पर रहीं। सोलो सांग में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी के संदीप पाण्डेय प्रथम स्थान पर रहे जबकि द्वितीय एवं तृतीय स्थान बुद्धा पी0जी0 कालेज, कुशीनगर के रविशंकर पाठक एवं अतुल कुमार भट्ट ने प्राप्त किया।

प्लेइंग म्युजिक में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी के सुधीर गौतम ने बांसुरी बजाकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान हारमोनियम में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी के संदीप पाण्डेय एवं तृतीय स्थान हारमोनियम में ही बुद्धा पी0जी0 कालेज कुशीनगर के अतुल कुमार भारती ने प्राप्त किया। शार्ट प्ले में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी की टीम को प्रथम स्थान, पूर्वांच वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर की टीम को द्वितीय स्थान एवं शुआट्स नैनी की टीम को तृतीय स्थान मिला।

युवा संगम में ओवरआल विजेता टीम की राजर्षि ट्राफी/शील्ड महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी को कुलपति प्रो0 एम0पी0 दुबे ने प्रदान की, जबकि उपविजेता टीम की राजर्षि ट्राफी/शील्ड वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर को प्रदान किया गया।

प्रतियोगिताएं प्रतिभा तराशने का मंच

'युवा संगम' कार्यक्रम में प्रदेश भर से 20 से अधिक टीमों ने की भागीदारी

अमर उजाला ब्यूरो
इलाहाबाद।

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी की टीम उत्तर प्रदेश [illegible] विश्वविद्यालय यूथ फेस्टिवल [illegible] संगम में ओवरआल चैंपियन रहा। इसके लिए टीम की राजर्षि टंडन प्रदान की गई। ओवरआल [illegible] में वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर की टीम उपविजेता रही। उप राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में मंगलवार को आयोजित युवा संगम कार्यक्रम में प्रदेश भर से 20 से अधिक टीमों ने सहभागिता की। [illegible] उपविजेता टीम को मेजबान मुक्त के कुलपति प्रो. एमपी दुबे ने ट्रॉफी प्रदान की। सांस्कृतिक कार्यक्रमों और आत्मा-आत्म प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

इससे पूर्व उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के कुलपति प्रो. लल्लन सिंह ने कहा [illegible]

मुक्त विश्वविद्यालय में दिनभर चला सांस्कृतिक कार्यक्रमों का दौर



मुक्त विवि में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते प्रतिभागी [illegible] का भी आयोजन किया गया।

[illegible]

मेहंदी, रंगोली में छात्राओं से आगे निकले छात्र

[illegible]

स्पॉट पेंटिंग में राजकुमार, पोस्टर मेकिंग में नेहा अव्वल

[illegible]

स्लोगन राइटिंग में पूजा, फैंसी ड्रेस में शालू ने बाजी मारी

[illegible]

हिन्दुस्तान

तरक्की को चाहिए नया नजरिया

बुधवार, 26 अप्रैल 2017, इलाहाबाद, पांच प्रदेश, 20 संस्करण, नगर संस्करण
www.livehindustan.com वर्ष 8,

काशी विद्यापीठ बना चैंपियन



राजर्षि टंडन मुनिवि में आयोजित युवा संगम में मंगलवार को नाटक का मंचन करते छात्र [illegible]

इलाहाबाद प्रमुख संवाददाता

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में मंगलवार को उत्तर प्रदेश अन्तर्विश्वविद्यालय यूथ फेस्टिवल (युवा संगम) आयोजित किया गया। इस मौके पर कई प्रतियोगिताएं हुईं। इसमें राज्य विश्वविद्यालयों और उससे संबद्ध कॉलेजों के छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग कर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

कई प्रतिस्पर्धाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन पर महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी को ओवरआल चैंपियन घोषित करते हुए राजर्षि ट्रॉफी दी गई। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर उप विजेता रहा। मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एमपी दुबे ने विजेता और उप विजेता को ट्रॉफी दी।

नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. लल्लन जी सिंह ने बतौर मुख्य अतिथि युवा संगम का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि वैश्विक स्तर पर जो देश अपनी विरासत एवं संस्कृति का प्रचार-प्रचार कर रहे हैं वह अमिट छाप छोड़ रहे हैं। ऐसे में विश्वविद्यालय स्तर पर होने वाली इस तरह की प्रतियोगिताएं युवाओं के लिए उनकी प्रतिभाओं को तराशने का एक अच्छा मंच है।

मुक्त विवि के कुलपति प्रो. एमपी दुबे ने देश को युवा शक्ति की याद करते हुए कहा कि इतिहास गवाह है कि वैश्विक स्तर पर जितने भी आंदोलन हुए हैं उनकी सफलता में युवाओं की अहम भूमिका रही है। कार्यक्रम का संचालन एवं अतिथियों का स्वागत युवा संगम की संयोजक डॉ. श्रुति ने किया। युवा संगम एवं विश्वविद्यालय के बारे में जानकारी आयोजन सचिव डॉ. जीके द्विवेदी ने दी। धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ. गिरिजा शंकर शुक्ला ने किया।

युवा संगम

- वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय रहा उप विजेता
- राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में आयोजित हुआ यूथ फेस्टिवल

दैनिक जागरण

युवा संगम में बिखरी कलात्मक प्रतिभा

इलाहाबाद : उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में मंगलवार को इलाहाबाद केंद्र पर युवा संगम (युवा संगम) का शुभारंभ आयोजन हुआ। इसमें पेंटिंग, कैलीग्राफी, मेहंदी, रंगोली (फोक डेकोरेटिव, एवं पेरणादायी) फैंसी ड्रेस, शार्ट फिल्म, फैंसी ड्रेस (सांस्कृतिक परंपरा), अंत्याक्षरी, शार्ट स्पीच, चित्रांकन लेखन तथा पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इसमें इलाहाबाद विश्वविद्यालय व इसके संबद्ध कालेजों के छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेकर अपनी रचनात्मक क्षमता का प्रदर्शन किया। मुख्य अतिथि केंद्रीय शासन प्रयागराज विश्वविद्यालय इलाहाबाद के कुलसचिव प्रो. लालजी सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय स्तर पर ऐसे कार्यक्रम छात्रों की कला प्रतिभा को उजागर करने का एक अच्छा मंच है। इस प्रतियोगिताओं में विभिन्न जाति, धर्म एवं भाषाओं का एक मंच पर देखा जा सकता है। मुक्त शिक्षा के क्षेत्र में ऐसी पहल सराहनीय है। अध्यक्षता कर रहे कुलसचिव प्रो. लालजी सिंह ने कहा कि इलेक्ट्रानिक मीडिया के बढ़ते दौर में ऐसे कार्यक्रम की आवश्यकता है। संचालन व धन्यवाद ज्ञापन प्रो. सुनील ने किया। इस मौके पर डॉ. आरके द्विवेदी डॉ. गिरिजा शंकर शुक्ल मौजूद रहे।



राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में आयोजित युवा संगम प्रतियोगिता में छात्रा प्रस्तुत करते प्रतिभागी • आलोक

अमर उजाला

amarujala.com SELECT

इलाहाबाद बुधवार 26 अप्रैल 2017

'युवा संगम' में हुनर का जलवा

काशी विद्यापीठ ने अपने नाम की ओवरआल ट्रॉफी

मुक्त विधि में हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम



स्याँह पेंटिंग में राजकुमार, पोस्टर मेकिंग में नेहा अग्रवाल

मंगलवार को राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में युवा संगम का शुभारंभ हुआ। [illegible] प्रतियोगिता में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ ने अपने नाम की ओवरआल ट्रॉफी [illegible] कृतिका सिंह और [illegible] ने [illegible] पेंटिंग में राजकुमार [illegible] पोस्टर मेकिंग में नेहा अग्रवाल [illegible] पहले दूसरे [illegible]

भाज

प्रतियोगिताएं युवाओंकी प्रतिभाओं को तराशने का एक मंच: प्रो.लल्लन

[illegible] युवा संगम [illegible] प्रतियोगिता [illegible] प्रो. लालजी सिंह [illegible] विश्वविद्यालय स्तर पर ऐसे [illegible] छात्रों की कला प्रतिभा को उजागर [illegible] अच्छा मंच है। इस प्रतियोगिताओं में विभिन्न जाति, धर्म एवं भाषाओं का एक मंच पर देखा जा सकता है। मुक्त शिक्षा के क्षेत्र में ऐसी पहल सराहनीय है। अध्यक्षता कर रहे कुलसचिव प्रो. लालजी सिंह ने कहा कि इलेक्ट्रानिक मीडिया के बढ़ते दौर में ऐसे कार्यक्रम की आवश्यकता है। संचालन व धन्यवाद ज्ञापन प्रो. सुनील ने किया। इस मौके पर डॉ. आरके द्विवेदी डॉ. गिरिजा शंकर शुक्ल मौजूद रहे।

जनमोर्चा

वैशाख कृष्णपक्ष 27 अप्रैल, 2017

पोस्टर प्रतियोगिता में छात्रा का उत्कृष्ट प्रदर्शन



प्रमाणपत्रों के साथ प्रतिभागी

गौरी (अम्बेडकरनगर) प्र.सं.।

प्रदेश स्तरीय प्रतियोगिता के अन्तर्गत राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय इलाहाबाद अध्ययन केन्द्र युवा संगम में 26 अप्रैल को पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

इस प्रतियोगिता में मानव-मन आदम पीजी कालेज मऊ की द्वितीय वर्ष की छात्र कविता कुशवाहा विशेष रही। प्रतियोगिता अध्ययन केन्द्र प्रयागराज के केन्द्र समन्वयक, प्रेम प्रेमेश डॉ.कमल कुमार पाण्डेय की अगुवाई में गई। इस मौके पर अध्ययन-अध्यापन सभी पूजा वर्मा, चन्द्रशेखर वर्मा व डॉ.राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय डॉ.सुरेन्द्र नाथ तिवारी मौजूद थे।

राष्ट्रीय एकता के प्रति समर्पित

युनाइटेड भारत

इलाहाबाद, बुधवार, 26 अप्रैल, 2017- मूल्य 2.50 रुपया, पृष्ठ 16

बीवर संगीत कार्यक्र
प्रस्तुति नहीं दे रही है

युवाभाक्ति को सकारात्मक दिशा देने में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की अहम भूमिका:प्रो० दुबे

युनाइटेड समाचार सेवा

इलाहाबाद,२५ अप्रैल। उ०प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय में मंगलवार को उ०प्र० अन्तरविश्वविद्यालय यूथ फेस्टिवल (युवा संगम) का रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किया गया। उ०प्र० राज्य सरकार द्वारा अनुदानित युवा संगम में ओवरआल विजेता टीम एवं उपविजेता टीम को राजर्षि ट्राफी/शील्ड प्रदान की गयी। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय इलाहाबाद के कुलपति प्रो० लल्लन सिंह ने कहा कि वैश्विक स्तर पर जो-जो देश अपनी विरासत एवं संस्कृति का प्रसार-प्रचार कर रहे हैं वह अमिट छाप छोड़ रहे हैं ऐसे में विश्वविद्यालय स्तर पर होने वाली इस तरह की प्रतियोगिताएं युवाओं के लिए उनकी प्रतिभाओं को तरासने का एक अच्छा मंच है। इन प्रतियोगिताओं में विभिन्न जाति, धर्म एवं भाषाओं को एक मंच पर देखा जा सकता है। ऐसे कार्यक्रम अनेकता में एकता के प्रतीक हैं। दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में ऐसी पहल सराहनीय है यहां युवाओं को एक मंच मिला है और



उनकी प्रतिभाएं निखर कर सामने आ रही हैं।अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो० एम०पी० दुबे ने देश की युवा शक्ति को याद करते हुए कहा कि इतिहास गवाह है कि वैश्विक स्तर पर जितने भी आन्दोलन हुए हैं उनकी सफलता में युवाओं की अहम भागीदारी है उन्होंने कहा कि कोई बाह्य आक्रमणकारी सर्वप्रथम सांस्कृतिक धरोहरों पर हमला करता है। राजनीतिक और भौतिक गुलामी से खतरनाक मानसिक गुलामी होती है। हमारे देश के युवाओं को अपनी संस्कृति, भाषा, रीति-रिवाज एवं परम्पराओं से रूबरू होना चाहिए और उसकी रक्षा करनी चाहिए। वर्तमान में युवा दिग्भ्रमित और तनाव में हैं। प्रो० दुबे ने कहा कि युवाओं की शक्ति को सकारात्मक दिशा में लाने में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की अहम भूमिका है। भारत के गांव-गांव में छोटे-छोटे नुक्कड़ नाटक, मसलीला, रामलीला और अन्य कार्यक्रमों के द्वारा लोगों में नई जनचेतना का संचार किया जाता रहा है।

इसी क्रम में विश्वविद्यालय स्तर पर अब पुराने लोकगीतों,मूल्यों और आदर्शों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए युवा संगम जैसे कार्यक्रम होते रहने चाहिए ऐसे कार्यक्रमों की भागीदारी से युवाओं में रचनात्मक और क्रियात्मक क्षमताएं बढ़ती है।युवा संगम का संचालन एवं अतिथियों का स्वागत संयोजक डॉ० श्रुति ने किया। युवा संगम एवं विश्वविद्यालय के बारे में आयोजन सचिव डॉ० जी०के० द्विवेदी ने जानकारी दी तथा धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ० गिरिजा शंकर शुक्ला ने किया।इस अवसर पर यूथ फेस्टिवल में रंगोली (अल्पना), कोलाज, मेंहदी, सोलोसांग (भक्ति, देश भक्ति एवं प्रेरणादायी) प्लेइंग म्यूजिक (म्युजिकल इन्स्ट्रूमेन्टस), भार्ट प्ले, फैंसी ड्रेस (राष्ट्रीय एकता), स्लोगन राइटिंग, स्पॉट पेंटिंग, निबन्ध लेखन तथा पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिनमें गांधी शान्ति निकेतन डिग्री कालेज, इलाहाबाद, ग्रामोदय आश्रम पी०जी० कालेज, अम्बेडकरनगर , विद्यावती देवी महाविद्यालय, देवरिया, मां सुकाली देवी डिग्री कालेज, देवरिया, बुद्धा पी०जी० कालेज, कुशीनगर, रामपाल मौर्या पी०जी० कालेज, फतेहपुर, कृशक पी०जी० कालेज मऊ, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी, एस०पी०एस० स्मारक पी०जी० कालेज, अम्बेडकरनगर, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल वि वविद्यालय, जौनपुर, शिपाट्स, नैनी, इलाहाबाद, पी०जी० कालेज पटटी, प्रतापगढ़, उ०प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, डी०वी०एस० डिग्री कालेज, बरना, प्रतापगढ़, सुखदेव प्रसाद त्रिपाठी महाविद्यालय कुशीनगर, मुरली मनोहर टाउन पी०जी० कालेज, बलिया, महात्मा बुद्ध महाविद्यालय, कौशाम्बी, रतिराम महाविद्यालय, मथुरा, डी०एस०एन० पी०जी०कालेज,उन्नाव तथा पूर्वांचल पी०जी०कालेज, आजमगढ़ के लगभग १२० प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

e-paper : www.dailynewsactivist.com इलाहाबाद, बुधवार, 26 अप्रैल 2017, वैशाख मास कृष्ण पक्ष अमावस्या, संवत् 2074 विक्रमी वर्ष-10, अंक-19
website : www.dnahindi.com

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

डेली न्यूज़

शब्द शब्द संघर्ष

RNI NO.: UPHIN/2007/42669

डाक पंजीयन : एसएसपी/एल.डब्लू./एन.पी.-359/2016-18

ऐक्टिविस्ट

काशी विद्यापीठ को ओवरऑल विजेता ट्रॉफी

डेली न्यूज़ नेटवर्क

इलाहाबाद। [illegible]

मुविवि में युवा संगम का रंगारंग आयोजन

- सांस्कृतिक कार्यक्रम देंगे युवाशक्ति को सकारात्मक: प्रो. दुबे
- 'युवा संगम' अनेकता में एकता का प्रतीक: प्रो. लल्लन सिंह

[illegible]



युवा संगम की प्रतिभागी टीमें

इलाहाबाद। [illegible]

U. P. INTER UNIVERSITY YOUTH FESTIVAL

(FUNDED BY U.P. GOVERNMENT)

YUVA SANGAM

(25.04.2017)

With Best Compliments

Organized by

U. P. RAJARSHI TANDON OPEN UNIVERSITY
ALLAHABAD, U. P.

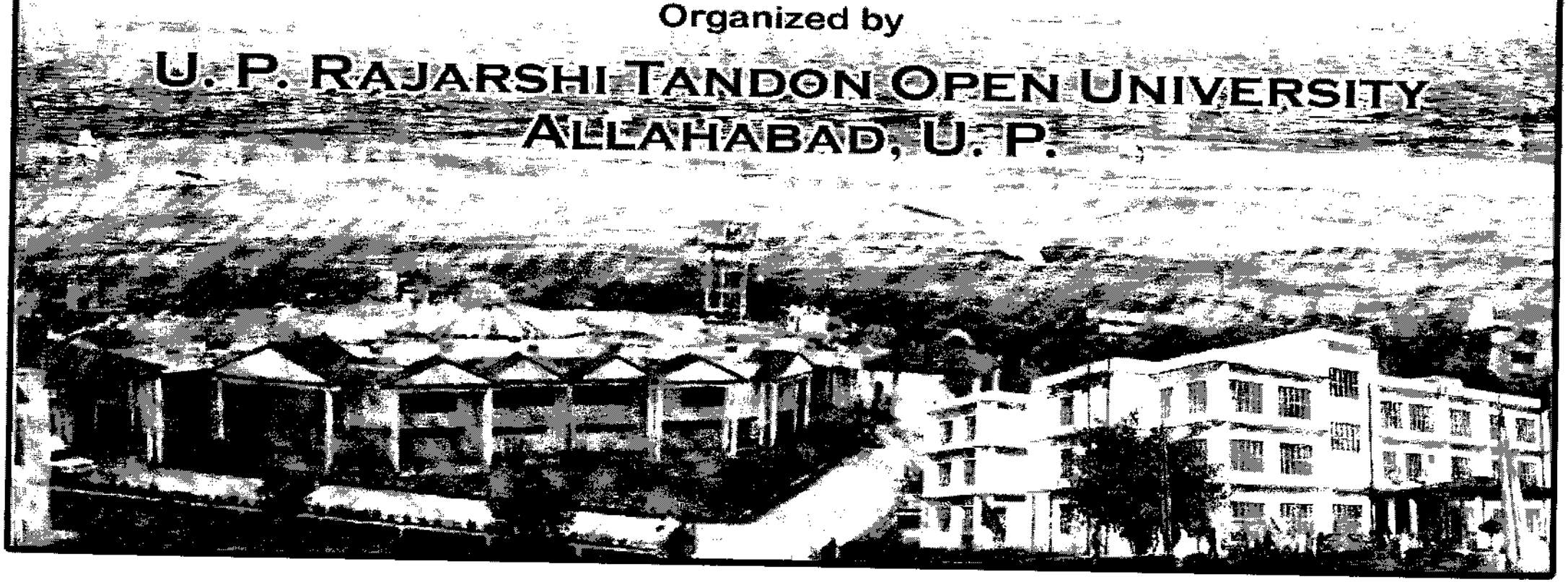

Report

1st National Symposium

on

"Social Development: Health, Education, Poverty, Social Backwardness, Housing & Environment"

29 June, 2015

Organized by
School of Sciences
U. P Rajarshi Tandan Open University, Allahabad

1ST NATIONAL SYMPOSIUM
ON
"SOCIAL DEVELOPMENT:
HEALTH, EDUCATION, POVERTY, SOCIAL BACKWARDNESS,
HOUSING & ENVIRONMENT"

29th June, 2015

Jointly Organized by:
Government of India, Ministry of Statistica and Programme Implementation, NSSO, R.O. Allahabad
&
School of Sciences, U.P.R.T.O.U., Allahabad

Patron
Prof. M. P. Dubey
Hon'ble Vice Chancellor, U.P.R.T.O.U., Allahabad

School Director
Dr. P. P. Dubey
Director, School of Agricultural Sciences

Convener
Dr. Shruti
Astt. Prof. (Statistics)
School of Sciences

Organizing Secretary
Dr. G. K. Dwivedi
Astt. Prof. (Education)
School of Education

Co-Ordinators
Dr.Dinesh Gupta, Academic Consultant (Chemistry), School of Sciences
Gaurav Sankalp, Academic Consultant (Commerce), School of Management Studies
Dr.Alka Verma, Academic Consultant (Social Work), School of Social Sciences

Venue
Saraswati Parisar
U.P.R.T.O.U., Shantipuram, Sector – T, Phafamau, Allahabad

Report

On

National Symposium

on

"Social Development: Health, Education, Poverty, Social Backwardness, Housing & Environment"

Social Development theory attempts to explain qualitative changes in the structure and framework of society that help the society to better realize aims and objectives. Development can be defined in a manner applicable to all societies' at all historical periods as an upward ascending movement featuring greater levels of energy, efficiency, quality, productivity, complexity, comprehension, creativity, mastery, enjoyment and accomplishment. Development is a process of social change, not merely a set of policies and programs instituted for some specific results. During the last five centuries this process has picked up in speed and intensity, and during the last five decades has witnessed a marked surge in acceleration. An emerging 'population health' framework for understanding inequalities in health identifies the structure of social relations as a crucial factor in shaping human health and well-being. However, there remain many unanswered questions about the mechanisms through which social relations might shape the health status of individuals and populations.

In the present scenario where daily new challenges are being faced by social scientists therefore proposed National Symposium aims to bring together the applied & theoretical aspects of above social development indicators. It also focuses to understand & develop skills for statistical consultation, analysis & applied researches in the related fields.

The symposium will provide valuable output for the researcher and scholars of the field, this will help them to evaluate the various factors which were contributing in the field of social development.

REPORT

OF

INAUGURAL SESSION

Schedule of Statistics Day - 29th June, 2015

Symposium

On

Social Development: Health, Education, Poverty, Social Backwardness, Housing & Environment

(29th June, 2015 – Statistics Day)

Lighting of the Lamp	:	10:30 am
Floral Tribute & Garland of Maa Saraswati & P.C. Mahanalobis:		10:35 am
Welcome and Introduction of Guest with bouquet (by Dr Shruti) 1-Chief Guest Prof. R. P. Mishra 2-Guest of Honour Prof. Pradeep Bhargava 3- Presided by Mr. P. S. Bose, DDG, NSSO	:	10:40 am
About the Day (By Mr. Shiwam Srivastava)	:	10:45 am
Address by Prof Pradeep Bhargava	:	10:55 am
Address by Prof. R. P. Mishra	:	11:15 am
Ceremonials Greetings of the Guest	:	11:35 am
Address by Mr. P. S. Bose, DDG, NSSO	:	11:40 am
Vote of Thanks (Dr. Shruti)	:	12:00 pm
National Anthem	:	12:10 pm
Tea break	:	***12:15 pm – 12:30 pm***

The Inaugural Session began with the traditional welcome of the dignitaries, offering to 'Roli Tilak' with chanting of Mantras and Shankh Naad.

Thereafter, lightening of Lamp which is symbol of knowledge and floral offering & garlands & invocation of Goddess of Knowledge 'Maa Saraswati' with 'Saraswati Vandana'- by Mr. Rajat Singh.

The session followed by 'Welcome Address' by the convener, Dr. Shruti. She introduced all distinguish guests on the dais. Under this process all dais persons were florid by the bouquet.

Dr. G. K. Dwivedi, the organizing secretary, expressed his views 'About the University'. In this he discussed about open and distance system of education through each step of this University since beginning. He narrated its working style, its courses, & whole system of education of this University.

In his address, Dr. P. P. Dubey, Director, School of Agricultural Sciences, introduced the aims and objectives of the Symposium. In this he explained how Statistics play an important role in the field of modern-era research and agriculture.

On the moment of 'Ceremonial Greetings', the 'Angwastram' and Mementoes were presented by the hon'ble Vice-Chancellor of UPRTOU to all respected guests on the dais.

Prof. Pradeep Bhargarva Dirctor G.B. Pant Institute Allahabad said all policy needs data; data are ital for each activity. He explored the views on the present socio economic conditions and discussed how these conditions can be changed.

Dr. P. S. Bose, DDG, NSSO, gave his real/official life experience and said how these social indicators are affected by the wrong policy due to wrong information.

Presiding the inaugural session Prof. R. P. Mishra, Ex. VC, Allahabad University, said that a common man may facilitate through Statistics. Today we are getting heterogeneity of data and it should be properly analyzed to get right and concept result. He explores his views on the general socio economic educational conditions of U.P. east and west.

The 'Vote of Thanks' was proposed by Dr. Shiwam Srivastava, Dy. Director, NSSO.

The inaugural session came to an end with the National Anthem & all dispersed for the Tea.

REPORT

PRE & POST LUNCH

SESSIONS

S. No.	Resource Person / Lecture Title	Time
1.	Lecture on "Inequalities in Education Sector- Reflection form Sarva Shiksha Abhiyan", delivered by ***Prof. S. K. Pant***, G. B. Pant Institute of Social Sciences, Jhusi, Allahabad.	12:30 pm – 01:00 pm
2.	Lecture on "Agriculture, Environment & Natural Resource Management", delivered by ***Dr. P. P. Dubey***, Director, School of Agricultural Sciences, UPRTOU, Allahabad.	01:00 pm -01:20 pm
3.	Lecture on "Sustainable Development – Imperatives for the Environment" delivered by ***Dr. Tanuj Nandan,*** MNNIT, Allahabad.	01:20 pm – 01:40 pm
4.	Presentation by the team of Interns, NSSO, RO, Allahabad.	01:40 pm – 02:10 pm
Lunch		***02:10 pm – 02:45 pm***
5.	Lecture on "Grameen Samaj Aur Manrega" delivered by ***Dr. R. P. S. Yadava,*** Director, School of Humanities, UPRTOU, Allahabad.	02:45 pm – 03:05 pm
6.	Lecture on "Statistical Data related with Health, Poverty & Environment", delivered by ***Dr. Shruti***, Assistant Professor (Statistics), School of Sciences, UPRTOU, Allahabad.	03:05 pm – 03:25 pm
7.	Lecture on "Role of Education for Social Development: An Study", delivered by ***Dr. G. K. Dwivedi***, Assistant Professor (Education), School of Education, UPRTOU, Allahabad.	03:25 pm – 03:45 pm
8.	Lecture on "Analysing Social Development Factors by Different Statistical Tools ", delivered by ***Dr. Gaurav Sankalp***, Academic Consultant (Commerce), School of Management Studies, UPRTOU, Allahabad.	03:45 pm – 04:00 pm
Tea & Certificate Distribution		***04:00 pm – 4.30 pm***

S. No.	Resource Person / Lecture Title	Time
1.	Lecture on "Inequalities in Education Sector- Reflection form Sarva Shiksha Abhiyan", delivered by ***Prof. S. K. Pant***, G. B. Pant Institute of Social Sciences, Jhusi, Allahabad.	12:30 pm – 01:00 pm
2.	Lecture on "Agriculture, Environment & Natural Resource Management", delivered by ***Dr. P. P. Dubey***, Director, School of Agricultural Sciences, UPRTOU, Allahabad.	01:00 pm -01:20 pm
3.	Lecture on "Sustainable Development – Imperatives for the Environment" delivered by ***Dr. Tanuj Nandan,*** MNNIT, Allahabad.	01:20 pm – 01:40 pm
4.	Presentation by the team of Interns, NSSO, RO, Allahabad.	01:40 pm – 02:10 pm
Lunch		***02:10 pm – 02:45 pm***
5.	Lecture on "Grameen Samaj Aur Manrega" delivered by ***Dr. R. P. S. Yadava,*** Director, School of Humanities, UPRTOU, Allahabad.	02:45 pm – 03:05 pm
6.	Lecture on "Statistical Data related with Health, Poverty & Environment", delivered by ***Dr. Shruti***, Assistant Professor (Statistics), School of Sciences, UPRTOU, Allahabad.	03:05 pm – 03:25 pm
7.	Lecture on "Role of Education for Social Development: An Study", delivered by ***Dr. G. K. Dwivedi***, Assistant Professor (Education), School of Education, UPRTOU, Allahabad.	03:25 pm – 03:45 pm
8.	Lecture on "Analysing Social Development Factors by Different Statistical Tools ", delivered by ***Dr. Gaurav Sankalp***, Academic Consultant (Commerce), School of Management Studies, UPRTOU, Allahabad.	03:45 pm – 04:00 pm
Tea & Certificate Distribution		***04:00 pm – 4.30 pm***

The first session begins with a lecture of Prof. S. K. Pant, Head, G. B. Pant Institute of Social Sciences, Jhusi, Allahabad; on Inequalities in Education Sector- Reflection form Sarva Shiksha Abhiyan. In which she told about the different challenges in educational sector.

In his lecture Dr. Tanuj Nandan discuss about the Sustainable Development – Imperatives for the Environment.

Dr. P. P. Dubey Director, School of Agriculture Sciences said delivered his lecture on Agriculture, Environment & Natural Resource Management. In his lecture he blow some lights on the merits and demerits of the effect of social development on agriculture and environment.

Dr. R. P. S. Yadava in his lecture on Grameen Samaj Aur Manrega, he stated about the real field benefits & problems about Manrega.

In her lecture, Dr. Shruti, Assistant Professor (Statistics), School of Sciences, UPRTOU, Allahabad, highlighted the data related with Health, Poverty & Environment and also compare with earlier data.

Dr. G. K. Dwivedi, Assistant Professor (Education), School of Education, UPRTOU, Allahabad, discuss about the how the education play a important role for the development of any society.

Dr. Gaurav Sankalp, Academic Consultant (Commerce), School of Management Studies, UPRTOU, Allahabad; discuss about the analyzing social development factors by different statistical tools.

Annexure

1. *List of Registered Participants*
2. *List of Guests & Resource Persons*
3. *Sample of Certificate*
4. *Copy of Boucher*
5. *Copy of Invitation Card for Inaugural Session*
6. *Photo Gallery*

List of Participants 29June 2015 (Statistics Day)

Sr. No.	Name & Designation	Affiliation	Ph. No.
1.	Udai Kumar Verma (SSO)	NSSO (FOD), Allahabad	9936243385
2.	A.U. Junaied (SSO)	NSSO (FOD), Allahabad	8874480479
3.	A.K. Rai(SSO)	NSSO (FOD), Allahabad	8574160058
4.	Lal Chandra (SSO)	NSSO (FOD), Allahabad	9454950926
5.	Ajeet Kushwaha (SSO)	NSSO (FOD), Allahabad	8574958100
6.	Achal Singh (SSO)	NSSO (FOD), Allahabad	8924097161
7.	R.S. Srivastava (SSO)	NSSO (FOD), Allahabad	9335253885
8.	Mohd. Sagir Khan (Stenographer)	NSSO (FOD), Allahabad	9450614593
9.	B.P. Singh (Ret. Superintening Officer)	NSSO (FOD), Allahabad	9936104489
10.	Praveen Kumar Srivastava (Field Investigtor)	NSSO (FOD), Allahabad	9453613600
11.	Prem Chand Kumar (Jr. Statistical Officer)	NSSO (FOD), Allahabad	9369638169
12.	Ajai Kumar (Jr. Statistical Officer)	NSSO (FOD), Allahabad	7408773647
13.	Lokesh Kumar Mishra (Jr. Statistical Officer)	NSSO (FOD), Allahabad	8765507271
14.	Manish Tripathi (Jr. Statistical Officer)	NSSO (FOD), Allahabad	9452822031
15.	Sandeep Anand Pal (Jr. Statistical Officer)	NSSO (FOD), Allahabad	9452367859
16.	Vivek Prakash (Jr. Statistical Officer)	NSSO (FOD), Allahabad	9454183580
17.	Pankaj Kumar (Jr. Statistical Officer)	NSSO (FOD), Allahabad	9415253961
18.	Vikas Srivastava (Jr. Statistical Officer)	NSSO (FOD), Allahabad	8416926083
19.	Jaya Mishra (Assit. Prof.)	NGBU, Allahabad	9335137223
20.	Noor Saba Begum (Research Scholar)	G.B. Pant, Jushi, Allahabad	9336772747
21.	Rama Kant(Research Scholar)	Dr. Harising Gour Universiyt, Sagar, (M.P.)	9575547255
22.	Shyam Sunder Sing (Research Scholar)		9669513551
23.	Santosh Kumar Maurya (Research Scholar)	NGBU, Allahabad	7054380380
24.	Nagendra Pratap Bharti (Research Scholar)	NGBU, Allahabad	9721178501
25.	Dr. Neetu Mishra (Assit. Prof.)	Centre food Technology, University of Alld.	9415347999
26.	Binod Yadav	VBSPU, Jaunpur	8808961026
27.	Vikas Mishra (Student)	BHU, Varanashi	8960727761
28.	Rishikesh Yadava (Student)	IIT, Kanpur	8726162982

29.	Roopam Chandra (Research Scholar)	University of Allahabad	9935385200
30.	Veenita Singh (Research Scholar)	University of Allahabad	9532111088
31.	Shantanu Saurabh (Research Scholar)	University of Allahabad	9889798782
32.	Mehtab Ahamad Khan (Research Scholar)	University of Allahabad	9453363095
33.	Shikha Srivastava(Research Scholar)	University of Allahabad	9415164462
34.	Arun Pratap Singh (Research Scholar)	University of Allahabad	9839558323
35.	Atul Kumar Verma (Research Scholar)	University of Allahabad	9532015608
36.	Pradeep Kumar Upadyay (Research Scholar)	University of Allahabad	9415364462
37.	Amit Singh (Research Scholar)	University of Allahabad	9918295096
38.	Ajay Ahmad Khan (Research Scholar)	Dr. Harising Gour Universiyt, Sagar, (M.P.)	9074849646
39.	Vishu Maya Rai (Research Scholar)	BHU, Varanasi	9453040514
40.	Dr. Awadh Narayan (Lecturer)	Basant Degree College, Alld.	9005652240
41.	Dr. Yogesh Mishra (Assit. Prof.)	Bhavan's Mehta Mahavidyalaya, Kaushambi	9450635646
42.	Dr. Satish Chandra Tiwari (Assit. Porf.)	Bhavan's Mehta Mahavidyalaya, Kaushambi	9935278811
43.	Dr. Sunil Kumar Tripathi (Asso. Prof.)	Allahabad Degree Colledge, Allahabad	9450590013
44.	Dr. Priya Soni Khare (Assit. Prof.)	University of Allahabad	9450622106
45.	Dr. Ashutosh Kumar Srivastava (Faculty)	CMP Degree Colledge, Allahabad	9415662066
46.	Sanjay Singh (Research Scholar)	University of Allahabad	8738934647
47.	Dr. Upendra Nath Tiwari (Lecturer)	UPRTOU, Allahabad	7525048016
48.	Renu Srivastava (Research Scholar)	G.B. Pant Social Sciences Institute, Alld.	8005316011
49.	Mayank Kumar Rai (Research Scholar)	University of Allahabad	9807752413
50.	Dr. R. K. Singh (Asso. Prof.)	University of Allahabad	9415214657
51.	Amit Kumar Singh (Research Scholar)	University of Allahabad	9454948797
52.	Gautam Kohli (Research Scholar)	University of Allahabad	9454948797
53.	Shivi Srivastava (Research Scholar)	University of Allahabad	8601584513
54.	Shubhi Srivastava (Research Scholar)	University of Allahabad	8303891912
55.	Rajoo Prasad (Research Scholar)	Dept. Of Economics, University of Alld.	09452975562
56.	Anand Tripathi (Research Scholar)	Dept. Of Economics, University of Alld.	8574135504
57.	Varsha (Research Scholar)	Dept. Of Economics, University of Alld.	7668865719
58.	Mukesh Kumar (Research Scholar)	Dept. Of Economics, University of Alld.	9793500845
59.	Rinku Kumar (Research Scholar)	Dept. Of Economics, University of Alld.	9453350304

60.	Divya Pal (Research Scholar)	Dept. Of Economics, University of Alld.	9453313455
61.	Mehtab Khan (Research Scholar)	University of Allahabad	9807072887
62.	Dr. Archana Tripathi (Assit. Prof.)	CMP, Degree College, Allahabad	8423528828
63.	Dr. Mridula Mishra (Principal)	Sai Ram B.tech. College, Phoolpur	9450077238
64.	Dr. Bhavna Chauhan (Assit. Prof.)	CMP, Degree College, Allahabad	9918733444
65.	Bhupesh Kumar Tripathi (Assit. Prof.)	CMP, Degree College, Allahabad	9956579953
66.	Shivani Singh (Student)	University of Allahabad	9956005631
67.	Sarvesh Singh (Research Scholar)	University of Allahabad	9415364462
68.	Manoj Kumar Singh (Research Scholar)	Dr. Harising Gour Universiyt, Sagar, (M.P.)	9074942232
69.	Ram Kishor (Research Scholar)	University of Allahabad	8181022749
70.	Suman Bhardwaj (Research Scholar)	University of Allahabad	
71.	Mala Pathak (Research Scholar)	University of Allahabad	9452812705
72.	Laxmi Gautam (Research Scholar)	University of Allahabad	7081595612
73.	Shivam Jaiswal (Research Scholar)	University of Allahabad	9807233646
74.	Dr. P.S. Pundir (Assit. Prof.)	University of Allahabad	9411884011
75.	Alok Kumar Singh (Research Scholar)	University of Allahabad	9415318288
76.	Anuj Kumar Singh (Research Scholar)	University of Allahabad	9415318288

Registration Form

Name:

Designation:

Affiliation:

Full Postal Address:

Email:

Phone / Mobile:

Accommodation Required: Yes: No:

for research Scholars Registration Form will be forwarded by the Dean / Director / HOD / Supervisor.

Signature With Seal

Patron
Prof. M. P. Dube, Hon'ble Vice Chancellor

School Director
Dr. P.P. Dube, Director, School of Agricultural Sciences

Convener
Dr. Shruti, Assistant Professor (Statistics)

Organizing Secretary
Dr. G. K, Dwivedi, Assistant Professor (Education)

Co-Ordinators
Dr. D. K, Gupta, Academic Consultant (Chemistry)
Dr. Gurav Sankalp, Academic Consultant (Commerce)
Dr. Alka Verma, Academic Consultant (Social Work)

Organizing Team
Dr. Ranjana Srivastava
Dr. U.N. Tiwari
Dr. Smita Agrawal
Dr. Deepshikha Srivastava
Dr. Atul Mishra
Mr. Neeraj Mishra
Mr. Shivam Mishra
Mr. Dheeraj Rawat
Mr. Shahbaz Ahmad
Mr. Indubhushan Pandey
Mr. Alok K. Srivastava

National Symposium On "Social Development: Health, Education, Poverty, Social Backwardness, Housing and Environment"

29th June, 2015 (Statistics Day)

Jointly Organized by
School of Sciences, UPRTOU, Allahabad
&
Government of India, National Sample Survey Office, Ministry of Statistics & Programme Implementation, Regional Office, Allahabad

Patron
Prof. M. P. Dube
Hon'ble Vice Chancellor

School Director
Dr. P. P. Dube
Director, School of Agricultural Sciences

Convener
Dr. Shruti
Astt. Prof. (Statistics)

Organizing Secretary
Dr. G. K, Dwivedi,
Astt. Prof. (Education)

Venue
Saraswati Campus, U.P. Rajarshi Tandon Open University
Shantipuram, Sector – F, Phapfamau, Allahabad
U.P., India-211021, www.uprtou.ac.in

Theme of the Symposium:

Social Development theory attempts to explain qualitative changes in the structure and framework of society, that help the society to better realize aims and objectives. Development can be defined in a manner applicable to all societies at all historical periods as an upward ascending movement featuring greater levels of energy, efficiency, quality, productivity, complexity, comprehension, creativity, mastery, enjoyment and accomplishment. Development is a process of social change, not merely a set of policies and programs instituted for some specific results. During the last five centuries this process has picked up in speed and intensity, and during the last five decades has witnessed a marked surge in acceleration. An emerging 'population health' framework for understanding inequalities in health identifies the structure of social relations as a crucial factor in shaping human health and well-being. However, there remain many unanswered questions about the mechanisms through which social relations might shape the health status of individuals and populations. The symposium will provide valuable output for the researcher and scholars of the field, this will help them to evaluate the various factors which were contributing in the field of social development.

Target Audience:

Participants are expected to come from the areas of Social Sciences, Humanities, Education, Commerce and Management, Population Studies, Agricultural Sciences, Medical, Computational, Mathematical, Physical, Chemical, Health & Life Sciences etc.

Experts:

Eminent experts from the reputed universities and institutes shall be invited to deliver their lecture on the relevant themes and issues included in the Symposium.

Registration Fees:

There is no registration fees for attending the Symposium, however the seats are limited and will be allotted on the FCFS basis. The participant should send their prior Information through telephone and filled registration form to the organizers through e-mail before the last date 20.06.2015

Accommodation: & Fooding :

The university has its own Guest House in which accommodation may be provided to the limited number of outstation delegates, on their demand well in advance. University will provided working lunch & tea in breaks between the sessions only. Participants will bear breakfast and dinner their own. All the expenses of the stay and food will be borne by the delegates / participants themselves.

Contact Details:

Please send your confirmation about registration & travel plan on

Email: symposiumsos2015@gmail.com

Dr Shruti:	**09415179841, 07525048051**
Dr. G. K. Dwivedi	09455413751, 07525048012
Dr Gaurav Sankalp:	07525048043, 09415633593
Dr Dinesh K. Gupta:	07525048053, 09450622596

And send your filled Registration Form at

Dr Shruti, Assistant Professor (Statistics)
School of Sciences,, Saraswati Campus (Academic Block), U.P. Rajarshi Tandon Open University, Shantipuram, Sector – F , Phapfamau, Allahabad , U.P., India-211013

About the University:

"Reach To Unreach" being the objective of U.P. Rajarshi Tandon Open University, which has been established by the UP Act No. 10 of 1999 as passed by the Uttar Pradesh legislature. It is the one and only State Open University in Uttar Pradesh. This University was named after Bharat Ratan Rajarshi Purushottam Das Tandon, an illustrious son of India from Allahabad who made great sacrifices for the sake of our independence and dedicated himself to the cause of Hindi as a National Language. The jurisdiction of this University is entire state of Uttar Pradesh. The University has embossed a niche for itself among the premier academic institutions of open learning and distance education. This University conducts its academic activities through a diversity of means of distance and long-lasting education, and functions in cooperation with the existing Universities, Colleges and Institutions of higher learning, and makes full use of the infrastructure of these organizations. The courses offered by UPRTOU are recognized by the joint committee of UGC, AICTE and DEB. The University offers wide range of educational programmes related to general & professional education, training, research and extension work through open and distance learning. The University started functioning from the session 1999-2000 with 3481 distance learners. In the current session i.e. session 2014-2015more than 65,000 distance learners were enrolled for 73 academic programmes at more than 650 study centers. Since inception the cumulative strength is 2.7 lakh learners. At present there are ten regional centers of university located at Lucknow, Varanasi, Bareilly, Goraklipur, Allahabad, Agra, Ghaziabad, Meerut, Jhansi and Kanpur. The head quarter of the University is at Shantipuram Sector-F, Phaphamau, Allahabad which is equipped with good infrastructure facilities like Buildings, Library, Wi-Fi network, Guest House, Media Centre etc..

About Allahabad :

Allahabad is the one of oldest cities of the world having enriched with glorious history. City is situated at the confluence of Holy Rivers Ganga and Yamuna, called Triveni Sangam due to invisible Saraswati . Every year in the month of January Magh Mela is organized at Sangam while every six year Ardh Kumbh and every twelve year Maha Kumbh (Biggest fair of the World) is organized . It is one of the fastest growing cities in India. The city is also known as 'Prayag' or 'Tirth Raj'. It is located 201 Km North of the state capital Lucknow, 121 Km East from spiritual city Varanasi, 199 Km North - West from industrial city Kanpur and 423 Km. West from the Historical city Jhansi. Allahabad has an area of about 70 km. and is 98 mt. (332ft) above sea level. The city temperature at June is between 36° C - 45° C. The district has a population of 60 lakh approx while Allahabad city has a population of about 12 lakh as per the 2011 census and its literacy rate is 72.3%. Hindi, Urdu, Bengali and English are the spoken languages and all major religions are practiced in the city. Allahabad is the educational hub of the country since ancient period . This city has number of world fame educational institutes and historical places.

Symposium

On

"Social Development: Health, Education, Poverty, Social Backwardness, Housing and Environment"

29th June, 2015 (Statistics Day)

Jointly Organized by

School of Sciences, U. P. Rajarshi Tandan Open University, Allahabad
&
Govt. of India, Ministry of Statistics & Programme Implementation,
National Sample Survey Organization, Allahabad

Certificate

This is to Certified that Prof./ Dr./ Mr./ Ms. _____
_____ participated in the Symposium On "Social Development: Health, Education, Poverty, Social Backwardness, Housing and Environment" during 29th June, 2015 (Statistics Day) at School of Sciences, U. P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad.
He/ She has delivered a Talk on "_____
_____"

Dr. Shruti
Convener
UPRTOU, Allahabad

Mr. Shivam Srivastava
Dy. Director
NSSO, RO, Allahabad


NSSO
सांख्यिकी दिवस
29 जून, 2015
भारत सरकार
नेशनल सैम्पल सर्वे ऑफिस
सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय
क्षेत्रीय कार्यालय इलाहाबाद
STATI
29 June
Governme
National S
Ministry of
Regional O


29 जून, 2015
29 June, 2015
भारत सरकार
नैशनल सैम्पल सर्वे ऑफिस
सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय
क्षेत्रीय कार्यालय इलाहाबाद
Government of India
National Sample Survey Office
Ministry of Statistics & P.I.
Regional Office, Allahabad
NSSO विश्वास, सही आँकड़े - सही विकास
Dedicated to Prof. P.C. Mahalanobis

- राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में संगोष्ठी
- सांख्यिकी शोध और अध्ययन का उद्देश्य होना चाहिए कल्याणकारी

जासं, इलाहाबाद : सांख्यिकी का उपयोग सत्य की खोज में महत्वपूर्ण रूप से किया जा सकता है। सांख्यिकी शिक्षकों का दायित्व है कि आंकड़ों के दुरुपयोग को रोक समाजहित में प्रयोग करें। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. आरपी मिश्र ने यह बाते कही। वह सोमवार को उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में आयोजित 'सोशल डेवलपमेंट हेल्थ एजूकेशन पॉवर्टी सोशल बैक वल्डनेस हाउसिंग एंड एन्वार्यमेंट' विषयक सेमिनार में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। कहा कि सांख्यिकी शोध और अध्ययन का उद्देश्य कल्याणकारी होना चाहिए।

विशिष्ट अतिथि प्रो. प्रदीप भार्गव ने स्मार्ट टी की संकल्पना पर प्रकाश डाला। उन्होंने रों एव गांवों के वर्तमान परिदृश्य वांछनीय जीवनगत परिस्थितियों, रहन-न, भोजन, स्वास्थ्य सुविधाएं एवं ायात से जुड़ी सार्थक जानकारिया दी। प्रेम प्रकाश दुबे ने कृषि के क्षेत्र में

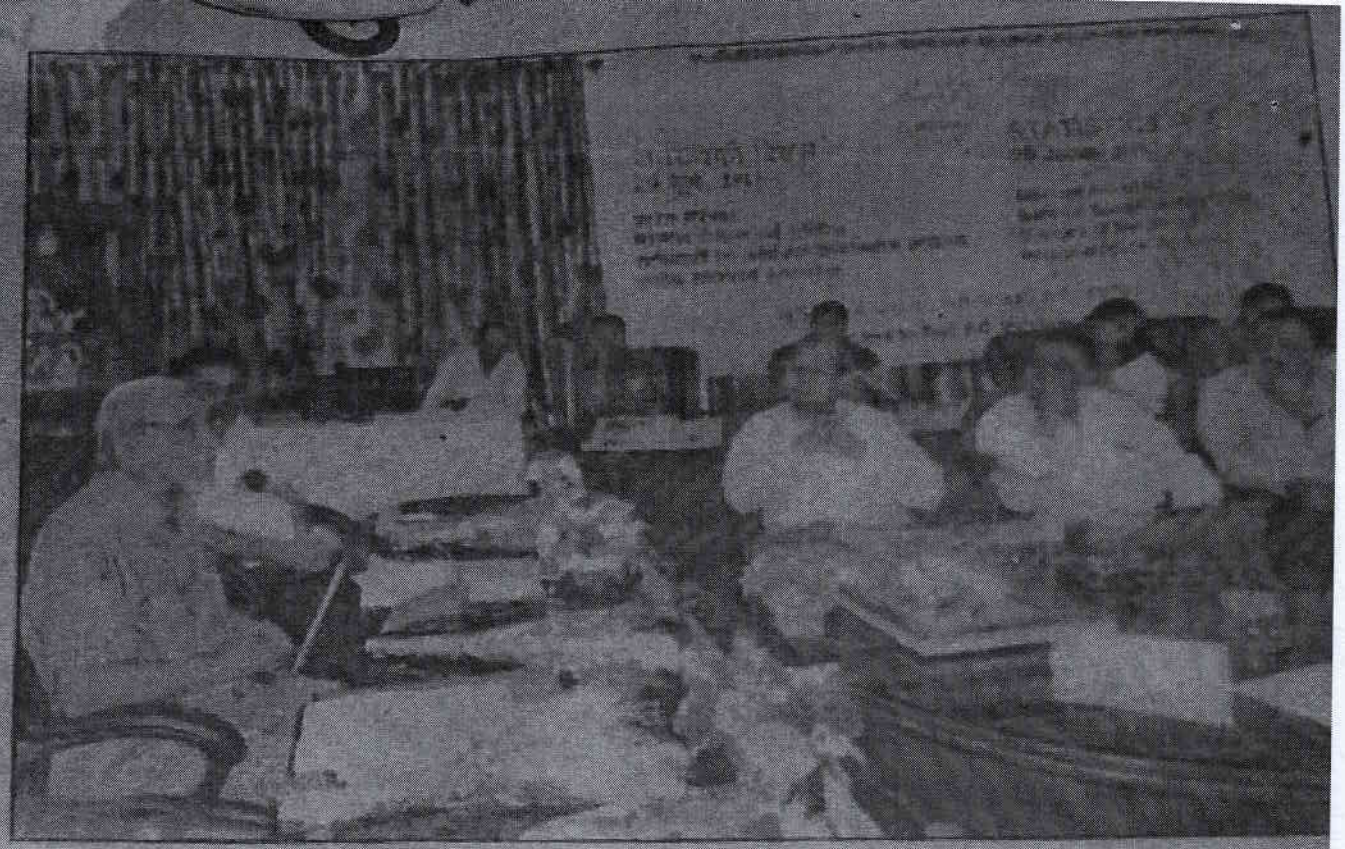

राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय में आयोजित गोष्ठी में बोलते पूर्व वीसी आरपी मिश्र

सांख्यिकी के प्रयोग पर चर्चा की। संयोजक डॉ. श्रुति ने स्वागत, डॉ. स्मिता अग्रवाल ने संचालन एवं आभार शिवम श्रीवास्तव ने ज्ञापित किया। इस दौरान प्रो. एसके पंत, डॉ. तनुज नंदन, डॉ. पीपी दुबे, डॉ. आरपीएस यादव, डॉ. गौरव संकल्प आदि मौजूद रहे।

सफाईकर्मियों ने दिया धरना

इलाहाबाद: सफाई कर्मचारी यूनियन आवास विकास परिषद झूंसी योजना दो-तीन के बैनर तले सफाईकर्मियों ने सोमवार को कर में धरना दिया।

डीएम को संबोधित ज्ञापन सौंप सफाईकर्मियों ने न्यूनतम पेंशन, बर्दी दे नियमितीकरण की मांग की। सफाईक अधिशासी अभियंता पर तानाशाह अपनाने का आरोप लगाते हुए जताई। धरने में राजू, किशोर, जुबेद रमेश, गनेश, रजनीश, नीरज, बंटी शामिल रहे।



प्रेस विज्ञप्ति

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विष्वविद्यालय के विज्ञान विद्याषाखा में 29 जून 2015 को नेषनल सैम्पल सर्वे ऑफिस इलाहाबाद के संयुक्त तत्वाधान से सांख्यकी दिवस का आयोजन प्रातः दस बजे से विष्वविद्यालय के शैक्षणिक परिसर में किया जायेगा। जिसके मुख्य अतिथि प्रो.आर.पी. मिश्रा, पूर्व कुलपति, इलाहाबाद विष्वविद्यालय, इलाहाबाद तथा विषिष्ट अतिथि प्रो. प्रदीप भार्गव, निदेषक, जी.बी. पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान होंगे। इस कार्यक्रम में श्री पी.एस. बोस, डी.डी.जी., एन.एस.एस.ओ., इलाहाबाद तथा श्री षिवम् श्रीवास्तव, उप–निदेषक, एन.एस.एस.ओ., इलाहाबाद रहेगें। इस कार्यक्रम में कॉमर्स इकोनॉमिकस तथा सांख्यकी के शोध छात्र–छात्रायें तथा षिक्षकगण प्रतिभाग कर सकते हैं। इस कार्यक्रम के संयोजक डॉ. श्रुति, अस्सिेंट प्रोफेसर, विज्ञान विद्याषाखा, यू.पी.आर.टी.ओ.यू, इलाहाबाद हैं।

इसके अन्तर्गत ''सोषल डेवलपमेन्ट; हेल्थ, एजूकेषन, पॉवर्टी, सोषल बैकवर्ल्डनेस, हाउसिंग एण्ड एन्वॉर्यन्मेंट'' विषय पर एक दिवसीय सिम्पोजियम का आयोजन होगा। जिसमें प्रो. एस.के.पंत.,जी.बी.पंत. इन्स्ट्टीयूट, झूंसी, इलाहाबाद, डॉ. पी.पी. दुबे, यू.पी.आर.टी.ओ.यू., इलाहाबाद, डॉ. तनुज नंदन, एम.एन.एन. आई.टी, इलाहाबाद, डॉ. आर.पी.एस. यादव, यू.पी.आर.टी.ओ.यू., इलाहाबाद, डॉ. गौरव संकल्प, यू.पी.आर.टी. ओ.यू., इलाहाबाद व डॉ. श्रुति, यू.पी.आर.टी.ओ.यू., इलाहाबाद विषय से सम्बन्धित अपने–अपने व्याख्यान देंगे।

Report

2nd National Symposium

on

"Relevance of Statistics in Agriculture & Farmer's Welfare"

29th June, 2016

Jointly Organized by:

Government of India, Ministry of Statistics and Programme Implementation, NSSO,R.O.Allahabad

&

School of Sciences, U.P.R.T.O.U., Allahabad

2ND NATIONAL SYMPOSIUM

ON

"RELEVANCE OF STATISTICS IN AGRICULTURE & FARMER'S WELFARE"

29th June, 2016

Jointly Organized by:
Government of India, Ministry of Statistica and Programme Implementation, NSSO,R.O.Allahabad
&
School of Sciences, U.P.R.T.O.U., Allahabad

Patron
Prof. M. P. Dubey
Hon'ble Vice Chancellor, U.P.R.T.O.U., Allahabad

School Director
Dr. Ashutosh Gupta
Director,
School of Sciences

Symposium Director
Dr. Shruti
Astt. Prof. (Statistics),
School of Sciences

Convener
Dr. G. K. Dwivedi
Astt. Prof. (Education)
School of Education

Organizing Secretary
Dr. Gaurav Sankalp
Academic Consultant
School Of Management Studies

Co- Convener
Dr.Alka Verma
Academic Consultant
School of Social Sciences

Co-Organizing secretary
Dr.Dinesh Gupta
Academic Consultant
School of Sciences

Co-Ordinators
Ms.Marisha, Asst Professor Computer Sciences, School of Sciences
Mr. Manoj Balwant, Asst Professor Computer Sciences, School of Sciences

Venue
Saraswati Parisar
U.P.R.T.O.U., Shantipuram, Sector – F, Phafamau, Allahabad

Report

On

National Symposium

on

Relevance of Statistics in Agriculture & farmer's Welfare

Agriculture in India, since time immemorial has been a way of life rather than a business and continues to be the single most important source of livelihood of the masses specially those residing in rural areas. Focus of agricultural policies in India across decades has been on self-sufficiency and self-reliance in food grains and allied agricultural production & also modern technological and scientific skills. Considerable progress has been made on this front. In the present scenario, statistics is playing more imperative role in all areas of research, whether it is scientific or social. With the help of ICT & applications of different statistical tools researchers validate the findings and formulate conclusions and suggestions related to the agriculture and farmer's welfare, e.g. online training to the farmers, scientific farming, forecasting.

In the present scenario where daily new challenges are being faced by agriculture scientists therefore proposed National Symposium aims to bring together the applied & theoretical aspects of agricultural statistics and farmer's welfare. It also focuses to understand & develop skills for statistical consultation, analysis & applied researches in the related fields.

REPORT

OF

INAUGURAL SESSION

Schedule of the Inaugural Session

National Symposium
On
Relevance of Statistics in Agriculture and Farmer's Welfare

(29th June, 2016 – Statistics Day)

Lighting of the Lamp :	10:30am
Floral Tribute & Garland of Maa Saraswati & P.C. Mahanalobis :	10:35 am
Welcome and Introduction of Guest with bouquet by ***Dr. Shruti***, Symposium Director :	10:40 am
About University and School of Sciences by ***Dr. Ashutosh Gupta***, Director, School of Sciences :	10:45 am
About the Symposium by ***Shivam Srivastava***, Dy. Director NSSO-RO, Allahabad :	10:55 am
Ceremonials Greetings of the Guest with Bamboo Plants and Momentos :	11:05 am
Address by ***Prof. Pradeep Bhargava***, Director, G.B.Pant Social Science Institute Jhusi, Allahabad:	11:10 am
Address by ***Dr. Sachin Sharma***, Chief Editor, Amar Ujala, Allahabad:	11:25 am
Presidential Address by ***Prof. M. P. Dube***, Hon'ble Vice Chancellor, UPRTOU, Allahabad:	11:40 am
Vote of Thanks by ***Dr. G. K. Dwivedi***, Convener of the Symposium :	11:55 am
National Anthem :	12:00 noon
Tea break :	***12:05 pm***

Compared by: ***Dr. Gaurav Sankalp***, Organizing Secretary of the Symposium

Schedule of the Inaugural Session

2nd National Symposium
On
Relevance of Statistics in Agriculture and Farmer's Welfare

(29th June, 2016 – Statistics Day)

Welcome and Introduction of Guest with bouquet ***Dr. Ashutosh Gupta***, Director, School of Sciences : ➢ ***Dr. Sachin Sharma***, Chief Editor, Amar Ujala, Allahabad ➢ ***Prof. Manoj Dixit***, Head, Deptt. of Public Administration, lucknow University, Lucknow ➢ ***Prof. Pradeep Bhargava***, Director, G.B.Pant Social Science Institute Jhusi, Allahabad ➢ ***Prof. M. P. Dube***, Hon'ble Vice Chancellor, UPRTOU, Allahabad ➢ ***Mr. Shiwam Srivastava***, Dy. Director, NSSO, Allahabad	10:30 am
Lighting of the Lamp & Floral Tribute & Garland of Maa Saraswati & P.C. Mahanalobis :	10:40am
About University by ***Dr. G. K. Dwivedi***, Convener of the Symposium	10:45 am
About the Symposium by ***Shivam Srivastava***, Dy. Director NSSO-RO, Allahabad :	10:55 am
Ceremonials Greetings of the Guest:	11:05 am
Address by ***Prof. Pradeep Bhargava***, Director, G.B.Pant Social Science Institute Jhusi, Allahabad :	11:10 am
Address by ***Dr. Sachin Sharma***, Chief Editor, Amar Ujala, Allahabad :	**11:20 am**
Address by ***Prof. Manoj Dixit***, Head, Deptt. of Public Administration, lucknow University, Lucknow	**11:30 am**
Presidential Address by ***Prof. M. P. Dube***, Hon'ble Vice Chancellor, UPRTOU, Allahabad:	11:40 am
Vote of Thanks by ***Dr. Shruti***, Symposium Director :	11:55 am
National Anthem	12:00 noon
Tea break :	***12:05 pm***

Compeer by: Dr. Gaurav Sankalp, Organizing Secretary of Symposium

The Inaugural Session began with the traditional welcome of the dignitaries, offering to 'Roli Tilak' with chanting of Mantras and Shankh Naad.

Thereafter, lightening of Lamp which is symbol of knowledge and floral offering & garlands & invocation of Goddess of Knowledge 'Maa Saraswati' with 'Saraswati Vandana'- by Mr. Rajat Singh.

The session followed by 'Welcome Address' by Dr. Aushotosh Gupta Director School Of Sciences . Hhe introduced all distinguish guests on the dais. Under this process all dais persons were florid by the bouquet.

Dr. G. K. Dwivedi, the Convener, expressed his views 'About the University'. In this he discussed about open and distance system of education through each step of this University since beginning. He narrated its working style, its courses, & whole system of education of this University.

Mr.Shivam Srivastava, Dy.Director, NSSO R.O. Allahabad introduced the aims and objectives of the Symposium. In this he explained how Statistics play an important role in the field of modern-era research and agriculture.

On the moment of 'Ceremonial Greetings', the 'Angwastram' and Mementoes were presented by the hon'ble Vice-Chancellor of UPRTOU to all respected guests on the dais.

Prof. Pradeep Bhargarva Dirctor G.B. Pant Institute Allahabad said all policy needs data; data are ital for each activity. He explored the views on the present condition of fame's and discussed how the economic condition of farmer can be changed.

Prof. Manoj Dixit, Head, Dept of Public Administration Lucknow University, said that Buget is a bundle Statistics thrown on a common man. Today we are getting heterogeneity of data and it should be properly analyzed to get right and concept result. He explores his views on SEZ Green repartition disparity of rate in U.P. east and west.

Dr. Sachin Sharma chief editor of Amar Ujala gave his real life experience and said how the Indian farmers are affected by the wrong policy. He did not get the right price for his crop. He said that when multigrain flour is sold at 500 are for 5 kg but farmer get zeros pork kg of wheat

Presiding the inaugural session Prof M.P. Dube Vice Chancellor of UPRTOU said various models of development of Society is proposed by different committer set up by govt of India time to time Nehru-Mahabolis model is accepted due to Mahabolis difference. Heavy Industries to be look after by central government, Infrastructure by state government while consumer good is look after by consumer goods. He added agricultural and statistics are very vital to measure the growth of country. He said two types of liger data structural which contains land its holding and distribution, labours, mode of

production and activity rotated which conclave product, output and livestock. He shared his views on globalization, befouls, environment and climate change.

The 'Vote of Thanks' was proposed by Dr.Shruti, Symposium Director and Dr. Gaurav Sankalp Organizing Secretary of the Symposium Compeer the session.

The inaugural session came to an end with the National Anthem & all dispersed for the Tea.

REPORT

1ST SESSION

S. No.	Resource Person / Lecture Title	Time
1.	Lecture on "Use of Statistics in Agro Life", delivered by ***Prof. Sushma Tripathi***, Head, Department of Statistics, M.M.V., B. H. U., Varanasi.	12:30 pm – 12:45 pm
2.	Lecture on "Use of Statistical Tools in Design and Evaluation of Soil and Water Conservation Structures", delivered by ***Dr. R.P. Singh***, Associate Professor and Head, Department of Agricultural Engineering, Kulbhaskar Ashram P. G. College, Allahabad.	12:45 pm - 01:00 pm
3.	Lecture on "Importance & Uses of Agricultural Statistics" delivered by ***Dr. Kunal Kesari***, G.B. Pant Institute, Jhusi, Allahabad.	01:00 pm – 01:15 pm
4.	Lecture on "Relevance of Statistics in Agriculture with Special Reference to Agribusiness Management", delivered by ***Dr. P. P. Dubey***, Director, School of Agricultural Sciences, UPRTOU, Allahabad.	01:15 pm – 01:30 pm
5.	Presentation by the team of Interns, NSSO, RO, Allahabad.	01:15 pm – 01:30 pm
	Lunch	***01:30 pm – 02:00 pm***
6.	Lecture on "Application of Remote Sensing in Agriculture" delivered by ***Dr. Ashutosh Gupta***, Director, School of Sciences, UPRTOU, Allahabad.	02:00 pm – 02:15 pm
7.	Lecture on "Statistics & Agricultural Sciences: An Analytical Study", delivered by ***Dr. Shruti***, Assistant Professor (Statistics), School of Sciences, UPRTOU, Allahabad.	02:15 pm – 02:30 pm
8.	Lecture on "Role of Education for Former's Welfare: An Analytical Study", delivered by ***Dr. G. K. Dwivedi***, Assistant Professor (Education), School of Education, UPRTOU, Allahabad.	02:30 pm – 02:45 pm
9.	Lecture on "Statistical Tools Instrument for Analyzing Agriculture and Farmer's Welfare ", delivered by ***Dr. Gaurav Sankalp***, Academic Consultant (Commerce), School of Management Studies, UPRTOU, Allahabad.	02:45 pm – 03:00 pm
10.	Lecture on "Social Work for Former's Welfare", delivered by ***Dr. Alka Verma***, Academic Consultant (Social Work), School of Social Sciences, UPRTOU, Allahabad.	03:00 pm – 03:15 pm
	Tea & Certificate Distribution	***03:30 pm – 04.00 pm***

S. No.	Resource Person / Lecture Title	Time
1.	Lecture on "Use of Statistics in Agro Life", delivered by ***Prof. Sushma Tripathi***, Head, Department of Statistics, M.M.V., B. H. U., Varanasi.	12:30 pm – 12:45 pm
2.	Lecture on "Use of Statistical Tools in Design and Evaluation of Soil and Water Conservation Structures", delivered by ***Dr. R.P. Singh***, Associate Professor and Head, Department of Agricultural Engineering, Kulbhaskar Ashram P. G. College, Allahabad.	12:45 pm -01:00 pm
3.	Lecture on "Importance & Uses of Agricultural Statistics" delivered by ***Dr. Kunal Kesari***, G.B. Pant Institute, Jhusi, Allahabad.	01:00 pm – 01:15 pm
4.	Lecture on "Relevance of Statistics in Agriculture with Special Reference to Agribusiness Management", delivered by ***Dr. P. P. Dubey***, Director, School of Agricultural Sciences, UPRTOU, Allahabad.	01:15 pm – 01:30 pm
5.	Presentation by the team of Interns, NSSO, RO, Allahabad.	01:15 pm – 01:30 pm
Lunch		***01:30 pm – 02:00 pm***
6.	Lecture on "Application of Remote Sensing in Agriculture" delivered by ***Dr. Ashutosh Gupta***, Director, School of Sciences, UPRTOU, Allahabad.	02:00 pm – 02:15 pm
7.	Lecture on "Statistics & Agricultural Sciences: An Analytical Study", delivered by ***Dr. Shruti***, Assistant Professor (Statistics), School of Sciences, UPRTOU, Allahabad.	02:15 pm – 02:30 pm
8.	Lecture on "Role of Education for Former's Welfare: An Analytical Study", delivered by ***Dr. G. K. Dwivedi***, Assistant Professor (Education), School of Education, UPRTOU, Allahabad.	02:30 pm – 02:45 pm
9.	Lecture on "Statistical Tools Instrument for Analyzing Agriculture and Farmer's Welfare ", delivered by ***Dr. Gaurav Sankalp***, Academic Consultant (Commerce), School of Management Studies, UPRTOU, Allahabad.	02:45 pm – 03:00 pm
10.	Lecture on "Social Work for Former's Welfare", delivered by ***Dr. Alka Verma***, Academic Consultant (Social Work), School of Social Sciences, UPRTOU, Allahabad.	03:00 pm – 03:15 pm
Tea & Certificate Distribution		***03:30 pm – 04.00 pm***

The first session begins with a lecture of ***Prof. Shusma Tripathi****, Head, Department of Statistics, M.M.V. BHU, Varanasi on Uses of Statistics in Agro Life. In which she told about the hypothesis and its relevance in research. She said if sample is wrongly taken the relevance of research is nullified. Sharing her views on the two types of errors and impact of these errors on sample.*

Dr.P.P.Dubey *Director, School of Agriculture Sciences said delivered his lecture on Relevance of Statistics in Agriculture with special Reference to AgriBusiness management. He said that agro business needs proper policy and framework to grow. Adding that if data are not well processed and collected then the whole conclusion is wrongly stated and the process will be affected. Government should have relevant data for developing policy. Policy developed on the basis on wrong data had a adverse affect on the agriculture and GDP as a whole.*

Dr. Kunal Kesari *in his lecture on Importance of Statistics in Agriculture statistics. He stated that research work should be properly done so that its application will be beneficial in agriculture sector. He said proper sampling selection and analysis is the essence of any*

Prof. Manoj Dixit*, Head, Dept of Public Administration Lucknow University in his talk highlighted the relevance of data collection and how lack of data affects the soundness of research.*

REPORT

2ND SESSION

In the Second session a total of five lectures were held. ***Dr. Aushutosh Gupta****, Director School of Sciences in his lecture on Application of Remote Sensing in Agriculture said that now new satellites and various other tools are helping to find the current position of agriculture land. He said these tools are helping in correct forecasting about the various factors that agriculture needs example rainfall, temperature, humidity etc.*

Dr. Shruti *in his lecture on Statistics and Agriculture Sciences: An Analytical Study said that right calculation of all data related with the agriculture will help the government to analyze the correct position of economy. She added that analyzing what we have is not helping us rather we should try to analyze where we are lacking and need reforms.*

Dr. G.K.Dwivedi *in his lecture on Role of Education for farmer's welfare said that educating farmers with the new techniques of farming will help them to get good yield and aware them with the problems in advance will help them to increase their profits.*

Dr.Gaurav Sankalp *delivered lecture on Statistical Tools Instruments for Analyzing Agriculture and Farmers welfare said that that for both parametric and non parametric tools were used for analysis. He said that while applying the set of tools for analysis one must have proper knowledge about the tools and what are its benefits. He added sometime wrong tools affects the quality of research although one posses good data.*

Dr. Alka Verma *delivered lecture on social work and Farmers welfare. She said that farmers were struggling for their right place in the development. They are the one who works hard on the land to grow crops while the real profit is taken by the middleman.*

Annexure

1. *Sample of Certificate*
2. *Copy of Boucher*
3. *Copy of Invitation Card for Inaugural Session*
4. *Photo Gallery*
5. *News Gallery (News Paper's news)*

List of Participants 29June 2016 (Statistics Day)

Sr. No.	Name & Designation	Affiliation	Ph. No.
1.	Dr. Shiv Shankar Pandey(Assit. Prof.)	MJP Ruhelkhand University Bareilly	9450132985
2.	Poonam Mishra Lecturer (Home Science)	DDU Gorakhpur Univ. Affit. Self Finance college Deoeuia (U.P.)	8423002408
3.	Vijay Mani Tripathi(Student)	UPRTOU, Allahabad	7398647294
4.	Meenu Pandey (Research Scholar)	NGBU Allahabad	8400628484
5.	Shrawan Kumar (Research Scholar)	NGBU, Allahabad	9696959444
6.	Shahbaj Ahamad (Technical Officer)	UPRTOU, Allahabad	7525048060
7.	Shivam Mishra (Technical Officer)	UPRTOU, Allahabad	7525048080
8.	Dhiraj Rawat (Technical Officer)	UPRTOU, Allahabad	7525048090
9.	Niraj Mishra (Technical Officer)	UPRTOU, Allahabad	7525048070
10.	Dr. Ruchi Bajpai(Assit. Prof.)	UPRTOU, Allahabad	7525048022
11.	Dr. Devesh Ranjan Tripathi(Assit. Prof.)	UPRTOU, Allahabad	7525048048
12.	Sunil Kumar (Assit. Prof.)	UPRTOU, Allahabad	7525048148
13.	Mrs. Marisha (Assit. Prof.)	UPRTOU, Allahabad	7376748927
14.	Mr. Manoj Kumar Balwant (Assit. Prof.)	UPRTOU, Allahabad	8985006874
15.	Sanjay Kumar Singh (Research Scholar)	University of Allahabad	9452372640
16.	Sameer Yadav (Research Scholar)	University of Allahabad	9013969244
17.	Vibhu Prakash Singh (Research Scholar)	University of Allahabad	9453039094
18.	Shailja Pal (Research Scholar)	University of Allahabad	8574279696
19.	Sapana (Student)	UPRTOU, Allahabad	9415633593
20.	Abhishek Kumar (Research Scholar)	University of Allahabad	9455624759
21.	Dr. Manu Bhatt (Assit. Prof)	U.P.T.U., Lucknow	9839305182
22.	Indu Bhushan Pandey (DEO)	UPRTOU, Allahabad	7525048088
23.	Ramesh Chandra Yadava	UPRTOU, Allahabad	7525048035
24.	Dr. Prabhat Chandra Mishra(COG-01)	UPRTOU, Allahabad	7525048029
25.	Dr. Akhilesh Kumar Mishra (Sr. Sub Editor)	Amar Ujala, Allahabad	8954886714
26.	Sarvesh Singh (Research Scholar)	University of Allahabad	9415364462
27.	Prabhat Agrawal (Research Scholar)	Kanpur University, Kanpur	8891928800

28.	Dr. Upendra Nath Tiwari (Lecturer)	UPRTOU, Allahabad	7525048016
29.	Dr. Amar Nath (Principal)	Shri Ramphir Shivphur P.G. College, Faizabad	9452320960
30.	Dr. Rakesh Kumar Singh (Lecturer)	Nandi Naga P.G. College	9451203715
31.	Renu Srivastava (Research Scholar)	G.B. Pant Social Sciences Institute, Alld.	8005316011
32.	Mayank Kumar Rai (Research Scholar)	University of Allahabad	9807752413
33.	Subanshu Mishra (Student)	Dr. RMLAU, Faizabad	9450408397
34.	Alok Kumar Pandey (Student)	University of Allahabad	9839887000
35.	Prannath Singh Yadava (Student)	University of Allahabad	9598182276
36.	Nikhil Kumar Chaurasiya (Student)	University of Allahabad	9453595100
37.	Ashutosh Yadava (Student)	University of Allahabad	7571847544
38.	Satyanshu Mishra (Student)	University of Allahabad	9936520136
39.	Yogeshwar Vashishth (Student)	University of Allahabad	8933987002
40.	Priyanka Kumari (Student)	University of Allahabad	
41.	Deepa Gupta (Assit. Prof.)	Techno Group	8382851659
42.	Veenta Singh (Research Scholar)	University of Allahabad	9532111088
43.	Prof. H.K. Singh (Professor)	BHU, Varanasi	9415264509
44.	Shantanu Saurah (Research Scholar)	University of Allahabad	9889798782
45.	Dr. Meera Singh (Asso. Prof.)	U.P. Colledge, VNS	9450538221
46.	Shubham Gaurav (Student)	BHU, Varanasi	9532111088
47.	Vishnumaya Rai (Research Scholar)	BHU, Varanasi	9005821898
48.	Shivangi Singh (Student)	BHU, Varanasi	9005821898
49.	Dr. R. K. Singh (Asso. Prof.)	University of Allahabad	9415214657
50.	Amit Kumar Singh (Research Scholar)	University of Allahabad	9454948797
51.	Gautam Kohli (Research Scholar)	University of Allahabad	9454948797
52.	Mukul Mishra (Student)	University of Allahabad	7388956656
53.	Shashank Shekhar Singh (Guest. Lect.)	SPM Govt. College, Allahabad	8896219765
54.	Shivi Srivastava (Research Scholar)	University of Allahabad	8601584513
55.	Shubhi Srivastava (Research Scholar)	University of Allahabad	8303891912
56.	Ankit Mishra (Student)	UPRTOU, Allahabad	8542934382
57.	Akanksha Tiwari (Research Scholar)	BHU, Varanashi	9451053821
58.	Amit Kumar (Research Scholar)	BHU, Varanashi	7388473821

59.	Vikram Anand (Research Scholar)	BHU, Varanashi	9454953416
60.	Anjali Singh (Research Scholar)	University of Lucknow	8931815003
61.	Pankaj Singh (Assistant Prof.)	Govt. Eng. College Ambedkar Nagar (U.P.)	8176977349
62.	Rajoo Prasad (Research Scholar)	Dept. Of Economics, University of Alld.	09452975562
63.	Vibhav Agrawal (Research Scholar)	Dept. Of Economics, University of Alld.	9956386778
64.	Anand Tripathi (Research Scholar)	Dept. Of Economics, University of Alld.	8574135504
65.	Varsha (Research Scholar)	Dept. Of Economics, University of Alld.	7668865719
66.	Mukesh Kumar (Research Scholar)	Dept. Of Economics, University of Alld.	09793500845
67.	Rinku Kumar (Research Scholar)	Dept. Of Economics, University of Alld.	9453350304
68.	Divya Pal (Research Scholar)	Dept. Of Economics, University of Alld.	9453313455
69.	Bharti Singh (Research Scholar)	Dept. Of Economics, University of Alld.	9455349463
70.	Dr. Kavita Yadava (Lecturer)		8542893686
71.	Prem Kumar Patel	Animal Welfare Board of India, Ministry of Environment of Forests Govt. of India	9935726817
72.	Siddharth Pandey (Research Scholar)	University of Allahabad	
73.	Santosh Mauriya (Research Scholar)	University of Allahabad	
74.	Priyanka Rai (Research Scholar)	University of Allahabad	
75.	Shashank Shakhar (Research Scholar)	University of Allahabad	
76.	Mukul Mishra (Research Scholar)	University of Allahabad	
77.	Mehtab Khan (Research Scholar)	University of Allahabad	
78.	Avanish Yadava (Research Scholar)	University of Allahabad	
79.	Vishal Singh (Research Scholar)	University of Allahabad	
80.	Shweta Singh (Research Scholar)	University of Allahabad	

Copy of Invitation Card for Inaugural Session

2nd National Symposium
on
"Relevance of Statistics in Agriculture & Farmer's Welfare"

29th June, 2016 (Statistics Day)

Jointly Organized by

Government of India, Ministry of Statistica and Programme Implementation, NSSO,R.O.Allahabad
&
School of Sciences, U.P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad

You are cordially invited in the

Inaugural Session

29th June, 2016 at 10:00 a.m.
in the Lok Manya Tilak Shastrarth Sabhagar, Saraswati Parisar, UPRTOU, Allahabad

Chief Guests

Prof. Pradeep Bhargava
Director, G.B.Pant Institute of Rural Development , Allahabad

Prof. Manoj Dixit,
Head, Dept of Public Administration Lucknow University

Dr. Sachin Sharma
Chief Editor of Amar Ujala

President

Prof. M.P. Dube
Hon'ble Vice-Chancellor, UPRTOU, Allahabad

Regards

Dr. Shruti
Symposium Director

Dr. G. K. Dwivedi
Convener

Dr. Gaurav Sankalp
Organizing Secretary

Registration Form

Name:

Designation:

Affiliation:

Full Postal Address:

Email:

Phone / Mobile:

Accommodation Required: Yes: No:

for research Scholars Registration Form will be forwarded by the Dean / Director / HOD / Supervisor.

Signature With Seal

Patron
Prof. M. P. Dube, Hon'ble Vice Chancellor

School Director
Dr. Ashutosh Gupta, Director, School of Sciences

Symposium Director
Dr. Shruti, Assistant Professor (Statistics)

Convener
Dr. G. K, Dwivedi, Assistant Professor (Education)

Co-Convener
Dr. Alka Verma, Academic Consultant (Social Work)

Organizing Secretary
Dr. G. Sankalp, Academic Consultant (Commerce)

Co-Organizing Secretary
Dr. D. K, Gupta, Academic Consultant (Chemistry)

Co-Ordinators
Ms. Marisha, Assistant Professor (Computer Science)
Mr. Manoj K, Balwant, Assistant Prof. (Comp. Sc.)

Organizing Team
Dr. U.N. Tiwari
Dr. Atul Mishra
Mr. Neeraj Mishra
Mr. Shivam Mishra
Mr. Dheeraj Rawat
Mr. Shahbaz Ahmad
Mr. Alok K, Srivastava
Mr. Indubhushan Pandey

National Symposium
On
Relevance of Statistics in Agriculture & Farmer's Welfare

29th June, 2016 (Statistics Day)

Jointly Organized by
School of Sciences, UPRTOU, Allahabad
&
Ministry of Statistics & Programme Implementation, New Delhi, NSSO-RO, Allahabad

Patron
Prof. M. P. Dube
Hon'ble Vice Chancellor

School Director
Dr. Ashutosh Gupta
Director, School of Sciences

Symposium Director
Dr. Shruti
Astt. Prof. (Statistics)

Convener
Dr. G. K, Dwivedi,
Astt. Prof. (Education)

Organizing Secretary
Dr. Gaurav Sankalp
Acad. Conslt. (Commerce)

Co-Convener
Dr. Alka Verma
Acad. Conslt. (So. Work)

Co-Organizing Secretary
Dr. D. K, Gupta
Acad. Conslt. (Chemistry)

Venue

Saraswati Campus (Academic Block)
U.P. Rajarshi Tandon Open University
Shantipuram, Sector – F, Phapfamau, Allahabad
U.P., India-211021, www.uprtou.ac.in

Theme of the Symposium:

Agriculture has been a way of life and continues to be the single most important livelihood of the masses. Agricultural policy focus in India across decades has been on self-sufficiency and self-reliance in food grains production. Considerable progress has been made on this front. In the present scenario, statistics is playing more imperative role in all areas of research, whether it is scientific or social. With the help of application of different statistical tools researchers validate their findings and formulate conclusions and suggestions.

In the present scenario where daily new challenges are being faced by agriculture scientists, the proposed National Symposium aims to bring together the applied & theoretical aspects of agriculture statistics and farmer's welfare. It also aims to understand & develop their skills for statistical consulting, analysis & applied research in the related field.

Target Audience:

Participants may belong to areas of Social Sciences, Humanities, Education, Commerce and Management, Population Studies, Agriculture, Medical, Computational, Mathematical, Physical, Chemical, Health & Life Sciences etc.

Experts:

Eminent experts from the reputed universities and institutes shall be invited to deliver their lecture on the relevant themes and issues included in the Symposium.

Registration Fees:

There is no registration fees for attending the Symposium , however the seats are limited and will be allotted on the FCFS basis. The participant should send their prior Information and filled registration form to the organizers either through e-mail or telephone with in the **last date 20.06.2016**

Fooding:

University will provided working lunch & tea in breaks between the sessions only.

Participants will bear breakfast and dinner their own.

Accommodation:

The university has its own Guest House in which accommodation may be provided to the limited number of outstation delegates, on their demand well in advance. The all stay expenses incurred are to be born by the participant. However Accommodation in the Hotel may be arranged on request and all the expenses of the stay and food will be borne by the delegates themselves.

Contact Details:

Please send your confirmation about registration & travel plan on

Email: symposiumsos2016@gmail.com

Dr Shruti:	09415179841, 07525048051
Dr. G. K. Dwivedi	09455413751, 07525048012
Dr Gaurav Sankalp:	07525048043, 09415633593
Dr Dinesh K. Gupta:	07525048053, 09450622596
Dr. Alka Verma:	07525048036, 08726335857

And send your filled Registration Form at

Dr Shruti, Assistant Professor (Statistics)
School of Sciences,, Saraswati Campus (Academic Block), U.P. Rajarshi Tandon Open University, Shantipuram, Sector – F , Phapfamau, Allahabad , U.P., India-211013

About the University:

"Reach To Unreach" being the objective of U.P. Rajarshi Tandon Open University, which has been established by the UP Act No. 10 of 1999 as passed by the Uttar Pradesh legislature. It is the one and only State Open University in Uttar Pradesh. This University was named after Bharat Ratan Rajarshi Purushottam Das Tandon, an illustrious son of India from Allahabad who made great sacrifices for the sake of our independence and dedicated himself to the cause of Hindi as a National Language. The jurisdiction of this University is entire state of Uttar Pradesh. The University has embossed a niche for itself among the premier academic institutions of open learning and distance education. This University conducts its academic activities through a diversity of means of distance and long-lasting education, and functions in cooperation with the existing Universities, Colleges and Institutions of higher learning, and makes full use of the infrastructure of these organizations. The courses offered by UPRTOU are recognized by the joint committee of UGC, AICTE and DEB. The University offers wide range of educational programmes related to general & professional education, training, research and extension work through open and distance learning. The University started functioning from the session 1999-2000 with 3481 distance learners. In the current session i.e. session 2015-2016 more than 65,000 distance learners were enrolled for 83 academic programmes at more than 650 study centers. Since inception the cumulative strength is 3.7 lakh learners. At present there are ten regional centers of university located at Lucknow, Varanasi, Bareilly, Gorakhpur, Allahabad, Agra, Ghaziabad, Meerut, Jhansi and Kanpur. The head quarter of the University is at Shantipuram Sector-F, Phaphamau, Allahabad which is equipped with good infrastructure facilities like Buildings, Library, Wi-Fi network, Guest House, Media Centre etc..

About Allahabad :

Allahabad is the one of oldest cities of the world having enriched with glorious history. City is situated at the confluence of Holy Rivers Ganga and Yamuna, called Triveni Sangam due to invisible Saraswati . Every year in the month of January Magh Mela is organized at Sangam while every six year Ardh Kumbh and every twelve year Maha Kumbh (Biggest fair of the World) is organized . It is one of the fastest growing cities in India. The city is also known as 'Prayag' or 'Tirth Raj'. It is located 201 Km North of the state capital Lucknow, 121 Km East from spiritual city Varanasi, 199 Km North - West from industrial city Kanpur and 423 Km. West from the Historical city Jhansi. Allahabad has an area of about 70 km. and is 98 mt. (332ft) above sea level. The city temperature at June is between 36° C - 45° C. The district has a population of 60 lakh approx while Allahabad city has a population of about 12 lakh as per the 2011 census and its literacy rate is 72.3%. Hindi, Urdu, Bengali and English are the spoken languages and all major religions are practiced in the city. Allahabad is the educational hub of the country since ancient period . This city has number of world fame educational institutes and historical places.

National Symposium
On
"Relevance of Statistics in Agriculture and Farmer's Welfare"

29th June, 2016 (Statistics Day)

Jointly Organized by

School of Sciences, U. P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad
&
Government of India, National Sample Survey office, Ministry of Statistics & Programme Implementation, Regional Office, Allahabad

Certificate

*This is to Certified that Prof./ Dr./ Mr./ Ms.*_____

_____

participated in the National Symposium on "Relevance of Statistics in Agriculture and Farmer's Welfare" on 29th June, 2016 (Statistics Day) at School of Sciences, U. P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad.

*He/ She has participated/ delivered a Talk on"*_____

_____."

Dr. Shruti
Symposium Director

Mr. Shivam Srivastava
Dy. Director, NSSO

Dr. G. K. Dwivedi
Convener

Dr. Gaurav Sankalp
Organizing Secretary

Photo Gallery









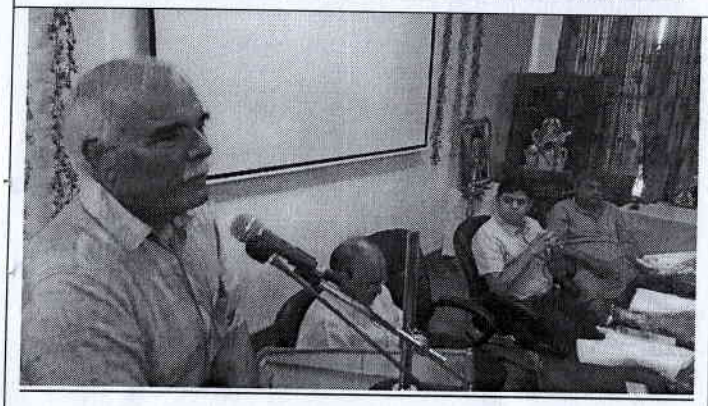














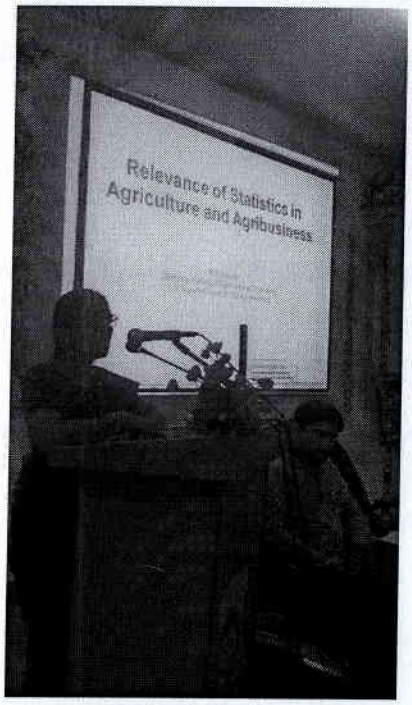
Relevance of Statistics in
Agriculture and Agribusiness







News Gallery



अमर उजाला

इलाहाबाद | बृहस्पतिवार | 30 जून 2016

उत्पाद का उचित मूल्य मिले तो सुधरे किसानों की स्थिति

Agricultural & statistics a vital to measure growth of country : MP Dube

ALLAHABAD : The second national symposium on "Relevance of Statistics in Agriculture and Farmer's Welfare" held at Lokmaya Tilak Sathtrath Sabhagaar of Uttar Pradesh Rajarshi Tandon Open University (UPRTOU), to mark the birth anniversary of Porf. PC Mahabolis. Presiding over the inaugural session Prof MP Dube, Vice Chancellor of UPRTOU said various models of development of society is proposed by different committer set up by Government of India time to time. Heavy industries were looked after by the central government, infrastructure by state government while consumer good is look after by consumer goods. He added agricultural and statistics are very vital to measure the growth of country. He said two types of liger data structural which contains land its holding and distribution, labours, mode of production and activity rotated which conclave product, output and livestock.



He shared his views on globalization, environment and climate change. Prof. Pradeep Bhargarva, Director, GB Pant Institute said all policy needs data; data are vital for each activity. He explored the views on the present condition of fame's and discussed how the economic condition of farmer can be changed. Dr. Sachin Sharma chief editor of Amar Ujala gave his real life experience and said how the Indian farmers are affected by the wrong policy. He did not get the right price for his crop. He said that when multigrain flour is sold at Rs 500 are for 5 kg but farmer get zero pork kg of wheat. Prof. Manoj Dixit, Head, Department of Public Administration Lucknow University, said that Bogat is a bundle Statistics thrown on a common man. Today we are getting heterogeneity of data and it should be properly analyzed to get right and concept result. He explores his views on SEZ Green repartition disparity of rate in Uttar Pradesh east and west.

भारत संवाद हिन्दी दैनिक | प्रदेश | इलाहाबाद, गुरूवार, 30 जून 2016 6

किसानों को अन्न की उचित कीमत मिले- प्रो0 भार्गव

मुविवि में सांख्यकी दिवस पर सिम्पोजियम का आयोजन



इलाहाबाद,29जून(वि.सं.)। 29जून राष्ट्रीय सांख्यिकी दिवस पर विश्वविद्यालय में भूगोल को पेशवर शैक्षण संघ आफिस, इलाहाबाद एवं विश्वविद्यालय के विज्ञान विद्यासंकाय के संयुक्त तत्वावधान में सांख्यिकी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कृषि एवं कृषक कल्याण में सांख्यिकी की प्रासंगिकता विषय पर राष्ट्रीय सिम्पोजियम के उद्घाटन अवसर पर विशिष्ट अतिथि गोविन्द बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद के निदेशक प्रो0 प्रदीप भार्गव ने कहा कि आज देश में किसानों की हालत ठीक नहीं है। किसानों को उनकी उपज का वास्तविक मूल्य नहीं मिल पा रहा है। उन्होंने कहा कि विकास का जो मॉडल अपनाया जा रहा है उसमें किसान मार खा रहा है। सभी अवसर के लिए समान भयभीत चाहिए। प्रो0 भार्गव ने कहा कि अन्न दाता कहलाने में देश के किसानों को सर्वाधिक कठिनाई है तो उन्हें अन्न उपजाने की बहुत अच्छी फीमत मिलनी चाहिए परंतु उन्हें उपभोक्ताओं की अपेक्षा अधिक कीमत चुकानी पड़ती है। इसलिए कहा कि वे विवश किसान होते हैं जिसके चलते एक किलो से ज्यादा उत्पादन होता है, परन्तु उसको आधा 5400 रू0 प्रतिमाह से कम है। उन्होंने कहा कि आज सभी को विचार करना चाहिए कि कैसे किसानों की स्थिति और अच्छी की जाए। अध्यक्षता करते हुये कुलपति प्रो0 एस0पी0 दुबे ने कहा कि आजादी के बाद से विकास कार्यों के लिए जनता का विशेष सहयोग-मार्गदर्शन मौजूद रहा, परन्तु अब उसमें गिरावट आयी है। उन्होंने चीनी उद्योग के उदाहरण को रेखांकित करते हुए कहा कि राजनीतिक हस्तक्षेप के कारण राज्य सरकार के एक स्वार्थपरक के कारण जिले में एक चीनी मिल बंद हो गया। उन्होंने कहा कि आज इस सिम्पोजियम में हम लोग जो अनुभव कर रहे हैं, जिससे राज्य का संपर्क केवल संख्या मात्र न होकर एक वैचारिक रेखांकन है इन्होंने समाज वैज्ञानिक, वरिष्ठजनों एवं विभिन्न कृषि के जुड़े बिन्दुओं पर अपने विचार व्यक्त किए।

विशिष्ट अतिथि लखनऊ विश्वविद्यालय के सांख्यिकी एवंसमंक विभाग के अध्यक्ष प्रो0 मनोरंजन दीक्षित ने कहा कि सांख्यिकी एवं कृषि एक दूसरे के लिए बहुत महत्व रखते हैं। उन्होंने बताया कि आज के परिवेश में शोध की गुणवत्ता एवं अकादे बहुत जरूरी है। सही आकड़ों के द्वारा हम किसानों को कई समस्याओं का हल निकाल सकते हैं। आकड़ों के माध्यम से केन्द्र एवं राज्य प्राकारों को अपने नीति निर्धारण का सकते हैं। विशिष्ट अतिथि एक स्थानीय समाचार पत्र के सम्पादक डॉ0 सचिन शर्मा ने कहा कि अन्नदाता जो अपना दर्द रहा है उसे को सामने लाने की अवश्य जरूरी मिल रहा है। किसानों के पास एक एवं अवसर का अभाव है। उन्होंने कहा कि आज जब रू0 500 किलो आटा बिक रहा है तो किसान को रू0 20 प्रति किलो गेहूं का मूल्य दिया जा सकता है जिससे उनकी स्थिति में सुधार आ सकता है। डॉ0 शर्मा ने कहा कि अतः अन्नम, उर्वरक एवं नीर मुद्दा बिन्दुओं पर आज हमें विचार करना चाहिए कि हम कैसे सही ढंग से प्रशिक्षित किया जाए। अतिथियों का स्वागत विज्ञान विद्यासंकाय के निदेशक प्रो0 आशुतोष मुरली मोहिया। सिम्पोजियम के अर्थ से एनसुआरआई के विषय प्रस्तोषकार विश्वम कोकासवाल ने तथा विश्वविद्यालय के अर्थ से प्रो0 जे0पी0 द्विवेदी ने जानकारी दी। संचालन आयोजक सचिव प्रो0 शैलेन्द्र सकलानी तथा धन्यवाद सिम्पोजियम सचिव डॉ. सुनि, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, विज्ञान विद्यासंकाय ने दिया।

जानलेवा बनी गर्मी,

Press Relies

National Symposium on "Relevance of Statistics in Agriculture & Farmer's Welfare" will be jointly organized by School of Sciences, UPRTOU & Government of India, NSSO, Ministry of Statistics & Programme Implementation, Regional Office, Allahabad, will start on 29th June, 2016 at 10:00am in the academic campus of UPRTOU. The Programme will held to mark on Statistics Day. Prof. M. P. Dube, Vice Chancellor UPRTOU will preside the inaugural session. Prof. Pradeep Bhargava, Director, G. B. Pant Social Science Institute, Jhusi, Allahabad and Dr. Sachin Sharma, Chief Editor, Amar Ujala, Allahabad be the guest of the inaugural session. Mr. Shiwam Srivastava, Dy. Director, NSSO, Allahabad with his whole team will also be there. Conveying the information by Seminar Director Dr. Shruti told that there will invited lectures on the related themes. Prof Sushma Tripathi, BHU, Varanasi, Dr. R. P. Singh, KAPG College, Allahabad, Dr. Kunal Kesari, G. B. Pant Social Science Institute, Jhusi, Allahabad, Dr. P. P. Dubey, Director, School of Agriculture Sciences, Allahabad, Dr. Ashutosh Gupta, Director, School of Sciences, UPRTOU, Allahabad, Dr. Shruti, School of Sciences, UPRTOU, Allahabad, Dr. G. K. Dwivedi, School of Education, UPRTOU, Allahabad, Dr. Alka Verma, School of Social Sciences, UPRTOU, Allahabad and Dr. G. Sankalp, School of Management Studies, UPRTOU, Allahabad will deliver their lectures. Dr G. K. Dwivedi, Convener told the detailed information can be downloaded through university website.

प्रेस विज्ञप्ति

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के विज्ञान विद्याशाखा में 29 जून 2016 को नेशनल सैम्पल सर्वे ऑफिस इलाहाबाद के संयुक्त तत्वाधान से सांख्यकी दिवस का आयोजन प्रातः दस बजे से विश्वविद्यालय के शैक्षणिक परिसर में किया जायेगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एम.पी. दुबे करेगें। जिसमें प्रो. प्रदीप भार्गव, निदेशक, जी.बी. पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, झूसी, इलाहाबाद तथा डॉ. सचिन शर्मा, मुख्य संपादक, अमर उजाला, इलाहाबाद अतिथि होंगे। इस कार्यक्रम में श्री शिवम् श्रीवास्तव, उप–निदेशक, एन.एस.एस.ओ., इलाहाबाद रहेगें। इस कार्यक्रम में कॉमर्स इकोनॉमिकस तथा सांख्यकी के शोध छात्र–छात्रायें तथा शिक्षकगण प्रतिभाग कर सकते हैं। इस कार्यक्रम के सिम्पोजियम डॉरेक्टर डॉ. श्रुति, अस्सिेंट प्रोफेसर, विज्ञान विद्याशाखा, यू.पी.आर.टी.ओ.यू, इलाहाबाद हैं तथा संयोजक डॉ. गिरीश कुमार द्विवेदीयू.पी.आर.टी.ओ.यू. , इलाहाबाद, हैं।

इसके अन्तर्गत "Relevance of Statistics in Agriculture & Farmer's Welfare" विषय पर एक दिवसीय सिम्पोजियम का आयोजन होगा। जिसमें प्रो. सुषमा त्रिपाठी, बी.एच.यू., वाराणसी, डॉ. आर.पी. सिंह, कुलभाष्कर आश्रम पी.जी. कालेज, इलाहाबाद, डॉ. कुनाल केशरी.,जी.बी.पंत. इन्स्ट्टीयूट, झूंसी, इलाहाबाद, डॉ. पी.पी. दुबे, यू.पी.आर.टी.ओ.यू., इलाहाबाद, डॉ. अशुतोष गुप्ता, यू.पी.आर.टी.ओ.यू., इलाहाबाद, डॉ. श्रुति, यू.पी.आर.टी.ओ.यू., इलाहाबाद, डॉ. गिरीश कुमार द्विवेदी, यू.पी.आर.टी.ओ.यू., इलाहाबाद, डॉ. अल्का वर्मा, यू.पी.आर.टी.ओ.यू., इलाहाबाद, तथा डॉ. गौरव संकल्प, यू.पी.आर.टी.ओ. यू., इलाहाबाद व विषय से सम्बन्धित अपने–अपने व्याख्यान देंगे।

'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति'

सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ

एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन

बुधवार, 30 जनवरी 2019,
तदनुसार-माघ कृष्णपक्ष दशमी, विक्रमी संवत् 2075,
युगाब्द 5120, पूर्वाह्न 10.00 बजे

'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति'

सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ

प्रायोजक

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार
उत्तर प्रदेश सरकार
प्रयागराज मेला प्राधिकरण

आयोजक

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय
प्रयागराज

प्रकाशक

कुलसचिव
उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

मुद्रक

चन्द्रकला यूनिवर्सल प्रा.लि.
42/7 जवाहर लाल नेहरू रोड, प्रयागराज-211002
फोन : 9450961983

ISBN : 9789383328758

सम्पादक-मण्डल

◆ प्रधान संपादक ◆

प्रो० कामेश्वर नाथ सिंह

कुलपति

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

◆ संपादक ◆

प्रो. पी.के.पाण्डेय

आचार्य एवं प्रभारी निदेशक, शिक्षा विद्याशाखा

◆ उप-संपादक ◆

◆ डॉ. विनोद कुमार गुप्त
उपनिदेशक/सह-आचार्य, मानविकी विद्याशाखा

◆ डॉ.रुचि बाजपेयी
एसोसिएट प्रोफेसर, मानविकी विद्याशाखा

◆ सदस्य ◆

◆ डॉ. साधना श्रीवास्तव
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, मानविकी विद्याशाखा

◆ डॉ. अतुल कुमार मिश्रा
शैक्षणिक परामर्शदाता, मानविकी विद्याशाखा

◆ डॉ. दिनेश कुमार गुप्त
शैक्षणिक परामर्शदाता, विज्ञान विद्याशाखा

◆ डॉ. गौरव संकल्प
शैक्षणिक परामर्शदाता, प्रबन्धन अध्ययन विद्याशाखा

◆ श्री मुकेश कुमार सिंह
शैक्षणिक परामर्शदाता, मानविकी विद्याशाखा

◆ डॉ. शिवेन्द्र प्रताप सिंह
शैक्षणिक परामर्शदाता, मानविकी विद्याशाखा

◆ विशेष परामर्शी ◆

- ◆ प्रो. ओमजी गुप्ता — निदेशक, प्रबंधन अध्ययन विद्याशाखा
- ◆ प्रो. पी.पी. दुबे — निदेशक, कृषि विज्ञान विद्याशाखा
- ◆ प्रो. आर.पी.एस. यादव — निदेशक, मानविकी विद्याशाखा
- ◆ प्रो. आशुतोष गुप्ता — निदेशक, विज्ञान विद्याशाखा
- ◆ प्रो. जी.एस. शुक्ल — निदेशक, स्वास्थ्य विज्ञान विद्याशाखा
- ◆ प्रो. सुधांशु त्रिपाठी — प्रभारी, समाज विज्ञान विद्याशाखा
- ◆ श्री ए.के. सिंह — वित्त अधिकारी



श्री एम. वेंकैया नायडु

उप-राष्ट्रपति, भारत सरकार

श्री एम. वेंकैया नायडु
उप-राष्ट्रपति, भारत सरकार

सत्यमेव जयते

संदेश

महामहिम उपराष्ट्रपति जी को यह जानकर हर्ष हुआ है कि संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, उत्तर प्रदेश शासन एवं मेला प्राधिकरण, प्रयागराज के सौजन्य से कुम्भ मेला में उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित किये गये एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन की प्रोसिंडिंग्स से समाज को अवगत कराने के सुउद्देश्य से एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है जो सराहनीय प्रयास है।

महामहिम उपराष्ट्रपति जी आयोजन मंडल के सभी पदाधिकारियों/ कर्मचारियों, के उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं तथा प्रकाश्यमान स्मारिका की सफलता हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ संप्रेषित करते हैं।

(एम. वेंकैया नायडु)

नई दिल्ली
12 फरवरी, 2019



आनंदीबेन पटेल

राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

राज भवन
लखनऊ- 226027

सत्यमेव जयते

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि कुंभ मेला -2019 के अवसर पर उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज द्वारा 30 जनवरी 2019 को एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया था। विश्वविद्यालय द्वारा आयोजन की स्मृतियों को सहेजने के लिए एक प्रोसीडिंग्स का प्रकाशन किया जा रहा है।

भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक चेतना के प्रतीक पर्व 'कुंभ' की महानता का उल्लेख वेदों में भी किया गया है। इस अवसर पर विभिन्न जाति, भाषा, क्षेत्र और प्रांतों की संस्कृतियाँ कुंभ में आकर एकाकार हो जाती हैं, जो अनेकता में एकता का बोध कराता है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के प्रयास से महापर्व कुंभ को यूनेस्को द्वारा मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर घोषित किया गया है।

प्रोसीडिंग्स के सफल प्रकाशन के लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

आनंदीबेन

9 अगस्त, 2019

(आनंदीबेन पटेल)

दूरभाष : 0522-22 36 497, 0522 22 39 458; ईमेल hgobup@gov.in

'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति'



मा. श्री योगी आदित्यनाथजी
(मुख्यमंत्री उ.प्र.)

उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्य नाथ जी, जिनके नेतृत्व में अविस्मरणीय, अभूतपूर्व एवं अद्भुत महाकुम्भ प्रयागराज का आयोजन हुआ। मुख्यमंत्री जी के प्रयास से यह महाकुम्भ, एक अभिनव प्रयोग रहा जिसने सम्पूर्ण विश्व को समता, ममता एवं समरसता का सन्देश दिया है। इसी अभिनव प्रयोग की श्रृंखला में **'सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ'** का आयोजन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, जिसमें भारत में उत्पन्न मत, पंथ, सम्प्रदाय के पूज्य संतों ने प्रतिभाग किया। पूज्य संतों ने **'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति'** को अपने-अपने मत का ध्येय वाक्य बताया।

उ.प्र.राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज



प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह
(कुलपति)
उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

संदेश

परम हर्ष का विषय है कि उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज, दिनांक 30 जनवरी, 2019 को सम्पन्न एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन **'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति'** की भाव-भूमि पर आधारित **'सर्व समावेशी संस्कृति कुम्भ'** की प्रगति-पत्रिका प्रकाशित करने जा रहा है।

आशा है प्रगति-पत्रिका में प्रकाशित माननीय अतिथियों, पूज्य संतों एवं विद्वज्जनों के विचार एवं लेख भारतीय संस्कृति की सर्वसमावेशिता के भाव को जनसामान्य तक पहुँचाने में सहायक होंगे।

मैं सम्मेलन की प्रगति पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु विश्वविद्यालय के निदेशकों, सम्पादक मण्डल के सदस्यों एवं इसके प्रकाशन में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वाले समस्त सदस्यों को शुभकामनाएँ देता हूँ।

धन्यवाद!

प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह
संयोजक, सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ

'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति'

उ.प्र. राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

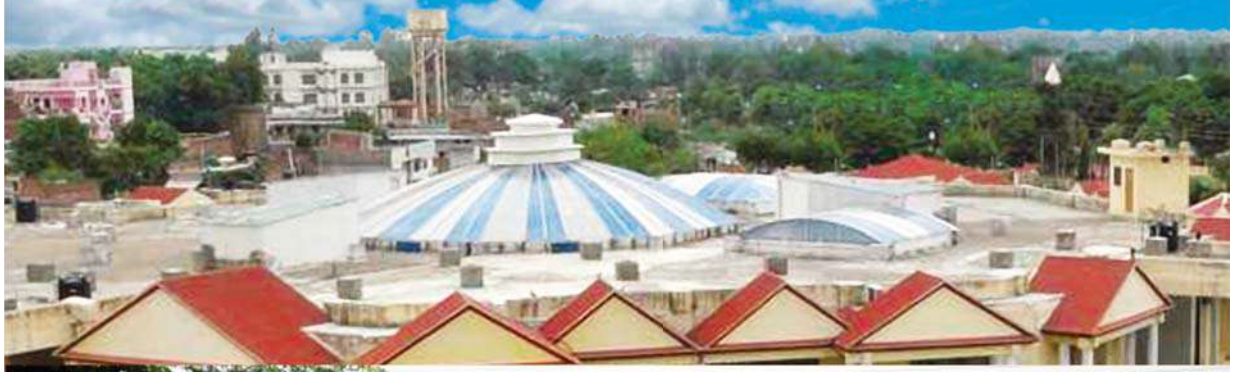



प्रधान सम्पादक की कलम से

'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' की भव्य भावना को लेकर दिनांक 30 जनवरी 2019 को संपन्न एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन **'सर्व समावेशी संस्कृति कुंभ'** की स्मारिका (प्रगति-पत्रिका) आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए विश्वविद्यालय परिवार अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर रहा है। भारतीय संस्कृति की समावेशिता का भाव भारतीय उपमहाद्वीप में पदे-पदे परिलक्षित होता है। भौगोलिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक आदि दृष्टियों से यह संस्कृति वैविध्यपूर्ण है, किंतु यही विशेषता हमारे समन्वयात्मक शक्तिपुंज के रूप में हमारे सामने आती है, क्योंकि इन विविधताओं में कहीं भी वैमनस्य का भाव या अनेकता की प्रतीति नहीं होती। कहने का आशय यह है कि अनेक होते हुए हम सभी एक हैं, तभी तो किसी संस्कृत कवि ने लिखा है :-

अनेके प्रदेशा अनेके च वेषाः अनेकानि रूपाणि भाषा अनेकाः।
परं यत्र सर्वे वयं भारतीयाः प्रियं भारतं तत् सदा रक्षणीयम् ।।

इन्हीं विशेषताओं के कारण भारतीय संस्कृति सबको अपना बना लेती है। यही कारण है कि इसे विनष्ट करने के लिए अनेक षड्यंत्रकारी शक्तियाँ सक्रिय रहीं, अनेक साजिशें रची गईं, अनेक घात-प्रतिघात हुए, फिर भी यह बिना किसी विकृति के आज भी सनातनता को प्राप्त है, तभी तो इकबाल का कवि हृदय कह उठता है-

''यूनान मिस्र रोमा सब मिट गए जहाँ से
बाकी मगर है जब तक नामो निशाँ हमारा।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहाँ हमारा।।''

हमारे राष्ट्र का विस्तृत भू-भाग बंगाल की खाड़ी से अरब सागर तथा हिमालय से कन्याकुमारी तक फैला हुआ है, जिसमें कलकल निनादिनी नदियाँ, झर-झर करते हुए झरने एवं पक्षियों के मनमोहक कलरव लोगों में एकता के भाव में पिरोने के लिए पर्याप्त हैं। मलयागिरि से प्रवाहित शीतल मन्द सुगन्धित पवन समस्त राष्ट्र को नव चेतना प्रदान करता हुआ अनेकत्व में एकत्व के भाव का संयोजन करता हुआ प्रतीत होता है।हमारी परम्पराएँ रीति-रिवाज, जीवन-मूल्य सब कुछ हमारी राष्ट्रीयता का पोषण करते हैं, जिससे हम सभी हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक एक सूत्र में बँधे हुए हैं।

आज समस्त पृथ्वी आतंकवाद, साम्प्रदायिक असहिष्णुता और परस्पर वैमनस्य से ग्रस्त एवं त्रस्त है। जिस भारत की भूमि पर **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** आदि का उद्घोष हुआ करता था, जनमानस में अपनत्व का अमरदीप दीप्त हुआ करता था, जहाँ राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर आदिकों ने अपने जन्म से धराधाम को धन्य किया था, आज अनेक समस्यायाओं से मुक्ति पाने के लिए समस्त विश्व सर्वसमावेशी विचार एवं व्यवहार से परिपूर्ण हमारी इसी भारतीय संस्कृति की ओर मुखापेक्षी है। इसीलिए आज इसकी आवश्यकता अनुभूत हो रही है कि भारत के समस्त मत, पंथ, सम्प्रदाय एवं आध्यात्मिक विचारधाराओं के धर्माचार्यों को एक मंच पर एकत्र कर **'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति', एकोऽहं बहु स्याम्'** अर्थात् एक ही सत्य के अनेक रूपों में वर्णन के उद्घोष द्वारा न केवल भारत, अपितु समस्त विश्व के लिए शांति, सद्भाव एवं समृद्धि के शाश्वत उदाहरणों का संदेश दिया जाए। साम्प्रतिक युग विरोधाभासों का युग है, जहाँ न केवल व्यक्तिगत स्तर पर, वरन् समस्त स्तर पर शक्ति एवं एकता का अभाव-सा दिखाई देता है। आज मनुष्य की अति महत्वाकांक्षा ने उसे परमाणु आयुधों के ढेर पर ला खड़ा किया है, जहाँ कभी भी विस्फोट की स्थिति आ सकती है। आज भारतीय संस्कृति के मूल सिद्धांत **'संगच्छध्वं संवदध्वम्'**, **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** आदि को व्यवहार में लाने की अति आवश्यकता है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन सर्व समावेशी संस्कृति कुंभ का आयोजन किया गया, जिसमें स्वामी हंसदेवाचार्य जी महाराज (दुर्भाग्य से अब हमारे बीच में कीर्ति मात्र से शेष हैं) बाबा रामदेव, सरकार्यवाह सुरेश भैयाजी जोशी, चिदानंद मुनि, सतपाल महाराज, स्वामी वासुदेवानंद जी महाराज प्रभृति स्वनामधन्य संतों ने **'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति'** परक अपने-अपने मतों पर संक्षेप में प्रकाश डाला। एतदर्थ मैं इनके प्रति श्रद्धावनत होते हुए आभार ज्ञापित करता हूँ। सम्मेलन में राष्ट्र के कोने-कोने से आए हुए 56 मत, पंथ, संप्रदायों के समस्त पूज्य संतों को प्रणाम करते हुए आभार प्रदर्शित करता हूँ। उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति एवं महानगर की अनेक गणमान्य विभूतियों के प्रति कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने अपनी उपस्थिति से सम्मेलन को गौरव प्रदान किया। मैं इस सम्मेलन के प्रायोजक संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, उत्तर-प्रदेश सरकार एवं प्रयागराज मेला प्राधिकरण के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने विश्वविद्यालय को आयोजक के रूप में चयन कर आर्थिक संसाधनों को आवश्यकतानुसार उपलब्ध कराकर सम्मेलन को सकुशल पूर्णता प्रदान करने के साथ ही प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सम्मेलन की गौरव अभिवृद्धि में योगदान किया है। अंत में भारतीय संस्कृति की सर्व समावेशी की भावना से परिपूर्ण श्लोक के साथ अपनी लेखनी को विराम देता हूँ-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत्।।

प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह
संयोजक, सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ
प्रयागराज, कुम्भ मेला-2019

अनुक्रमणिका

प्रधान सम्पादक की कलम से	xi-xii
समितियाँ	14-20
कार्यक्रम प्रतिवेदन	31-41
स्वागत वक्तव्य	43-44
संतों के उद्‌बोधन	45-84
आलेख	85-136
कार्यक्रम चित्रवीथिका	137-177
कार्यक्रम की अन्य झलकियाँ	178-185
कार्यक्रम में संयोजित प्रदर्शनी	186-224



समितियाँ

स्वागत समिति

डॉ. मुरली मनोहर जोशी
पूर्व मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार

न्यायमूर्ति विष्णु सदाशिव कोकजे
अध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद्

श्री आलोक कुमार
कार्याध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद्

न्यायमूर्ति गिरिधर मालवीय
पूर्व न्यायाधीश, इलाहाबाद उच्च न्यायालय, प्रयागराज

न्यायमूर्ति सुधीर नारायण
पूर्व न्यायाधीश, इलाहाबाद उच्च न्यायालय, प्रयागराज

न्यायमूर्ति शम्भूनाथ श्रीवास्तव
पूर्व न्यायाधीश, इलाहाबाद उच्च न्यायालय, प्रयागराज

न्यायमूर्ति रणविजय सिंह
पूर्व न्यायाधीश, इलाहाबाद उच्च न्यायालय, प्रयागराज

डॉ. विश्वनाथ लाल निगम
संघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, काशी प्रान्त

श्री शुभ नारायण सिंह
अध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद्, काशी प्रान्त

प्रो. देवेन्द्र प्रताप सिंह
पूर्व कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

डॉ. नरेंद्र कुमार सिंह गौर
पूर्व उच्च शिक्षा, मंत्री उ.प्र. सरकार

प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी
पूर्व कुलपति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

प्रो. राजाराम यादव
कुलपति, पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर

प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा
अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, प्रयागराज

प्रो. हृदय रंजन शर्मा
पूर्व विभागाध्यक्ष, वेद विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

श्री अशोक मेहता
वरिष्ठ अधिवक्ता, इलाहाबाद उच्च न्यायालय, प्रयागराज

श्री शिव कुमार पाल
शासकीय अधिवक्ता, उ.प्र. सरकार

श्री आई. के. चतुर्वेदी
अध्यक्ष, इलाहाबाद उच्च न्यायालय बार एसोसिएशन

श्री श्यामा चरण गुप्त
सांसद, प्रयागराज

श्री वीरेन्द्र सिंह 'मस्त'
सांसद, भदोही

श्री विनोद सोनकर
सांसद, कौशाम्बी

श्रीमती अभिलाषा गुप्ता नंदी
महापौर, प्रयागराज

श्री यज्ञ दत्त शर्मा
विधान परिषद् सदस्य, उ.प्र.

श्रीमती नीलम करवरिया
विधायक, मेजा

डॉ. अजय कुमार भारती
विधायक, बारा

श्री राजमणि कोल
विधायक, कोरांव

श्री हर्षवर्धन वाजपेयी
विधायक, प्रयागराज (शहर उत्तरी)

श्री प्रवीण पटेल
विधायक, फूलपुर

श्री विक्रमादित्य मौर्य
विधायक, फाफामऊ

श्री जमुना सरोज
विधायक, सोरांव

संचालन समिति

मा. जीवेश्वर मिश्र
केन्द्रीय उपाध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद्

मा. डॉ. सुरेन्द्र जैन (संयोजक)
संयुक्त महामंत्री, विश्व हिन्दू परिषद्

डॉ. महेश शर्मा
संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), भारत सरकार

मा. सिद्धार्थ नाथ सिंह
कैबिनेट मंत्री, उ.प्र. सरकार

मा. अशोक तिवारी
केंद्रीय मंत्री, विश्व हिंदू परिषद्

मा. अम्बरीष सिंह
क्षेत्र संगठन मंत्री, विश्व हिन्दू परिषद्, पूर्वी उ.प्र.

प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह
कुलपति, उ.प्र. राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

डॉ. चन्द्र प्रकाश सिंह
संयोजक, अरुंधती वशिष्ठ अनुसन्धान पीठ

आयोजन समिति

मा. केशव प्रसाद मौर्य
उप मुख्यमंत्री, उ.प्र. सरकार

डॉ. दिनेश शर्मा
उप मुख्यमंत्री, उ.प्र. सरकार

मा. नंदगोपाल गुप्ता नंदी
कैबिनेट मंत्री, उ.प्र. सरकार

मा. डॉ. रीता बहुगुणा जोशी
कैबिनेट मंत्री, उ.प्र. सरकार

मा. जय प्रकाश चतुर्वेदी
पूर्व विधान परिषद् सदस्य, उत्तर प्रदेश

प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह (संयोजक)
कुलपति, उ.प्र.राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

डॉ. चन्द्र प्रकाश सिंह
संयोजक, अरुंधती वशिष्ठ अनुसन्धान पीठ

आयोजक

उ.प्र. राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय
प्रयागराज

प्रायोजक

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार
उत्तर प्रदेश सरकार
प्रयागराज मेला प्राधिकरण

विश्वविद्यालय समिति

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सर्व समावेशी संस्कृति कुम्भ
एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन
दिनांक 30 जनवरी 2019

व्यवस्था समन्वयक/प्रमुख/प्रभारी एवं सदस्यों के नाम

1. यातायात

डॉ0 आशुतोष गुप्ता
निदेशक,
विज्ञान विद्याशाखा
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048002

डॉ0 दिनेश सिंह
सहायक निदेशक/असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048013

श्री अवनीश चन्द्र
वित्त विभाग,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048061

श्री मोहितोष प्रसाद
वित्त विभाग,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048062

श्री मानवेन्द्र प्रताप सिंह
प्रशासन विभाग,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048065

श्री आलोक श्रीवास्तव
वित्त विभाग,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048103

श्री अजय कुमार गुप्ता जी
महानगर अध्यक्ष, प्रयाग विहिप
मो0-7525048103

2. आवास

प्रो0 पी0 के0 पाण्डेय
प्रभारी निदेशक,
शिक्षा विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048011

डॉ0 देवेश रंजन त्रिपाठी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
प्रबन्धन अध्ययन विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048048

श्री शीतल जी
सह संयोजक,
बजरंग दल, काशी प्रान्त,
मो0-9532111634

3. भोजन निर्माण

डॉ0 सन्तोषा कुमार
एसो0 प्रोफेसर,
समाज विज्ञान विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048032

डॉ0 ज्ञान प्रकाश यादव
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
प्रबन्धन अध्ययन विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज मो0-7525048042

इं0 दीनानाथ वर्मा जी
उपाध्यक्ष,
प्रयागराज महानगर, मो0-9415309991

4. प्रसाद वितरण (जलपान)/ आपूर्ति/ प्रसाद एवं भोजन

डॉ0 विनोद कुमार गुप्त
उपनिदेशक/एसो0 प्रोफेसर,
मानविकी विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048050

डॉ0 सतीश चन्द्र जैसल
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, मानविकी विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048149

डॉ0 विकास सिंह
शैक्षणिक परामर्शदाता,विज्ञान विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-9452936453

श्री सुरेश अग्रवाल जी
विभाग अध्यक्ष,
प्रयाग, विहिप, प्रयागराज,
मो.- 9415235396

श्री सन्तोष त्रिपाठी जी
महानगर सहमंत्री,
प्रयाग, विहिप, प्रयागराज,
मो0-9936998283

श्री महेश जी
प्रान्त संयोजक,
बजरंग दल, काशी प्रान्त
केशर भवन, प्रयागराज,
मो0-9794929214

5. फोटोग्राफी

डॉ0 राम जनम मौर्य
सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048055

डॉ0 प्रभात चन्द्र मिश्रा
मीडिया प्रभारी,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048029

श्री सर्वेश कुमार त्रिपाठी
परामर्शदाता, सम्पादन,
आडियो विजुअल लैब,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, 9450882424

श्री राजीव भारद्वाज जी
उपाध्यक्ष, महानगर
मो0- 9415217765

6. ध्वनि विस्तारक

डॉ0 राम जनम मौर्या
सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0- 7525048055

श्री जयदीप कुमार गौड़
कैमरामैन,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, 8423449736

श्री आनन्द सागर दुबे जी
महानगर प्रमुख, धर्म प्रसार विभाग,
प्रयाग 46, चौखण्डी कीडगंज,
प्रयागराज, 9452367264

7. पण्डाल सज्जा

प्रो0 पी0 पी0 दुबे
निदेशक,
कृषि विज्ञान विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048005

डॉ0 टी0एन0 दुबे
पुस्तकालयाध्यक्ष,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048008

डॉ0 स्मिता अग्रवाल
शैक्षणिक परामर्शदाता,
मानविकी विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048026

श्री अजय कुमार गुप्ता जी
महानगर अध्यक्ष,
प्रयाग विहिप, मो0-9415215370

8. माला फूल

डॉ0 अनिल कुमार सिंह भदौरिया
सम्पत्ति अधिकारी,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048047

श्री संदीप वर्मा
कनिष्ठ सहायक,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048081

श्री अमरनाथ जी
मो0-9956153429

9. अतिथि व्यवस्था

प्रो0 आर0पी0एस0 यादव
निदेशक,
मानविकी विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0- 7525048021

डॉ0 मानस आनन्द
शैक्षणिक परामर्शदाता,
मानविकी विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7388373493

डॉ0 अभिषेक सिंह
शैक्षणिक परामर्शदाता/प्रयागराज क्षेत्रीय केन्द्र निदेशक,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0- 7525048030

श्री वैभव जी
मो0-8687270885

10. चिकित्सा

प्रो0 (डॉ.) जी0 एस0 शुक्ल
निदेशक,
स्वास्थ्य विज्ञान विद्याशाखा
आयोजन समन्वयक, सर्वसमावेशी कुम्भ
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048001

डॉ0 मीरा पाल
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
स्वास्थ्य विज्ञान विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048052

डॉ0 मानस आनन्द
शैक्षणिक परामर्शदाता,
मानविकी विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7388373493

प्रो0 नीरज अग्रवाल जी
निदेशक, वात्सल्य अस्पताल,
प्रयागराज, मो0-9598050251

11. स्वागत

डॉ0 ओमजी गुप्ता
निदेशक,
प्रबन्धन अध्ययन विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0- 7525048004

डॉ0 उपेन्द्र नाथ तिवारी
शैक्षणिक परामर्शदाता,
शिक्षा विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0- 7525048016

श्री अनिल पाण्डेय जी
मो0- 9415217377

12. प्रचार

डॉ0 अनिल कुमार सिंह भदौरिया
सम्पत्ति अधिकारी,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048047

डॉ0 अब्दुल रहमान
शैक्षणिक परामर्शदाता,
मानविकी विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-9494644599

श्री नवीन जायसवाल
मो0- 7355327816

13. अंगवस्त्रम् द्वारा अतिथि सम्मान

डॉ0 मुकेश कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
शिक्षा विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048014

श्री रमेश कुमार यादव
शैक्षणिक परामर्शदाता,
समाज विज्ञान विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048035

श्री विनोद जी
मो0-9335113384

14. प्रदर्शनी

प्रो0 आर0पी0एस0 यादव
निदेशक,
मानविकी विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048021

डॉ0 अतुल कुमार मिश्रा
शैक्षणिक परामर्शदाता,
मानविकी विद्याशाखा ,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज,
समन्वयक, प्रदर्शनी आयोजन एवं एन.सी.जेड.
सी.सी. समिति, सर्वसमावेशी कुम्भ, प्रयागराज
मो0-7525048059

डॉ0 चन्द्र प्रकाश सिंह
संयोजक,
अरूंधती वशिष्ठ अनुसन्धन पीठ, प्रयागराज,
मो0-9453929211

15. रिकार्डिंग एवं पुस्तक प्रकाशन

प्रो0 पी0 के0 पाण्डेय
प्रभारी निदेशक,
शिक्षा विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048011

डॉ0 रुचि बाजपेई
एसोसिएट प्रोफेसर,
मानविकी विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048022

डॉ0 साधना श्रीवास्तव
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
मानविकी विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048150

डॉ0 अतुल मिश्रा
शैक्षणिक परामर्शदाता,
मानविकी विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048059

श्री मुकेश कुमार सिंह
शैक्षणिक परामर्शदाता,
मानविकी विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-9621800693

डॉ0 दिनेश कुमार गुप्ता
शैक्षणिक परामर्शदाता,
विज्ञान विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048053

डॉ0 गौरव संकल्प
शैक्षणिक परामर्शदाता,
प्रबन्धन अध्ययन विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048043

डॉ0 शिवेन्द्र प्रताप सिंह
शैक्षणिक परामर्शदाता,
मानविकी विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-8004501407

16. पंजीयन

प्रो0 पी0 के0 पाण्डेय
प्रभारी निदेशक,
शिक्षा विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज,
मो0-7525048011

प्रो0 सुधांशु त्रिपाठी
प्रभारी निदेशक,
समाज विज्ञान विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज,
मो0-7525048003

डॉ0 दिनेश सिंह
सहायक निदेशक/असि0 प्रोफेसर,
शिक्षा विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज,
मो0-7525048013

डॉ0 मुकेश कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
शिक्षा विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज,
मो0-7525048014

डॉ0 दीप शिखा श्रीवास्तव
शैक्षणिक परामर्शदाता,
समाज विज्ञान विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-7525048034

डॉ0 नीता मिश्रा
शैक्षणिक परामर्शदाता,
शिक्षा विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-9792037014

श्री राजेश कुमार गौतम
शैक्षणिक परामर्शदाता,
मानविकी विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-9838704605

डॉ0 धर्मवीर सिंह
शैक्षणिक परामर्शदाता,
विज्ञान विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-9235833273

डॉ0 शिवेन्द्र प्रताप सिंह
शैक्षणिक परामर्शदाता,
मानविकी विद्याशाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, मो0-8004501407





प्रो. पी.के.पाण्डेय
आचार्य एवं प्रभारी निदेशक, शिक्षा विद्याशाखा
उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय एक परिचय

शिक्षा सामाजिक विकास का सबसे सशक्त माध्यम है। इसलिए प्रत्येक समाज के लिए यह अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा आवश्यक है कि शिक्षा प्रणाली की सामर्थ्य का अनुकूलतम उपयोग करते हुए राष्ट्र निर्माण के पथ पर अग्रसर हो। वास्तव में प्रभावी शिक्षा के द्वारा भावी नागरिकों में ऐसे ज्ञान, कौशल तथा अभिवृत्तियों का समावेश किया जा सकता है जो उन्हें अपने सामाजिक व राष्ट्रीय कर्त्तव्यों का सफलतापूर्वक निर्वहन करने योग्य बनाते हैं। दूरस्थ व मुक्त शिक्षा प्रणाली भारतीय नागरिकों के शिक्षा संबंधी मौलिक अधिकार की सर्वसुलभता के क्षेत्र में आज युगान्तरकारी भूमिका निभा रही है। परम्परागत विश्वविद्यालयों में ज्ञानार्जन के जिज्ञासुओं की संख्या में हो रही निरन्तर वृद्धि ने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के व्यापक प्रयोग को आवश्यक एवं अपरिहार्य बना दिया है। वर्तमान में विश्व के लगभग समस्त प्रमुख राष्ट्रों के द्वारा इस प्रणाली को अपनाया जा रहा है।

भारतवर्ष में इग्नू के रूप में एक राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 14 राज्य मुक्त विश्वविद्यालय एवं 100 से अधिक दूरस्थ शिक्षा संस्थान वर्तमान में कार्य कर रहे हैं। मुद्रित स्व-अध्ययन सामग्री, अधिन्यास, परामर्श सत्र, रेडियो व दूरदर्शन प्रसारण, इण्टरनेट तथा पुस्तकालय सेवा के साथ-साथ सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का व्यापक प्रयोग करके दूरस्थ शिक्षा प्रणाली शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का प्रभावी ढंग से संचालन करती है। मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली परम्परागत शिक्षा की प्रतिद्वन्द्वी नहीं है, वरन् एक ऐसी सहायक प्रणाली है जो परम्परागत शिक्षा प्रणाली पर तीव्र गति से बढ़ रहे बोझ को कम करके इसे विघटित होने से बचाने का महत्वपूर्ण कार्य कर रही है।

उत्तर प्रदेश के अधिसंख्य जनसमुदाय में उच्च शिक्षा एवं ज्ञानाधारित कौशलों के प्रसार हेतु सन् 1999 में तीर्थराज प्रयाग की पवित्र भूमि पर उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा की गई। विगत 19 वर्षों की अपनी संकल्पित यात्रा के दौरान इस मुक्त विश्वविद्यालय ने समाज के वंचित वर्गों, महिलाओं, सेवारत व्यक्तियों एवं दूर-दराज के क्षेत्र में रहने वाले लोगों तक उच्च शिक्षा का प्रकाश पहुँचाकर उनमें आशा और नवोत्साह का संचार किया है। वर्तमान में इस विश्वविद्यालय के सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में लगभग 1100 अध्ययन केन्द्र तथा 11 क्षेत्रीय केन्द्र विद्यमान हैं। **'सबको शिक्षा, सबको ज्ञान'**, **'गुरुकुल से छात्रकुल'** और **'छात्र जहाँ, हम वहाँ'**

के आदर्श सूत्र वाक्यों को अपनी कार्य-पद्धति में आत्मसात् करते हुए यह मुक्त विश्वविद्यालय अपने 111 शैक्षणिक कार्यक्रमों द्वारा गुणवत्तापूर्ण एवं रोजगारपरक उच्च शिक्षा के प्रदेश व्यापी प्रसार में निरन्तर संलग्न है।

उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय अपने स्थापना वर्ष से ही भौतिक अधि-संरचना के क्षेत्र में निरन्तर प्रगति कर रहा है। विश्वविद्यालय मुख्यालय के गंगा, सरस्वती एवं यमुना परिसर के नाम से स्थापित तीन परिसरों से यहाँ की विभिन्न शैक्षिक एवं प्रशासनिक गतिविधियों का प्रदेशव्यापी संचालन किया जाता है। वैदिक युग के मंत्रद्रष्टा ऋषियों तथा भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में राष्ट्र को सर्वस्व समर्पित करने वाले महान जननायकों की गौरवमयी धरोहर को आत्मसात् करते हुए इस विश्वविद्यालय ने उनके नाम पर विभिन्न नवनिर्मित भवनों, सभागारों, प्रांगणों आदि को अभिहित करने की परम्परा का अनुसरण किया है। विश्वविद्यालय के सरस्वती परिसर के शैक्षणिक भवन में विभिन्न विद्याशाखाओं के अतिरिक्त लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार को भी अवस्थापित किया गया है। सरस्वती परिसर में ही पृथक् पुस्तकालय भवन की व्यवस्था है, जिसमें याज्ञवल्क्य ग्रन्थालय एवं गार्गी सभागार विद्यमान हैं। याज्ञवल्क्य ग्रन्थालय के प्रथम तल पर ऑडियो-विजुअल लैब है। जिसके माध्यम से प्रदेश में ऑनलाइन एजुकेशन के विस्तार तथा क्षेत्रीय केन्द्रों पर वीडियो कान्फ्रेंसिंग का कार्य सम्पादित किया जाता है। विद्यार्थियों व अभिभावकों को सुलभ सम्पर्क एवं वांछित सूचना-प्राप्ति के लिए विश्वविद्यालय द्वारा Toll Free No.1800 120 111 333 भी उपलब्ध है।

विश्वविद्यालय के इसी सरस्वती परिसर में स्थित दीक्षान्त समारोह प्रांगण में एक हजार व्यक्तियों की क्षमता वाले भव्य सभागार का निर्माण कार्य भी शीघ्र पूर्ण होने वाला है। विश्वविद्यालय को सम्पूर्ण भौतिक सुविधाओं से युक्त बनाने के क्रम में गंगा परिसर में प्रशासनिक भवन, शिक्षार्थियों एवं बाह्य आगन्तुकों के लिए एक प्रसाधन भवन का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है। यमुना परिसर में क्षेत्रीय कार्यालय, प्रयागराज, मैत्रेयी ग्रन्थालय, आदिशंकराचार्य सभागार तथा विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं कर्मचारियों हेतु आवास का निर्माण पूर्ण हो चुका है। कार्य विश्वविद्यालय के सभी परिसर **'हरित परिसर, स्वच्छ परिसर'** की संकल्पना पर विकसित हैं।

विश्वविद्यालय आई0सी0टी0 पर विशेष ध्यान केन्द्रित करते हुए वर्चुअल शिक्षा संस्थान के रूप में कार्य करने की ओर अग्रसर है। भ्रष्टाचार के खिलाफ व प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के **'डिजिटल इंडिया'** मुहिम की दिशा में सार्थक पहल करते हुए मुक्त विश्वविद्यालय ने सारी व्यवस्था ऑनलाइन कर ली है। विश्वविद्यालय में कम्प्यूटर लैब, स्मार्ट क्लासरूम, ई-सूचना विवरणिका आदि की व्यवस्था है। इसका मुख्य उद्देश्य कार्यों में पारदर्शिता, समय की बचत व छात्र-छात्राओं को अधिक से अधिक सुविधा देना है। आपसी विचार-विमर्श द्वारा कार्यपद्धति को बेहतर बनाने के लिए विश्वविद्यालय प्रत्येक सत्र में विभिन्न क्षेत्रीय केन्द्रों पर समन्वयकों की कार्यशालाओं का आयोजन करता है। इन कार्यशालाओं का सुप्रशासन एवं सुव्यवस्था की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.uprtou.ac.in अधिकाधिक छात्रोन्मुख, सूचनापरक तथा आकर्षक है। कनेक्ट मैनेजमेंट सिस्टम (सीएमएस) के अंतर्गत ऑनलाइन प्रवेश, ऑनलाइन परीक्षा और ऑनलाइन स्वअध्ययन सामग्री तथा यूनिवर्सिटी मैनेजमेंट सिस्टम जुड़े हुए हैं। सभी क्षेत्रीय केन्द्रों और अध्ययन केन्द्रों को उनकी यूनिक लॉगिन आई0डी0 दी गयी है। इस वेबसाइट पर सोशल मीडिया के विभिन्न लिंक जैसे फेसबुक, यू-ट्यूब एवं ट्विटर उपलब्ध हैं। दूरस्थ शिक्षा में दृश्य-श्रव्य माध्यम की अत्यंत उपयोगिता है। इससे विद्यार्थी घर बैठे शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए MOOCS तथा SWAYAM जैसे मुक्त शिक्षा संसाधनों का प्रयोग

किया जा रहा है।

विश्वविद्यालय का पुस्तकालय उच्चकोटि की पुस्तकों, अध्ययन सामग्री एवं आई0सी0टी0 की सुविधाओं से सुसज्जित है। शिक्षार्थी अपनी अध्ययन सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इसका उपयोग कर सकते हैं। अध्ययन केन्द्रों पर ऑडियो, वीडियो, कम्प्यूटर व इन्टरनेट, विशेषज्ञ परामर्श, टेली कान्फ्रेंसिंग, आदि की सुविधा दी जाती है। सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली के आधार पर वर्ष में दो बार परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है। इस प्रणाली में शिक्षार्थी वर्षपर्यन्त शैक्षिक रूप से सक्रिय रहकर अध्ययन-मनन करते हैं।

यह मुक्त विश्वविद्यालय भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा नव-निर्देशित **'विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली' (च्वाइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम CBCS)** के आधार पर स्नातक और परास्नातक कार्यक्रमों की अभिनव संरचना को लागू करने वाला संभवतः देश का पहला विश्वविद्यालय है। छात्रों की निरन्तर बढ़ती हुई माँग के आधार पर नए रोजगारपरक एवं कौशल आधारित शैक्षणिक कार्यक्रमों को प्रत्येक सत्र में सम्मिलित किया जाता है। वर्तमान में नवीन कार्यक्रमों में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर योग एवं भूगोल तथा स्नातकोत्तर स्तर पर उर्दू के बहु प्रतीक्षित पाठ्यक्रम, जी.एस.टी, वैदिक गणित, क्लीनिकल साइकोलॉजी, आहार विज्ञान, पब्लिक हेल्थ, जनांकिकी, खाद्य सुरक्षा, डेयरी टेक्नोलॉजी, कम्प्यूटर एनीमेशन, पोल्ट्री फार्मिंग, मधुमक्खी पालन, जैविक खेती तथा जल प्रबंधन आदि क्षेत्रों से सम्बन्धित विविध कार्यक्रम छात्रों के बीच अत्यधिक लोकप्रिय हो रहे हैं। विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक एवं भौतिक प्रगति के बहुमुखी आयामों को स्पर्श करते हुए वर्तमान में बैंकिंग, पोस्ट ऑफिस, योग एवं फिटनेस सेण्टर, कैण्टीन, चिकित्सा आदि सुविधाओं की परिसर में उपलब्धता सुनिश्चित की है।

दूरस्थ व मुक्त शिक्षा के अन्तर्गत राजनीति, समाज व संस्कृति से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर उच्च स्तरीय शोध एवं रचनात्मक चिन्तन को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय में माननीय अटल बिहारी बाजपेयी गुड गवर्नेन्स चेयर, पं0 दीन दयाल उपाध्याय दूरस्थ शिक्षा अनुसंधान केन्द्र एवं जम्मू कश्मीर अध्ययन केन्द्र की स्थापना की गयी है। विश्वविद्यालय द्वारा समय-समय पर पुस्तकों, शोध-पत्रों, सूचना-पत्रिकाओं आदि का प्रकाशन तथा अन्य साहित्यिक एवं सामाजिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है, जो शिक्षा को समाज से जोड़ने में अत्यन्त सहायक सिद्ध हुआ है। विश्वविद्यालय की विभिन्न विद्याशाखाओं द्वारा समसामायिक महत्वपूर्ण विषयों पर वर्ष भर आयोजित होने वाले व्याख्यानों, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं का शैक्षणिक गुणवत्ता के उन्नयन में महत्वपूर्ण योगदान रहता है। इससे विश्वविद्यालय के शिक्षक, शिक्षार्थी एवं समाज, सभी एक साथ लाभान्वित होते हैं। शोध एवं अनुसंधान के क्षेत्र में प्रगति करते हुए इस वर्ष विश्वविद्यालय यू0जी0सी0 के नवीन मानकों के अनुसार विभिन्न विषयों में पी-एच0डी0 कार्यक्रम पुनः प्रारम्भ करने जा रहा है। वर्तमान में विश्वविद्यालय द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रम निम्न हैं:-

विश्वविद्यालय द्वारा विद्याशाखावार संचालित कार्यक्रमों का विवरणः-

Details of Schoolwise Programmes Conducted by University:-

1. मानविकी विद्याशाखा - (School of Humanities)

(अ) स्नातकोत्तर कार्यक्रम - (Post Graduate Programmes)

M.A. (स्नातकोत्तर कला) - (Master of Arts)

हिन्दी (Hindi) (MAHI), अंग्रेजी (English) (MAEN), अर्थशास्त्र (Economics) (MAEC), संस्कृत (Sanskrit) (MAST), दर्शनशास्त्र (Philosophy) (MAPH)

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में परास्नातक (Master of Library and Information Science) (MLIS), पत्रकारिता में परास्नातक (Journalism) (MJ)

(ब) स्नातक कार्यक्रम - (Graduate Programmes)

B.A. (स्नातक कला) - (Bachelor of Arts)

हिन्दी (Hindi) (UGHI), अंग्रेजी (English) (UGEN), अर्थशास्त्र (Economics) (UGEC), संस्कृत (Sanskrit) (UGST), दर्शनशास्त्र (Philosophy) (UGPH), उर्दू (Urdu) (UGUR)

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में स्नातक (Bachelor of Library and Information Science) (BLIS)

(स) स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम (Post Graduate Diploma Programmes)

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (Post Graduate Diploma in Translation) (PGDT), हिन्दी में रचनात्मक लेखन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (Post Graduate Diploma in Creative Writing in Hindi) (PGDCWH), इलेक्ट्रानिक मीडिया प्रबंधन एवं फिल्म प्रोडक्शन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (Post Graduate Diploma in Electronic Media Management and Film Production) (PGDEM & FP), प्रयोजनमूलक हिन्दी में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (Post Graduate Diploma in Functional Hindi) (PGDFH), ग्रामीण पत्रकारिता एवं जनसंचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (Post Graduate Diploma in Rural Journalism and Mass Communication) (PGDRJMC), पत्रकारिता एवं जनसंचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (Post Graduate Diploma in Journalism and Mass Communication) (PGDJMC), आध्यात्मिक पर्यटन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (Post Graduate Diploma in Spiritual Tourism) (PGDST)

(द) डिप्लोमा कार्यक्रम - (Diploma Programmes)

ग्रामीण विकास में डिप्लोमा (Diploma in Rural Development) (DRD), डिप्लोमा इन फोटोग्राफी (Diploma in Photography) (DIP), उर्दू में डिप्लोमा (Diploma in Urdu) (DUR), उर्दू पत्रकारिता एवं जनसंचार में डिप्लोमा (Diploma in Urdu Journalism & Mass Communication) (DUJMC), उर्दू न्यूज रीडिंग एण्ड एंकरिंग में डिप्लोमा (Diploma in Urdu News Reading & Anchoring) (DUNRA)

(य) प्रमाण-पत्र कार्यक्रम - (Certificate Programmes)

ग्रामीण पत्रकारिता एवं जनसंचार में प्रमाण पत्र (Certificate in Rural Journalism and Mass Communication) (CRJMC),

एकल विषय में द्वि-वर्षीय प्रमाण-पत्र कार्यक्रम-कला (Two years Certificate Course in Single Subject-Arts) (CCSS)

(र) जागरूकता कार्यक्रम - (Awareness Programmes)

कुम्भ दर्शन में जागरूकता कार्यक्रम (Awareness Programme in Kumbh Darshan) (APKD), अन्त्योदय जागरूकता कार्यक्रम (Awareness Programme on Anatyoday) (APAY), एकात्म मानववाद जागरूकता कार्यक्रम (Awareness Programme on Ekatam Manavwad) (APAM)

2. समाज विज्ञान विद्याशाखा (School of Social Sciences)

(School of Social Sciences)

(अ) स्नातकोत्तर कार्यक्रम - (Post Graduate Programmes)

M.A. (स्नातकोत्तर कला) - (Master of Arts)

इतिहास (History) (MAHY), समाजशास्त्र (Sociology) (MASY), राजनीतिशास्त्र (Political Science) (MAPS), समाज कार्य (Social Work) (MASW)

(ब) स्नातक कार्यक्रम - (Graduate Programmes)

B.A. (स्नातक कला) - (Bachelor of Arts)

इतिहास (History) (UGHY), समाजशास्त्र (Sociology) (UGSY), राजनीतिशास्त्र (Political Science) (UGPS), लोकप्रशासन (Public Administration) (UGPA), **पर्यटन में स्नातक (BA in Tourism).**

(स) स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम - (Post Graduate Diploma Programmes)

पर्यावरण एवं संधृत विकास में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (Post Graduate Diploma in Environment and Sustainable Development) (PGD-ESD), ग्रीन सोशल वर्क में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (Post Graduate Diploma in Green Social Work) (PGDGSW), संग्रहालय विज्ञान में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (Post Graduate Diploma in Museology) (PGDM).

(द) प्रमाण-पत्र कार्यक्रम - (Certificate Progrmmes)

मानवाधिकार में प्रमाण-पत्र (Certificate in Human Rights) (CHR), महिला सशक्तीकरण एवं संविकास में प्रमाण-पत्र (Certificate in Women Empowerment and Development) (CWED), व्यावहारिक अपराधशास्त्र में प्रमाण-पत्र (Certificate in Applied Criminology) (CAC), एकल विषय में द्वि-वर्षीय प्रमाण-पत्र कार्यक्रम-कला (Two years Certificate Course in Single Subject-Arts) (CCSS)

(य) जागरूकता कार्यक्रम (Awareness Programmes)

पंचायती राज जागरूकता कार्यक्रम (Awareness Programme in Panchyati Raj) (APPR), सुशासन में जागरूकता कार्यक्रम (Awareness Programme on Good Governance) (APGG).

3. विज्ञान विद्याशाखा - (School of Sciences)

(अ) स्नातकोत्तर कार्यक्रम - (Post Graduate Programmes)

M.Sc. (विज्ञान में स्नातकोत्तर) - (Master of Science)

सांख्यिकी (Statistics) (PGSTAT), जैव-रसायन (Bio-chemistry) (PGBCH), कम्प्यूटर विज्ञान (Computer Science) (MSc.CS.)

M.A. (स्नातकोत्तर कला) - (Master of Arts)

सांख्यिकी (Statistics) (MASTAT)

(ब) स्नातक कार्यक्रम - (Graduate Programmes)

B.Sc. (विज्ञान में स्नातक) - (Bachelor of Science)

सांख्यिकी (Statistics) (UGSTAT), वनस्पति विज्ञान (Botany) (UGBY), प्राणि विज्ञान (Zoology) (UGZY), जैवरसायन (Biochemistry) (UGBCH), रसायन विज्ञान (Chemistry) (UGCHE), भौतिक विज्ञान (Physics) (UGPHS), गणित (Mathematics) (UGMM), कम्प्यूटर विज्ञान (Computer Science) (UGCS)

B.A. (स्नातक कला) - (Bachelor of Arts)

सांख्यिकी (Statistics) (UGSTAT), गणित (Mathematics) (UGMM)

(स) स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम - (Post Graduate Diploma Programmes)

Post Graduate Diploma in Bio-Statistics and Demography (PGDBSD), Post Graduate Diploma in Bio-Statistics and Population Studies (PGDBSPS)

(द) डिप्लोमा कार्यक्रम - (Diploma Programmes)

डिप्लोमा इन एप्लाइड स्टेटिस्टिक्स एण्ड कम्प्यूटर (Diploma in Applied Statistics and Computer) (DASC), वैदिक गणित में डिप्लोमा कार्यक्रम (Diploma in Vedic Mathematics) (DVM)

(य) प्रमाण-पत्र कार्यक्रम - (Certificate Progrmmes)

व्यावहारिक सांख्यिकी और कम्प्यूटर में प्रमाण-पत्र (Certificate in Applied Statistics and Computer) (CASC), फॉरेन्सिक साइंस में प्रमाण-पत्र (Certificate in Forensic Science) (CFS), Certificate Programme in Laboratory Technique (CPLT), Certificate Course in Computer Animation (CCCA), Certificate Course in Web Designing and Development (CCWD), Certificates Course in Waste Water Treatment (CWWT), Certificates Course in Natural Resources and Sustainable Development (CNSD), Certificate in Environmental Studies (CES), वैदिक गणित में प्रमाण-पत्र कार्यक्रम (Certificate in Vedic Mathematics) (CVM),

एकल विषय में द्वि-वर्षीय प्रमाण-पत्र कार्यक्रम-विज्ञान (Two years Certificate Course in Single Subject-Science) (CCSS-Sc.)

4. शिक्षा विद्याशाखा - (School of Education)

(अ) स्नातकोत्तर कार्यक्रम - (Post Graduate Programmes)

M.A. (स्नातकोत्तर कला) - (Master of Arts)

शिक्षाशास्त्र (Education) (MAED)

(ब) स्नातक कार्यक्रम (Graduate Programmes)

B.A. (स्नातक कला) - (Bachelor of Arts)

शिक्षाशास्त्र (Education) (UGED)

Bachelor of Education (B.Ed.)

Bachelor of Special Education (B.Ed. (SE)

(स) स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम - (Post Graduate Diploma Programmes)

शिक्षा प्रशासन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (Post Graduate Diploma in Educational Administration) (PGDEA), वोकेशनल गाइडेन्स एवं कैरियर काउन्सिलिंग में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (Post Graduate Diploma in Vocational Guidance and Career Counselling) (PGDVGCC), दूरस्थ शिक्षा में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (Post Graduate Diploma in Distance Education) (PGDDE)

(द) प्रमाण-पत्र कार्यक्रम - (Certificate Programmes)

(एकल विषय में द्वि-वर्षीय प्रमाण-पत्र कार्यक्रम-कला) (Two years Certificate Course in Single Subject-Arts) (CCSS)

5. कम्प्यूटर एवं सूचना विज्ञान विद्याशाखा - (School of Computer and Information Science)

(अ) स्नातकोत्तर कार्यक्रम - (Post Graduate Programmes)

कम्प्यूटर अनुप्रयोग में स्नातकोत्तर (Master of Computer Application) (MCA)

(ब) स्नातक कार्यक्रम - (Graduate Programmes)

कम्प्यूटर अनुप्रयोग में स्नातक (Bachelor of Computer Application) (BCA)

(स) स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम - (Post Graduate Diploma Programmes)

कम्प्यूटर अनुप्रयोग में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (Post Graduate Diploma in Computer Application) (PGDCA).

(द) डिप्लोमा कार्यक्रम - (Diploma Programmes)

Diploma in Web Technology (DWT)

(य) प्रमाण-पत्र कार्यक्रम - (Certificate Programmes)

कम्प्यूटर में प्रमाणपत्र (Certificate in Computer Course) (CCC), Certificate Course in Linux Administration (CCLA)

6. प्रबन्धन अध्ययन विद्याशाखा - (School of Management Studies)

(अ) स्नातकोत्तर कार्यक्रम - (Post Graduate Programmes)

व्यवसाय प्रशासन (Business Administration) (MBA), वाणिज्य (Commerce) (M.Com)

(ब) स्नातक कार्यक्रम - (Graduate Programmes)

व्यवसाय प्रशासन (Business Administration) (BBA), वाणिज्य (Commerce) (B.Com)

(स) स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम - (Post Graduate Diploma Programmes)

वित्तीय प्रबन्धन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (Post Graduate Diploma in Financial Management) (PGDFM), अन्तर्राष्ट्रीय मार्केटिंग और ई-बिजनेस में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (Post Graduate Diploma in International Marketing and E-Business) (PGDIMB), विपणन प्रबन्धन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (Post Graduate Diploma in Marketing Management) (PGDMM), मानव संसाधन विकास में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (Post Graduate Diploma in Human Resource Development) (PGDHRD), उत्पादन प्रबन्धन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (Post Graduate Diploma in Production Management) (PGDPM).

(द) डिप्लोमा कार्यक्रम - (Diploma Programmes)

Diploma in Hospitality and Hotel Management (DHHM)

(य) प्रमाण-पत्र कार्यक्रम - (Certificate Programmes)

Certificate in Hospitality and Hotel Management (CHHM), Certificate in Goods and Service Tax (CGST)

7. स्वास्थ्य विज्ञान विद्याशाखा - (School of Health Science)

(अ) स्नातकोत्तर कार्यक्रम - (Post Graduate Programmes)

M.A. स्नातकोत्तर कला- (Master of Arts)
गृह विज्ञान- (Home Science) (MAHSc.)
योग- (Yoga) (MAYO)

(ब) स्नातक कार्यक्रम - (Graduate Programmes)

B.A. स्नातक कला- (Bachelor of Arts)
योग- (Yoga) (UGYO)

(स) स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम - (Post Graduate Diploma Programmes)

Post Graduate Diploma in Dietetics and Therapeutic Nutrition (PGDDTN), Post Graduate Diploma in Hospital and Public Health Management (PGDHHM), Post Graduate Diploma in Yoga (PGDYO), Post Graduate Diploma in Food Safety and Nutritional Quality Management (PGDFSQM) Post Graduate Diploma in Counseling & Clinical Psychology (PGDCCP).

(द) डिप्लोमा कार्यक्रम - (Diploma Programmes)

स्वाथ्य शिक्षा एवं पोषण में डिप्लोमा (Diploma in Health Education and Nutrition) (DHEN), डायटेटिक्स और न्यूट्रीशन में डिप्लोमा (Diploma in Dietetics and Nutrition) (DCDN), प्रारम्भिक बाल्यावस्था परिचर्या एवं शिक्षा में डिप्लोमा (Diploma in Early Childhood Care and Education) (DECE), Diploma in Yoga (DYS)

(य) प्रमाण-पत्र कार्यक्रम - (Certificate Programmes)

शिशु पालन एवं पोषण में प्रमाण पत्र (Certificate in Child Care and Nutrition) (CCCN), पोषण एवं आहार में प्रमाण पत्र (Certificate in Nutrition and Food) (CNF), Certificate in Printing Technology (CPT), योग में प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम (Certificate Course in Yoga) (CCY).

(र) जागरूकता कार्यक्रम - (Awareness Programmes)

शिशु पालन एवं पोषण में जागरूकता कार्यक्रम (Awareness Programme in Child Care and Nutrition) (APCCN), पोषण एवं आहार में जागरूकता कार्यक्रम (Awareness Programmes in Child Nutrition and Food) (APNF), योग जागरूकता कार्यक्रम (Awareness Programme in Yoga) (APY).

8. व्यावसायिक अध्ययन विद्याशाखा - (School of Vocational Studies)

(अ) स्नातक कार्यक्रम - (Graduate Programmes)

B.A. (स्नातक कला) - (Bachelor of Arts)

फैशन डिजाइनिंग (Fashion Designing) (UGFD), टेक्सटाइल डिजाइनिंग (Textile Designing) (UGTD)

(ब) डिप्लोमा कार्यक्रम - (Diploma Programmes)

फैशन डिजाइनिंग में डिप्लोमा (Diploma in Fashion Designing) (DFD), टेक्सटाइल डिजाइनिंग में डिप्लोमा (Diploma in Textile Designing) (DTD), ज्वेलरी डिजाइनिंग में डिप्लोमा (Diploma in Jewelry Designing) (DJD), पेपर क्राफ्ट में डिप्लोमा (Diploma in Paper Craft) (DPC), होम आर्ट्स में डिप्लोमा (Diploma in Home Arts) (DHA).

(स) प्रमाण-पत्र कार्यक्रम - (Certificate Programmes)

कारपेट एण्ड टेक्सटाइल टेक्नालॉजी में प्रमाण-पत्र (Certificate in Carpet and Textile Technology) (CCTT), फैशन डिजाइनिंग में प्रमाण-पत्र (Certificate in Fashion Designing) (CFD), टेक्सटाइल डिजाइनिंग में प्रमाण-पत्र (Certificate in Textile Designing) (CTD),

एकल विषय में द्वि-वर्षीय प्रमाण-पत्र कार्यक्रम-कला (Two years Certificate Course in Single Subject-Arts) (CCSS)

9. कृषि विज्ञान विद्याशाखा - (School of Agriculture Science)

(अ) स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम - (Post Graduate Diploma Programmes)

Post Graduate Diploma in Agricultural Extension (PGDAE)

(ब) डिप्लोमा कार्यक्रम - (Diploma Programmes)

Diploma in Dairy Technology (DDT), Diploma in Value Added Products from Fruits and Vegetables (DVAPFV), Diploma in Agriculture (DAG), Diploma in Agri-Business Management (DABM).

(स) प्रमाण-पत्र कार्यक्रम - (Certificate Programmes)

पोस्ट हार्वेस्ट तकनीकी एवं मूल्य संवर्धन में प्रमाण-पत्र (Certificate in Post Harvest Technology and Value Addition) (CPHT&VA), औषधीय एवं सगन्धीय पौधों की खेती में प्रमाण-पत्र (Certificate in Cultivation of Medicinal and Aromatic Plants) (CCMAP), पशुधन उत्पादन प्रणाली में प्रमाण-पत्र (Certificate in Live Stock Production System) (CLPS), बागवानी में प्रमाण-पत्र Certificate Programme in Gardening (CPIG), Certificate in Organic Farming (COF).

(द) जागरूकता कार्यक्रम - (Awareness Programmes)

डेयरी में जागरूकता कार्यक्रम (Awareness Programme in Dairy Farming) (APDF).

10. पृथ्वी विज्ञान विद्याशाखा - (School of Earth Science)

(अ) स्नातकोत्तर कार्यक्रम - (Post Graduate Programmes)

M.A. स्नातकोत्तर कला- (Master of Arts)

भूगोल- (Geography) (MAGO)

(ब) स्नातक कार्यक्रम - (Graduate Programmes)

B.A. स्नातक कला- (Bachelor of Arts)

भूगोल- (Geography) (UGGO)

(स) स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम - (Post Graduate Diploma Programmes)

Post Graduate Diploma in Remote Sensing (PGDRS)

(द) डिप्लोमा कार्यक्रम - (Diploma Programmes)

Diploma in Watershed Management (DWM)

(य) प्रमाण-पत्र कार्यक्रम - (Certificate Programmes)

Certificate in Environmental Studies (CES), Certificates Courses in Waste Water Treatment (CWWT), Certificates Courses in Natural Resources and Sustainable Development (CNSD).

इस प्रकार यह विश्वविद्यालय विगत 18 वर्षों से प्राचीन परम्पराओं के साथ-साथ युगानुरूप नवीन कौशलों से संपृक्त, रोजगारपरक एवं गुणवत्तायुक्त उच्च शिक्षा प्रदान करके ऐसी युवा शक्तियों का निर्माण करने के लिए कृत संकल्पित है जो समतापरक प्रबुद्ध मानव समाज के प्रति समर्पित होकर एक नवीन भारत का निर्माण करने में अपना श्रेष्ठतम् योगदान प्रदान कर सकें।

कार्यक्रम प्रतिवेदन

प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह

संयोजक, सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ

30 जनवरी, 2019

वर्ष 2019 के दिव्य एवं भव्य कुम्भ में 30 जनवरी को भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय, उत्तर प्रदेश शासन और मेला प्राधिकरण, प्रयागराज की ओर से उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज के तत्वावधान में प्रयागराज कुम्भ मेला क्षेत्र के सेक्टर-1 स्थित गंगा पंडाल में 'सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ' का भव्य आयोजन हुआ, जिसमें विभिन्न सम्प्रदायों के सन्तों ने अपने विचारों के माध्यम से जनता को प्रबोधित किया।

इस सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ कार्यक्रम का प्रारंभ विभिन्न सम्प्रदायों और पंथों के प्रणेता सन्त-महात्माओं के चित्रों तथा उनके मतों के संक्षिप्त परिचय से युक्त ज्ञानवर्धक और आकर्षक प्रदर्शनी से हुआ। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन दिनांक 30 जनवरी 2019 को पूर्वाह्न 10 बजे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह **माननीय सुरेश भैया जी जोशी और** उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के **माननीय कुलपति प्रो0 के0 एन0 सिंह** द्वारा कुम्भ क्षेत्र के गंगा पंडाल में किया गया। इस अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद् के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री विष्णु हरि कोकजे, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह **श्री दत्तात्रेय होशबले जी**, विश्व हिन्दू परिषद् के अन्तर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **माननीय श्री चम्पतराय जी**, विश्व हिन्दू परिषद् की ओर से कार्यक्रम के संयोजक **माननीय चन्द्र प्रकाश जी**, निदेशक, अरुन्धती वशिष्ठ अनुसंधान पीठ, प्रयागराज तथा आयोजन समिति के **माननीय सुरेन्द्र जैन, माननीय जीवेश्वर मिश्र** आदि की उपस्थिति ने समारोह को गरिमा प्रदान की। इस सर्वसमावेशी संस्कृति प्रदर्शनी का आयोजन उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय की मानविकी विद्याशाखा के निदेशक **प्रो0 आर0 पी0 एस0 यादव** एवं **डॉ0 चन्द्र प्रकाश सिंह,** निदेशक, अरुन्धती वशिष्ठ अनुसंधान पीठ, प्रयागराज के निर्देशन में विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र के शैक्षणिक परामर्शदाता **डॉ0 अतुल मिश्रा** द्वारा उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के सहयोग से किया गया था।

प्रदर्शनी के उपरान्त सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ के मंच पर कार्यक्रम प्रारम्भ होने के अन्तराल में भक्ति गीतों की मंगलमयी संगीतात्मक प्रस्तुति ने वातावरण को पूजनमय और पवित्र बनाने में अपूर्व योग दिया। इसके पश्चात्-

द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादि लक्ष्यं,
एकं नित्यं विमलमचलं सर्पधीसाक्षिभूतं,
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं त्वं नमामि।

इस गुरुपूजक मंगलाचरण के द्वारा संचालक महोदय **माननीय जीवश्वर मिश्र** (केन्द्रीय

उपाध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद्) ने कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। इस सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे मंचासीन परमपूज्य स्वामी हंसदेवाचार्य जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह माननीय सुरेश भैया जी जोशी, कार्यक्रम संयोजक उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो0 के0एन0 सिंह तथा मंच पर उपस्थित प्रमुख परमपूज्य सन्तगणों, द्वारा दीप प्रज्ज्वलन किया गयाः-

हरिः ओउम्

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽजायत।
श्रोत्रा द्वायुश्चप्राणश्च मुखादग्निरजायत।।
ओउम् असतो मा सद्गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्माऽमृतं गमय।
ओउम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

संचालक महोदय द्वारा इन मंत्रों के उच्चारण से विधिवत् सम्पादित दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात् **श्री अशोक तिवारी जी** द्वारा एकात्मता मंत्र का वाचन किया गया जो अत्यन्त प्रभावशाली रहा-

यं वैदिका मंत्रदृशः पुराणा इन्द्रं यमं मातारिश्वा नमाहुः।
वेदान्तनोऽनिर्वचनीयमेकं यं ब्रह्मशब्दे नवनिर्दिशन्ति।।
सैवायमीशं शिव इत्यवोचन यं वैष्णवा विष्णुरितिस्तुवन्ति।
बुद्धस्तथाऽन्नितिबौद्धजैनाः सत् श्री अकालेति च सिक्ख सन्ताः।।
शास्तेति केचित् प्रकृतिः कुमारः स्वामीति मातेति पितेति भक्त्याः।
यं प्रार्थयन्ते जगदीस्यतारं सा एक एव प्रभुरत्वतीऽहम्।।

इसके पश्चात् मंच पर आसीन पूज्य सन्तगणों के स्वागत के क्रम में सर्वप्रथम **प्रो0 के0एन0 सिंह**, माननीय कुलपति, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज ने कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे **श्रीमद् जगद्गुरू रामानन्दाचार्य, परमपूज्य श्री स्वामी हंसदेवाचार्य जी** को माल्यार्पण करके, उत्तरीय पहनाकर तथा सम्मेलन किट प्रदान करके उनका स्वागत किया तथा उनके चरण-स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इसी प्रकार स्वागत की इस परम्परा में मंचासीन समस्त पूज्य सन्तवृन्द का स्वागत राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ एवं विश्व हिन्दू परिषद् के पदाधिकारियों तथा आयोजकों द्वारा किया गया।

इसके अनन्तर **कार्यक्रम संयोजक** उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के माननीय **कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह** ने मंच पर विराजमान परमपूज्य सन्तगणों और समारोह में आए हुए सभी महानुभावों का वाचिक अभिनन्दन अपने स्वागत भाषण के माध्यम से किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि यह सर्वसमावेशी कुम्भ **'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति', 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' 'आत्मवत् सर्वभूतेषु'** की अवधारणा को ले करके आयोजित किया गया है। जितनी विविधता भारत देश में है, उतनी विविधता दुनियाँ के किसी दूसरे देश में नहीं है। इस विविधतापूर्ण भौगोलिक वातावरण में विभिन्न प्रकार के मत, मतान्तर, पन्थ और सम्प्रदायों का उद्भव और विकास होना स्वाभाविक है। भारत विभिन्न मत-मतान्तरों के होते हुए भी एक साथ जीने का एक अनुपम उदाहरण

प्रस्तुत करता है, जो पूरे विश्व के लिए अनुकरणीय है। यह सर्वसमावेशी कुम्भ केवल एक संगोष्ठी का विषय नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने का उपागम है, उपक्रम है। यह जीवन जीने की एक विधा है और इस विधा में ही विश्व की समस्याओं का समाधान छिपा हुआ है। प्रो0 सिंह ने कहा कि यह देश हमेशा सन्तों के पीछे चला है और जब तक सन्तों के पीछे चलता रहेगा, इस देश को कोई तोड़ नहीं सकता। हमारा एकता का मार्ग इन सन्तों की जीवन-शैली से होकर गुजरता है।

स्वागत वक्तव्य के पश्चात् राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह मान्यवर **श्री सुरेश भैया जी जोशी** ने इस सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ कार्यक्रम के सन्दर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए मार्गदर्शन प्रदान किया। अपने उद्‌बोधन में उन्होंने बताया कि वैचारिक कुम्भों के आयोजन की इस श्रृंखला में चार कुम्भ आयोजित हो चुके हैं और यह पाँचवाँ वैचारिक कुम्भ यहाँ प्रयागराज में सम्पन्न होने जा रहा है।

उन्होंने कहा कि भारत की अपनी एक पहचान है। वह पहचान विचारों के लिए है, मूलभूत चिन्तन के लिए है, हमारी जीवन-शैली के लिए है, जीवन की ओर देखने की दृष्टि को लेकर है। ये किसी सम्प्रदाय विशेष से जुड़ी हुई बातें नहीं हैं। ये सूत्र हमारे सारे समाज को जोड़ने वाले हैं। आज का यह वैचारिक कुम्भ हम सबको उस एकात्मकता की ओर ले जाने वाला सिद्ध होगा। इस कुम्भ का आयोजन करते समय इसका एक घोष वाक्य बताया गया है- **'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति'**। सत्य एक है, उस सत्य की ओर पहुँचने के मार्ग भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। उस सत्य की ओर जाने के मार्गों का विचार न करते हुए, वह सत्य क्या है, इसे समझने का, इसका फिर एक बार स्मरण करने का काम आज के इस वैचारिक कुम्भ में होने जा रहा है। माननीय भैया जी ने संक्षेप में, वह सत्य क्या है, वह मूलभूत चिन्तन क्या है- उसको सूक्ष्म रूप में सामने रखा। उन्होंने कहा कि जीवन की ओर देखने की भारत के मनीषियों ने एक दृष्टि हम-सबको दी है और वह त्याग की है। उन्होंने विश्व के कल्याण की बात कही। विश्व का कल्याण समन्वय के बिना नहीं हो सकता। अपने-अपने रास्ते पर चलते हुए भी हम दूसरे मार्गों का सम्मान कर सकते हैं- ऐसा यहाँ के मनीषियों का मार्गदर्शन रहा है, जो सारे संघर्षों को समाप्त करने वाला सिद्ध होगा। भारत के मनीषियों ने 'Survival of the Fittest' के सिद्धान्त को अस्वीकार करते हुए परस्पर सहयोग की बात कही है। यहाँ जीवन परस्परावलम्बी है- एक-दूसरे का हाथ पकड़ते हुए चलेंगे, एक-दूसरे की चिन्ता करते हुए चलेंगे, इस प्रकार का विचार यहाँ रखा गया। हमारे यहाँ हजारों वर्षों से जीवन के मूल्य विकसित होते आए हैं। भारत की भिन्न-भिन्न प्रकार की पूजा-पद्धतियों को अवलम्ब करने वाला सारा समाज इन्हीं मूल्यों पर चलता है और यही सत्य है, यही एकात्मता को जोड़ने वाली शक्ति है। आज जो दुर्बलताएँ आ गई हैं, उन्हें दूर करने के लिए धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षिक- सभी क्षेत्रों में इन मूल्यों और जीवन-दृष्टि को विकसित करने का मार्ग हमें प्रशस्त करना होगा।

माननीय श्री सुरेश भैया जी जोशी के इस उद्‌बोधन के पश्चात् मंचासीन संतों के प्रवचनों की श्रृंखला प्रारम्भ हुई, जिसमें सर्वप्रथम **महामण्डलेश्वर परमपूज्य श्री स्वामी विशोकानन्द जी महाराज** ने कार्यक्रम के मूल विषय पर विचार व्यक्त करते हुए अपने प्रबोधन में कहा कि भारत के ब्रह्मर्षियों और राजर्षियों का मूल संदेश मानव-कल्याण की भावना का प्रचार-प्रसार रहा है। सम्प्रदाय का जो अर्थ है, समरसता का भी वही अर्थ है, यह सम्प्रदाय की व्युत्पत्ति बताते हुए आपने सिद्ध किया। भारत इसी समरसता और सहयोग की शिक्षा समस्त संसार को देता रहा है।

आयोजन समिति के **भरत** और **शत्रुघ्न** जी द्वारा सम्मेलन के मूल भाव पर आधारित गीत प्रस्तुत किया गया- **''हम सब मिलकर एक रहें, भेदभाव को नहीं सहें।''.....**

इसके पश्चात् **परमपूज्य गुरु रामदेव जी महाराज** का उद्‌बोधन प्राप्त हुआ। योग गुरु श्री रामदेव ने कहा कि एक ही ब्रह्म है जिससे इस संसार का सृजन हुआ है। उसी ब्रह्म का ऐश्वर्य इस जड़-चेतन में व्याप्त है। हम सहअस्तित्व और सहचारिता में विश्वास करते हैं। हम सभी एक ईश्वर की सन्तान हैं, एक ही पूर्वजों की सन्तान है, एक ही भारतमाता की सन्तान हैं, इसीलिए हम एक हैं। हम भौतिक और आध्यात्मिक सभी दृष्टियों से समानता का आधार लेकर आगे बढ़ते हैं। हमारे यहाँ कहा गया है-

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवाभागं यथापूर्वे संजानाना उपासते।।''

तथा

समानी व आकूतिः समानि हृदयानि वः। इत्यादि।

हम तो समानता का मंत्र सदैव से जपते आए हैं। हमारे यहाँ कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है। हम अपने आत्मगौरव के बल पर आगे बढ़ना चाहते हैं। स्त्री-पुरुष, गरीब-अमीर किसी भी प्रकार का अलगाव हमारे यहाँ नहीं है, हमने सभी को समान दृष्टि से देखा है और दोषों से मुक्त तथा पूर्ण पवित्र रहने की सदा कामना की है। भारत के ऋषि पुत्रों का इतना समुन्नत चरित्र है कि सम्पूर्ण संसार को व्यक्तित्व निर्माण की प्रेरणा देने में सक्षम है और सम्पूर्ण संसार का सामाजिक-आर्थिक प्रतिनिधित्व कर सकता है।

परमपूज्य श्री विष्णुदेवाचार्य जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि भारत का कण-कण ऋषि है जो हमारे मन में सद्‌विचार और सदाचार भरता आया है। भारत का हर निवासी हिन्दुस्तानी है। यहाँ जो कुछ भी है, सब आध्यात्मिकता से ओतप्रोत है। **'एकोऽहं बहुस्यामः'** की अवधारणा पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया कि एक ही परमात्मा अनेक रूपों में अवतार ग्रहण करता है और अपने मार्गदर्शन से हमारे जीवन को कल्याणकारी व आनन्दमय बनाता है। हमारी दृष्टि सनातन धर्म, आर्यावर्त और हिन्दू धर्म की दृष्टि है, जिसके विश्वव्यापी होने से ही संसार का कल्याण संभव है।

मंचासीन जूना पीठाधीश्वर श्री अवधेशानन्द जी महाराज ने उपस्थित जन-समाज को अपना प्रबोधन देते हुए कहा कि सत्य पर जितना अधिक विचार भारत में हुआ है, अन्यत्र नहीं। पूँजीवादी देशों में विश्व को बाजार माना जाता है। भारत की दृष्टि में विश्व एक परिवार है। यहाँ की मूल भावना **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'; 'सर्वभूतहिते रताः', 'आत्मवत् सर्वभूतेषु'** की भावना है। लेकिन आज के परिवेश में एक प्रचण्ड भोगवाद पनप रहा है और आकर्षण का केन्द्र बन रहा है, यह चिन्ता का विषय है। इस धरती पर 47-48 सभ्यताओं ने जन्म लिया। बेबीलोन, मिस्र, यूनान और रोम की बड़ी-बड़ी प्रभुत्व वाली संस्कृतियाँ और सभ्यताएँ आज कहीं दिखाई नहीं देतीं, लेकिन भारतीय सनातन संस्कृति आज भी शाश्वत ढंग से विद्यमान है क्योंकि इसका आधार वैदिक तथा औपनिषदिक चिन्तन है। पूरे विश्व में आज जो समस्याएँ फैली हैं उनका समाधान इसी चिन्तन के माध्यम से किया जा सकता है।

जगद्‌गुरु वेदान्ती जी ने बताया कि भारत की परम्पराओं, शास्त्रों और उपासना पद्धतियों में बहुत-सी बातें कही गई हैं, परन्तु उन सबका लक्ष्य एक ही है। राम, रहीम, कृष्ण, शिव- सब एक ही हैं। **'ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।'** गीता में कृष्ण ने कहा है- जो जिस रूप में मेरी उपासना करता है, मैं उसके लिए उस रूप में प्रकट होकर उसके संकल्प को पूरा करता हूँ। भगवान ने इस प्रकार विविध उपासना पद्धतियों के समन्वय और सहयोग का मार्ग दिखाया है। भारत की

सांस्कृतिक विविधता अपूर्व है, गौरवशाली है और कल्याणमयता का अपरिमित भण्डार है।

पूज्य सतपाल जी महाराज ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि हमारे संतों की आत्मा इतनी उन्नत थी कि उन्होंने न केवल अपने देश, वरन् सम्पूर्ण संसार के कल्याण की कामना की थी। आज गंगा-यमुना के इस संगम पर इन महान् सन्तों की वाणी से सरस्वती की अविरल धारा इस सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ में प्रवाहित होती दिखाई दे रही है जो अतिमंगलकारी सिद्ध होगी। गंगा की निर्मलता और स्वच्छता बनी रहे; इसके लिए विभिन्न पर्यावरणीय और वैज्ञानिक आयामों की दृष्टि से भी आपने अपने चिन्तन और विचारों को प्रस्तुत किया, जिससे श्रोता लाभान्वित हुए।

श्री स्वामी गोविन्द देव गिरि जी महाराज ने इस कुम्भ को इतना स्वच्छ-सुन्दर रूप प्रदान करने के लिए उत्तर प्रदेश शासन को बधाई एवं धन्यवाद देते हुए अपनी बात शुरू की। आपने बताया कि एक ही परमात्मातत्त्व का साक्षात्कार करके देश के मनीषियों ने अपनी-अपनी भाषा में अपने-अपने तरीके से उसे व्यक्त किया। उस एक परमात्मातत्त्व को लोगों ने भिन्न-भिन्न नामों से पुकारा, लेकिन आसेतु हिमाचल वे सभी सम्प्रदाय अपने में एक विशिष्टता लिए हुए हैं। यह दृष्टि भारत के समस्त भूगोल से जुड़ी हुई है-

'गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।'
'महेन्द्रो मलयः सह्यो गिरिश्चारावलिस्तथा।'

इस देश की भौगोलिकता से ही ये सम्प्रदाय और धर्म जुड़े हुए हैं और उनकी प्रमुख विशेषता अनाक्रमकता है। किसी भी मत के महात्मा ने कभी किसी देश पर आक्रमण करने की बात नहीं की। यहाँ शान्ति और सद्‌भावना का चिरन्तन उद्‌घोष रहा है। यह विश्वमांगल्य की पवित्र भावना है। इसे सांस्कृतिक रूप से प्रदूषित करने वाले षड्‌यन्त्रों को हमें विफल करना है और ऐसे लोगों की संख्या भी बढ़ानी है जो भारतीय धर्म भावना में विश्वास करते हैं और उसे अक्षुण्ण रखने के लिए संकल्पित हैं। भारत में जन्मे विश्व प्रेमी सम्प्रदाय बचे रहेंगे, तभी विश्व का कल्याण संभव है।

केन्द्रीय विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति, सारनाथ से आए हुए **श्री किम पोंग दे** ने वैचारिक कुंभ के सन्दर्भ में अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। आपने कहा कि प्राचीनकाल से ही इस देश ने अपने ज्ञान तथा आध्यात्मिकता से विश्व को आलोकित किया। संवादात्मक ढंग से परस्पर चर्चा द्वारा विकास की पद्धति इस देश के अलावा बहुत कम जगह देखने को मिलती है। इसीलिए यहाँ विविध विचारधाराएँ और परम्पराएँ हैं और उनके भीतर अहिंसा और सन्तोष की मूल भावना विद्यमान है जो उन्हें आपस में जोड़ती है। आज जो पर्यावरणीय प्रदूषण है, वह भौतिकवाद की वजह से है। प्रकृति के सान्निध्य और उसके संरक्षण में ही हमारा कल्याण है। अहिंसा एवं संतोष की भावना से युक्त भारतीय संस्कृति का अवलम्ब लेकर और भारतीय धार्मिकता में विद्यमान मैत्री, करुणा, मुदिता, शुचिता आदि भावों को अपनाकर, भीतरी मानसिक और आध्यात्मिक प्रदूषण को दूर करके ही आज एक नवीन और कल्याणकारी विश्व की संकल्पना को साकार किया जा सकता है।

परमपूज्य श्री जितेन्द्रनाथ जी महाराज ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि ऋग्वेद के प्रथम मंडल में से एक मन्त्र में - **'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।'** कहा गया है। मानव मात्र के अंतःकरण में जब काम, क्रोध, लोभ, मोह जाग्रत होते हैं, तो भारतीय धर्म की मूल भावना, कल्याणकारी भावना ही उनका मार्जन कर सकती है।

'जाति - पाँति पूछै नहिं कोई।
हरि को भजै सो हरि का होई।।'

हमारा एक ही देश, एक ही धर्म और एक ही देवता है।

निश्चय ही हमारा लक्ष्य इस बात पर विश्वास करना है कि हम भारतमाता की सन्तान हैं, अतः हम सभी में मूलभूत एकता है। एक ही भगवान के सभी भक्त हैं। मूलतः एक ही गुरु के सभी शिष्य जहाँ होते हैं, वे सभी एक हैं- **'सर्वदेव नमस्कारः केशवं प्रति गच्छति।'**

पूजनीय जैनाचार्य कमलमुनि कमलेश जी ने अपना आशीर्वचन दिया। उन्होंने कहा कि जिस दिन भेदभाव की भावना खत्म हो जाएगी, संसार में सुख ही सुख होगा। धरती माँ पहले है, धर्म बाद में। भगवान से बढ़कर माटी है। इसी में हमने जीवन पाया, धर्म-अर्थ कमाया। माँ से बढ़कर माटी है। जो इस माटी की पूजा न करे, वह मानव नहीं। जुल्म करना अगर हिंसा है, तो जुल्म सहना भी हिंसा है। अध्यात्म और संस्कृति के नाम पर हमारे यहाँ कोई भेद नहीं है। देश के अन्दर आज जब अत्याचार और अनाचार फैलता दिख रहा है तो आज मानवता की चेतना का प्रसार ही उसे रोकने में सक्षम हो सकता है। मंदिर स्थलों में पॉलीथिन के प्रयोग तथा धूम्रपान का निषेध किए जाने की बात भी उन्होंने कही।

पूज्य सन्त श्री वासुदेवाचार्य जी महाराज ने वैदिक वाक्य **'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।'** का तात्पर्य स्पष्ट करने के क्रम में इस वाक्य में निहित एकं, सद्, विप्र और बहुधा को अलग-अलग करके समझाते हुए कहा- एक अर्थात् **'सर्वं विष्णुमयं जगत्', 'एको देवः केशवो वा शिवो वा'** और वही सत् है। वेद कहता है- जो भगवान का निरन्तर चिन्तन और दर्शन करने वाले हैं, वे विप्र हैं। भारत में अनेकानेक साधना पद्धतियाँ, पंथ और सम्प्रदाय हैं। यह विविधता ही इस देश की स्वाभाविकता है। आपने गंगा की शुद्धता के लिए किए जाने वाले प्रयासों को अधिकाधिक महत्त्व दिया।

आदरणीया **साध्वी प्रीति प्रियंवदा जी** ने अपने वक्तव्य में भगवान राम के महिमामय व्यक्तित्त्व से प्रेरणा ग्रहण करने की बात कही। वास्तव में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का चरित्र सर्वसमावेशिकता का एक आदर्श प्रतिमान है, इसीलिए हर भारतीय के मन में वे एक दिव्य ज्योति के रूप में प्रतिष्ठित हैं और इस धर्मपरायण संस्कृतिप्रधान देश की आस्तिकता के परम आश्रय हैं। विभिन्न क्षेत्रों में समन्वय का मार्ग दिखाने वाले भगवान राम हम सभी के हृदय में बसते हैं, उनके बताए गए रास्ते पर चलने वाली हमारी परम्पराएँ मत, सम्प्रदाय, जीवन-पद्धतियाँ मूलतः एक हैं। आज हमें अपने भीतर के इसी एकता बोध को जगाना और समृद्ध करना है, तभी भारत का और सम्पूर्ण विश्व का कल्याण सम्भव है।

परमपूज्य चिदानन्द मुनि ने देश के यशस्वी, तपस्वी और ऊर्जावान प्रधानमंत्री मोदी जी और माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी जी द्वारा कुम्भ 2019 को **'दिव्य कुम्भ भव्य कुम्भ'** बनाये जाने को अत्यन्त सराहनीय प्रयास बताते हुए कहा कि देश की इस संस्कारी सरकार द्वारा सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ के आयोजन के माध्यम से कुम्भ को एक दिशा प्रदान की गई है। **'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।'** तृण खाकर जीवनयापन करने वाले कणाद और पत्ते खाकर जीवित रहने वाले पिप्पलाद जैसे ऋषियों ने समाज को दिशा दी है। गंगा की पवित्रता और स्वच्छता की बात करने वाले, केदार से रामेश्वरम् की यात्रा करने वाले और कश्मीर से कन्याकुमारी तक घूमने वाले भारतीयों में मतभेद हो सकता है, मनभेद नहीं। इस सांस्कृतिक तालमेल को दिशा इस सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ से मिली है। भारत ने कभी अपने लिए नहीं,

हमेशा पूरे विश्व के लिए सोचा है। इसने **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** का मंत्र दिया है। सबका समावेश इस मंच का आदेश और उपदेश है। Culture और Nature बचेगा तो हमारा Future बचेगा। संगम आज इसलिए है कि प्रकृति पर हमने जोर दिया है, संस्कृति का हमने संरक्षण किया है। पानी है, तो प्रयाग है, संगम है। पानी है, तो कुम्भ है। हम सब मिलकर नदियों को प्रदूषण से बचाएँ, उनके किनारे पेड़ लगाएँ, जल, जीवन और संस्कृति को बचाने में अपना योगदान करें।

पूजनीय सन्त वियोगानन्द जी महाराज ने अपने उद्‌बोधन में कहा- **'एको देवः सर्वभूतान्तरात्मा'-** एक ही चेतन का यह सब विलास है जो सब दृश्यमान हो रहा है कार्य में कारण व्यापक रहता है। मिट्टी से घड़ा बनाया जाता है और बने हुए घड़े के कण-कण में मिट्टी व्यापक है। घड़ा फूट भी जाए तो मिट्टी नहीं फूटती क्योंकि मिट्टी उसका कारणभूत आत्मतत्त्व है। 'सत्य' त्रिकाल अबाधित है, वह शाश्वत और सनातन ज्ञान शक्ति है, जानने की क्षमता है। हमारे भीतर जो ज्ञान शक्ति है वह उत्पत्ति, विनाश और स्थिति का प्रकाशक है परन्तु स्वयं अनुत्पन्न है इसलिए उसे अपौरुषेय कहते हैं। किसी को यह अनुभव नहीं है कि मैं जन्म ले रहा हूँ, या मैं मर रहा हूँ, या मेरी सत्ता नहीं है। यह जो मैं का आभास है, यह हमारे चेतन होने का प्रमाण है। यह अनुभव पवित्रता से प्राप्त होता है, यह पवित्रता ही पुण्य है- इसका तात्पर्य आचरण की श्रेष्ठता या सदाचार से है। जो संकल्पवान है, वह ज्ञानवान है। जो ज्ञानवान है, वह सत्य से अनुप्राणित है। सत्य सदा है, सबका है, सर्वत्र है। सबके सत्य का चिन्तन, जो सत् चिन्तन यहाँ चल रहा है, इसकी परम्परा अनादि है। इसमें समय-समय पर आए दोषों और बुराइयों के निवारण के लिए ऐसे वैचारिक आयोजनों की आवश्यकता होती है।

परमपूज्य श्री शंकराचार्य वासुदेवानन्द जी महाराज ने कहा कि सत्य एक ही है, चाहे वह जहाँ कहीं भी हो, किसी भी परिस्थिति में हो। तीनों कालों में जो एक है, वही सत्य है। यदि उसमें कोई विकृति है, तो वह सत्य नहीं है। **'सैव त्रैलोक्यनाथो हरिः'** अर्थात् वही शिव है, वही शक्ति है जो मन में हो, वही वाणी में हो, वही क्रिया में हो, यह महात्मा का लक्षण है।

पूज्य सन्त श्री रामेश्वर वैष्णव जी ने अपने प्रबोधन में षड्‌दर्शनों के प्रतिपादक आचार्यों का नामोल्लेख करते हुए अपनी बात प्रारम्भ की। उन्होंने कहा कि व्यास की प्रस्थानत्रयी अर्थात् उपनिषद्, **भगवद्‌गीता** और ब्रह्मसूत्र पर भी अपने-अपने ढंग से चर्चा करके विद्वानों और मनीषियों ने सत्य की व्याख्या की है। वाल्मीकि ने **'रामो विग्रहवान् धर्मः'** कहा। अक्षयवट भी सत्य है, क्योंकि इसका अस्तित्त्व प्रलयकाल में भी रहता है। प्रयागराज भी सत्य है।

अयोध्या से आए हुए **श्री महन्त कन्हैयादास जी** ने कहा कि भारत ही एक ऐसा देश है जो सम्पूर्ण विश्व को अपना परिवार मानता है। हिन्दू धर्म अपने मूल चरित्र में अत्यन्त उदार है, इसलिए सम्पूर्ण विश्व हिन्दू धर्म का परिवार है।

सन्त संग्राम जी महाराज ने भी सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ के मंच से अपना संदेश देते हुए कहा- पुराणों में उल्लेख है कि पाप बढ़ जाए तो भगवान अवतार लेते हैं। प्रकृति की रक्षा हमारा परम संकल्प होना चाहिए। **हिन्दू जगेगा, तो विश्व जगेगा।**

पूज्य श्री श्यामसुन्दर जी महाराज ने अपने वक्तव्य में कहा-

'सर्वः शिवः शंकरः।'

जो शिव होगा वो कल्याण करेगा, जो कल्याण करेगा वह शिव होगा। पौर्वात्य संस्कृति के आदर्शों को हमें भुलाना नहीं चाहिए। जिस बात को हम वचन से कहते हैं, कर्म के माध्यम से भी उसे करके दिखाना चाहिए। हीनता और अहंकार- दोनों का संस्कार करके राम ने सर्वसमावेशी संस्कृति को प्रारंभ किया। आज माता-पिता को लोग देवता नहीं मानते। आज पुत्र को लोग नकार रहे हैं। अगर चरित्र के माध्यम से शिक्षा प्राप्त न हो, तो कहने से कोई फर्क नहीं पड़ता। परिवार का जन्म इसलिए हुआ कि हम संस्कारवान रहें, बड़ों का सम्मान कर सकें, श्रेष्ठ आचरण की प्राप्ति कर सकें। सर्व को शिव मानना चाहिए। जो सबको लेकर चले, वही श्रेष्ठ संस्कृति है। भगवान राम के चरित्र को आदर्श मानकर हमें उससे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

निर्मल पीठाधीश श्री महन्त ज्ञानदेव जी महाराज ने अपना उद्‌बोधन प्रस्तुत किया और कहा- **'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।'** हमारी वैदिक संस्कृति में विभिन्न धर्मों का समावेश है। यह संस्कृति अनेक रूप धारण किए है-

'एको देवः सर्वभूतेषु गूढ़ः।'

'एक नूर तें सब उपजाना। कौन भला कौन मन्दा।।'

सभी में वही आत्मतत्त्व व्यापक है। वैदिक भारतीय सनातन संस्कृति की यह महानता है कि गंगासागर में जैसे नदियाँ विलीन होकर फिर बादल के रूप में पुनः हमें सरस करती है, उसी तरह अनेक रूपों में रूपायित भारतीय संस्कृति हमारे जीवन को सरस, आनन्दित और एकरूप बनाए हुए है। हम सभी एक हैं। भारत पर जब भी संकट आएगा, यह आवाज सभी सन्तों की रहेगी-

'सर्वे भवन्तु सुखिनः।'

परमपूज्य श्री राहुल बोधि जी महाराज ने सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ के भव्य आयोजन के अवसर पर अपने प्रबोधन में कहा कि आज भारत के ऊँचा उठने के लिए सबको एक साथ मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है। महाराष्ट्र में शिवा जी ने भारत के गौरव को अक्षुण्ण रखने का महान प्रयास किया। इसी देश में तथागत ने अपने धम्म के माध्यम से जन को प्रबोधित किया। बुद्ध का मानव कल्याण का सन्देश देश-विदेश में प्रचारित हुआ। भारत से अनेक धर्म दूत विदेश गए थे। डॉ0 अम्बेडकर ने भारत की स्वतन्त्रता के बाद जो संविधान लिखा, उसमें आधुनिक भारत, भेदभाव रहित और समावेशी कार्यपद्धति को महत्त्व दिया, जिसके कारण आज हम आधुनिक ढंग से चिन्तन कर पा रहे हैं। हमारे जीवन का कल्याण कैसे हो, तथागत ने इस विषय में कहा- यह एक सत्य है कि जो भी प्राणी, मनुष्य आदि हैं वे आहार पर टिके हैं। सुख-शान्ति भी सत्य है क्योंकि मानव जीवन में इनकी निरन्तर कामना करता है। यदि हमने जीवन में अच्छे आचरण का पालन नहीं किया तो हमारा भविष्य अच्छा हो ही नहीं सकता। अपने शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना भी हमारा परम कर्तव्य है। अतः स्वास्थ्य भी सत्य है। संतृष्टि मन में अनुभव होती है, जब हम चित्त को विकारों से मुक्त करते हैं। विश्वास सबसे सगा सम्बन्धी एवं मित्र हैं, रिश्ते विश्वास से कायम रहते हैं। इस विश्वास को बनाए रखना चाहिए।

निर्वाण परम सुख है। सुख, शान्ति, आनन्द, प्रगति के लिए बुद्ध ने चित्त के विकारों को दूर करके परम सुख और संतोष का स्वयं अनुभव करते हुए दुनिया को भी उसी मार्ग की ओर प्रेरित किया।

परमपूज्य श्री भास्कर गिरि जी महाराज ने महाराष्ट्र से आकर इस सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ के वैचारिक आयोजन में भाग लिया और यह सन्देश दिया कि सबके अन्तर में विष्णु भगवान हैं, इसलिए किसी से ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए। हम सभी समान हैं, हमें परस्पर सहयोग और सहानुभूतिपूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहिए।

मंचासीन सन्तों में आदरणीय **बालयोगी उमेश नाथ जी** ने इस प्रकार के आयोजन को भारत देश के लिए अत्यन्त आवश्यक व उपयोगी बताते हुए इस हेतु कुम्भ क्षेत्र के चयन और कार्यक्रम की इस वृहद् परिकल्पना पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए आयोजक मण्डल की सराहना की। अपने उद्बोधन में आपने कहा कि इस देश में 80 लाख से ज्यादा सन्यासी निवास करते हैं। फिर भी आज इस देश में सनातन धर्म के प्रति लोगों की निष्ठा कम होती जा रही है। आज हमारा दायित्त्व है कि हर संन्यासी पाँच गाँवों को गोद लेकर उनमें जाति-पाँति, धर्म और सम्प्रदाय के विभेद को खत्म करने का संकल्प ले और उसे पूरा करके ही अपने स्थान को लौटे। तभी समाज और देश का कल्याण हो पाएगा। आपने राम मंदिर के निर्माण की दिशा में जन-चेतना में संकल्प के संचार की आवश्यकता पर बल दिया।

परमपूज्य **साध्वी प्रज्ञा भारती जी** ने अपने वक्तव्य में कहा कि सम्प्रदाय अनेक हो सकते हैं, मत अनेक हो सकते हैं, लेकिन हम सब एक हैं। भारत की एकता और अखण्डता के लिए हम सबको मिलकर प्रयास करना होगा। यह सर्वसमावेशिकता ही कल्याण का मार्ग है। आज फिर से माँ भारती पुकार रही है। हमें जन-जागरूकता अभियान छेड़ना पड़ेगा। भारत के बच्चे-बच्चे में देश के प्रति प्रेम की भावना का विकास करने से ही देश का, समाज का कल्याण सम्भव है, तभी हिन्दुत्त्व बच पाएगा और भारत विश्वगुरु बन सकेगा। भारतीय वह नहीं है जो भारत में रहता है, भारतीय वह है, भारत जिसके दिल में रहता है। अगर दम तोड़ती मानवता को कोई बचा सकता है तो वह केवल भारत ही है।

उड़ीसा से आए हुए महिमा सम्प्रदाय के पूजनीय **सन्त श्री प्रभाकरदास जी महाराज** ने कहा कि सभी लोग उसी परमात्मा की सन्तान हैं। सभी हिन्दू एक हैं। हम सभी अपने भीतर इस एकत्त्व की भावना को जाग्रत करते हुए उसका विकास करें और उसे समृद्ध बनाएँ, यही **'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति'** का उद्घोष है।

वृन्दावन से पधारे **श्री स्वामी परमपूज्य जगद्गुरु रामानुजाचार्य जी महाराज** ने अपने उद्बोधन में आज के परिवेश में वेद के अध्ययन-अध्यापन के बहुत सीमित होते चले जाने पर चिन्ता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि नारायण से ही सब उत्पन्न है। गंगा-यमुना की स्वच्छता और निर्मलता का ध्यान रखना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। सरस्वती की अनेकों धाराएँ सन्तों के मुख से परिप्लावित हो रही है। त्रिवेणी की धारा जाति भेद, धर्म भेद, सम्प्रदाय भेद के बिना सभी को अमृत प्रदान करती है, शीतलता देती है। सभी के मन में भारतमाता के प्रति श्रद्धा और सनातन धर्म में श्रद्धा होनी चाहिए।

पूज्य **श्री जनार्दन देव गोस्वामी जी** ने असम से पधार कर समारोह का गौरव बढ़ाया। आपने अपने वक्तव्य में कहा कि सबको **'हम हिन्दू हैं'** का बोध सदा अपनी अन्तरात्मा में होना चाहिए। यह एकात्मता बोध ही हमारी समन्वित शक्ति और कल्याणकारी चेतना के स्फुरण की कुंजी है। अपने आत्मगौरव से सम्पृक्त होकर ही हम संसार के काम आ सकते हैं।

मंचासीन **परमपूज्य सन्त तेजसानन्द जी महाराज** ने स्वामी विवेकानन्द के सिद्धान्त पर बल दिया। उन्होंने कहा कि हिन्दुत्त्व की रक्षा के लिए हममें से प्रत्येक को प्रतिबद्ध रहना चाहिए। कृष्णमय, हरिमय जगत् है। हरि के सब भक्त एक हैं और सभी समान हैं।

पूजनीय **सन्त डॉ0 विजय रामानुजपुरी जी** ने अपने उद्बोधन में कहा- **'एकोऽहं बहुस्याम्'** जीव और ईश्वर मिलकर सांस्कृतिक कुम्भ की रचना करते हैं। कुम्भ में ईश्वरीय शक्तियों और मानवीय सद्गुणों व संस्कारों का समागम होता है और विश्व को इसका महान संदेश पहुँचता है। यह कुम्भ हमारी भारतीय अस्मिता की पहचान है, हमारी एकता का प्रमाण है। जो कुम्भ में है वही इस शरीर रूप घट में है, सर्वत्र वही ईश्वर अनेक रूपों में व्याप्त है- कुम्भ का आयोजन इस एकात्मकता को बार-बार हमारे मानस में परिपुष्ट करता है।

परमपूज्य **सन्त फूलडोल बिहारी जी महाराज** ने इस सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ के मंच से अपना संदेश मुखरित किया कि ईश्वर सत् चित् आनन्द स्वरूप है। आपने भागवत के आधार पर अपनी बात स्पष्ट की कि सत्य एक ही है, इसलिए सभी धर्म एक हैं, सभी ने मानव मात्र की एकता का संदेश दिया है। अपने कथन की पुष्टि में आपने श्रीमद्भगद्गीता की पंक्ति **'ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः'** का उद्धरण भी प्रस्तुत किया।

मंच पर विराजमान पूजनीय **सन्त डॉ0 नीलकण्ठ शिवाचार्य जी** ने कहा कि गृहस्थ लोग शिव और शक्ति के अर्द्धनारीश्वर रूप की ही पूजा करते हैं। हम सब शैव-वैष्णव हैं। जीव, जगत्, जगदीश्वर अलग हैं, लेकिन त्रिदल रूप में एक हैं। शिव और जीव का परम ऐक्य है। सभी शिव पीठ एक हैं, कुम्भ एक है, सभी सम्प्रदाय एक हैं। अपने-अपने कर्मों का पालन करते हुए हम भारत भूमि के पुत्र हैं और हमारा हृदय एक है। **'परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम्'** हम सबको इसी आदर्श के साथ जीना चाहिए।

परमादरणीय **श्री स्वामी योगपुरुष पूर्वानन्द जी** ने जन-समाज को प्रबोधित करते हुए कहा कि हमारे शरीर में अनेक अंग हैं, लेकिन सबका मालिक एक है। उसी तरह हमारे देश में हिन्दुत्त्व एक है, हम सबका स्वाभिमान एक है। इस देश और समाज पर, इस हिन्दुत्त्व पर हमें गर्व का भाव सदा अपने हृदय में रखना चाहिए। इसी से देश का सामाजिक, सांस्कृतिक कल्याण सम्भव है और यही कल्याण विकास की कुंजी है और सभी मौजूदा समस्याओं का समाधान है।

समारोह में राजकोट से आए हुए पूज्य सन्त **स्वामी विवेकानन्द जी** ने इस सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ को आसुरी शक्तियों पर दैवी संस्कृति की प्रतिष्ठा की पुनर्स्थापना के प्रयास के रूप में मानते हुए इसकी आवश्यकता को स्वीकार किया। आपने अपने उद्बोधन में कहा कि योगदर्शन में मन को वश में करने के सात उपाय बताए गए हैं। फिर उन विधियों को लेकर अलग-अलग सम्प्रदाय बनाए गए। वे सम्प्रदाय एकत्र हों और दैवी संस्कृति की प्रतिष्ठा के क्रम में लोक के

मनः संस्कार का आवश्यक कार्य करें। जब तक हममें एकत्त्व का भाव नहीं होगा, हम बुराइयों पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते।

त्रिपुरा से आकर समारोह में प्रतिभाग करने वाली आदरणीय **साध्वी श्री श्री 108 परिव्राजिका ममतामयी सरस्वती जी** ने भी अपने प्रवचन में एकत्त्व भावना के स्फुरण तथा विकास की बात कही।

इस प्रकार उपर्युक्त ज्ञानात्मक चिन्तनधारा के अविरल प्रवाह ने भारत के दूर-दूर के प्रदेशों से आए हुए संत-महात्माओं की दिव्य वाणी के रूप में इस सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ के मंच द्वारा जन-जन को आप्लावित किया।

इस गौरवमयी वैचारिक चिन्तन पद्धति के प्रेरणा स्रोत के रूप में कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे मंचासीन परमपूज्य **स्वामी हंसदेवाचार्य जी महाराज** ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ का यह आयोजन दिव्य एवं भव्य है। **'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।'** जैसे माँ एक होती है, उसको कोई मामी, नानी, चाची, मौसी, बुआ आदि अनेक रूपों में कहता है, उसी तरह परमात्मा एक है, उसे लोग शिव, नारायण, कृष्ण, भगवती आदि अनेक रूपों में मानते हैं। लेकिन जैसे माता तो सबका एक ही रूप में पालन करती है, उसी प्रकार परमात्मा भी सबका एक समान ही ध्यान रखता है, जैसे- सूर्य एक ही है, जो सबको प्रकाश देता है, गंगा एक है जो सभी को पवित्र बनाती है,कुम्भ एक है जहाँ अधर्म का नाश होता है और धर्म की जय होती है। भारत की सांस्कृतिक उदारता महान् है। यहाँ अनेक धर्मों और मत-मतान्तरों का निवास है। परन्तु मूल धर्म वैदिक धर्म है। अन्य सभी जो धर्म और मत-मतान्तर हैं, वे उसके तने और शाखाएँ हैं। यह राष्ट्र और इसकी संस्कृति हमारी जड़ है, बचाना उसी को है, तभी इसका तना और शाखाएँ-प्रशाखाएँ बची रहेंगी। राष्ट्र बचेगा, तो परिवार बचेगा, समाज बचेगा, संस्कृति बचेगी और सत्य बचेगा; सनातन और वैदिक धर्म भी बचा रहेगा। एक को पहचानने और संरक्षित करने से सभी का कल्याण सम्भव है। सभी संस्कृतियों का समावेश वैदिक धर्म और परम्परा में है। इसीलिए इसकी एकता और अखण्डता से ही सम्पूर्ण विश्व की रक्षा और कल्याण सम्भव है।

सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ के इस भव्य आयोजन के समापन अवसर पर धन्यवाद ज्ञापन **डॉ0 सुरेन्द्र जैन,** संयुक्त महामंत्री, विश्व हिन्दू परिषद् ने किया। उन्होंने कहा कि सन्तों का धन्यवाद कभी दिया ही नहीं जा सकता क्योंकि ऋषि ऋण को सामान्यतः चुकाया जाना सम्भव नहीं हैं। यदि हम इन सन्तों के बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लें तभी हम इनके प्रति सच्चा धन्यवाद ज्ञापित कर पाएँगे। इस सफल आयोजन के माध्यम से अलगाववादी ताकतों को एक महान संदेश गया है कि हम एक थे, एक हैं और सदा एक रहेंगे।

वन्देमातरम् गीत की प्रस्तुति के साथ सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ का यह वैचारिक आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ

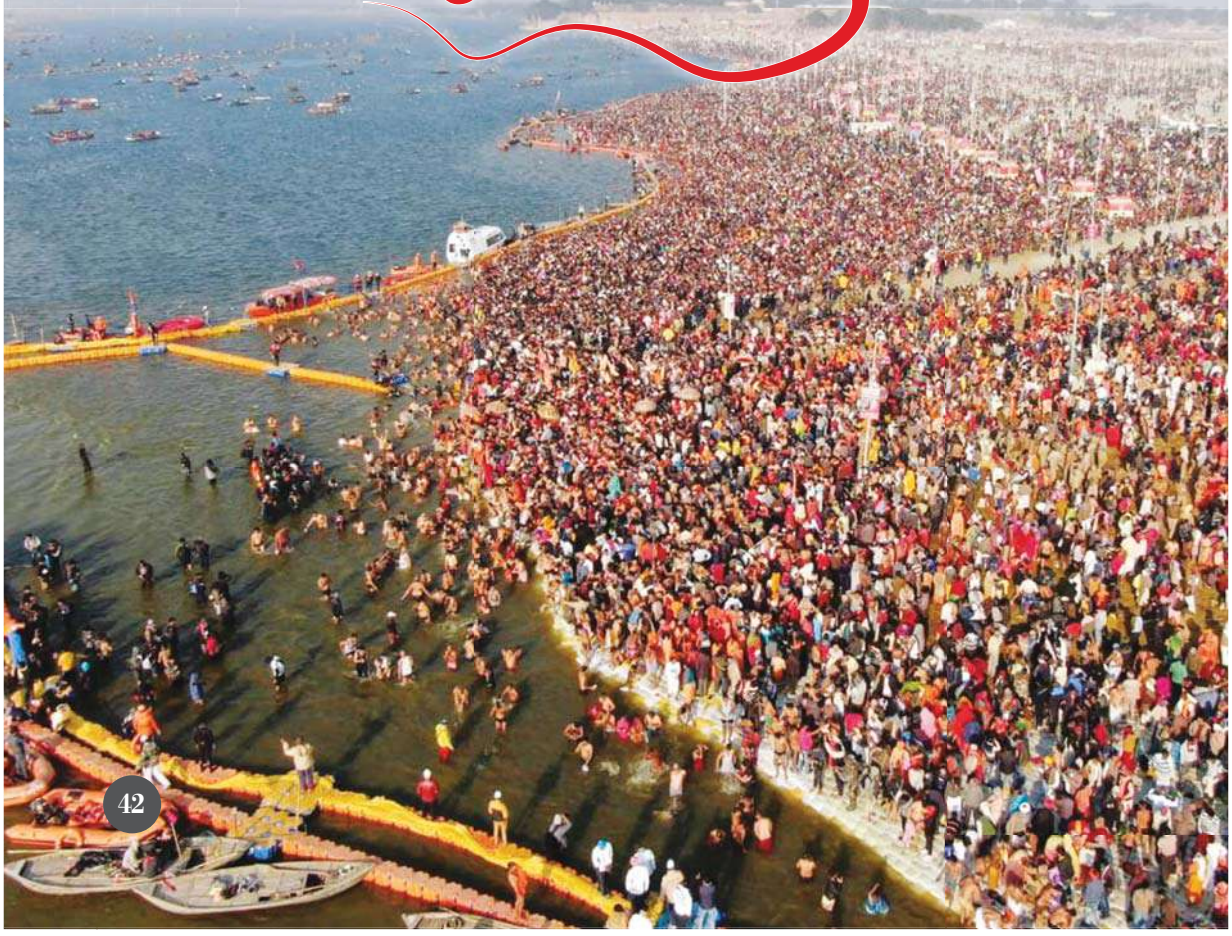

स्वागत वक्तव्य



मंच पर विराजमान परमपूज्य, सन्तगण को साष्टांग प्रणाम! और सम्मुख बैठे हुए महानुभावों का स्वागत, अभिनन्दन एवं वन्दन, प्रणाम। भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय, उत्तर प्रदेश शासन और मेला प्राधिकरण, प्रयागराज के द्वारा प्रायोजित और उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज द्वारा आयोजित इस एकदिवसीय सर्वसमावेशी संस्कृति वैचारिक कुम्भ में आप सभी प्रतिनिधियों का, मंचासीन सन्तगणों का, सामने बैठे हुए प्रतिभागीगण का हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन तथा वन्दन! मैं आह्लादित हूँ कि आज इस मंच से **भैया जी जोशी** का पाथेय प्राप्त होने वाला है, पूज्य सन्तगण का आशीर्वाद मिलने वाला है, राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय परिवार एक साथ इतनी संख्या में देश के कोने-कोने से आए हुए सन्तों को पा करके आह्लादित है। हम हृदय की गहराइयों से समस्त प्रातःस्मरणीय सन्तगण का अभिनन्दन एवं स्वागत करते हैं। हम स्वागत करते हैं आयोजन समिति के सदस्यों का, संचालन समिति के सदस्यों का, विभिन्न विश्वविद्यालयों से आये हुए कुलपतिगण का और सामने बैठे हुए प्रतिभागीगण का। मान्यवर, यह सर्वसमावेशी कुम्भ **'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति,' 'सर्वे भवन्तु सुखिनः,' 'आत्मवत् सर्वभूतेषु'** की अवधारणा को ले करके आयोजित है। मैं भूगोल का विद्यार्थी हूँ और भूगोल के विद्यार्थी के

नाते जब हिन्द महासागर से लेकर हिमालय तक भारत को देखता हूँ , तो मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि दुनिया में जितनी विविधता भारत में है, उतनी विविधता दुनिया के किसी दूसरे देश में नहीं है। विविधता हमारा वैशिष्ट्य है और इस विविधतापूर्ण भौगोलिक वातावरण में विभिन्न प्रकार के मत-मतान्तर, पन्थ, सम्प्रदाय का उद्भव और विकास होना स्वाभाविक है। इसलिए भारत को जानना है, भारत की विविधता को जानना है, भारत के रहस्य को जानना है, भारत की भव्यता को जानना है तो हिन्दुत्व की शैली को जानना होगा। और मुझे यह कहने में रंचमात्र संकोच नहीं है कि भारत ही हिन्दुत्व है और हिन्दुत्व ही भारत है। जितनी विविधता भारत में है, उतनी ही विविधता इस देश की जीवन-शैली में, हिन्दू जीवन-शैली में है।विभिन्न मत-मतान्तरों के अनुयायी अपने-अपने मत के साथ, अपने पन्थ के साथ, अपने विचार के साथ जीते हुए एक लय, एक रस, एक भाव-भावना से एकता का मार्ग प्रशस्त करते हैं, यह दुनिया में विलक्षण उदाहरण है और आज इस मंच के कोने-कोने से संदेश जाने वाला है कि देखो, हम विचारों में भिन्न हैं, पंथ हमारे अलग हैं, सम्प्रदाय अलग हैं, लेकिन हम एक हैं, भारतमाता एक है और उन राष्ट्र विरोधी ताकतों के खिलाफ यह प्रहार है जो देश की विविधता को कमजोरी समझकर उसको उखाड़ने का प्रयास करते हैं, तोड़ने का प्रयास करते हैं। भारत विभिन्न मत और मतान्तर के साथ जीने का एक अनुपम उदाहरण है और यह केवल भारत के लिए ही नहीं, विश्व के लिए भी अनुकरणीय है। आज विश्व में शान्ति, सुरक्षा और विकास को ले करके चिन्ता व्यक्त की जा रही है, लेकिन शान्ति, सुरक्षा और विकास का मार्ग हिन्दुत्व से हो करके जाता है। यदि ये तीनों चीजें चाहिए विश्व को, तो हिन्दुत्व की जीवन-शैली से सीखना होगा। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि विश्व स्तर पर जो समस्याएँ मुखरित हो रही हैं, उन समस्याओं का समाधान हिन्दुत्व की जीवन-शैली के पास है। इस मंच से न केवल भारत के कोने-कोने तक, बल्कि दुनिया के कोने-कोने तक यह संदेश जाने वाला है कि जो पंथ के नाम पर, मत के नाम पर, सम्प्रदाय के नाम पर आतंकवाद, उग्रवाद, अलगाववाद है, उसको यदि समाप्त करना है, तो हिन्दुत्व की जीवन-शैली को अपनाना होगा। यह सर्वसमावेशी कुम्भ केवल एक संगोष्ठी का विषय नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने का उपागम है, जीवन जीने का एक उपक्रम है, यह एक जीवन की विधा है और इस विधा में ही विश्व की समस्याओं का समाधान छिपा हुआ है। पुनः मैं भूगोल का विद्यार्थी हूँ और भूगोल का विद्यार्थी समय और स्थान का अध्ययन करता है। मैं समय और स्थान दोनों की गरिमा का सम्मान करते हुए, दोनों की मर्यादा का सम्मान करते हुए, इस समय के महत्त्व को समझते हुए, स्थान के महत्त्व को समझते हुए अपनी वाणी को विश्राम देता हूँ क्योंकि मुझे तो आज केवल सन्तों का सुनना है, सन्तों की बातों का ही पालन करना है, क्योंकि यह देश हमेशा सन्तों के पीछे चला है और जब तक सन्तों का अनुगमन करता रहेगा, विश्व की कोई शक्ति इसे तोड़ नहीं सकती। हमारी एकता का मार्ग, इन सन्तों का जीवन-दर्शन एवं जीवन-शैली से होकर गुजरता है।

धन्यवाद,

वन्दे मातरम्!

उद्‌बोधन

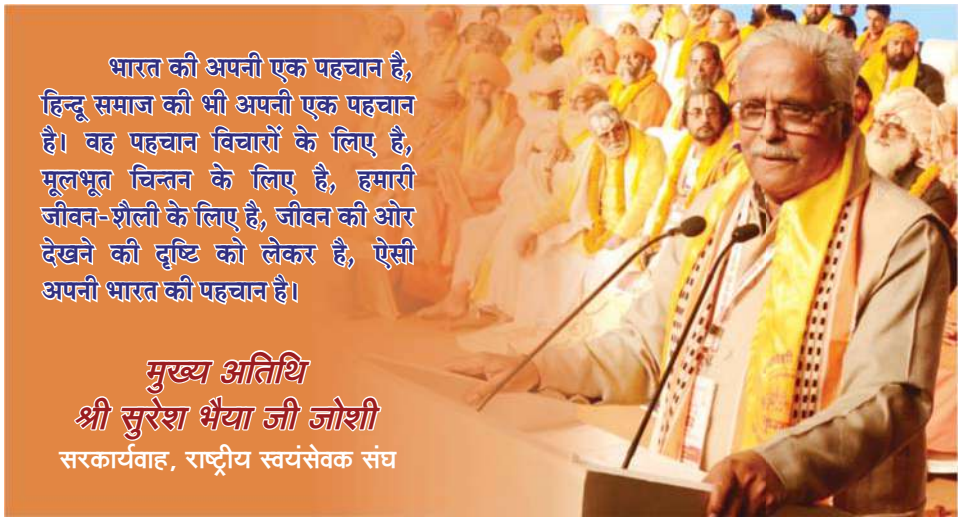

मंच पर विराजमान पूज्य शंकराचार्य जी महाराज, इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे पूज्य **हंसदेवाचार्य जी महाराज,** मंच पर विराजमान सभी सन्तवृन्दों के चरणों में मैं विनम्रता से प्रणाम करता हूँ। इस सर्वसमावेशी कुम्भ के आयोजक **उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज के कुलपति प्रो0 के0एन0 सिंह** महोदय, समस्त आयोजन समिति, स्वागत समिति के सदस्यगण और सभागार में उपस्थित इस कार्यक्रम के लिए आए हुए सभी सज्जनवृन्द, माताएँ , बहनें और भाइयों! आज के इस कालखण्ड में जिस प्रकार का चिन्तन होना चाहिए, उसको आधारभूत रखकर इस कार्यक्रम का आयोजन यहाँ पर किया गया है। मैं उत्तर प्रदेश सरकार के सम्बन्धित मंत्रालय और समस्त प्रशासन वर्ग, सम्माननीय मुख्यमंत्री जी को हृदय से धन्यवाद देता हूँ कि इस कुम्भ के अवसर पर भिन्न-भिन्न प्रकार के विचारों को लेकर एक वैचारिक आयोजन इन सारे कुम्भों के रूप में हुआ है।श्रृंखला में चार वैचारिक कुम्भ हुए और ये पाँचवाँ इस प्रयागराज में सम्पन्न होने जा रहा है। भारत की अपनी एक पहचान है, हिन्दू समाज की भी अपनी एक पहचान है। वह पहचान विचारों के लिए है, मूलभूत चिन्तन के लिए है, हमारी जीवन-शैली के लिए है, जीवन की ओर देखने की दृष्टि को लेकर है, ऐसी अपनी भारत की पहचान है। ये किसी एक सम्प्रदाय विशेष से जुड़ी हुई बातें नहीं हैं। यहाँ पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, विभिन्न प्रकार के मतबद्ध सम्प्रदायों के द्वारा मूलभूत चिन्तन के आधार पर जो विचार रखे गए, ऐसे महापुरुषों के जीवन के संदेश यहाँ पर प्रदर्शनी में प्रदर्शित किए गए, हम सब लोग अवश्य उससे लाभान्वित होंगे। इस प्रकार का चिन्तन, मैं समझता हूँ कि इन सब मार्ग पर चलने वालों के लिए एक बल प्रदान करने वाला

सिद्ध होगा। भारत की अपनी एक विशेषता मैंने कही कि भिन्न-भिन्न प्रकार के सम्प्रदाय रहे, भिन्न-भिन्न प्रकार की पूजा-पद्धतियों को हम लोगों ने यहाँ देखा है।साधना की पद्धतियाँ भिन्न-भिन्न हैं। इन सारी भिन्नताओं और विविधताओं में एकात्मता का दर्शन करने का हमारा चिन्तन रहा है। और इन सारी, सब प्रकार की विभिन्न पद्धतियों में कुछ एकात्मता के सूत्र हैं। ये सूत्र हमारे सारे समाज को जोड़ने वाले हैं। कई प्रकार की विरोधी शक्तियों ने इन भेदों को सामाजिक विघटन का आधार बनाया, कुछ परिमाण में सफल भी हुए, परन्तु आज का यह वैचारिक कुम्भ हम सबको उस मूलभूत एकात्मता की ओर ले जाने वाला सिद्ध होगा। अनेक वर्षों से अनेक महापुरुषों के प्रयत्न इसी दिशा में रहे हैं। यहाँ पर भिन्न-भिन्न प्रकार के ग्रंथों का निर्माण हुआ। हम अठारह पुराणों की बात करते हैं। महर्षि व्यास जी ने कहा है अठारह पुराणों का सार तो एक ही है- **'परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम्।'** यही सभी ग्रंथों का संदेश है, सभी ग्रंथों का सार है और इसलिए ऐसी भिन्न-भिन्न प्रकार की अनुभव में आने वाली पद्धतियाँ, थोड़े अलग-अलग प्रकार के रखे हुए विचार, अलग-अलग प्रकार के महापुरुषों ने अपने चिन्तन के आधार पर प्रस्तुत करते हुए अपने अनुयायी वर्ग का निर्माण किया होगा, पर इन सबको जोड़ने वाला एक ही शब्द है और वो **'हिन्दू'** है। 'हिन्दू' शब्द ही इस एकात्मता का दर्शन कराता है।

इस कुम्भ का आयोजन करते समय इसका एक घोष वाक्य बताया गया है-**'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।'** यह इसका सूत्र है। सत्य एक है, उस सत्य की ओर पहुँचने के मार्ग भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। इस सत्य के सन्दर्भ में यहाँ पर कोई भिन्न प्रकार का विचार नहीं है। इस सारे वैचारिक कुम्भ में आज दिन भर जो विचार चलेगा, उसमें उस सत्य की ओर जाने के मार्गों का विचार न करते हुए वह सत्य क्या है, इसे समझने का, इसका फिर एक बार स्मरण करने का कार्य किया जाने वाला है। मैं केवल संक्षेप में, वह सत्य क्या है, वह मूलभूत चिन्तन क्या है, उसको बहुत ही सूत्र रूप में आपके सामने रखने की कोशिश कर रहा हूँ। वास्तव में, मंच पर इतने श्रेष्ठ महात्मा, संत बैठे हुए हैं कि उनकी वाणी से हम लाभान्वित होने चाहिए, मैं केवल इस चर्चा का कुछ सूत्रपात हो, इस नाते ही आपके सामने खड़ा हूँ। हमारी मान्यता है कि यह सब चराचर सृष्टि एक है, उसमें एक ही चैतन्य है। किसी प्रकार का भी चर-अचर का भेद यहाँ पर नहीं है। एक ही चैतन्य है,उसी को हम ईश्वर मानते हैं और सारे ब्रह्माण्ड में ईश्वर के अस्तित्व का हम अनुभव करते हैं। जो प्राणशक्ति है, जो चेतना है वो शक्ति का प्रतीक है और इसलिए अपने यहाँ पर कहा गया-**'ईशावास्यमिदं सर्वम्'** अर्थात् हमारे आस-पास और हमसे दूर-दूर तक चर-अचर, जड़-चेतन सब में उस ईश्वरीय शक्ति का स्थान है, उसका आवास है, ये हम सब लोग अनुभव करते हैं, यह हमारी मान्यता है। कभी-कभी मान्यताएँ हम सबको ठीक रास्ते पर चलने की प्रेरणा प्रदान करती हैं। हमने कहा कि ये पंच महाभूतों के द्वारा प्राप्त हुआ शरीर, ये तो विनाशी है, समाप्त होने वाला है क्योंकि यह पंच महाभूतों से निर्मित है, एक जर्जर आधार के कारण इस शरीर का तो पंचतत्त्वों में विलय हो ही जाता है और इसलिए भारत के मूल चिन्तन में शरीर को भी एक साधन माना गया है और यहाँ पर एक वचन हम दोहराते आए हैं- **'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।'** यह धर्म का साधन है हमने

शरीर को इससे अधिक महत्व नहीं दिया है। भारत के मनीषियों ने कहा कि शरीर तो अविनाशी नहीं, विनाशी है, परन्तु आत्मा अविनाशी है, वह कभी नष्ट नहीं होती। उसे अग्नि समाप्त नहीं कर सकती, वह चिरन्तन है। शरीर बदलता रहेगा, नए-नए जीवन प्राप्त होते रहेंगे और इस प्रकार की जीवन की यात्रा चलती रहेगी, अन्त में जाकर कभी मोक्ष की प्राप्ति होगी और जब इस आत्मा को अविनाशी मान लिया तो शरीर के सहसम्बन्ध से जितने भी मोह के विषय बनते हैं, वे धीरे-धीरे क्षीण होते जाते हैं, दुर्बल होते जाते हैं और शरीर से ऊपर कुछ है, ऐसा विचार सामान्य व्यक्ति यहाँ पर करना प्रारम्भ करता है। शरीर तो आज है, कल समाप्त होने वाला है, मैं रहने वाला हूँ। हमारे यहाँ पर मान्यता है, केवल मान्यता नहीं हम सबका अनुभव है कि किसी एक मनुष्य के विकास की बात की गई, तो हमारे सारे चिन्तकों ने, फिर चाहे वो किसी प्रकार के भी मत, सम्प्रदाय के हों- वे शाक्त सम्प्रदाय के हों, जैन-बौद्ध हों, सिक्ख सम्प्रदाय के हों- विभिन्न प्रकार की विचारधारा रखने वालों ने इस बात को कहा कि प्रकृति के द्वारा जो एक शरीर प्राप्त होता है, अगर वह विकास की दिशा में चलना प्रारम्भ करे तो वह देवत्व को प्राप्त कर लेता है, देवरूप हो जाता है तो यहाँ पर मनुष्य के विकास की अवधारणा रखते समय 'नर से नारायण' की यात्रा होती है, ये विचार रखा गया है। सारे सम्प्रदायों ने यही बात कही है और 'नर से नारायण' बनना है' ये विचार हमें अपने सब प्रकार के व्यक्तिगत जीवन के मोह और दोषों से मुक्त रखने का मार्ग प्रशस्त करता है। इससे व्यक्ति के अन्तःकरण में इस प्रेरणा का बीजारोपण होता है कि मैं नारायण बन सकता हूँ। सब प्रकार के सम्प्रदाय इसी प्रकार का मार्गदर्शन हमें करते आए हैं। जीवन की ओर देखने की भारत के मनीषियों ने जो एक दृष्टि हम सबको दी है, वह त्याग की है। यहाँ पर भोग का कभी सम्मान नहीं हुआ। मनुष्य त्याग की ओर जाए, एक संयमित उपभोग करे, इस उपभोग को करते समय सब प्रकार की मर्यादाओं का पालन करे। हमारे यहाँ पर यह नहीं कहा गया कि हम गरीब रहें, दरिद्र रहें। सम्पन्नता का भी यहाँ सम्मान है, पर सम्पन्नता प्राप्त करते हुए जीवन के सन्दर्भ में किसी प्रकार की विकृतियों को जन्म न दिया जाय, इसकी भी हम चिन्ता करते हैं। यहाँ तो वैभव की भी बात कही गई है और त्याग की भी बात कही गई है। इस जीवन की ओर देखने की दृष्टि हम सबको यहाँ के मनीषियों ने दी है।

'सर्वभूतहिते रताः' यहाँ पर कहा गया है, **'आत्मवत् सर्वभूतेषु'** का सिद्धान्त यहाँ पर रखा गया है- जैसा मैं हूँ , वैसा सामने वाला भी है।**'अद्वेष्टा सर्वभूतानाम्'** का यहाँ पर मार्गदर्शन हुआ है। किसके प्रति हम द्वेष करेंगे? एक ही ईश्वर सबके भीतर विद्यमान है और महाराष्ट्र के वारकरी सम्प्रदाय में हम जब देखते हैं कि दोनों एक-दूसरे को चरण-स्पर्श करते हैं। भाव तो यही रहता है कि सामने वाले के अन्दर भी ईश्वर है, उसी ईश्वर का सान्निध्य है, निवास है, जो मेरे अन्दर भी है तो हम एक-दूसरे को नमस्कार करते हुए चलते हैं। ये जो परम्परा यहाँ पर विकसित हुई है, वह इस सिद्धान्त की ओर, इस लक्ष्य की ओर हमें ले जाती है कि हम किसी के साथ भी भेदभाव न करें। आज जो विकृतियाँ आई हैं, उनसे मुक्ति का मार्ग अगर कोई है, तो वह यही है कि यहाँ के समाज को अगर किन्हीं बातों का विस्मरण हुआ होगा तो **'आत्मवत् सर्वभूतेषु'** इस सिद्धान्त का फिर एक बार स्मरण करते हुए इसे अपने

आचरण में लाएँ। सिद्धान्तों में कोई दोष नहीं। हमारे यहाँ पर भारत के सारे मनीषियों ने विश्व के कल्याण की बात कही। विश्व का कल्याण, क्या समन्वय के बिना हो सकता है? तो यह सूत्र यहाँ पर बताया गया कि संघर्ष नहीं समन्वय चाहिए।

अपने रास्ते पर चलते हुए मैं दूसरे मार्गों का भी सम्मान कर सकता हूँ, करना चाहिए ये यहाँ के मनीषियों का मार्गदर्शन हमें प्राप्त है, क्योंकि यह मूलतः स्वीकार किया गया है कि सत्य एक है, उसको अलग-अलग प्रकार के मनीषी अलग-अलग शब्दों में रखेंगे। पर सत्य एक है। सत्य क्या है? सत्य यही है और यह समन्वय का मार्ग है। कभी विश्व में चिन्तन चला, कुछ लोगों ने कहा कि जिसके पास अर्थबल है वह विश्व पर साम्राज्य स्थापित करेगा, तो दुनिया के अलग-अलग प्रकार के देश अधिकाधिक सम्पदा प्राप्त करने की होड़ में लग गए। एक समूह ने, एक चिन्तक वर्ग ने कहा कि जिसके पास संख्याबल ज्यादा है, वह विश्व पर साम्राज्य प्रस्थापित करेगा, तो अपनी-अपनी संख्या बढ़ाने में लोग लग गए। परन्तु तीसरा एक विचार विश्व के सामने रखा गया कि आने वाले दिनों में विश्व पर उसी का प्रभुत्व होगा जो समन्वय का विचार रखता है, सबको साथ में लेकर चलने का विचार रखता है, सबको अपने-अपने मार्ग से जाने का स्वातंत्र्य देता है। मैं समझता हूँ कि यह यहाँ के मनीषियों द्वारा रखा हुआ चिन्तन सारे संघर्ष को समाप्त करने वाला सिद्ध होगा। आवश्यकता है कि इस सिद्धान्त को मानने वाले सामर्थ्यशाली हों, दुर्बल नहीं। दुर्बल नहीं चलेगा। जैसा मैंने प्रारंभ में कहा कि हमारी मान्यता है, हमारी दृष्टि है कि सब पंच महाभूतों द्वारा निर्मित हैं और भारतीय परम्पराओं में, हिन्दू समाज में इस प्रकृति की ओर देखने की जो दृष्टि है, उसमें उसे देवता के समान माना गया है। इसलिए यहाँ पर प्रकृति का पूजन होता है। यहाँ पर नदियों की पूजा की जाती है, यहाँ पर वृक्षों की पूजा होती है, यहाँ पशु-पक्षियों की पूजा की जाती है, यहाँ प्राणियों को भी देवता मानते हैं, ये भाव यहाँ विकसित हुआ। आज की प्रदूषण की समस्या, पर्यावरण का संकट क्या इस प्रकार के विचारों के अभाव या विस्मृति का संकट नहीं है? ये सोचना पड़ेगा। अगर सारे विश्व में इस प्रकार की सुख-शान्ति चाहिए, तो यही मार्ग स्वीकार करके चलना पड़ेगा कि इस प्रकृति से मेरे जीवन का सम्बन्ध है, मैं चाहे प्रकृति के साथ संघर्ष करूँ या प्रकृति के साथ समन्वय करके चलूँ।

भारत के मनीषियों ने, सभी प्रकार की भिन्न-भिन्न विचारधाराएँ रखने वाले, पूजा-पद्धतियों को अवलम्ब करने वाले सभी ने इस एक सूत्र का संकेत किया है कि प्रकृति हमारी माँ है। इसलिए गंगा माँ है, इसलिए यहाँ गौ माता है, इसलिए यहाँ धरती माता है। यहाँ पर प्रकृति को माता माना है और इसके भी आगे चलकर हमको जन्म देने वाली महिला को भी यहाँ पर माँ माना गया है। सभी महिलाएँ हमारे लिए माँ के समान हैं। ये महिलाओं की ओर देखने की दृष्टि, भारत में किसी भी सम्प्रदाय में जाइए - इन्हीं मान्यताओं को लेकर समाज-जीवन चलता आया है। आज अगर कुछ कठिनाई हो रही है, तो वह इसके विस्मरण के कारण हुई है। प्रकृति के साथ अगर समन्वय करके चलना है तो यहाँ पर शब्द प्रयोग चला है कि हमें 'शोषण' नहीं, 'दोहन' करना है। दुनिया के भिन्न-भिन्न प्रकार के देश भौतिक चकाचौंध की स्पर्धा में सारे विश्व के मानव-समूह को शोषित की दिशा में ले जा रहे हैं और

भारत के मनीषी इसके दोहन की बात कर रहे हैं, इस विचार का प्रसार भी सर्वत्र होने की आवश्यकता है। 'Survival of the Fittest' 'जो सशक्त है, वो जिएगा', भारत के मनीषियों ने इसको अस्वीकार किया है। उन्होंने कहा कि हम एक-दूसरे की रक्षा करेंगे, दुर्बलों की रक्षा करेंगे, दुर्बलों को भी जीने का अधिकार है और इसलिए 'जो कमाएगा, वह खाएगा' ऐसा नहीं है। हमने कहा 'जो कमाएगा, वह खिलाएगा,' दूसरों की चिन्ता करने की बात! यह हमारी सब प्रकार से जीवन की ओर देखने की दृष्टि है, क्या इसे मानव-जाति के लिए किसी सम्प्रदाय से जोड़कर देखने की आवश्यकता है? समस्त कल्याणों का मार्ग तो यही प्रशस्त करती है।

यहाँ पर हजारों वर्षों से जीवन के मूल्य विकसित होते आए हैं। ये मूल्य क्या हैं? इन मूल्यों में कहा गया कि मूल्य चारित्र्य में आया हुआ पतन, जो किसी प्रकार का हो, समाज को विनाश की ओर ले जो वाला सिद्ध होगा, इसलिए यहाँ चारित्र्य ही जीवन का मूल्य है। यहाँ पर न्याय की बात कही गई है। किसी के साथ किसी को भी अन्याय करने का अधिकार नहीं है। यह एक बात कही गई कि न्याय के आधार पर समाज का जीवन चलेगा। यहाँ पर समाज-जीवन का मार्गदर्शन करने वाले सभी मनीषियों ने परस्पर सहयोग की बात कही है। मनुष्य जीवन सुखी होगा, परस्पर सहयोग के आधार पर। कौन है सौ प्रतिशत स्वावलम्बी'? कोई नहीं है। कभी लगता है कि हम स्वावलम्बी नहीं तो क्या परावलम्बी हैं? नहीं, परावलम्बी भी नहीं हैं। भारत में जीवन के सूत्र के रूप में कहा गया है- न हम स्वावलम्बी हैं, न परावलम्बी हैं, यहाँ का जीवन तो परस्परावलम्बी है। एक दूसरे का हाथ पकड़ते हुए चलेंगे, एक दूसरे की चिन्ता करते हुए चलेंगे, इस प्रकार का विचार यहाँ पर रखा गया। और वैसे ही प्रामाणिकता भी जीवन का एक मूल्य है। यहाँ के मनीषियों ने कहा कि प्रामाणिकता ही जीवन का सिद्धान्त है। अंग्रेजी में कहते हैं- 'Honesty is the best policy', लेकिन हम किसी नीति के अन्तर्गत प्रामाणिक नहीं रहना चाहते। हम स्वभाव से प्रामाणिक बनना चाहते हैं। भारत का जीवन इन सारे मूल्यों पर, इन आदर्शों पर, विकसित होता आया है, विश्व को भी इस मार्ग पर चलने के लिए प्रेरणा प्रदान करने का सामर्थ्य इस भारत में है। अगर आज कहीं दुर्बलता आई होगी तो उस दुर्बलता को दूर करने के लिए सभी धरातल पर धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षिक क्षेत्र में इन मूल्यों और इस जीवन- दृष्टि को विकसित करने का मार्ग हमें सब प्रकार की बाधाओं को दूर करते हुए प्रशस्त करना होगा। यह भारत है, यह भारत की दृष्टि है, यह भारत का जीवन है, यह किसी भी सम्प्रदाय का, पंथ का, किसी एक विचारधारा का नहीं, सारे भारत की भिन्न-भिन्न प्रकार की पूजा-पद्धतियों को अवलम्ब करने वाला सारा समाज इन्हीं मूल्यों पर चलता है और यही सत्य है, यही एकात्मता को जोड़ने वाली शक्ति है। इस राष्ट्र की दुर्बलता को समाप्त करने का यह एकमात्र मार्ग है और मैं समझता हूँ कि इस कुम्भ में इन सब प्रकार के विचारों को लेकर चिन्तन होगा- हम सब एक हैं, इस एकता के भाव को बलवान करते हुए, पुष्ट करते हुए हम भविष्य के भारत का निर्माण करने की दिशा में प्रतिज्ञाबद्ध होंगे। इसी निवेदन के साथ और आयोजकों को धन्यवाद देते हुए, सन्तों के चरणों में विनम्रता से प्रणाम करते हुए मैं अपनी बात पूरी करता हूँ।

उद्‌बोधन

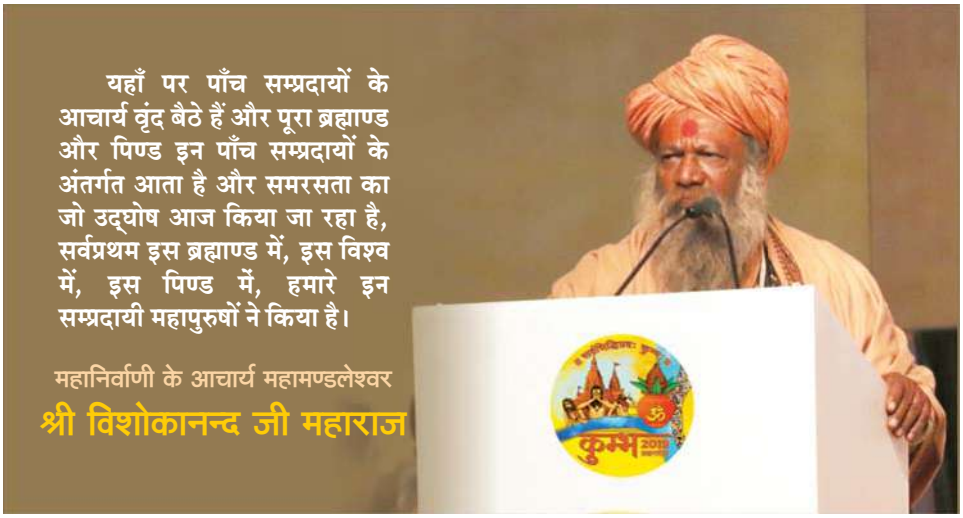

मंच पर विराजमान परम श्रद्धेय ज्योतिष पीठाधीश्वर **श्री स्वामी जगद्‌गुरु वासुदेव जी महाराज** एवं सभा के अध्यक्ष **जगद्‌गुरु हंसादेवाचार्य जी महाराज** व अन्य महामण्डलेश्वर वृद संत वृंद, पुरूषार्थ वृंद, भक्त वृंद, संयोजक एवं आयोजक वृंद।

अभी यहाँ पर **''एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति''** अविरल भारत देश में शब्द वेद के द्वारा और प्रकृति वेद के द्वारा यह उपदेश परम्परागत प्राप्त है।

भारत के ब्रह्म ऋषि और राज ऋषियों ने इस भावना को सदैव मानव कल्याण के लिये प्रचारित एवं प्रसारित किया है। आज हम जिस भावना को लेकर चल रहे हैं, उस भावना के सम्प्रदायों के मूल आचार्य इस मंच पर विद्यमान हैं और इन्हीं महापुरुषों द्वारा व्यासोच्छिष्टं जगत सर्वम्। अर्थात्-व्यास जी के द्वारा यह प्रतिपादन 18 पुराणों के द्वारा किया जाता है। यहाँ पर पाँच सम्प्रदायों के आचार्य वृंद बैठे हैं और पूरा ब्रह्माण्ड और पिण्ड इन पाँच सम्प्रदायों के अंतर्गत आता है और समरसता का जो उद्‌घोष आज किया जा रहा है, सर्वप्रथम इस ब्रह्माण्ड में, इस विश्व में, इस पिण्ड में, हमारे इन सम्प्रदायी महापुरुषों ने किया है।

हमारे मन में भ्रांति पैदा होती है कि हम यहाँ बैठे हैं और वे वहाँ बैठे हैं और आप जानते हैं, सम्प्रदाय शब्द का जो अर्थ है, वही समरसता का समानार्थी शब्द बाद में सामने आता है।

आकाश कितनी ऊँचाई पर है और धरती कहाँ है, फिर भी इस धरती ने अपना सहयोग आकाश को दिया है और आकाश ने अपना सहयोग इस धरती को दिया है। इनको ये महापुरुष पंजीकरण के नाम से अपने शिष्यों को बताते हैं।

जो अग्नि है, अग्नि का स्वभाव है, जलना, लेकिन वही अग्नि देवता इस पृथ्वी में हैं, जल में हैं, वायु में हैं, आकाश में हैं। अत्यंत चंचल वायु पृथ्वी के हित के लिये, समरसता के लिये वहाँ पर रुकना स्वीकार करता है और अत्यन्त चंचल जल इस सृष्टि को, धरती को प्रकृतिमय आनन्द से पल्लवित करने के लिये खेतों में रुकना स्वीकार करता है।

किसी को बोध हो न हो एक अपील है, विदेशियों का आक्षेप है हम पर कि भारत देश के लोग जानते तो बहुत हैं, लेकिन मानते नहीं। तो मैं आप सबसे अपील करता हूँ कि जानने और जनाने की जवाबदारी इन महापुरुषों, आचार्यों की है और आपकी जवाबदारी इनके द्वारा कही हुई बातों को मानने से है, मैं आप से यह अपील करता हूँ।

हमारे भगवान काशी में हैं, विश्वनाथ हैं विश्व के नाथ प्रारम्भ से हैं। **''विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव, यद् भद्रं तन्न आसुव''** हमारे सूर्य नारायण प्रारम्भ से ही विश्व के प्रदाता हैं और हमारी माता विश्व का पालन करती हैं, विश्वरूपा हैं तथा विश्व को धारण करती हैं - **''विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।''** इसलिये पहले मूल से हम विश्वगुरु हैं और हमारा देश केवल विश्व गुरु ही नहीं है, अपितु ब्रह्माण्डगुरु भी है।

समरसता, समाधि, समयक्ज्ञान; इस भारत भूमि पर वृन्दावन में ब्रह्मा जी ने भी पाया था और इन्द्र ने भी पाया था, इसलिये सब से अपील है कि जो भेद हैं, वे अभेद की सिद्धि के लिये है। हम दाल बनाते हैं और दाल कई चीजों से बनती है। उस दाल में जो समरसता आती है विभिन्न स्वभाव, विभिन्न आकार व विभिन्न प्रकार से; वैसी ही हमको अपने समाज में समरसता देनी है, और जैसे एक पेड़ की जड़ नीचे है, तना ऊपर है, शाखायें बिखरी हुई हैं, लेकिन सबकी नज़र रहती है समरसता पर कि बनारस का लँगड़ा आम सबके सहयोग से टोकरी में आकर आप सब को स्वाद का चटकारा देता है।

सिया रामचन्द्र जी की जय!

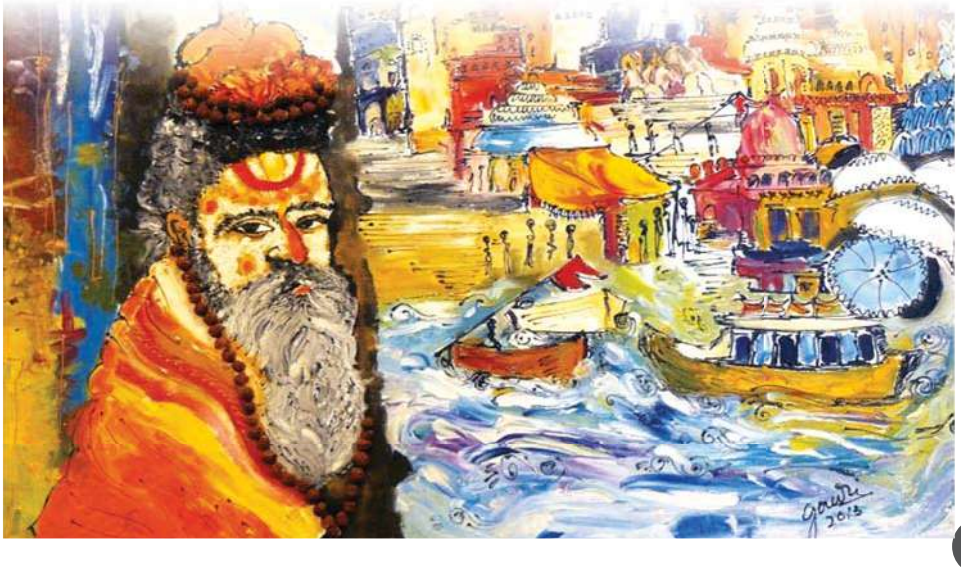

उद्‌बोधन

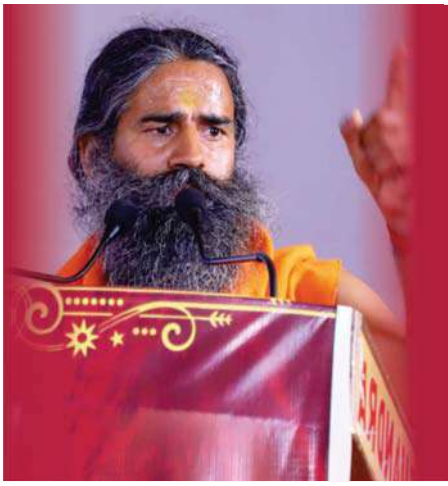

हमारे पूज्य संतों का मंत्र रहा है कि सारे दोषों से हम दूर हों। सारा विश्व हमारा अनुकरण करते हुए गौरव अनुभव करे। ये भारत के साधु संत ही नहीं, ये भारत के सभी ऋषि पुत्रों का ऐसा उन्नत चरित्र है कि पूरा विश्व उनका अनुकरण करे तो सबका उत्थान हो सकता है।

- बाबा रामदेव

मैं श्रद्धेय मंच को, जो श्रेष्ठ महापुरुष यहाँ विराजमान हैं, सबके श्री चरणों में प्रणाम करता हूँ और क्योंकि दो-दो लाइन भी कहें तो शाम हो जायेगी कहते-कहते, इसलिए कुछ तथ्यों को शाब्दिक रूप में प्रस्तुत करता हूँ।

एक ही ब्रह्म से सारे ब्रह्माण्ड का सृजन हुआ है और उसी ब्रह्म की शक्ति, उसी ब्रह्म की सामर्थ्य, उसी ब्रह्म का ऐश्वर्य, ईश्वरार्थ सारे जड़-चेतन की इस सृष्टि और सामर्थ्य में है, इसलिए हम मनुष्य और समाज, जड़-चेतन पूरे अस्तित्व में एक ही ब्रह्म रूप को देखते हैं। कुछ मूर्त है, कुछ अमूर्त है, कुछ व्यक्त है, कुछ अव्यक्त है, इसलिए कुछ लोग हम पर जातिवादी होने का आक्षेप लगाते हैं कि भारत में अभी भी जातिवाद एवं भेदभाव की व्यवस्था है। स्त्री और पुरुषों में भेदभाव होता है। मत, पंथ, सम्प्रदाय के आधार पर भेदभाव होता है। इस तरह का झूठा आरोप इस पर मढ़ते हैं, जबकि हम एकत्व के अनुयायी हैं।

हम तो एक ही एकत्व के सह अस्तित्व और विश्व बन्धुत्व के उपासक हैं। हम तो सहचारिता में विश्वास रखते हैं। हम तो उद्‌घोष करते हैं **'सह नाववतु सह नौ भुनक्तु'** का किसी से द्वेष करना तो हमारी संस्कृति-सभ्यता में ही नहीं है।

प्रथम ये जो हमारा **'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति'।** जैसे हमारे पूर्व आचार्य यहाँ कह के गये, वैसे हम सभी भारतीयों को मानना चाहिए कि हम सब ईश्वर की संतान, एक ही पूर्वजों की संतान हैं, एक ही भारत माता की संतान हैं और इसलिए हम लोग एक समान हैं और हम सब ही महान हैं। कोई जाति का भेद नहीं, कोई मज़हब का भेद नहीं। मज़हबी परम्परा मतपंथ सम्प्रदाय की परम्परा हमारी गुरु परम्परा हो सकती है, लेकिन सत्य हमारा सिद्धान्त

है। सारी समष्टि का कल्याण करना हमारा सिद्धान्त है।

भौतिक जगत् में भी हम परम वैभव खड़ा करें और आध्यात्मिक के शिखर में भी सामाजिक आरोहण पायें, ऐसी हमारी एकत्व की व समानता की परम्परा है। हमने तो समानता के गीत गाये। सभी लोग एक समान हैं, न कोई स्त्री का भेद, न कोई पुरुष का भेद।

समाज में महिला सशक्तीकरण की बातें होती हैं। हम तो वह भारत देखना चाहते हैं जिसमें महिलाएँ इतनी समर्थ हो जाएँ कि कल को पुरुष सशक्तीकरण की बात हो। इतनी ताकत हम अपनी मातृशक्ति में देखना चाहते हैं। हमारे यहाँ कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है, हम आत्म-स्पर्धा में जीने वाले लोग हैं। हम अपने आत्मगौरव के बल पर आगे बढ़ने वाले हैं।

दूसरी बात यहाँ सब महान् आचार्यगण बैठे हुए हैं। हम पर कुछ लोग यह आरोप लगाते हैं कि भारत में इतनी पवित्रता की बातें होती हैं लेकिन यहाँ कुम्भ क्षेत्र में, जहाँ एक तरफ तप और त्याग का दर्शन होता है, थोड़ा-थोड़ा धूम्रपान का भी दर्शन होता है तो हम सब महापुरुष एक स्वर में ये तो कहें कि जिन साधु-संत और बाबाओं ने सब कुछ छोड़ दिया है वे धूम्रपान और चिलम का मोह भी छोड़ दें, तो हमारे साधुता के नाम पर जो चिलम का ठप्पा लगा है वह हट जाए, तो अच्छा होगा और अंत में एक बात है कि हमको अपने सारे दुर्गुणों से, दुखों से, दोषों से, पराधीनताओं से मुक्त होना है। यही तो वेद का उद्घोष है।

हमारे पूज्य संतों का मंत्र रहा है कि सारे दोषों से हम दूर हों। सारा विश्व हमारा अनुकरण करते हुए गौरव अनुभव करे। भारत के साधु-संत ही नहीं, भारत के सभी ऋषि पुत्रों का ऐसा उन्नत चरित्र है कि पूरा विश्व उनका अनुकरण करे तो सबका उत्थान हो सकता है। यहाँ पर राम मन्दिर भी बने और यहाँ पर रहने वालों का चरित्र भी बने। महान् राष्ट्र का निर्माण हो।

माना यहाँ पर सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक बहुत प्रकार की चुनौतियाँ हैं। उन सबके बीच में 2040 तक ऐसा भारत बनाना है जो विश्व का सामाजिक, आर्थिक, आध्यात्मिक सभी दृष्टियों से नेतृत्व करे। ऐसे सामर्थ्यवान भारत का हम यहाँ कुम्भ में संकल्प लेते हैं।

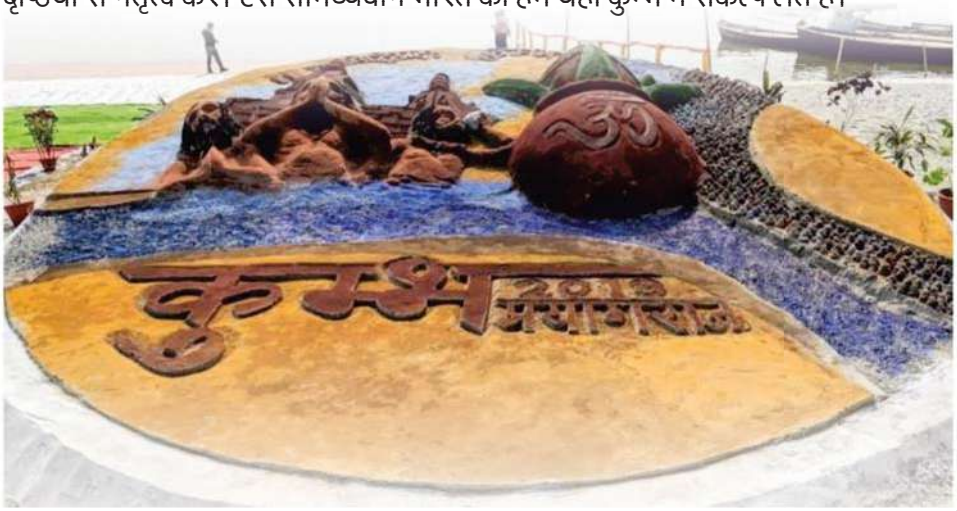

उद्‌बोधन

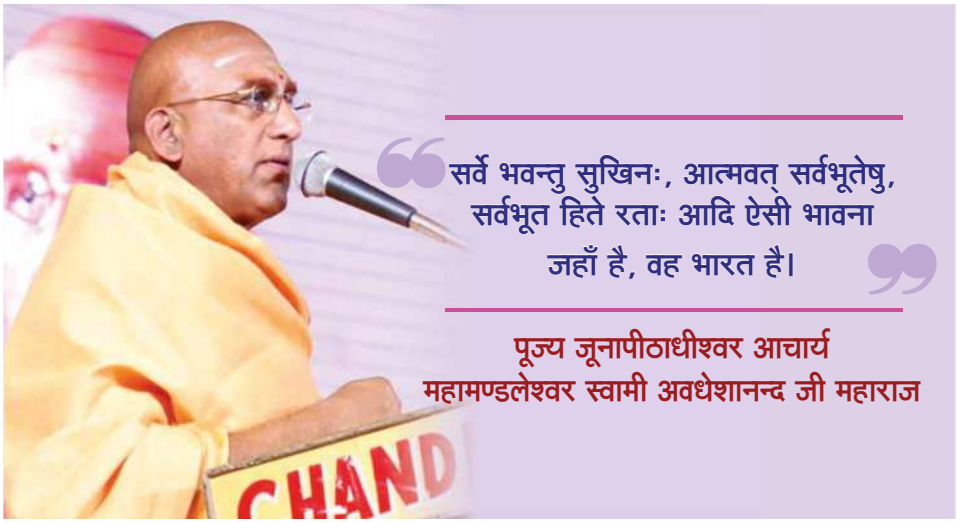

कल्याणी मथुरा मंगला मोक्षप्रदा कुम्भधरा तीर्थराज प्रयाग में भारत की संत सत्ता का प्रतिनिधित्व करने वाली सर्वोच्च सत्ता, शीर्षस्थ यह सत्ता भारत के वन्दनीय आचार्यगण महामण्डलेश्वर श्री महंत सहित सभी पूज्य धर्माचार्यों के चरणों में अनेक प्रणाम!

सत्य पर जितना अधिक विचार भारत में हुआ है, अन्य देशों में नहीं। पाश्चात्य देश पूरे विश्व को बाजार मानते हैं। आज पूरे संसार में और हमारे देश में भी उपभोगतावादी संस्कृति पनप रही है। भारत की दृष्टि में विश्व एक परिवार है। एकत्व, सहअस्तित्व की भावनाएं भारत की हैं। **सर्वे भवन्तु सुखिनः, आत्मवत् सर्वभूतेषु, सर्वभूतहिते रताः** आदि ऐसी भावना जहाँ है, वह भारत है। अभी अपने देश में अनेकवाद हैं, मैं नक्सलवाद या आतंकवाद की ओर ध्यान नहीं देना चाहता हूँ। पश्चिम का प्रचण्ड भोगवाद यहाँ पसर रहा है और उसका आकर्षण भी यहाँ है। यह भारत की मनीषिता, यह भारत का पाण्डित्य, यह भारत की संत सत्ता, धर्म सत्ता ही है, जो उसे संभाल कर रख रही है। लगभग इस धरती पे 47-48 सभ्यताओं ने जन्म लिया और अगर वो सभ्यताएँ गिनी जाएं तो 48 सभ्यताओं में 47 सभ्यताएँ खो गई हैं, उनमें बेबीलोन की, मिश्र की, यूनान की, रोम की सभ्यताएँ जो कभी इस धरा का नेतृत्व कर रही थीं, जिनके पास इस धरा का स्वामित्व था, जिनके पास प्रभुत्व था, वर्चस्व था, वे सारी संस्कृतियाँ, वे सारी सभ्यताएँ आज कहीं नहीं दिखाई दे रही हैं। अगर कोई सभ्यता चिरकाल से है तो वह सनातन सभ्यता है। यह भारत की हिन्दू-धर्म-संस्कृति वैदिक संस्कृति है। इसकी जड़ों में उपनिषदिक चिन्तन है, वेद का चिंतन है। यह बड़े भाग्य की बात है कि भारत की संत सत्ता, शीर्षस्थ शिखरस्थ धर्माचार्य पूरे विश्व को नेतृत्व दे

रहे हैं। इस प्रकार की अभिव्यत्ति की स्वतन्त्रता केवल हमारे देश में है, अन्य जगह नहीं हैं, कहीं भी नहीं है। यह पश्चिम में भी नहीं है। इस प्रकार की स्वतन्त्रता, अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता हमारे ही देश में है। मैं संत सत्ता के श्री चरणों में प्रणाम करता हूँ कि वह कुम्भ से कुछ ऐसा संदेश दे कि वो पूरे विश्व में जो असुरक्षा, अशान्ति, दमन, अत्याचार, अनीति, शोषण और आतंक है, उसका समाधान किया जा सके। आयोजकों को बहुत धन्यवाद कि उन्होंने एक ही मंच पर अनेक महापुरुषों के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त कराया है। उन्हीं संतों के चरणों में प्रणाम करते हुए मैं अपना स्थान ग्रहण करता हूँ।

हरिः ओम् तत्सत्!



उद्‌बोधन

हम सब ऋषि-संतान हैं, भारत का कण-कण ऋषि है, भारत का कण-कण हमारे जीवन में सदाचार, सद्‌विचार, सद्‌व्यवहार भरता है और यहाँ तो विश्व के सर्वोच्च मंच पर एक से एक महापुरुष विराजमान हैं, इसलिए विराजमान हैं कि हम अपने-अपने अनुयायियों को सदाचार, सद्‌विचार, सद्‌व्यवहार सिखाने का प्रयास करें।

जूना मिथिला पीठाधीश्वर
विष्णुदेवाचार्य जी महाराज

सभा में पधारे हुए सभी ऋषि-संतों का अभिनन्दन! यहाँ के समस्त स्वागतकर्ता और व्यवस्थापक, दोनों को कोटि-कोटि बधाई। हमारे जो पूर्व वक्ता हैं वे संदर्भ व्याख्या कर चुके हैं। हम सब ऋषि-संतान हैं, भारत का कण-कण ऋषि है, भारत का कण-कण हमारे जीवन में सदाचार, सद्‌विचार, सद् व्यवहार भरता है और यहाँ तो विश्व के सर्वोच्च मंच पर एक से एक महापुरुष विराजमान हैं, इसलिए विराजमान हैं कि हम अपने-अपने अनुयायियों को सदाचार, सद्विचार, सद् व्यवहार सिखाने का प्रयास करें।

भारत तो सदा हिन्दू है ही और यहाँ जो कोई भी है वह हिन्दुस्तानी है। यहाँ जो कोई भी है, वह आध्यात्मिक है। यहाँ जो कोई भी है, वह ऋषि-संतान है और इसी में हमारा आनन्द और जीवन का कल्याण है। इससे ज्यादा कहना कोई आवश्यक नहीं है। सारे महापुरुष विराजमान हैं लेकिन एक बात जरूर कहूँगा, जो यह संदेश देती है- **''ब्रह्म निरूपण धर्म विधि वरनहिं तत्त्व विभाग, कही भक्ति भगवान के संयुत ज्ञान विराग।''**

एक ही परमात्मा अनेक रूप में आते हैं, **'एकोऽहं बहुस्याम्'** के रूप में आकर हम लोगों के बीच में अभिनय करते हैं और हम प्राणियों को आनन्द देने के लिए ये आर्यावर्त में, ये भारतवर्ष में, ये हिन्दस्थ में हमारे बीच आकर शिक्षा देते हैं, ताकि हम उसका अनुपालन करके अपने जीवन को आनन्दमय, कल्याणमय बनाने का प्रयास करें। हम ऐसे ही चलते रहेंगे। यही हमारे जीवन का कल्याण होगा और सम्पूर्ण विश्व हमारा अनुरागी बनेगा, अनुयायी बनेगा। हमारा एक ही सिद्धान्त है सम्पूर्ण दुनिया का, विश्व का कल्याण हो। हमारे ऊपर सारी दृष्टि है, लेकिन हम सबको चाहते हैं कल्याण के लिए और कल्याण तब होगा जब हमारे साथ सम्पूर्ण विश्व, आध्यात्मिक जीवन और सनातन धर्म, आर्यावर्त और हिन्दू धर्म का अनुगामी बनेगा, सबके जीवन में सदा-सर्वदा कल्याण होगा। इन्हीं शब्दों के साथ, **जय भारत जय हिन्द! जय श्री राम!**

उद्‌बोधन



> 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।' सबका कल्याण हो, ये भावना हमारे संतों की थी।
>
> - श्री सतपाल जी महाराज

मंच पर विराजमान परमपूज्य संतों को प्रणाम करते हुए, यहाँ पर जो समन्वयात्मक विचार रखा गया **''एकं सद्‌विप्रा बहुधा वदन्ति''** Truth is one but it has been elaborated in various languages by various Saints.

सत्य एक है, उसको संतों ने अपनी-अपनी भाषा में अपने-अपने विचारों से परिभाषित किया। उसी एक सत्य का अनुकरण करना है और हमारे संतों की आत्मा इतनी Evolved थी इतनी उन्नत थी कि उन्होंने अपने लिए नहीं, अपने समाज के लिए नहीं, विश्व-कल्याण की बात उन्होंने कही। **'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।'** सबका कल्याण हो ये भावना हमारे संतों की थी और आज यहाँ संत-समुदाय को देख करके मुझे यह विश्वास हो रहा है कि जब संत खड़ा होता है, तो देश खड़ा होता है, जब संत संकल्प लेता है, तो देश संकल्प लेता है और जब संत निर्देश देता है, तो देश विश्वगुरु बनता है और दुनिया को निर्देश देता है, दुनिया को संदेश देता है।

हमारे उत्तराखण्ड में ये पानी, गंगा जी का जल वहीं से प्रवाहित हो रहा है और हमारे उत्तराखण्ड को सौभाग्य मिला है कि हमने टिहरी झील से प्रचुर मात्रा में पानी दिया। आज यहाँ स्वच्छ जल उपलब्ध हो रहा है और लोग गंगा स्नान कर रहे हैं, त्रिवेणी पर स्नान कर रहे हैं। इस स्थान का यह महत्त्व है कि गंगा-यमुना यहाँ मिलीं और सरस्वती जो ज्ञान की धारा है वो गुप्त रूप से रह रही है। जब संतो के आश्रम में जा करके शिक्षा ग्रहण करेंगे तो वो जो ज्ञान है अध्यात्म का, सत्य का जो ज्ञान है, वो सरस्वती के रूप में-

मुद मंगलमय संत समाजू। जिमि जग जंगम तीरथराजू।।
राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा। सरसई ब्रह्म विचार प्रचारा।।

राम की भक्ति का अध्यात्म जो है, जब हमारे देश से निकलेगा तो सारी दुनिया भारत का अनुकरण करेगी।

उद्‌बोधन



भारत का हर धर्म हर मत अनाक्रामक है वह किसी के धर्मांतरण में विश्वास नहीं करता। जबरदस्ती अथवा प्रलोभन देकर मैं अपने वर्चस्व को बढ़ाता जाऊँ ऐसा भारत के संतों ने भारत के सम्प्रदायों ने सोचा नहीं। इसलिए जो लोग इस प्रकार की सोच रखते हैं और भारत के ऊपर सांस्कृतिक आक्रमण करते हैं, उनसे सावधान रहना भी हम लोगों का कर्तव्य है।

पूज्य स्वामी
गोविन्द देव जी महाराज

तीर्थराज प्रयाग की इस पुण्य पावन धरा पर मैं अपनी छोटी-सी बात आप सब के समक्ष रखने से पूर्व-प्रदेश के सम्माननीय मुख्यमंत्री योगी जी महाराज का भूरि-भूरि अभिनन्दन करना चाहता हूँ कि उन्होंने हमें दिव्य-भव्य कुम्भ का दर्शन कराया। जिस प्रकार की सुविधाएँ और जिस प्रकार का अत्यन्त स्वच्छ वातावरण हम इस कुम्भ में देख रहे हैं, यह अभूतपूर्व है। यह पहले कभी भी देखने को नहीं मिला है। गत बारह दिनों से मैं रोज प्रयास करता हूँ कि कहीं भी मुझे रास्ते में प्लास्टिक की थैली, कचरे की थैली मिल जाए लेकिन कोई कचरे की थैली, प्लास्टिक की थैली मुझे मिली नहीं। इतना स्वच्छ कुम्भ हम लोगों के लिए निर्माण करने वाले, इस कुम्भ को इतना स्वच्छ स्वरूप देने वाले, सम्माननीय मुख्यमंत्री महोदय ढेर सारी बधाईयों के पात्र हैं। यह सारी सरकार ही बधाई की पात्र है। इसलिए उनका अभिनन्दन और धन्यवाद ज्ञापित करते हुए मैं अपने विषय की ओर चलता हूँ।

''एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।'' यह वेदों का उद्‌घोष तो है लेकिन यह भारत के जीवन का तथा हम सभी के जीवन का एक अनुभव है। एक परमार्थ तत्त्व की वो धारा, निरंतर जो बहती रहती है, उसका साक्षात्कार इस देश के मनीषियों ने जैसा, जैसे, जब-जब किया, अपनी-अपनी भाषा में उसको व्यक्त किया और उसमें सभी का समन्वय अपने आप साध्य किया। मैं सनातनी हूँ क्योंकि जिस विचारधारा का मैं प्रतिनिधित्व करता हूँ, वह अमर विचारधारा है। मैं जैन हूँ क्योंकि मैं जितेन्द्रियत्व का अभ्यास करता हूँ। मैं बौद्ध हूँ क्योंकि प्रबुद्ध बनने का प्रयास जीवन में निरंतर चला है और मैं सिख भी हूँ क्योंकि शिष्यों के द्वारा जो समाज को अर्पण किया जाना चाहिए, उस कर्मपथ के भी हम अभ्यासी हैं। हम लोगों को

ध्यान में यह रखना चाहिए कि उस एक परमात्म तत्त्व को भिन्न-भिन्न लोगों ने पुकारा; यह तो बात सत्य है, लेकिन इस देश में जन्मे जीवन भी संत, मठ तथा सम्प्रदायों की तरह नहीं है। भारत के समस्त सम्प्रदायों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि हमारे सारे धर्म हमारी सारी पूजा-पद्धति भारत माता के भूगोल के साथ जुड़ी है। **'गंगे च, यमुने चैव, गोदावरि, सरस्वति! नर्मदे सिन्धु, कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।'** यह कहते हुए पूर्ण भारत हमारे सामने आता है और इसलिए हमारा धर्म, हमारी आध्यात्मिक चेतना, हमारी सारी श्रद्धा जैसे भगवान के साथ जुड़ी हैं, उसी प्रकार भारत माता के साथ जुड़ी हुई है। इसका साक्षात्कार हमारे संतों ने हमें कराया है। हमारे सारे तीर्थ हमारे देश में हैं, इसलिए देश के बिना हम कल्पना नहीं कर सकते हैं। हमारे धर्म की, हमारी उपासना पद्धति की और एक विशेषता इस देश में जन्मे सारे के सारे संम्प्रदायों की विचारधारा रही है कि वे सदा अनाक्रामक रहे हैं। याद रहे संसार के मतों को दो भागों में विभाजित करना पड़ेगा- aggresive religious & Non–aggresive religious। कुछ धर्म आक्रामक हैं। भारत का हर धर्म, हर मत अनाक्रामक है, वह किसी के धर्मांतरण में विश्वास नहीं करता। जबरदस्ती अथवा प्रलोभन देकर मैं अपने वर्चस्व को बढ़ाता जाऊँ, ऐसा भारत के संतों ने, भारत के सम्प्रदायों ने सोचा नहीं। इसलिए जो लोग इस प्रकार की सोच रखते हैं और भारत के ऊपर सांस्कृतिक आक्रमण करते हैं, उनसे सावधान रहना भी हम लोगों का कर्तव्य है। इस बात को हम भुला नहीं दें क्योंकि पवित्रता की यह धरा है और यह पवित्रता बचानी होगी। विश्वमंगल की यह भावना इस देश के हर संत ने हमें बताई। इस देश का कोई भी संत हो, उसने कभी भी किसी पर आक्रमण करने की बात नहीं कही और इस देश का कोई भी संत-महात्मा हो, किसी भी सम्प्रदाय का हो, किसी भी मत का हो, उसने ध्यान रखा कि सारे सम्प्रदाय मेरे हैं, सारे मत मेरे हैं, मैं सम्पूर्ण भारत को अपने अन्तःकरण में लेकर चलता हूँ। इसलिए किसी भी सम्प्रदाय के महात्मा यही कहते आये-**'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु।'** यह सम्पूर्ण संसार एक परिवार है, विश्वबन्धुत्व की यह भावना हमारे वेदों नें, हमारे आचार्यों ने हमको दी है, इसलिए हमने सारे विश्व का कल्याण चाहा, सारे विश्व का मंगल चाहा। लेकिन एक बात ध्यान देने योग्य है कि वास्तव में, विश्व का मंगल केवल प्रार्थना ना रहे, वास्तव में साकार हो जाए, ऐसा यदि भारत बनाना है तो भारत में भारतीय धर्म एवं भावनाओं को बचाना होगा और भारतीय धर्म एवं भावनाओं को बचाते समय भारतीय धर्मभाव रखने वाले लोगों की संख्या भी बचानी पड़ेगी और इतना ही नहीं; हमें बड़ी आपदाओं का सामना करना पड़ेगा। जो आपदाएं अन्य देश भुगत रहे हैं, जिनके कारण वे स्वयं सकते (संकट) में आ गये हैं कि हमारी संस्कृति बचेगी या नहीं बचेगी। यह खिलवाड़ हमारे देश के साथ भी हो सकता है। यदि हमें संसार का कल्याण करना है तो भारत को समर्थ होना होगा और भारत को समर्थ करना है तो विश्व को प्रेम करने वाली भारतीय धर्म भावनाओं को बचाना होगा, चाहे वो सनातन वैदिक धर्म हो, चाहे जैन, चाहे बौद्ध, चाहे सिख, चाहे लिंगायत हो। भारत में जन्मे हुए यह सारे विश्वप्रेमी सम्प्रदाय बचेंगे तो संसार का कल्याण होगा और यह कार्य हम लोगों को करना होगा। इसका संकल्प हमें

प्रयाग की धरती पर करना होगा कि इस संगम को कहते हुए जाना होगा, अक्षयवट वृक्ष को कहकर जाना होगा कि आप अक्षय हैं, हम इस धर्म को इस देश में अक्षय रखेंगे। हम सब धर्म के प्रहरी हैं, हम सब संस्कृति के प्रहरी हैं और इस धर्म-संस्कृति की रक्षा के लिये सदा अग्रणी रहने वाले संत हैं। संत ही दिशा देते हैं, ऐसा महाभारत में कहा गया है। आज यह संत हमें वही दिशा दिखा रहे हैं कि हमारा देश मृत्युंजय रहे, हमारा धर्म, हमारी धर्मभावना मृत्युंजय रहे और विश्वबन्धुत्व की कामना ले करके हम समर्थ बनते जाएं। इस प्रकार का प्रयास हम सभी को करना चाहिए, यह हम संतो का संकल्प है और जनता के लिए आदेश और उपदेश भी है।

वन्देमातरम्

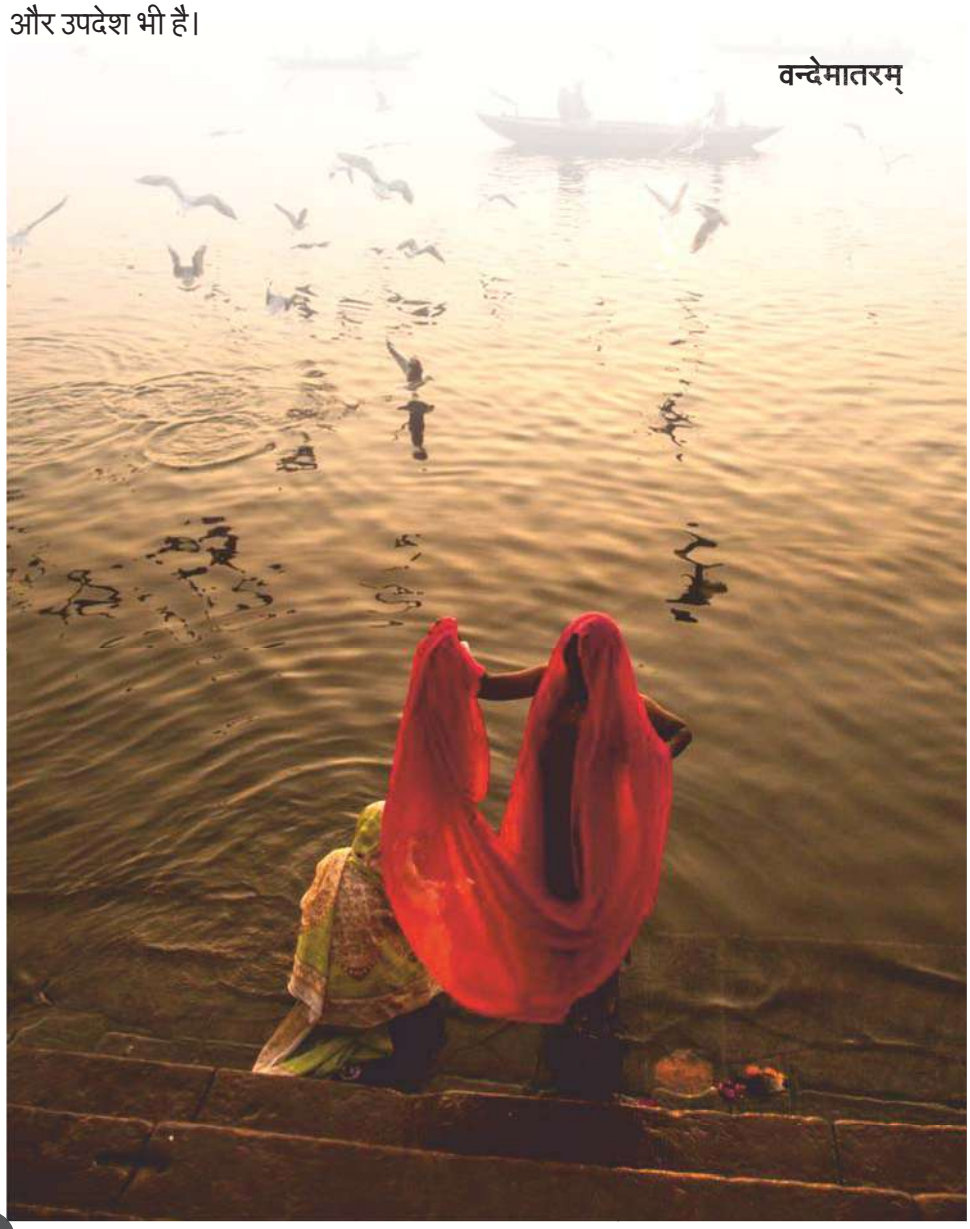

उद्‌बोधन

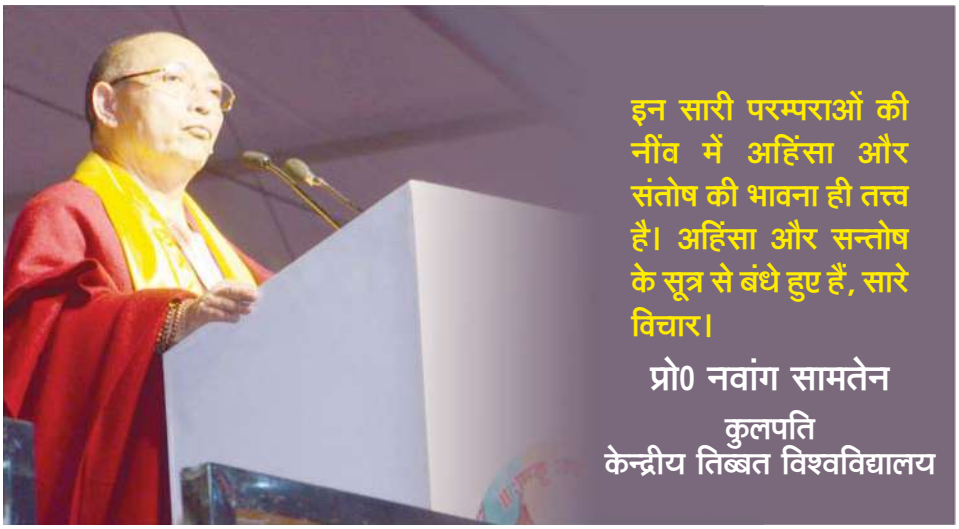

वन्देमातरम्

यहाँ मंच पर विद्यमान सभी संत महात्माओं के प्रति नमन करते हुए आप सबका अभिनन्दन करता हूँ। यह संगम नदियों का संगम है, यहाँ ज्ञान का संगम है और संस्कृति का संगम है और इस समय यहाँ संतो का संगम हो रहा है। इस देश ने प्राचीन काल से ही सम्पूर्ण विश्व को आलोकित किया, ज्ञान से अंकित किया और इसी देश में अनेक प्रकार के विचारों, धर्मों का उद्‌भव हुआ और सभी समान रूप से फले-फूले और इतना ही नहीं, अपितु परस्पर इंटरेक्शन व संवाद के माध्यम से योगदान देते हुए फिर आगे बढ़ते रहें और इस तरह के जो एक संवादात्मक विकास की बात कही गयी है, वह कहीं अन्यत्र विश्व के अन्य देशों में देखने को नहीं मिलती है। इसलिए यहाँ जो शब्द हमें देखने को मिलता है **'सर्वसमावेशी विचार'** ये बहुत ही प्राचीन-काल से चला आ रहा है।

हजारों साल से ये सारी जितने भी परम्पराएं हैं, वैचारिकताएं हैं, धर्म हैं इन सारी परम्पराओं की नींव में अहिंसा और संतोष की भावना ही तत्त्व है। अहिंसा और सन्तोष के सूत्र से बंधे हुए हैं सारे विचार। आज पूरे विश्व में पर्यावरण को लेकर, स्वास्थ्य को ले करके जो परेशानियाँ हैं, जो संकट वैश्विक रूप से हमारे सामने प्रकट हैं, वो केवल और केवल अहिंसा व संतोष के माध्यम से खत्म किया जा सकता है।

उद्‌बोधन

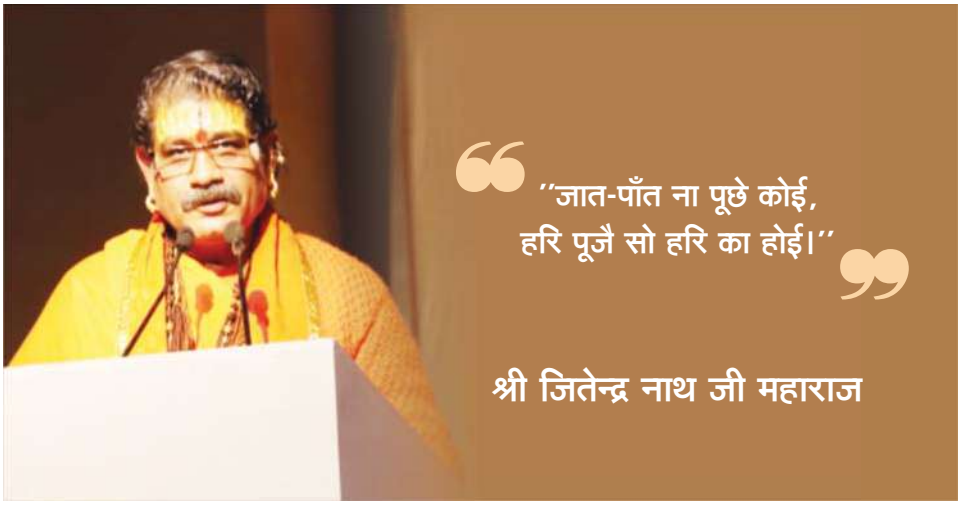

हम राष्ट्रवाद का उद्‌घोष करते हैं। हमारी सनातन परम्परा है यहाँ पर-**''जात-पाँत ना पूछे कोई, हरि को भजै सो हरि का होई।''** भगवान सत्य स्वरूप में हैं, व्यास जी कहते हैं, भगवान की कोई जाति नहीं होती। वह अंश रूप में हर जगह व्याप्त है। हमारे यहाँ गुरु सत्ता है। गुरु की विजय तभी होती है जब शिष्य विजयी होता है। गुरु एक शक्ति है, उसके ऊपर भगवान है और नीचे वो सन्त खुद होता है। गुरु की जीत सभी की जीत होती है।



उद्‌बोधन

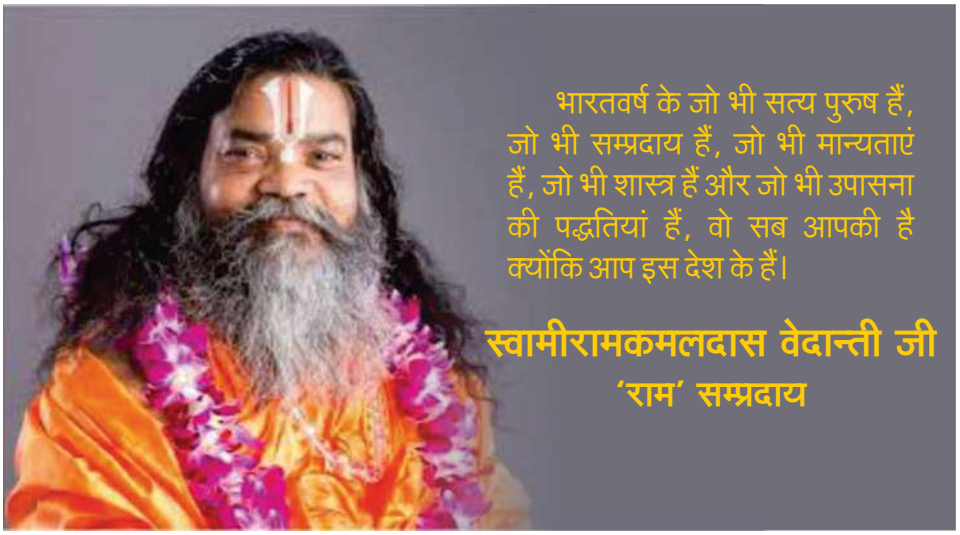

जब मैं बाहर जा रहा था परम पूज्य स्वामी सत्यमित्रानंद जी महाराज के पाद पद्मों में मैंने नमन किया था। उन्होंने कहा वेदान्ती जी आप बाहर जा रहे हैं। एक बात ध्यान रखना आप किसी सम्प्रदाय के संत नहीं हैं, आप किसी एक उपासना के सम्पोषक नहीं हैं, आप किसी एक महापुरुष के अनुयायी नहीं हैं। इस भारतवर्ष के जो भी सत्य पुरुष हैं, जो भी सम्प्रदाय हैं, जो भी मान्यताएं हैं, जो भी शास्त्र हैं और जो भी उपासना की पद्धतियां हैं, वो सब आपकी है क्योंकि आप इस देश के हैं। इसलिए यह सभी आपके अपने होने चाहिए। श्रीमद्‌भगवद् गीता में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं **"यो यो यां यां तनुं भक्तया श्रद्धयार्चितुमिच्छति। तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्।।** मैं ही भिन्न-भिन्न रूपों में हूँ। जो जिस रूप में मेरी उपासना करता है, मैं ही उस देवता का रूप धारण करके इस धरती पर अवतरित होता हूँ और इस प्रकार से प्रत्येक देवता के रूप में, प्रत्येक उपासना के रूप में, मैं ही सभी में विद्यमान हूँ, मैं ही राम हूँ, मैं ही कृष्ण हूँ और वो प्रभु पूरे विराट रूप में सब का दर्शन कराते हैं और इसके साथ-साथ व्यापक स्वरूप, विराट स्वरूप दिखलाई देता है तो इस कुम्भ में दिखलाई देता है क्योंकि हम कहते हैं **रामानंदो निम्वदित्तो विष्णु स्वामी श्री माधव** हम सभी राम सम्प्रदाय के उपासक और आचार्य स्वामी एक साथ एक ध्वजाओं में स्नान करने चलते हैं और सभी एक साथ रहते हैं, इसलिए समस्त उपासनाओं का भगवान श्री कृष्ण जी ने समर्थन किया है। दूसरे धर्म और पंथ एवं जातियाँ इस संदर्भ में भले ही बहुत संकुचित हैं अन्य धर्मों के पास एक पंथ, एक ग्रंथ और एक ही संत हैं लेकिन सनातन धर्म इस संदर्भ में बहुत धनी है, हमारे पास चार वेद, चार उपवेद, 6 शास्त्र, 18 पुराण, 18 उपपुराण

और देवताओं की अनगिनत संख्या है, 33 कोटि देवता हमारी सनातनी संस्कृति में उपलब्ध हैं। ऐसा और कहीं नहीं है। इस संदर्भ में बस केवल इतना ही कहना चाहूँगा कि हम बहुत धनी हैं, हमारे जीवन की शायद श्वास कम पड़ जाए, लेकिन अगर हम एक दिन देवता बदल करके दूसरे मंत्र को जपना चाहें तो हमारी श्वासें कम पड़ जायेंगी लेकिन हमारी संस्कृति में सद्ग्रंथ कम नहीं होंगे, संतग्रंथ कम नहीं होंगे और संतो की भगवत् की उपासना के मंत्र कम नहीं होंगे। हमारे सभी धर्मों के आचार्यगण यहाँ पर विराजमान हैं, इसलिए यह सर्व समावेशी संस्कृति है और हम इसको अपने अन्तःकरणरूपी कुम्भ के अन्दर भर करके ले जाएँ।

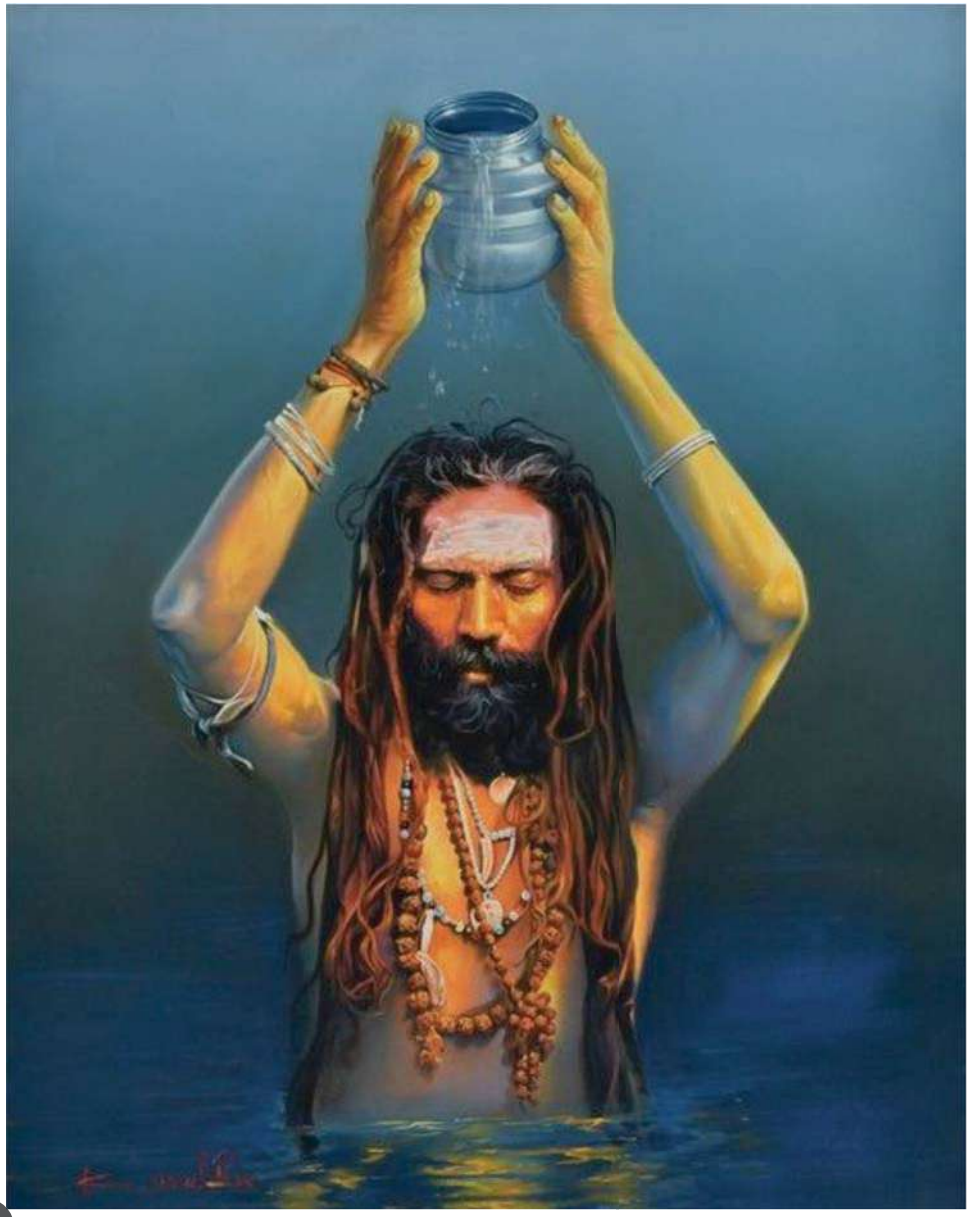

उद्‌बोधन

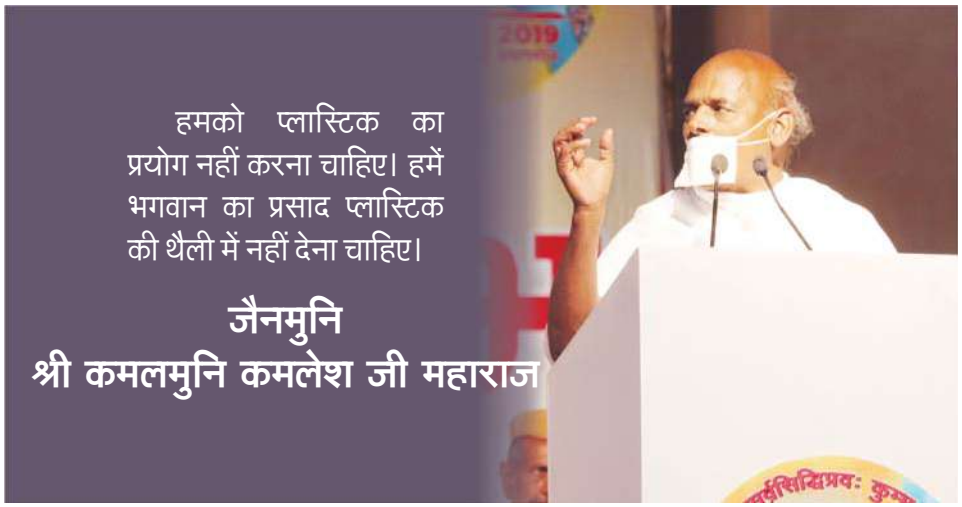

मेरा प्रणाम सभी पूज्य संतों को। हमको मेरे तेरे की भावना का अंत करना है। जैसे ही इसका अंत होगा, हम सुखमय हो जायेंगे। हम इस मिट्टी में साधना करते हैं। इस माटी के लिए हम जान देने को तैयार हैं। हम किसी को छेड़ते नहीं और कोई हमें छेड़े तो हम छोड़ते नहीं। आज जो देश में आतंकवाद है तो हम संतों का कर्तव्य है कि लोगों को शिक्षित करें और उनको जागरूक करें। हमको प्लास्टिक का प्रयोग नहीं करना चाहिए। हमें भगवान का प्रसाद प्लास्टिक की थैली में नहीं देना चाहिए।



उद्‌बोधन



''एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति'' सत्य केवल राम नाम है। सभी धर्मों का तत्त्व एक है। आज जब एक आम व्यक्ति संतों के पास जाता है तो सद्‌गुरु उसको अपने ज्ञान से संतुष्ट करता है। जिस संत में ज्ञान होगा वही पूजा जाएगा। आज हमारी संस्कृति मिट रही है। आज हमारी भूमि में अवगुण हो रहे हैं। हमको Value Based मंत्र का निर्माण करना है। राम मन्दिर हमारी अस्मिता का प्रतीक है। आप सभी इसमें सहयोग करें।



उद्‌बोधन

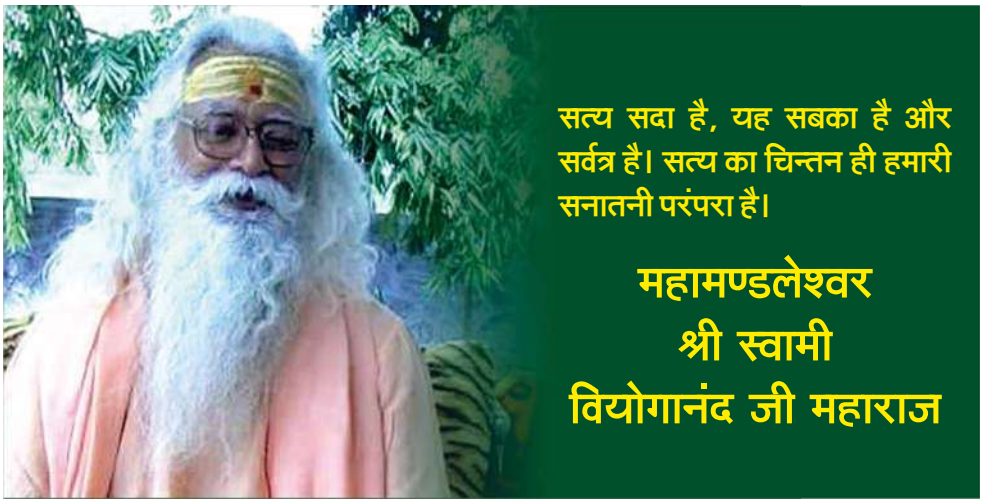

हम सब संत एक हैं। आपने देखा होगा घड़ा फूट जाए, पर मिट्टी नहीं फूटती। मिट्टी नहीं होगी तो घड़ा नहीं बनेगा, पर घड़ा नहीं तो मिट्टी होगी। इस तरह जिसका कभी विनाश न हो वो ही सत्य है, वो ही ज्ञान है। ज्ञान को किसी ने उत्पन्न नहीं किया, यह अजन्मा है। 'मैं' होने का ज्ञान ही सत्य ज्ञान है। माता-पिता पूजनीय हैं और उनकी संतान पुण्यवान् होती है। सत्य सदा है, यह सबका है और सर्वत्र है। सत्य का चिन्तन ही हमारी सनातनी परंपरा है। हमें अपने चित में आई हुई बुराई का आत्म चिन्तन करना चाहिए। जब संतों का आदर करेंगे तो आशीर्वाद मिलेगा, यह आशीर्वाद सब को मिलता है। योगीजी और मोदी जी को भी मिलेगा।

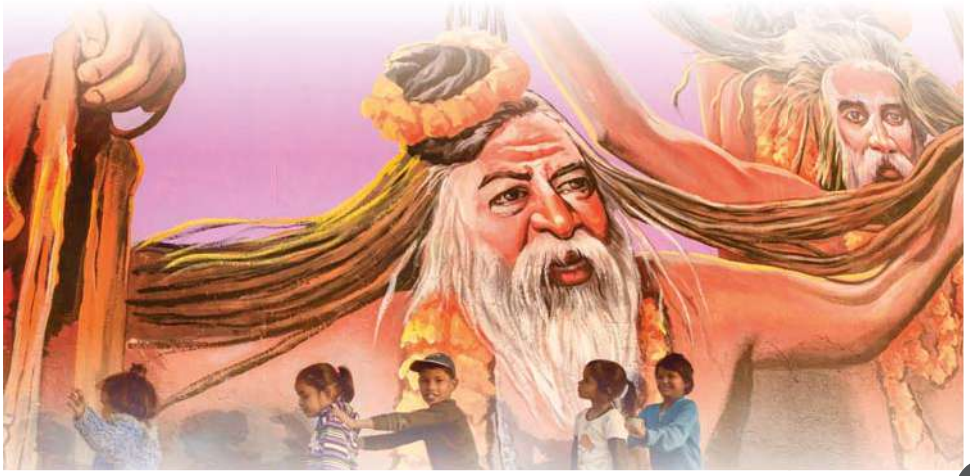

उद्‌बोधन



तस्मै श्रीगुरवे नमः, तस्मै श्रीगुरवे नमः

भारत की एकता के लिये हमे मिलकर काम करना होगा ।स्वामी विवेकानन्द जी एक बार विदेश गये वहाँ पर उनके एक विदेशी मित्र ने स्वामी जी से पूछा कि आप यहाँ पर इतने दिन घूमने के बाद यह तो जान ही गये होंगे कि हम विदेशी कितने समृद्ध है ; अब आप के मन में भारत के प्रति क्या नजरिया है? तो स्वामी जी ने पूर्ण गर्व से कहा कि पहले मैं भारत से प्रेम करता था परन्तु अब सम्पूर्ण यूरोप घूमने के बाद भारत की मिट्टी का एक-एक कण मेरे लिए पूजनीय हो गया है। ऐसा प्रेम स्वामी जी का भारत देश के प्रति था, अतः उन्होंने भारत के प्रत्येक नागरिक से इसी प्रकार देश भक्ति का आह्वान किया।

आज देश की एकता और अखण्डता के लिए जनजागरूकता अभियान चलाना होगा, जिससे भारत के प्रत्येक नागरिक के हृदय में राष्ट्रभक्ति निवास करे। कुम्भ महापर्व में भी अध्यात्म के साथ राष्ट्रभक्ति का भी संदेश देना होगा।

हमें हिन्दुत्व नहीं स्थापित करना है, क्योंकि हिन्दुत्व तो पहले से ही स्थापित है। हमें अपने मन में हिन्दुत्व के भाव को स्थापित करना है क्योंकि जब मन में हिन्दुत्व का भाव रहेगा तभी भारत बचेगा और जब भारत बचेगा तो हिन्दुत्व बचेगा, क्योंकि भारतीय वह नहीं है जो भारत में रहता है बल्कि भारतीय तो वह है जिसके दिल में भारत रहता है। गुरुदेव श्री आशुतोष जी महाराज का सन्देश है- **''अगर इस पृथ्वी पर दम तोड़ती मानवता को कोई बचा सकता है तो सिर्फ भारत ही बचा सकता है।''**

उद्‌बोधन

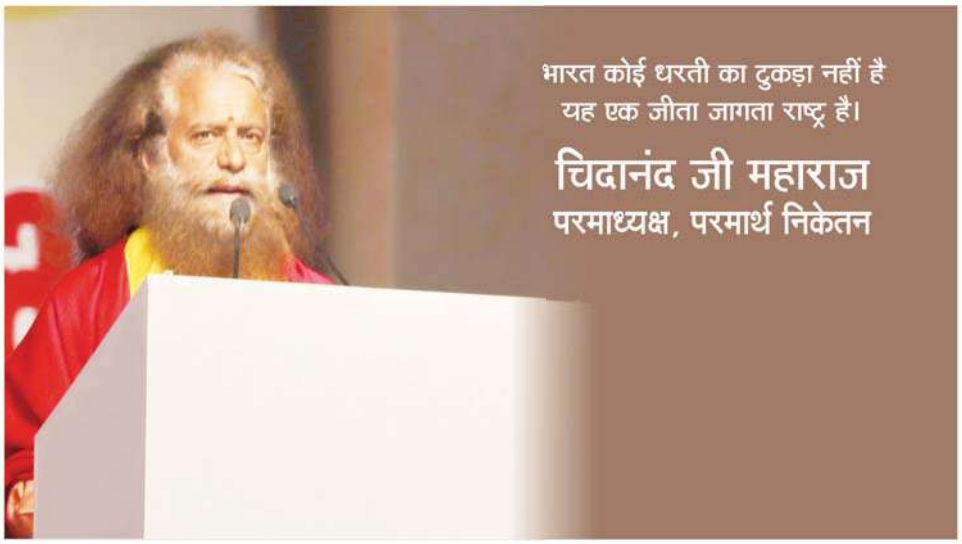

"I salute to the philosophy of kumbh" सर्व समावेशी कुम्भ में सभी धर्म, सभी जाति, सभी का आदर है। यह हमारे देश के निर्माण में योगदान कर रहा है। आज हमारे देश में एक संस्कारी सरकार है। दिव्य कुम्भ वाकई में दिव्य है। हमारे देश में कणाद ऋषि, पिप्पलाद ऋषि जैसे लोग रहे हैं, जो पत्ते खा कर जीवन जीते थे।

जगद्‌गुरु शंकराचार्य ने केरल से जम्मू तक देश को जोड़ा। केरल में होने वाला नारियल जम्मू में चढ़ाया जाता है। गंगाजल हरिद्वार से लेकर रामेश्वरम में चढ़ाएँगे। ये देश को जोड़ता है। भारत कोई धरती का टुकड़ा नहीं है, यह एक जीता जागता राष्ट्र है। पूरा विश्व हमारा परिवार है। हमें अपने Culture, Nature and Future पे ध्यान देना चाहिए। Culture बचेगा तो Nature बचेगा और जब Nature बचेगा तो हमारा Future Safe है।



उद्‌बोधन



हिन्दुस्तान में जितने भी लोग रहते हैं सभी लोग ऋषि-पुत्र हैं तथा सभी लोग हिन्दू हैं। सभी की भावना एवं विचार एक होने चाहिए, क्योंकि हम सभी लोग एक ही परम ब्रह्म की संतान हैं। महिमा सम्प्रदाय हिन्दुत्व का एक अंग है और विशुद्ध अद्वैतवाद को ही महिमा सम्प्रदाय कहते हैं। ब्रह्म ही सत्य है और सत्य ही ब्रह्म है और सम्पूर्ण मानव उस ब्रह्म की सन्तान है तो वह अलग-अलग कैसे हो सकता है।

अतः जब हमारे सभी के पिता एक ही हैं तो हम सभी मनुष्यों की जाति, धर्म, सम्प्रदाय अलग-अलग नहीं हो सकते हैं। अतः हम सभी एक हैं और हम सभी जितने लोग इस पृथ्वी पर रहते हैं, हिन्दू ही हैं।



उद्‌बोधन

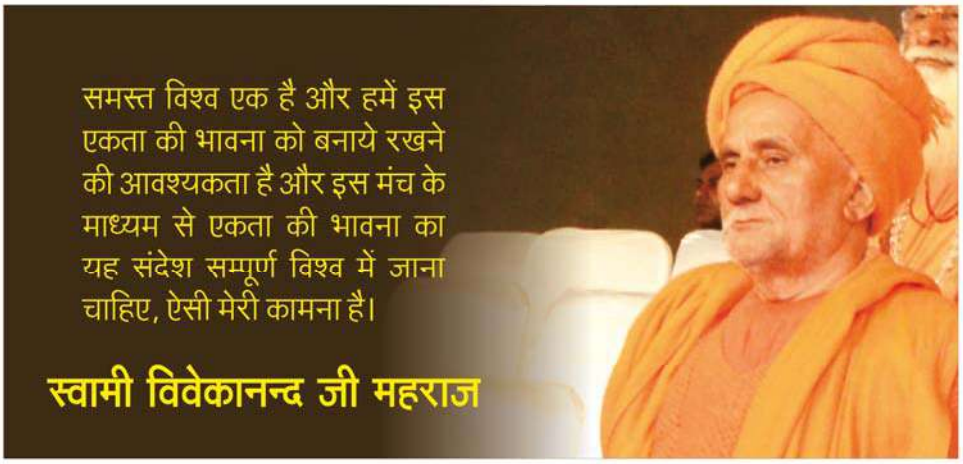

वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व आतंकवाद, भोगवाद, ईर्ष्या-द्वेष, धार्मिक असहिष्णुता रूपी आसुरी शक्तियों से घिरा हुआ है। ऐसे में ये आसुरी शक्तियाँ सम्पूर्ण समाज को बाँटने व उस पर विजय प्राप्त करना चाहती हैं। जो दानवी प्रवृत्ति का व्यक्ति है, वह उत्तरोत्तर दैवीय संस्कृति को नष्ट करने की कोशिश कर रहा होता है। एक बार पुनः अपनी संस्कृति को बचाने व उसकी रक्षा हेतु हम सभी को एक होना चाहिए, क्योंकि जब हम एक होंगे, तभी उन दानवी शक्तियों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। जैसा कि सूत्र वाक्य में कहा गया है **''एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति''** अर्थात् सत्य एक ही है जिसकी विद्वानों द्वारा अलग-अलग रूपों में व्याख्या की गयी है।

हमारी संस्कृति एक है। यद्यपि हमारी पूजा पद्धति, सम्प्रदाय अलग-अलग हैं, लेकिन सभी का एक ही लक्ष्य है-वह है एकता का। क्योंकि हम लोग पहले भी एक थे और आज भी एक होने की आवश्यकता है क्योंकि एकता से बढ़कर और कोई शान्ति नहीं है। मन को एकाग्र करना चाहिए, जैसा कि योगदर्शन में मन को एकाग्र करने के लिए विविध उपाय बताये गये हैं। मन को एकाग्र कर सभी मत, संप्रदाय अपनी-अपनी पूजा पद्धति व अन्य कारणों से अलग-अलग हुए थे, अब उन्हें इस सर्वसमावेशी कुम्भ के माध्यम से एक हो जाना चाहिए ऐसा मेरा विचार है।

जब हमारी संस्कृति, आचार-विचार एक होंगे, तब हम इन आसुरी शक्तियों, जैसे- धार्मिक, असहिष्णुता, आतंकवाद, भौतिकवाद, भोगवाद आदि पर विजय प्राप्त कर पायेंगे और जब हम इन आसुरी शक्तियों पर विजय प्राप्त कर लेंगे, तब हमारी संस्कृति, सभ्यता का उत्तरोत्तर विकास होता चला जायेगा और अन्त में उन्होंने यह भी कहा कि **'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्'** अर्थात् समस्त विश्व एक है और हमें इस एकता की भावना को बनाये रखने की आवश्यकता है और इस मंच के माध्यम से एकता की भावना का यह संदेश सम्पूर्ण विश्व में जाना चाहिए, ऐसी मेरी कामना है।

ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

उद्‌बोधन

संतों के मुख से सरस्वती रूपी धारा का प्रवाह कुम्भ में हो जाता है, सभी धर्म, जाति, सम्प्रदाय के लोग इस सरस्वती रूपी धारा में समान रूप से स्नान करते हैं और मन में व्याप्त मैल को धुलते हैं।

पूज्य श्री स्वामी जगद्‌गुरु रामानुजाचार्य आनन्दाचार्य जी महाराज



आज के समय में वेदों का अध्ययन कम हो गया है जो कि एक चिन्ता का विषय है। उन्होंने कहा कि वेदो में ही लिखा गया है कि सत्य एक है, उस सत्य की अनेक विद्वानों ने अनेक प्रकार से चर्चा की है।

'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति'- एक ही सत्य है जिसको विद्वानों ने विभिन्न प्रकार से कहा है। कुम्भ में त्रिवेणी पूरी तरह से जागृत हो जाती है। गंगा और यमुना तो अविरल धारा के रूप में बहती हैं, जिसमें सभी जाति, सम्प्रदाय के लोग स्नान करके समान रूप से शीतलता को ग्रहण करते हैं तथा संतों के मुख से सरस्वती रूपी धारा का प्रवाह कुम्भ में हो जाता है। सभी धर्म, जाति, सम्प्रदाय के लोग इस सरस्वती रूपी धारा में समान रूप से स्नान करते हैं और मन में व्याप्त मैल को धुलते हैं। अतः सरस्वती रूप धारा के स्पर्श से मन को शीतलला प्राप्त होती है।



उद्‌बोधन

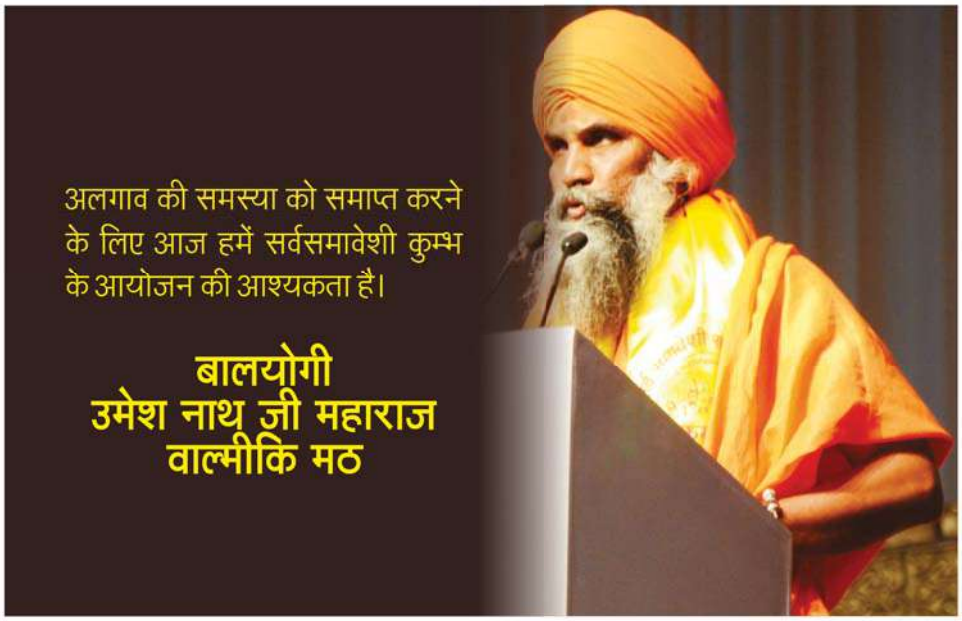

सर्वसमावेशी कुम्भ के आयोजन की आवश्यकता का कारण लोगों की सनातन धर्म में बढ़ती अनास्था है। इस देश के अन्य सम्प्रदाय जो कि निकले तो हिन्दू धर्म से ही हैं, लेकिन अपने आप को हिन्दू नहीं मानते, जैसे इस देश का बौद्ध, जैन, सिक्ख आदि अपने आप को हिन्दू नहीं मानता और जो हिन्दू हैं भी वे अलग-अलग सम्प्रदाय और जाति में बँटे हैं, अतः इसी अलगाव की समस्या को समाप्त करने के लिए आज हमें सर्वसमावेशी कुम्भ के आयोजन की आश्यकता है।

देश में इस समय 80 लाख के आस-पास संत समाज है। अलगाव की समस्या को समाप्त करने हेतु इन्हीं संत समाज को जगद्‌गुरु रामानन्दाचार्य एवं शंकराचार्य अपने निर्देशन में प्रत्येक संत को 5-5 गाँव देकर भेजें और ये संत उन पाँच गाँवों में जाकर जातिवाद, सम्प्रदायवाद, वर्गवाद एवं जितनी भी सामाजिक कुरीतियाँ हैं, उन्हें समाप्त करने का प्रयास करें और जब तक ये समाप्त नहीं हो जातीं, तब तक वापस अपने मठों में न आयें। उन्होंने मंच से विश्वास दिलाया कि उज्जैन से वाल्मीकि मठ के संतों की तरफ से सम्पूर्ण वाल्मीकि समाज के संत एवं सम्पूर्ण दलित समाज के संत जितने भी कबीरपंथी एवं रविदासपंथ के अनुयायी हैं, सभी इस कार्य में सहयोग करेंगे और तब जाकर भारत एक बार फिर से विश्वगुरु बन सकेगा।

उद्‌बोधन



भारत के सभी सम्प्रदाय अलग-अलग रूप, रंग, आकार के फूल रहे हैं, जिन्हें आपस में मिलाकर एक सुन्दर माला बनाई जा सकती है और उस माला की एक अलग छवि बनती है। परन्तु उन सभी फूलों का उस माला में भी अपना अस्तित्व बना रहता है, उनके रंग, रूप, आकार, सुगन्ध वही रहते हैं। लेकिन माला बनने पर वे एक-दूसरे फूल की शोभा बढ़ाते हुए उस सम्पूर्ण माला की भी शोभा बढ़ाते हैं उसी प्रकार हम अलग-अलग पंथ, सम्प्रदाय के होते हुए भी अपनी सभ्यता, संस्कृति व राष्ट्र के लिए एक होकर अपने स्व की रक्षा भी कर सकते हैं और हिन्दुत्व एवं राष्ट्र को एक सर्वशक्तिशाली राष्ट्र भी बना सकते हैं तथा व्याप्त कुरीतियों को मिटाकर एक व्यापक एवं सर्वस्वीकार्य धर्म की स्थापना कर सकते हैं।



उद्‌बोधन



या देवी सर्वभूतेषु, शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।

हिन्दू धर्म के सभी लोग जो भले ही किसी सम्प्रदाय के हों, उन्हें एक होकर रहना चाहिए क्योंकि इनके ऊपर अनेक लोगों की कुदृष्टि बनी हुई है, अतः अगर हम एक रहेंगे तो कोई भी बाहरी शक्ति हमें तोड़ नहीं सकती है और एक दिन हमारा देश निश्चित रूप से हिन्दू राष्ट्र बनेगा, ऐसा मुझे विश्वास है। स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था कि- '**एक रहो, संगठित रहो, शिक्षित रहो, जिससे तुम्हें कोई भी तोड़ न सके**'। अतः आज इस देश को स्वामी जी के इन विचारों को आत्मसात् करने की बहुत आवश्यकता है, नहीं तो यह धर्म और राष्ट्र दोनों के लिये हानिकारक होने वाला है। अगर हम स्वामी जी के विचारों को ग्रहण करें तो हमें विश्व की कोई भी ताकत तोड़ नहीं सकती है।



उद्‌बोधन



कुछ लोग कहते हैं कि भारत जगत्‌गुरु बनना चाहता है, पर जगत्‌गुरु तो कोई है ही नहीं। जगत्‌गुरु भारतवर्ष में थे, जगत्‌गुरु वर्तमान समय में हैं और आगे भी जगत्‌गुरु रहेंगे। भागवत पुराण में ब्रह्मा जी ने नारद मुनि को जगत्‌गुरु कहकर सम्बोधित किया है। भगवान राम को जगत्‌गुरु कहा गया, भगवान कृष्ण को, भगवान बुद्ध को जगत्‌गुरु कहा गया है और वर्तमान में भी जगत्‌गुरु रामानन्दाचार्य जी हैं और आगे भी जगत्‌गुरु होंगे। अतः जब यहाँ पर जगत्‌गुरु थे तो भारत भी जगत्‌गुरु था, वर्तमान में भी जगत्‌गुरु हैं तो आज भी यह विश्व का जगत्‌गुरु है और आगे भी जगत्‌गुरु होंगे तो आगे भी भारत जगत्‌गुरु रहेगा।

भागवत में सत्य एक है और यह सत्य ही ईश्वर है। अतः हमारा भागवत ही हमें अनेकता में एकता सिखाता है, क्योंकि सभी धर्म सत्य हैं। बौद्ध, जैन, सिक्ख, इस्लाम, ईसाई, यहूदी सभी सत्य हैं। अतः जब सभी धर्म सत्य हैं और यह सत्य ही ईश्वर है तो ईश्वर एक है और सभी धर्म सनातन धर्म में ही समाहित हैं। भागवत में जो कहा गया है उसके आधार पर हम कह सकते हैं कि धर्म में मति होती है, जो अलग-अलग हो सकती है, इसी प्रकार जो अन्य धर्म हैं उनकी मति अलग है, पर वे सभी धर्म सनातन धर्म ही हैं क्योंकि वे सभी सत्य है।

उद्‌बोधन



सर्वसमावेशी की परिकल्पना यह है कि जिस प्रकार से इस मंच पर बैठे संत अलग-अलग धर्म जाति सम्प्रदाय से आते हैं लेकिन सभी संत धर्म, जाति, सम्प्रदाय से अलग होते हुए भी एक ही मंच पर बैठे हैं उसी प्रकार से हमारी संस्कृति है। हम अलग होते हुए भी एक हैं।

अगर हम संस्कृति में कुम्भ को मिला लें तो हमारा सम्पूर्ण जीवन आनन्दमय हो जायेगा, क्योंकि कुम्भ है क्या, यह सनातन धर्म के सभी सम्प्रदायों का एक रूप है। अतः मनुष्य की संस्कृति में जब कुम्भ समाहित हो जायेगा तो सनातन धर्म के सभी सम्प्रदायों का भाव एक मनुष्य के अन्दर आ जायेगा और वह मनुष्य सभी सम्प्रदायों को आदर एवं सम्मान देगा, जिससे हमारी संस्कृति का विकास होगा और हम विश्व गुरु फिर से बन पायेंगे।



उद्‌बोधन



ईश्वर सनातन है और जीव नश्वर है जो जीव बाद में उस सनातन में समाहित हो जाते हैं। अतः उसी प्रकार से अलग-अलग सम्प्रदाय के लोग भी हिन्दू धर्म में ही समाहित हैं। हमारे सम्प्रदाय अलग हो सकते हैं, हमारे देवता अलग हो सकते हैं, हमारे विचार अलग हो सकते हैं, हमारे मत अलग हो सकते हैं, हमारे सिद्धान्त अलग हो सकते हैं, लेकिन हम सभी उस एक सनातन शिव में ही समाहित होते हैं। अतः हम अलग होते हुए भी सनातन धर्म में एक ही हैं क्योंकि हम सभी जीव हैं और जीव अन्त में उस सनातन शिव में ही समाहित होता है। जीव, जगत् और ईश्वर तीनों अलग-अलग होते हुए भी ईश्वर में ही समाहित हैं। तीनों शिव के तीन नेत्रों के समान हैं। जीव और जगत् इस शिव रूपी ईश्वर में समाहित हो जाते हैं।

किसी भी धर्म को नुकसान न पहुँचाते हुए सभी सम्प्रदायों को एक होकर अपने धर्म की रक्षा करनी चहिए।



उद्‌बोधन

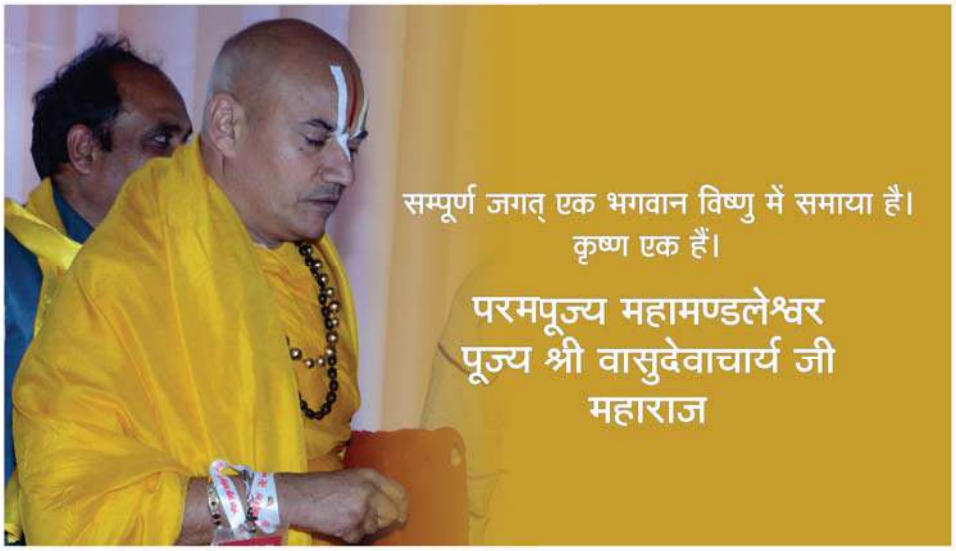

'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' एक क्या है- सम्पूर्ण जगत् एक भगवान विष्णु में समाया है। कृष्ण एक हैं। सद् क्या है- सद् हाँ भी है, ना भी है, शब्द भी है और अक्षर भी वही है। विप्र किसको कहते हैं, भगवान का ध्यान करने वाले विप्र होते हैं, हमारे यहाँ धूम्रपान को लोगों ने नशा बना लिया है। यह चिकित्सा पद्धति है। पर इसका रोज-रोज सेवन सेहत के लिए हानिकारक है। आज गंगा जल स्वच्छ है। इसका श्रेय सरकार को है। टिहरी से गंगा के पानी को निर्मल एवं स्वच्छ अविरल छोड़ा जाना चाहिए।



उद्‌बोधन



हमें अन्दर से ये आवाज लानी चाहिये
कि हम एक हैं।

परमपूज्य महामण्डलेश्वर
पुर्वानन्दजी महाराज

जिस प्रकार से हमारे शरीर के सभी अंग अलग-अलग हैं, लेकिन उसका मालिक एक है, उसी प्रकार से भारत में जितने भी नागरिक हैं, वे भले ही अलग-अलग धर्म, समाज, जाति, सम्प्रदाय के हों, सब के सब हिन्दू हैं। भारतवर्ष की समस्याओं का जन्म हिन्दू धर्म के विभाजन से हुआ, अगर हमें भारत की समस्या को समाप्त करना है तो हम सभी को एक होना होगा, हिन्दुत्व को एक होना होगा, जिस दिन हिन्दुओं में एकता आ जायेगी, उसी दिन इस देश की समस्या समाप्त हो जायेगी। इस देश के प्रत्येक नागरिक में अपने हिन्दू होने का अभिमान होना चाहिये, हमें अन्दर से ये आवाज लानी चाहिये कि हम एक हैं।

मैं उ0प्र0 सरकार की भूरि-भूरि सराहना करता हूँ और भव्य कुम्भ एवं दिव्य कुम्भ के सफल आयोजन के लिये यहाँ के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी अत्यन्त प्रशंसा के पात्र हैं, उन्हें मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।



उद्‌बोधन

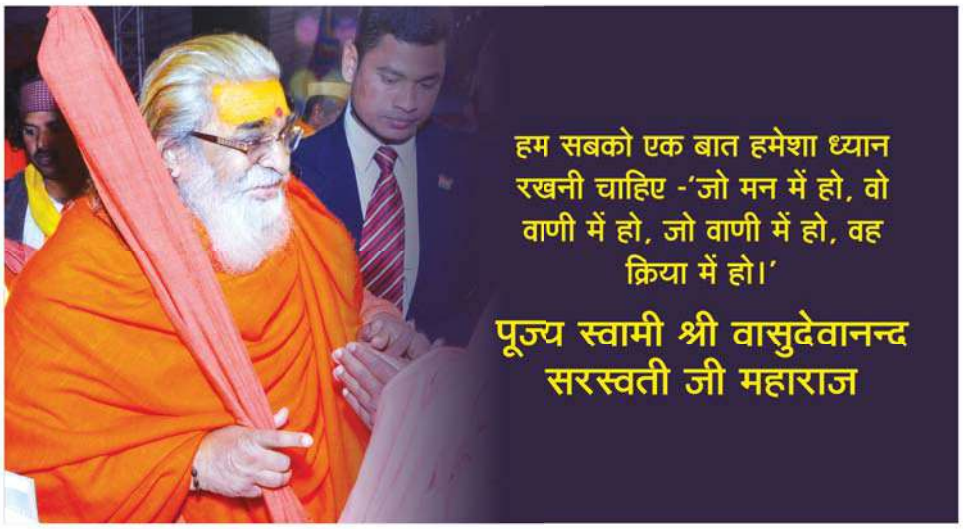

''एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति'' सत्य एक है। वह जिसमें विकृति है, वो सत्य नहीं है। सत्य में कोई विकृति नहीं होती है। वह आनन्दमय है, सर्वत्र है। हम सबको एक बात हमेशा ध्यान रखनी चाहिए -'जो मन में हो, वो वाणी में हो, जो वाणी में हो, वह क्रिया में हो और वही महात्मा के कृतित्व में होना चाहिए।



उद्‌बोधन



रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे
श्री रघुनाथ नाथाय सीतायाः पतये नमः।
ओम सह नाववतु।
सह नौ भुनक्तु।
सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।
ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

कार्यक्रम के आयोजक राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज के कुलपति प्रो0 कामेश्वरनाथ सिंह जी व कार्यक्रम के संचालक जीवेश्वर मिश्र जी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए ऐसे भव्य आयोजन के लिए साधुवाद देता हूँ। **''एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति''** एक ही सत्य है कि परमात्मा एक है, जिसे विद्वज्जनों ने अलग-अलग रूपों में वर्णित किया है। जिस प्रकार **'माँ'** एक है परन्तु उसका स्वरूप भिन्न-भिन्न है, जैसे- दादी, बुआ, चाची, मामी, बहन आदि लेकिन उद्देश्य माँ के रूप में बच्चे का पालन करना है, उसी प्रकार परमात्मा भी एक है, उसका स्वरूप भिन्न-भिन्न है। सभी धर्म, मत व सम्प्रदाय ईश्वर को भिन्न-भिन्न नामों से पुकारते हैं, जैसे- वाहेगुरु, अल्लाह, शिव, विष्णु, भगवती, महात्मा बुद्ध, राम, कृष्ण आदि। इस प्रकार सम्पूर्ण विश्व में परमात्मा एक ही है। हमारी भारतीय उदात्त संस्कृति में कहा गया है -

अयं निजः परोवेति गणना लघु चेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

अयं निजः- यह मेरा है, **परोवेति**-यह पराया है, ऐसी गणना करने वाले, **लघु चेतसाम्** अर्थात् सूक्ष्म बुद्धि वाले होते हैं।

इस संसार में कोई शूद्र नहीं है, व्यक्ति अपने विचारों से शूद्र बनता है। विचारों से व्यक्ति छोटा होता है, अपने काम से व्यक्ति बड़ा होता है, इसलिए हमारी संस्कृति में सब एक हैं, अर्थात् परमात्मा एक है, जिस प्रकार सूर्य एक है परन्तु सबको प्रकाश देता है। गंगा एक है जो सबको जल प्रदान करती है उसी प्रकार कुम्भ एक है और हमारी भारतीय संस्कृति व परम्परा एक है। जिसको कहा गया है '**उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्**' अर्थात् भारतीय संस्कृति व परम्परा ने अधर्म पर धर्म की विजय, प्राणियो में सद्भाव व जीवों पर दया करने की बात की है।

इस संगोष्ठी में सर्वसमावेशी की झलक दिखाई पड़ती है जैसे यहाँ भिन्न-भिन्न पंथ व सम्प्रदाय के लोगों नें एकत्रित होकर परमात्मा अर्थात् सत्य एक ही है, का संदेश दिया। जिस प्रकार जड़ एक ही है, उसकी शाखाएँ अलग-अलग होती हैं, तने अलग-अलग होते हैं, लेकिन अस्तित्व एक ही जड़ से है, उसी प्रकार भारतीय संस्कृति की जड़ एक ही है- वैदिक धर्म व सनातन धर्म। इसी से भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों का जन्म शाखाओं तनों, फूलों, फलों के रूप में हुआ है। लेकिन इसका अस्तित्व एक ही जड़ में है अर्थात् भारतीय वैदिक धर्म संस्कृति में है। यदि जड़ में रोग लग जाये या वह समाप्त हो जाये तो ऐसी स्थिति में न तना बचेगा, न शाखाएँ बचेंगी न फूल बचेंगे और सम्पूर्ण जड़ का नाश हो जायेगा। जड़ क्या है? यह हमारी भारत माता अर्थात् राष्ट्र है, जो राष्ट्र को बचा लेगा, वह हमारी संस्कृति, परम्परा, सभ्यता, संस्कार, स्वाभिमान, परिवार, धर्म, पर्यावरण को बचा लेगा, तो ऐसे में वर्तमान परिदृश्य में भारतीय संस्कृति व सभ्यता को बचाने के लिए राष्ट्र को बचाने की जरूरत है। यदि आप राष्ट्र को बचा लेते हैं, तो सम्पूर्ण विश्व को बचा लेंगे और यह तभी सम्भव है जब सर्वसमावेशी संस्कृति को अपने जीवन व कार्यों में समाहित करेंगे। भारतीय संस्कृति सम्पूर्ण विश्व को अपना मानती है, और यदि हम अपनी इस संस्कृति को बचा लेते हैं तो एक बार पुनः भारत विश्वगुरु कहलाएगा। सत्य क्या है? सत्य एक ही है वह वैदिक धर्म है, वह सनातन धर्म है। आज एक-एक को बचाना है, एक-एक को पहचानने की जरूरत है। और सभी संस्कृतियों का समावेश केवल भारतीय वैदिक धर्म में है, यही सत्य है। सम्पूर्ण विश्व के कल्याण के लिए विश्व बन्धुत्व की भावना पर जोर दिया जाना आवश्यक है। इस सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ के माध्यम से सभी धर्मों, सम्प्रदायों, मतों व सामान्य जन का समावेश हुआ है तथा यह सभी प्रकार की दुर्भावनाओं जैसे- ऊँच-नीच, जात-पाँत, ईर्ष्या-द्वेष आदि को मिटाकर सर्वसमावेशी समाज का निर्माण करने का संदेश देता है। इस सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ के मंच के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व में सौहार्द, सद्भाव, भाई-चारे का वातावरण पैदा होगा और नये भारत का निर्माण होगा। इसका श्रेय उ0प्र0 सरकार की सहायता से राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज को जायेगा। अन्त में पुनः मैं कहूँगा कि राष्ट्र बचेगा तो परिवार बचेगा, संस्कृति बचेगी और सत्य बचेगा, इसलिए आज हमें राष्ट्र को बचाने की जरूरत है।

आभार



मैं मंचासीन धर्माचार्यों, अतिथियों व अन्य लोगों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ का आयोजन अतुलनीय है। यह कार्यक्रम विविधता में एकता का संदेश देने वाला है। यद्यपि भारतीय वैदिक संस्कृति पुरातन व चराचर है। सर्वसमावेशी कुम्भ न केवल एक संगोष्ठी है, बल्कि यह जीवन जीने की एक कला है। इस कार्यक्रम का मूल वाक्य है **''एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति''** जिसका तात्पर्य है, सत् एक ही है अर्थात् परामात्मा, ईश्वर एक है। मानव का कल्याण तभी सम्भव है जब हम एक होंगे। भारतीय संस्कृति में विभिन्न सम्प्रदाय, धर्म, पंथ हैं लेकिन सभी का एक ही लक्ष्य है, वह है एकात्मकता, विश्व बन्धुत्व की भावना का। भारत के मनीषियों व विद्वानों का मत है कि प्रकृति हमारी माँ है और प्रकृति के साथ समन्वय करके चलने से मानव-कल्याण सम्भव है। जो शक्तियाँ समाज को बाँटने का काम कर रही हैं, उन्हें आज समझ जाना चाहिए कि भारतीय संस्कृति, परम्परा बाँटने में विश्वास नहीं करती, बल्कि समाज को जोड़ने में विश्वास करती है। इस सर्वसमावेशी कुम्भ के माध्यम से केवल एक ही संदेश जाता है, वह है- **सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः**। इस प्रकार भारत की धर्मसत्ता सम्पूर्ण विश्व का नेतृत्व करती है। इस सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ के मंच के माध्यम से एक ही संदेश जायेगा कि हम एक हैं एकता के मार्ग पर चलने के संदेश को आगे बढ़ाने के लिए प्रयासरत रहेंगे। इस संगोष्ठी में सभी सम्प्रदायों, पंथों व धर्मों के संतों का समागम एक अद्वितीय संगम है।

अंत में भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा प्रायोजित, उ0प्र0 सरकार द्वारा सहायता तथा उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में सम्मिलित सभी सदस्यों के प्रति आभार व धन्यवाद व्यक्त करता हूँ। इस कार्यक्रम के सफल आयोजन के प्रति सभी लोगों के प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सहयोग के लिए आभार ज्ञापित करता हूँ।

आलेख

भारत की समावेशी संस्कृति के मूल आधार

प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह
कुलपति
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज



हिन्द महासागर से हिमालय तक प्रसरित अखण्ड भू-भाग 'भारतीय उप महाद्वीप' का पर्याय है। सदियों से विविधतापूर्ण जीवन शैली के बावजूद यहाँ के निवासी एक लय होकर रहते रहे हैं, जो विश्व के लिये अनुकरणीय है। दुनिया के किसी भी अन्य भू-भाग को 'उप महाद्वीप' की संज्ञा नहीं मिली, अपितु भूगोल वेत्ताओं ने मात्र अखण्ड भारत को ही 'उप महाद्वीप' की संज्ञा दी है। सामान्यतया भौगोलिक शब्दावली में महाद्वीप उस भूखण्ड को कहते हैं जो आकार एवं आयाम की विशालता के साथ-साथ ऐसी विविधता से पूर्ण हो, जो उसके स्थलीय स्वरूप, जलवायु, वनस्पति, जीवन शैली एवं संस्कृति में अभिव्यक्त होती है। सामान्यतया भारतीय उप महाद्वीप के अतिरिक्त दुनिया के अन्य महाद्वीपों में भाषा एवं मत में समांगता है। मत एवं जीवन शैली और सांस्कृतिक एकरूपता के अनुरूप इन महाद्वीपीय क्षेत्रों के निवासियों का हमेशा यह प्रयास रहा है कि पूरी दुनिया अभाव या प्रभाव से उनके प्रभुत्व में आकर एक मत एवं पन्थ का अनुसरण करके उनके अनुरूप हो जाय, जिसके लिये वे दल, बल एवं छल का उपयोग स्वभावतः करते रहे हैं। भारत के संदर्भ में भी पश्चिमी एवं मध्यपूर्व की शक्तियों का यही प्रयास रहा है। पूरी दुनिया को एक मत एवं साँचे में ढालने की कुत्सित

मनोवृत्ति के चलते आज पूरे विश्व में अस्थिरता, अनिश्चितता, असमानता एवं असहिष्णुता का बोलबाला है, जिसकी परिणति आतंकवाद, अलगाववाद, विस्तारवाद में हो रही है। उक्त कारणों से आज सम्पूर्ण विश्व अशान्ति में रहते हुए निर्धनता, निरक्षरता एवं विवशता का जीवन जीते हुए पर्यावरणीय भयावहता से चिंतित है एवं किंकर्तव्यविमूढ़ है तथा वैकल्पिक मार्ग की तलाश में है। निःसन्देह भारतीय दर्शन एवं भारतीय समावेशी संस्कृति का अनुसरण ही वैकल्पिक मार्ग है।

पर्यावरण एवं विकास के अन्तर्द्वन्द्व पर जार्ज परकिन्स ने 1864 में अपनी पुस्तक 'मैन एण्ड नेचर' में चिन्ता व्यक्त की, जब औद्योगिक क्रान्ति एवं ब्रिटिश साम्राज्यवाद पराकाष्ठा पर था, परन्तु इसे महज बौद्धिक लाभ मान लिया गया। पुनः आश्वार्न ने 1948 में अपनी पुस्तक "Over Plundered Planed" एवं कार्सन ने 1962 में अपनी पुस्तक 'The Silent Spring' में अन्धाधुन्ध विकास एवं पर्यावरणीय संकट के विषय में चिन्ता व्यक्त की, परन्तु ये आवाजें दब गयीं एवं आर्थिक समृद्धि ही सर्वोपरि रही।

पुनः 1970 में 'क्लब आफ रोम' द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'Limit of Growth' में वर्तमान विश्व में चल रहे आर्थिक विकास एवं पर्यावरण संकट के चलते मानव के अस्तित्व पर चिन्ता व्यक्त की गयी, जिसके समाधान हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ के नेतृत्व में विश्व सम्मेलनों का आयोजन प्रारम्भ हुआ, जिनमें 1971 में सम्पन्न 'स्वीडन सम्मेलन' एवं 1992 में ब्राजील की राजधानी रियो दि जनरो में सम्पन्न 'पृथ्वी सम्मेलन' में विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों के बीच व्यापक संविमर्श हुआ। इन सम्मेलनों में विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों ने विचार विनिमय के माध्यम से भूतल पर शान्ति, सद्भावना एवं स्थायित्व के लिए समझौता एवं सन्धि प्रारम्भ की गयी, परन्तु जैसे-जैसे संधियों एवं समझौतों की संख्या बढ़ी वैसे-वैसे शान्ति सुरक्षा, विकास एवं पर्यावरणीय समस्या भी गम्भीर होती गई। आज यह विश्व के समक्ष यक्ष प्रश्न है कि निरन्तर बढ़ रहे आतंकवाद, अलगाववाद एवं असहिष्णुता का समाधान कैसे हो? किस रूप में एक ऐसा विकास का मॉडल स्थापित हो, जो आर्थिक दृष्टि से पुष्ट हो, सामाजिक दृष्टि से न्यायसंगत हो एवं पर्यावरण की दृष्टि से मित्रवत हो, जिसे हम संविकास के नाम से जानते हैं, की तलाश में समूचा विश्व संलग्न है। वस्तुतः सनातन भारत की विकास के संदर्भ में यही अवधारणा है, जिसे विकास की भारतीय अवधारणा की संज्ञा दे सकते हैं। निःसन्देह आज पूरा विश्व इसी विकास के माडल को पाने के लिये प्रयासरत है, जो बिना भारतीय शैली को अपनाये सम्भव नहीं है।

यह गंभीर प्रश्न है कि वह कौन सी विचारधारा एवं जीवन-शैली है, जिसमें सभी मत-मतान्तरों एवं प्रतिरोधों और विरोधाभासों को साथ-साथ लेकर चलने की क्षमता एवं दक्षता है? वह कौन-सा विकल्प हो सकता है, जिसमें व्यक्ति एवं राष्ट्र के अन्दर प्रतिस्पर्धा नहीं, परिपूरकता का भाव है एवं राष्ट्रीयता एवं अन्तर्राष्ट्रीयता में संघर्ष न हो, साथ ही पर्यावरण एवं विकास में अन्तर्द्वन्द्व न हो।

उक्त सभी प्रश्नों के उत्तर एवं विकल्प भारत की समावेशी संस्कृति एवं जीवन शैली में हैं, जहाँ वैचारिक स्तर पर तथा जीवन शैली में विरोधाभास के बावजूद साथ रहने, साथ चलने, साथ जीने की प्रतिबद्धता है, जिसकी आज विश्व को आवश्यकता है। ऐसे समय में भारत की समावेशी संस्कृति विश्व के समक्ष एक वैकल्पिक मार्ग देने में सक्षम है, जिसमें विश्व में शान्ति, सुरक्षा एवं पर्यावरणीय संकट के समाधान के बीज छुपे हुए हैं। परन्तु भारत के इस वैकल्पिक मार्ग को मात्र ग्रन्थों के अनुशीलन एवं कथानकों के माध्यम से नहीं समझा जा सकता, बल्कि इसे अनुभूतियों के माध्यम से ग्राह्य बनाया जा सकता है। भारत की धरती पर आयोजित होने वाला विश्व का सबसे बड़ा आयोजन 'कुम्भ' इस प्रकार की अनुभूति का एक उदाहरण है एवं उसमें भी 2019 का प्रयागराज कुम्भ एक मॉडल है। एक ऐसा विलक्षण आयोजन, जिसमें भारत के सभी क्षेत्रों के विविधभाषी एवं विविधतापूर्ण जीवन शैली जी रहे तथा विभिन्न मतों मतान्तरों को मानने वाले लोग, बिना किसी औपचारिक आमंत्रण के एक स्थान पर आकर राष्ट्रीय एकता के साथ-साथ **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** का संकल्प लेते हैं। जमघट में कोई किसी की जाति, भाषा, सम्प्रदाय, मत, खानपान, संस्कार आदि की चर्चा नहीं करता, बल्कि एक रस एवं एक लय होकर जीवन जीने की विधा सीखता है।

उक्त तथ्यों की अनुभूति करते हुए स्वयं मुझे सर्व समावेशी संस्कृति कुम्भ का आयोजन करने का विलक्षण अवसर भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय, उत्तर प्रदेश शासन एवं मेला प्राधिकरण प्रयागराज के सौजन्य से मिला, जिसका निष्कर्ष मात्र किसी एक संगठन या व्यक्ति के लिए नहीं, अपितु पूरे विश्व के लिए एक सहिष्णुतापूर्ण प्रगतिशील जीवन जीने का एक रोडमैप है। भारत की सर्व समावेशी संस्कृति को अपनाने एवं उसके अनुसार जीवन जीने से ही विश्व की सम्पूर्ण समस्याओं का समाधान सम्भव है।

वस्तुतः भारत में सभी विरोधाभासी विचारों एवं मतों का सम्मान करते हुए साथ जीने की जीवन-शैली के सूत्र हिन्दुत्व के वैदान्तिकदर्शन से उद्भूत हैं, जिसका मूलाधार भारत का भूगोल है, जो विविधतापूर्ण है। विविधता में हमारी एकता के सूत्र प्रच्छन्न रूप में विद्यमान हैं। जड़ एक है, बाह्य रूप में विविधता दिखती है, परन्तु पाश्चात्य आक्रान्ता अपने स्वार्थ में विविधता को उभाड़कर अपना मन्तव्य सिद्ध करने में अनवरत लगे हैं। उल्लेखनीय है कि भारत में व्याप्त विविधता, जो भारत का वैशिष्ट्य एवं मजबूती है, आज उसी पर राष्ट्र-विरोधी शक्तियों द्वारा जाति, क्षेत्र, सम्प्रदाय, भाषा, वेशभूषा तथा मत-अभिमत की कमजोर कड़ियों को आधार बनाकर राष्ट्र को विघटित करने का प्रयास किया जा रहा है, परन्तु भारत की समावेशी संस्कृति की सशक्तता के आगे वे सफल नहीं हो पा रहे हैं। राष्ट्र-विरोधी यह प्रयास बहुत दिनों से चला आ रहा है, परन्तु ये शक्तियाँ भारत की समावेशी संस्कृति के आगे घुटने टेकती रहीं एवं भारत की संस्कृति अक्षय बनी रही, क्योंकि भारत का अतीत अत्यन्त भव्य और गौरवशाली रहा है। इसकी महानता का बखान प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में तो किया ही गया है, पाश्चात्य विद्वान भी इसके प्रशस्ति गान के बिना नहीं रह सके। श्री एम0 लुई

जैकोलियट ने भारत भूमि की वन्दना करते हुए कहा है- **''हे प्राचीन भारत भूमि! हे मानव जाति का पालन करने वाली! हे पूजनीया!हे पोषणदात्रि! तुझे नमस्कार है। शताब्दियों से चलने वाले पाशविक अत्याचार आज तक तुझे नष्ट नहीं कर सके! तेरा स्वागत है। हे श्रद्धा, प्रेम, कला और विज्ञान की जन्मदात्रि! तुझे नमस्कार''** जैकोलियट द्वारा चित्रित भारत भूमि की यह छवि सचमुच भारत की महानता का दर्पण है। भारत सदैव रहस्य, रमणीयता, भव्यता और शान्ति का सूक्ष्मागार रहा है। इस देश की पवित्र, उर्वर, मानव निवास के अनुकूल भूमि, पैर पखारते सागर, सुसज्जित नदी-घाटियाँ, पर्वतीय सुषमा तथा गिरिराज हिमालय की मोहक उपत्यकाओं ने सभी को निरन्तर आकृष्ट किया है। प्राकृतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक प्रत्येक दृष्टि से भारत विभिन्नता में एकता का अद्भुत एवं अनूठा प्रतीक है। आदि संस्कृति एवं सभ्यताओं का अभ्युदय और विकास क्षेत्र होने के कारण भारत ने मानव समाज को बहुत से विशिष्ट उपहार भेंट किये हैं। कृषि, उद्योग-धंधे, साहित्य, कला, धर्म, अध्यात्म और विभिन्न प्रकार की तकनीक आदि के क्षेत्र में यहाँ बहुत से नये आविष्कार किये गये। चावल, रसदार फल, ज्वार, बाजरे आदि मोटे अन्न, सोयाबीन, मसाले, पाट आदि महत्त्वपूर्ण फसलों की कृषि का विकास यहीं पर हुआ। कपास, रेशम, गन्ना, चाय आदि की खेती तथा उनका विभिन्न प्रकार से उपयोग भी संसार ने यहीं से सीखा। परिवहन के क्षेत्र में युगान्तकारी प्रभावोत्पादक चक्र (Wheel) का सर्वप्रथम उपयोग भारत में प्रारम्भ हुआ, यद्यपि पश्चिम ने इसका अधिक उपयोग करके अपनी वैज्ञानिक श्रेष्ठता की धाक जमा ली। आधुनिक विज्ञान की सत्ता को कायम करने वाला गणित का अंक 'शून्य' (Zero) का उपयोग सर्वप्रथम भारतीय मनीषियों ने ही शुरू किया था और तथाकथित अरबी अंक (Arabic Numerals) भी अरबों ने भारत से सीखकर यूरोप को दिये। ज्योतिष और खगोल विद्या भी यहीं से प्रारम्भ हुई और अरबों के द्वारा ग्रीकों एवं रोमनों में प्रचारित हुई। भारत विश्व के दो महत्तम धर्मों - बौद्ध एवं हिन्दू धर्म - की जन्मभूमि रहा है। दर्शन, साहित्य, राजनीति, कूटनीति, अध्यात्म आदि के क्षेत्र में भी भारत ने पश्चिम को अनेक प्रकार के ज्ञान दिए।

इन्हीं कारणों से सहस्राब्दियों से ही पश्चिमवालों के लिए भारत एक रहस्यपूर्ण एवं अद्भुत देश रहा है। जीवन के निगूढ़तम रहस्यों की खोज के लिए यहाँ पर विकसित ऋषि एवं संत परम्परा पश्चिम की समझ में पूर्णतया कभी नहीं आयी। यहाँ पर विकसित प्रकृति-प्रेम और मानव-प्रकृति-सामंजस्य को हास्यास्पद दृष्टि से पश्चिम ने 'प्रकृति-पूजा' की संज्ञा दी। आज पश्चिम प्राकृतिक वातावरण की प्रदूषण समस्या से संत्रस्त है। प्रकृति को फलदायिनी माँ समझकर सम्यक्, सामंजस्य स्थापित करने की निष्ठा भारतीय तत्त्ववेत्ताओं ने जो व्यक्त की, वह उसकी समझ में आज आयी है। इसलिए एक जर्मन विद्वान ने कहा है कि 'एक सुयोग्य संरक्षणकर्ता होने के लिए हिन्दू-प्रवृत्ति विकसित करना आवश्यक है। आधुनिक नगर योजना के विकास में मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा की नगर योजनाओं का प्रमुख हाथ है। स्थापत्य कला, मूर्ति कला, चित्रकला, संगीत, नृत्य, उपासना, वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना

एवं अन्य विश्वजनीन उदात्त जीवन की भावनाएँ जो भारत में विकसित हुईं, उनका पश्चिम पर परोक्ष एवं प्रत्यक्ष रूप से प्रचुर प्रभाव पड़ा है।'

भारत में अनेक प्रकार की विभिन्नताओं तथा अतिशयताओं के बावजूद अनुपम एकात्मकता और संश्लेषण की अभिव्यक्ति मिलती है। यहाँ भूगर्भिक संरचना, ऋतु एवं मौसम वर्षा, धरातलीय स्वरूप, मिट्टी, जल प्राप्यता एवं वनस्पति की किस्मों जैसे प्राकृतिक तत्त्वों तथा तत्त्व-समुच्चयों में प्रचुर विभिन्नता मिलती है, प्रादेशिक स्तर पर इसकी विन्यासगत समानता मिलती है। भूगर्भिक संरचना की दृष्टि से स्पष्ट है कि यहाँ दक्षिण भारत जैसे अति प्राचीन क्षेत्र, हिमालय जैसे अति नवीन पर्वत-संकुल प्रदेश, गंगा-सिन्धु जैसे विभिन्न नदियों के हाल के बने मैदान एवं अब तक बढ़ रहे डेल्टा क्षेत्र पाये जाते हैं। धरातलीय स्वरूप में संसार के सबसे ऊँचे हिमालयीय शिखर और लम्बी-चौड़ी पर्वत श्रेणियाँ, अत्यन्त संकरी घाटियाँ, दून-घाटी जैसी विशाल संरचनात्मक घाटियाँ, प्रायद्वीपीय भारत जैसे विशाल प्राचीन पठार, गंगा-सिन्धु जैसे विशाल समतल मैदान आदि मिलते हैं। इन वृहद् भौम्याकारों के साथ विभिन्न क्षेत्रों एवं अंचलों में छोटे भौम्याकार भी परस्पर-गुम्फित हैं, जिससे क्षेत्रीय और आंचलिक स्तर पर विभिन्न प्रकार के भौतिक भू-दृश्यों (Physical Landscapes) उभरे हुए मिलते हैं। इन्हीं भौतिक भू-दृश्य के अनुरूप मानवीय भू-दृश्य अलग-अलग रूप में विकसित हुए हैं।

मानव और प्राकृतिक वातावरण की संपृक्तता और प्रादेशिक सम्बद्धता की दृष्टि से भारत मूलतः एक सांस्कृतिक प्रदेश (Cultural Region) है। अनुकूल भौगोलिक पारिस्थितिकी एवं पृष्ठभूमि (Geographical and Ecological Background and Setting), ऐतिहासिक विकास-परम्परा, विचारों एवं तथ्यों के प्रसरण और लम्बे काल तक लगातार सभ्य और सुसंस्कृत मानव की निवास भूमि होने के कारण इस प्रदेश में लगभग पाँच-छह हजार वर्षों तक मानव सांस्कृतिक धारा का सतत प्रवहन हुआ है। अतः भारतीय उप महाद्वीप में मानव-कृत भू-दृश्य (Most Humanized Landscape) का सर्वाधिक विकास हुआ है, जिसका मूलाधार भारत की भौगोलिक विविधता है।

मध्य एशिया से आदि काल से ही आक्रमण होते रहने के कारण भारतीय संस्कृति में एक अद्भुत लोच, धार्मिक-सामाजिक उदारता और सहिष्णुता तथा सर्वसमाहारी (All Absorptive) सामंजस्य का विकास होता गया, जिससे आक्रमणकारी जातियाँ विजेता होते हुए भी विजित वर्ग के धर्म और संस्कृति के विशाल सागर में समाहित एवं विलीन होती गयीं और साथ ही अपनी छाप भी अंकित कर गयीं। सामंजस्य स्थापित करने और सबको आत्मसात् कर लेने की उदार प्रक्रिया में जीवन के उदात्त, शाश्वत मूल्य और सत्य निखरते गये। मान्यतायें आवश्यकतानुसार बदलती गयीं और पूर्ण जीवन-पद्धति और संगठनों में देश-काल (Space and Time) और परिवेश की सीमायें फैलती गयीं। इस प्रदेश में कई प्रकार के धर्म-सम्प्रदाय, जीवन-पद्धति, जैसे- हिन्दू, बौद्ध, मुस्लिम, यहूदी, पारसी आदि,

विभिन्न जाति के लोग, जैसे- काकेशियन, निग्रीटो, आस्ट्रेलायड आदि, विभिन्न रंग के लोग- काले-गोरे, पीले, भूरे आदि समाहित हैं और उनमें पारस्परिक ऐसी सनातन कट्टरता नहीं है, जैसी विश्व में अन्यत्र मिलती है, क्योंकि इनमे हजारों साल की जीवन्तता और एकलयता समाहित है। भारत में ये सब ऐसे ही रहते हैं जैसे एक विशाल वन में सभी प्रकार के जीव, जहाँ जीवन-साहचर्य की संभावना अधिक है। उपर्युक्त सांस्कृतिक सम्मिश्रण के फलस्वरूप भारत के विभिन्न भागों में विशिष्ट जीवन-शैली का विकास हुआ, जिसमें उस संस्कृति के मौलिक तत्त्वों के अक्षुण्ण रहते हुए भी उनमें अन्य संस्कृतियों के तत्त्व भी दृश्य-प्रदृश्य रूप में घुले-मिले दिखाई देते हैं।

उल्लेखनीय है कि भारत के विलक्षण भौगोलिक व्यक्तित्व के कारण ही वेदान्त दर्शन का उदय हुआ, जिसके पाँच सूत्र आज विश्व में शान्ति, सुरक्षा एवं संविकास के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं। इन पाँच सूत्रों के आधार पर ही आतंकवाद, अलगाववाद एवं अराजकता से विश्व को मुक्ति मिल सकती है एवं सम्पूर्ण विश्व के निवासियों को एक गरिमामय एवं संतोषप्रद जीवन मिलना सम्भव है। वेदान्त प्रदत्त इन सूत्रों का क्रमशः उल्लेख यहाँ अपेक्षित है। विश्व में शान्ति एवं सुरक्षा का पहला सूत्र 'ईशावास्योउपनिषद्' का है-**''ईशावस्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।''**

यह सूत्र, यह व्याख्या करता है कि इस जगत् में जो कुछ भी है, वह परमात्मा का है एवं त्याग के साथ इसका उपयोग होना चाहिए। यह तथ्य 'एकीकृत सिद्धान्त' (Unified Filed Theory) को उद्घाटित करता है, जिसका उपयोग आधुनिक समय में विज्ञान विभिन्न परिकल्पनाओं की पुष्टि के लिये करता है। उक्त सूत्र को जीवन में उतारने से शोषण एवं असहिष्णुता से मुक्त विश्व का निर्माण सम्भव है।

विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त वर्तमान विश्व के समाधान का दूसरा सूत्र है **''ईश्वरः सर्व भूतानां हृदयेऽर्जुन तिष्ठति'**, यानि सभी प्राणियों में एक ही ईश्वर का निवास है। अतः एक जीव से दूसरे जीव में विभेद कैसा। गीता से उद्धृत यह सूत्र जैविक विविधता से संरक्षण का सूत्र है और यदि सम्पूर्ण विश्व इसे स्वीकार कर ले एवं व्यवहार में अपना ले तो जैविक संरक्षण की चुनौती का समाधान हो जायेगा। विभिन्न धर्म एवं भाषा के आधार पर विश्व में बढ़ती टकराहट एवं आतंकवाद से निपटने का तीसरा सूत्र है **''वसुधैव कुटुम्बकम्''** जिसके अनुसार पूरी समूची मानव-प्रजाति एक परिवार है। भूतल पर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सीमायें मनुष्य ने खींची हैं, प्रकृति ने नहीं। यदि हम सम्पूर्ण विश्व को परिवार मान लें तो एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र में संघर्ष ही नहीं होगा और न ही आतंकवाद व अलगाववाद का अस्तित्व रहेगा। हजारों साल पूर्व भारतीय मनीषियों ने इसको स्वीकार किया था, जिसे पूरा विश्व अब अपनाता हुआ प्रतीत हो रहा है। मजहब के आधार पर चतुर्दिक् फैल रहे आतंकवाद से ग्रस्त समूचे विश्व के लिये तीसरा समाधान सूत्र ऋग्वेद का **''एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति''** है, जो मत-मतान्तर को समाप्त करने के लिये संयोजक है। इसके अनुसार ईश्वर या सत्य एक ही है, विद्वान लोग उसे

विभिन्न रूपों में व्यक्त करते हैं। इसी को आधार मानकर 1893 में स्वामी विवेकानन्द ने सभी लोगों को 'हिन्दुत्व की महत्ता' पर सोचने और विचारने के लिये प्रवृत्त किया था। विश्व शान्ति का अंतिम सूत्र है **''बहुजन सुखाय, बहुजन हिताय च''** जिसका अर्थ है सभी का कल्याण और सभी को आनन्द की अनुभूति। वस्तुतः भारतीय चिंतन **''सर्वे भवन्तु सुखिनः''** की संकल्पना पर आधारित है।

वेदान्त एवं गीता से प्राप्त उक्त पाँच सूत्र पूरे विश्व को पर्यावरण एवं विकास के अन्तर्द्वन्द्व से उबारने एवं मत मतान्तर होते हुए भी सह-अस्तित्वपूर्ण जीवन जीने का एक मॉडल देते हैं। एक ऐसा विश्व जो आतंकवाद, अलगाववाद और अराजकतावाद से दूर, शान्ति एवं सुरक्षापूर्ण जीवन को सुनिश्चित कर सके, उसके लिये हिन्दुत्व की जीवन-शैली को अपनाना अपरिहार्य है। निःसन्देह भारत की भौगोलिक विविधता ही भारत की समावेशी हिन्दू संस्कृति का मूलाधार है और इसे अपनाने से ही विश्व की वर्तमान चुनौतियों का समाधान सम्भव है। ऐसा विश्व जिसमें मत-मतान्तर होते हुए भी एक लय होकर आनन्दपूर्ण जीवन जिया जा सके, उसके लिये हिन्दू-संस्कृति की समावेशिकता को अपनाना ही सम्पूर्ण विश्व के लिये वैकल्पिक मार्ग है।

References

- मुखर्जी, राधाकुमुद, भारत की मूलभूत एकता; सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019
- सिंह, जगदीश एवं सिंह के.एन., आर्थिक भूगोल के मूलतत्व; ज्ञानोदय प्रकाशन, गोरखपुर, 2014
- सिंह, जगदीश एवं सिंह के.एन., भारत का भूगोल ज्ञानोदय प्रकाशन, गोरखपुर, 2018
- सिंह, जगदीश एवं सिंह के.एन., मानसून एशिया; तारा पब्लिकेशन, वाराणसी, 1998
- सिंह, जगदीश, पर्यावरण नियोजन एवं संविकास; ज्ञानोदय प्रकाशन, गोरखपुर
- Singh Jagdish and Singh K.N., India-A Comprehensive and Systematic Geography, Gyanodaya Prakashan, Gorakhpur , 2014
- Jain L.C., Grass without Roots-Rural Development Under Government Auspicious, Sage Publications, New Delhi, London, 1985



आलेख



सर्वसमावेशी संस्कृति कुंभ : एक विहंगम दृष्टि

पूर्व न्यायमूर्ति माननीय सुधीर नारायण

''सर्व समावेशी संस्कृति कुम्भ'' का आयोजन 30 जनवरी 2019 को गंगा पण्डाल, परेड क्षेत्र में किया गया। इस आयोजन में विभिन्न सम्प्रदायों से आये हुए सन्तों का विशाल संगम था। दिव्य आभा से युक्त, आध्यात्मिक विचारों में निमग्न, परम हित की भावना से अभिभूत, हृदय वेधी वाणी के ओज से मानवों की चिन्तन धारा को निर्मल करने वाले सन्तों का विशाल वृन्द था।

वहाँ अनेकता में एकता का दर्शन था। अध्यात्म के चिन्तन में ईश्वर को जानने और प्राप्त करने के लिए विभिन्न मत रहे हैं, लेकिन उद्देश्य एक ही रहा- परम सत्य की खोज।

भारतीय विचारधारा के लिये धर्म कोई विशेष ग्रन्थ नहीं, कोई सम्प्रदाय नहीं, वरन् सत्य का पथ है, जिस पर चल कर बाह्य संसार का आनन्द और दूसरी ओर अन्तर्यात्रा से अध्यात्म की अनुभूति करने में है। वेद एवं उपनिषद् की व्याख्या के आधार पर आचार्यों ने छह दर्शन सांख्य, वेदान्त, न्याय, मीमांसा, योग तथा वैशेषिक प्रतिपादित किये। वेदान्त में भी अद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैत, द्वैताद्वैत आदि मत व्यक्त किये गए। मुख्यतः सभी आचार्यों की एक ही खोज हैं - आत्मा क्या है, ईश्वर क्या है, कैसे उसकी प्राप्ति होती है और प्राप्त होने पर क्या परिणाम होते हैं?

तर्क-वितर्क बुद्धि का कार्य है। ईश्वर तर्क से परे है। संकल्प विकल्प मन की स्फुरणा है। ईश्वर मन से परे है, वह चिन्तन का विषय नहीं, अचिंत्य है। किसी ने उसे अमूर्ति बताया, किसी ने मूर्ति रूप देकर भक्ति की। सत्य एक ही है, दो नहीं। सूर्य एक है, दो नहीं। नदियाँ अनेक हैं, सागर एक है। सभी नदियाँ उसी में समावेश करती हैं।

विभिन्न विचार विभिन्न सम्प्रदायों को जन्म देते हैं। विभिन्न परम्परायें विभिन्न संस्कृतियों को जन्म देतीं हैं लेकिन अन्त में एक सत्य में समावेशित होती हैं।

कुम्भ पर्व में आयोजित **'सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ'** में विभिन्न सम्प्रदायों के संत एक ही परमेश्वर का महिमा-वर्णन कर रहे थे। संगीत के राग विभिन्न हो सकते हैं, लेकिन गीत एक ही रहा-

''धर्म चर, धर्म चर और फिर **चरैवेति चरैवेति ''**(चलते रहो - चलते रहो)

पौराणिक कथाओं के अनुसार समुद्र मंथन से अमृत मिला। वह कुम्भ में एकत्रित किया गया और उसकी बूंदें प्रयाग, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन में गिरीं। यहाँ सन्तों के मुखारविन्द से अमृत बूदों की वर्षा हो रही थी।

विष्णु सहस्रनाम में विष्णु का एक नाम 'कुम्भ' (संख्या 635) है। कुम्भ में सब समाविष्ट हो जाता है। परमेश्वर में जीव एवं जगत् दोनों ही समाहित रहते हैं।

पंडाल में विशाल जन समूह था। उसमें विभिन्न जाति भाषा, रंग-रूप एवं स्त्री एवं पुरुष थे। विभिन्नता होते हुए भी एकत्व का संदेश दे रहे थे।

प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह, कुलपति उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय और उनके सहयोगियों को धन्यवाद है, जिन्होंने 'सर्वसमावेशी संस्कृति कुम्भ' का आयोजन कर अमृत-धारा का प्रवाह कराया तथा सभी धर्मों में आध्यात्मिक एकता का संदेश दिया।



आलेख

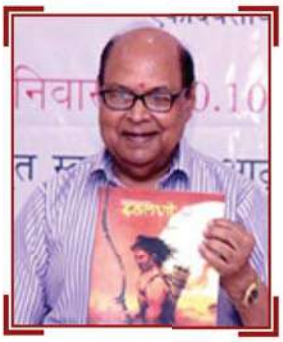

सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा

प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र

पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

ऋग्वेद समूचे विश्व का आदिम ज्ञानग्रंथ है। कहने को तो यह हिन्दुओं का पवित्र धर्मग्रंथ है, ठीक यूँ ही जैसे बाइबिल मसीही धर्मावलम्बियों का तथा कुरानशरीफ मुस्लिमों का। परन्तु सत्य यही है कि वेदों में 'आर्य अथवा हिन्दू' नामक कोई जन-विशेष, समुदाय-विशेष, जाति विशेष परिभाषित नहीं है। वेदमन्त्रों में सर्वत्र देश-काल एवं व्यक्तिविरहित मानवसमाज की बात की गई है। जब ऋषि कहता है-

शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।।

तो इस मंत्र में संकेतित जन विश्वजनीन जन ही हैं न कि आर्य, ख्रिस्त अथवा मुस्लिम! ख्रिस्त तथा इस्लाम का तो तब जन्म भी नहीं हुआ था, जब ये मंत्र अस्तित्व में थे।

वस्तुतः वेद वैश्विक समाज के पक्षधर हैं। इसका प्रमाण हमें अथर्ववेदीय पृथ्वीसूक्त में मिलता है। इस सूक्त में जिस पृथ्वी की वन्दना की गई है,वह कौन है? क्या वह पुराणवर्णित निम्न पृथ्वी है-

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चापि दक्षिणम्।
वर्ष तद्भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः।।

कत्तई नहीं। पृथ्वी सूक्त में वर्णित पृथ्वी मात्र भारतीया पृथ्वी नहीं, अपितु सप्तद्वीपा वसुन्धरा है। यह वह पृथ्वी है जो **'जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं, नाना धर्माणम्'** है। वह सप्तद्वीपा पृथ्वी है जिसे ऋषि अपनी माता (जन्मदात्री) घोषित कर रहा है-**'माता भूमिः पुत्रो**

अहं पृथिव्याः।'

पृथ्वी सूक्त का पाठ करते ही भारतीयों की सर्वसमावेशी संस्कृति का बोध हो जाता है। ऋग्वेद का ऋषि अपनी संस्कृति को विश्ववारा घोषित करता है, जिसका अभिप्राय है-विश्वं भूतलं वारयते रक्षतीति विश्ववारा (Which can protect the whole universe)

वस्तुतः इस संस्कृति के मूल में मानव मात्र की रक्षा का भाव है, सम्पूर्ण विश्व की रक्षा और कल्याण की पवित्र कामना विद्यमान है। यह भारतीय संस्कृति की अन्यतम विलक्षणता है, समन्वयात्मकता और समावेशिकता है, जो अन्य धर्मों में अति विरल है।

भारतीय धर्म अथवा संस्कृति में प्रारम्भ से ही वर्जनाओं (Prohibitions) तथा पथावरोधों (Speed breakers) का अभाव रहा है। भारतीय संस्कृति में आत्मा की अजरता, अमरता तथा एकता की प्रतिष्ठा होने के कारण मानवमात्र को समाज माना गया है-देश, काल एवं व्यक्ति के वैशिष्ट्य से अपरिच्छिन्न। जो वेदों में कहा गया, उसी का समर्थन वेदांगों, स्मृतियों, पुराणों, आर्षकाव्यों तथा सन्तवचनों में भी मिलता है। अपनी-अपनी योग्यता-क्षमता के अनुसार, कोई भी व्यक्ति किसी भी साहित्य को पढ़कर भारतीय संस्कृति का स्वरूप तथा उसकी अन्यव्यवच्छेदकता को समझ सकता है।

मनुष्यों में दैवीसम्पद् तथा आसुरीसम्पद् के धनी- दो प्रकार के प्राणी पाये जाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में दोनों की सलक्षण, सुस्पष्ट व्याख्या की गई है, जो पूर्णतः वैश्विकस्तरीय है-

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्।।
अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम्।।
तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति सम्पदं दैवीभिजातस्य भारत।।
दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ! सम्पदमासुरीम्।।

-गीता अ. 16, 1-4

गीता में भगवान् कृष्ण ने आसुरी सम्पत् में डूबे अधम प्राणियों की सोच का जो विवरण दिया है, वह आश्चर्यचकित कर देने वाला है। वे सोचते रहते हैं- आज मैने यह (लक्ष्य) प्राप्त कर लिया। आगे यह भी प्राप्त कर लूँगा। इतना मेरे पास है, इतना और भी हो जायेगा। उस वैरी को तो मार दिया मैनें, औरों को भी मार ही डालूँगा। मैं ही ईश्वर हूँ। सिद्ध एवं भोगी, बलवान् एवं सुखी एकमात्र मैं ही हूँ। सद्वंशोत्पन्न (खानदानी) तथा समृद्ध मैं ही हूँ। मेरे जैसा दूसरा है ही कौन? मैं ही यज्ञ करूँगा, मैं ही दान दूँगा, मैं ही प्रसन्न रहूँगा। ऐसे होते हैं अनेकचित्तविभ्रान्त, मोहजालसमावृत तथा अज्ञान से विमोहित आसुरी सम्पद वाले लोग!

गीता का मूलपाठ देखें-

इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम्।
इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम्।।
असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि।
ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी।
आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया।
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः।।
अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः।
प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ।।

- गीता अ. 16, 13-16

गीता में इसी प्रकार दैवी सम्पदा वाले व्यक्तियों के भी लक्षण विस्तार से बताये गये हैं। आशय यह है कि इस संसार में भलाई और बुराई हर समय में और हर स्थान में विद्यमान रही है। लेकिन सच्चा मानव धर्म वही है जो बुराई पर अच्छाई की जीत का संदेश देता है और जिसमें इतनी सार्वभौमिकता होती है कि समस्त विश्व उसके अनुसरण से कल्याण को प्राप्त कर सकता है।

वस्तुतः भारतीय सर्वसमावेशी संस्कृति का मूलाधार है उसका विश्वैकात्मवाद। इस एकात्मवाद की विलक्षण व्याख्या उपनिषदों में मिलती है। महर्षि याज्ञवल्क्य अपनी ब्रह्मवादिनी पत्नी मैत्रेयी को समझाते हुए कहते हैं-

'न वा अरे पत्युः कामाय पतिः प्रियो भवति।
आत्मनस्तु कामाय पतिः प्रियो भवति।
न वा पुत्रस्य कामाय पुत्रः प्रियो भवति।
आत्मनस्तु कामाय पुत्रः प्रियो भवति।
आत्मा वा अरे मन्तव्यः श्रोतव्यः निदिध्यासितव्यश्च।
आत्मनि ज्ञाते सर्वं ज्ञातं भवति।
--- वाचारम्भणं विकारो नामधेयम्।
मृत्तिका इत्येव सत्यम्।''

आत्मा परमात्मा अथवा परमेश्वर की ही खण्डाभिव्यक्ति है। अतः आत्मा एवं परमात्मा में कोई भेद ही नहीं। दोनों में अंशांशि-सम्बन्ध है। जैसे एक ही सूर्य हजारों घटजलों में प्रतिबिम्बित हो जाता है, वैसे ही एक ही अखण्ड चैतन्य (ईश्वर) विश्व के करोड़ों-अरबों प्राणियों में प्रतिभासित हो रहा है। भले ही कोई उन्हें अफ्रीकी, अमरीकी, एशियाई अथवा यूरोपीय कहे, भले ही कोई उन्हें हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई अथवा यहूदी कहे- परन्तु हैं सब एक ही परमात्मा के प्रतिबिम्ब! यही है भारतीय दर्शन का विश्वैकात्मवाद, जिसे विवेकानन्द ने व्यावहारिक वेदान्त (Practical Vedanta) तथा पं. दीनदयाल उपाध्याय ने मानव एकात्मवाद नाम दिया था। इस प्रकार, भारतीय संस्कृति समूचे विश्व को ईश्वरमय मानती

है-

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्
-ईशावास्योपनिषद् मंत्र-2

सृष्टि की इस ईशावास्यता तथा एकात्मवाद के समक्ष ख्रिस्त तथा इस्लाम धर्म की पृथकता का सवाल ही नहीं उठता। विश्व के समस्त तथाकथित धर्मों में जो भी आधारभूत मान्यताएँ हैं, वे भारतीय धर्म एवं संस्कृति में आदिम युग से ही समाई हैं, जब इन धर्मों-सम्प्रदायों तथा पंथों का जन्म भी नहीं हुआ था।

धर्म के लक्षण के सम्बन्ध में मनुस्मृति कहती है-

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

इन्द्रियनिग्रह, शौच, धी, विद्या, सत्य तथा अक्रोध तथा अहिंसा के ये मानक इस रूप में अन्यत्र दुर्लभ हैं। वास्तव में भारतीय संस्कृति के ये आदर्श हमें आत्मान्वेषण तथा आत्ममूल्यांकन का पर्याप्त अवसर देते हैं। भारतीय संस्कृति ऋग्वेद के साम्मनस्य सूक्त, अभयसूक्त, शिवसंकल्पसूक्त तथा पृथ्वीसूक्त के माध्यम से ऐसे उदात्त विचारों का प्रसारण करती है, जो सम्पूर्ण पृथ्वी को स्वर्ग बना देने की सामर्थ्य रखते हैं। यही है भारतीय संस्कृति की सर्वसमावेशिता!

भारत की सर्वसमावेशी संस्कृति का ही यह आकर्षण था कि स्मृतिकार मनु समूचे विश्व को आमंत्रित करते हैं-

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

विश्व की अनेक संस्कृतियाँ तथा धर्मदेशनाएँ वदतोव्याघाती मान्यताओं में बँधी हैं। अक्खड़ कवि कबीर ने अनेक ऐसी वदतोव्याघाती प्रवृत्तियों की ओर संकेत किये हैं-

दिन भर रोजा रहत हैं रात हनत हैं गाय।
यह तो खून वो बन्दगी कैसे मिले खुदाय।।
पाहन पूजे हरि मिलैं तो मैं पूजूँ पहार।
तातें यह चाकी भली पीसि खाय संसार।।

परन्तु भारतीय धर्म (वैदिक धर्म/विश्व धर्म) में प्रायः वदतोव्याघात उतना नहीं है, क्योंकि भारतीय ऋषियों ने आचरण को ही धर्म माना है और वह आचरण भी तीन स्तरों पर- **मन, वचन और कर्म।** भारतीय धर्म जैसा वचन (देशना) रूप में है,वैसा ही कर्मरूप में भी। हरिश्चन्द्र, उशीनर, रन्तिदेव, दधीचि, कर्ण, मयूरध्वज तथा नृग आदि केवल मन और वाणी से ही दानशील नहीं थे, प्रत्युत दान उनके आचरण में था।

भगवान् कृष्णद्वैपायन व्यास ने तो धर्म को ही जीवन का सार बताया और उस धर्म का सर्वस्व भी बता दिया-

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।

जो व्यवहार आत्मप्रतिकूल हो वह दूसरों के प्रति नहीं करना चाहिये।

भगवान् व्यास पुनः कहते हैं-

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।।

अन्ततः वह पुनः कहते हैं पूरी आस्था के साथ,

ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येष न च कश्चिच्छृणोति मे।
धर्मादर्थश्च कामश्च स किमर्थं न सेव्यते।।

विश्वशान्ति तथा विश्वबन्धुत्व की प्रतिस्थापना के लिये भारत ने जो भूमिका लाखों वर्ष पहले चुनी थी, वह आज भी उसी पर आरूढ़ है। भारत विश्वसंस्कृति, विश्वमानवता, विश्वसमाज, विश्वधर्म तथा विश्वशान्ति का स्वप्नदर्शी रहा है। मार्कण्डेय, अगस्त्य, वेदव्यास,कौण्डिन्य तथा वाल्मीकि सरीखे ऋषिगण इसी दिशा में यत्नशील रहे हैं। सीरिया तथा रोम तक दिग्विजय करने वाले सम्राट् शकारि विक्रम ने भारतीय सर्वसमावेशी संस्कृति का कीर्तिध्वज अरब के मक्का नगर तक पहुँचाया। मक्का में हुए उनके अभिनन्दन (मूल अरबी भाषा) का यह अंग्रेजी रूपान्तर पढ़ें, जो आज भी तुर्किस्तान के इस्ताम्बुल-नगर-म्यूजियम में सुरक्षित है-

Fortunate were those who were born and lived in the reign of Vikramaditya. He was a noble, generous, dutiful ruler devoted to the well brave of his subjects. But at the same time we Arabs, oblivious of God were lost in sensual pleasures.....



आलेख



प्रो0 हरिदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

सर्वसमावेशी संस्कृति

वैदिक वाङ्मय आदिकाल से 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' का शंखनाद करता आया है, अर्थात् सत्य एक है, पर विद्वान् लोग उसकी भिन्न-भिन्न रूपों में व्याख्या करते हैं। भारतीय आर्य संस्कृति का मूल स्वर यही है- अनेकता में एकता तथा अनेकता में एकता का दर्शन। सत्य एक ही है, पर उसका साक्षात्कार विभिन्न आयामों में होता है। ऋग्वेद के पुषसूक्त में विराट् रूप परमात्मा को **'सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्'** हजारों सिरों वाला, अगणित आँखों वाला और असंख्य पैरों वाला कहा गया है। इसी अवधारणा के फलस्वरूप एक परब्रह्म परमात्मा की परिकल्पना पर आश्रित रहते हुए भी आध्यात्मिक प्रांगण में अनेक दार्शनिक धाराएँ प्रसारित हुईं, यहाँ परमात्मा के अनेक देवस्वरूपों एवं अवतारों को प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। एक ओर अद्वैतवाद की प्रतिष्ठा हुई तो दूसरी ओर बहुदेववाद का विकास हुआ। भारतीय हिन्दू संस्कृति की यह सर्वसमावेशी प्रवृत्ति ही उसकी अद्भुतता है, जो दीर्घकाल से आज तक उसे अक्षुण्ण रखे हुए है। गौरवशालिनी आर्य संस्कृति की यह उदारता, महत्ता एवं सर्वसहिष्णुता ही उसे विपरीत परिस्थितियों में भी अक्षुण्ण बनाये हुए है। अपनी इसी विशेषता के कारण यहाँ का धर्म सनातन है, यहाँ की संस्कृति चिरन्तन है। विश्व को एक परिवार मानकर **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** का उद्घोष करने वाली संस्कृति भी यही है।

भारतीय हिन्दू धर्म की यह शाश्वत मान्यता है कि परमात्मा को हम ब्रह्माण्ड के अनेक कोणों से केवल एक ही रूप में साक्षात्कृत नहीं कर सकते। उसके अनन्त पटलयुक्त ज्योतिर्मय स्वरूप को भिन्न परिप्रेक्ष्यों में देखा जा सकता है। यही कारण है कि इस धर्म के प्रांगण में अनेक सम्प्रदायों, देवों, आराध्यों एवं मत-मतान्तरों का मेला लगा हुआ है। एक ओर यहाँ यज्ञीय कर्मकाण्डपरक वैदिक धारा है तो दूसरी ओर उपनिषदों की आत्मवादी धारा। कहीं निर्गुणी निराकार ब्रह्म की धारा है तो कहीं सगुण साकार अवतार की धारा। विष्णु के दस प्रमुख अवतार हैं तो चौबीस अवतार भी। रामलीला का प्रसार है तो कृष्णलीला का विस्तार भी। ऋग्वेद के रुद्र देवता से चलकर शिवशक्ति के अनेक सम्प्रदायों का विकास भी यहाँ हुआ है। शिव का आशुतोष कल्याणकारी रूप भी है और मृत्यु के प्रलयङ्कारी देवता के रूप में भी वे

हैं। शैवधारा में पाशुपत लकुलीश सम्प्रदाय, वीरशैव या लिंगायत सम्प्रदाय, कालमुख सम्प्रदाय, कापालिक सम्प्रदाय, काश्मीरी प्रत्यभिज्ञा दर्शन सम्प्रदाय आदि अनेक सम्प्रदायों का विकास विभिन्न स्थानों पर समय-समय पर होता रहा। सूर्योपासना सम्बन्धी सौर धारा का भी विकास यहाँ बहुत हुआ। शक्ति की उपासना में यहाँ दुर्गा, काली, लक्ष्मी एवं सरस्वती के विविध रूप पले। पश्चिम बंगाल से जोर पकड़ने वाली दुर्गापूजा ने पूरे देश में अपना प्रसार कर लिया और दुर्गा पूजा भारतीय जीवन का महापर्व बन गया। दीपावली पर लक्ष्मी पूजा, शरत्पूर्णिमा पर काली पूजा एवं वसन्तपंचमी पर सरस्वती-पूजा की परम्परा दीर्घकाल से चली आ रही है।

गणपति पूजा की गाणपत्य धारा विशेष रूप से महाराष्ट्र का विशालतम धार्मिक अनुष्ठान है, पर यह भी सम्पूर्ण भारत की पूजा पद्धति का एक विशेष प्रकल्प है। वस्तुतः हिन्दू धर्म की वैष्णव धारा का विस्तार अडयार एवं दक्षिण भारत में उभयत्र हुआ है और भक्ति आन्दोलन को बल भी इसी धारा से मिला है। वैष्णव धारा के प्रमुख सम्प्रदाय हैं- पान्चरात्र भागवत सम्प्रदाय, रामानुजीय श्री सम्प्रदाय, माध्व सम्प्रदाय, निम्बार्क सम्प्रदाय, वल्लभ सम्प्रदाय (पुष्टिमार्ग), गौड़ीय सम्प्रदाय (चैतन्य मत), स्वामी नारायण सम्प्रदाय, राधा वल्लभी सम्प्रदाय, हरिदासी सम्प्रदाय, महानुभाव सम्प्रदाय, वारकरी सम्प्रदाय, रामदासी सम्प्रदाय, रामानन्द सम्प्रदाय आदि। शाक्त धारा के अन्तर्गत दक्षिणाचार एवं वामाचार ये दो पन्थ मुख्य रूप से उभरे। योग धारा के अन्तर्गत सिद्ध परम्परा एवं नाथ परम्परा ये दो पन्थ निकले। सगुण सन्तों में जहाँ सूरदास, तुलसीदास जैसे महान् भक्त कवि हुए, वहीं निर्गुणपन्थ धारा में कबीरदास एवं नानक हुए। जैन मत, बौद्धमत एवं चार्वाक मत वेदविरोधी पन्थ के रूप में फैले। कतिपय नवोत्थित सुधारवादी सम्प्रदाय सामाजिक पटल पर आए, जैसे ब्रह्म-समाज, राधास्वामी मत, थियोसोफिकल सोसायटी, रामकृष्ण मिशन, आर्यसमाज आदि ने समय-समय पर अपना वर्चस्व् स्थापित किया। साईं बाबा, जय गुरुदेव, ओशो, परमपिता ब्रह्माकुमारी सम्प्रदायों ने अपने-अपने ढंग से धर्म की व्याख्या की।

हिन्दू धर्म की एक विशेषता है साधु-सन्यासियों, सन्त महात्माओं का भारी जमघट, जो अलग-अलग अखाड़ों एवं मठों में विभक्त हैं। ये जटाधारी, अथवा सिर मुड़ाये हुए, भगवा वस्त्रधारी, निपटनग्न बैरागियों, नागाओं, बाबाओं की संख्या कितनी है, ये सब पूरे वर्ष कहाँ रहते हैं यह सब जानना-कहना कठिन है, पर प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन एवं नासिक में प्रत्येक बारह वर्षों बाद होने वाले कुम्भ मेलों एवं प्रतिवर्ष होने वाले माघ मेलों में इन सन्तों के दल हजारों-लाखों की संख्या में उमड़ पड़ते हैं- ये सब समूह में ही रहते हैं, इनके कोई अधिष्ठाता, महंत, महामण्डलेश्वर, महागुरू अवश्य होते हैं। भव्य शोभा यात्राओं के साथ इनका कुम्भमेले में प्रवेश होता है। विशेष मकर संक्रान्ति, मौनी अमावस्या, वसन्त पंचमी, इन तीन बड़े स्नानपर्वों पर प्रयाग में संगम में इनका भव्य यात्रा के बाद शाही स्नान होता है। सन्यासी, बैरागी, एवं उदासीन इन तीन भागों में बँटे इन अखाड़ों के नाम हैं- श्री पंचायती अखाड़ा महानिर्वाणी, श्री पंचायती अटल अखाड़ा, श्री पंचायती निरंजनी अखाड़ा, तपोनिधि, श्रीपंचायती आनन्द अखाड़ा, श्री पंचदशनाम जूना अखाड़ा, श्री पंचदशनाम आवाहन

अखाड़ा, श्री शम्भू पंचाग्नि अखाड़ा, अखिल भारतीय श्री पंच निर्वाणी अनी अखाड़ा, अखिल भारतीय श्री पंच दिगम्बर अनी अखाड़ा, अखिल भारतीय श्री पंच निर्मोही अखाड़ा, श्री पंचायती अखाड़ा नया उदासीन, श्री पंचायती अखाड़ा बड़ा उदासीन, श्री पंचायती अखाड़ा निर्मला। शंकराचार्य ने भारत की चार दिशाओं में ज्योतिर्मठ (बदरी धाम) शारदा पीठ (द्वारिकाधाम), निरंजन पीठ (जगन्नाथपुरी) एवं कामकोटिपीठ (श्रृंगेरीमठ) के नामों से कई मठ स्थापित किए थे, जो आज तक प्रचलित हैं। कुम्भ स्नानों में वरीयता इन्हीं अखाड़ों एवं मठों को दी जाती है। इन अखाड़ों एवं मठों का एक अलग व्यापक धार्मिक संसार है।

वस्तुतः कुम्भ स्थल एक ऐसा चौराहा है जहाँ इन सभी धार्मिक पन्थों की धारा आकर मिलती है। अनेक अर्थों में से कुम्भ का एक अर्थ है- 'कुम्भयति आच्छादयति सर्वानिति कुम्भः'' अर्थात् जो सबको आच्छादित करता है, सबको अपने में समेटता है वह कुम्भ है। कुम्भ में भारत की सर्वसमावेशी शाश्वत संस्कृति के दर्शन होते हैं। योगी, यती, सन्त, महात्मा, मठ, मठाधीश, ऋषि, मुनि, अखाड़े, सम्प्रदाय, शंकराचार्य, महामण्डलेश्वर सम्प्रदाय, धार्मिक संस्थाएँ, शैव, शाक्त, वैष्णव, वैरागी, बाबा, नागा सब हिन्दू धर्मवृक्ष की छायातले एकत्र हुए दिखते हैं, सब एक लक्ष्य की ओर चलते हुए दिखते हैं। शास्त्र भी तो अनेकानेक हैं-

वेदा विभिन्नाः स्मृतयो विभिन्ना
नासौ मुनिर्यस्य मतं न भिन्नम्।

अर्थात् वेद विविध हैं, स्मृतियाँ भी भिन्न-भिन्न हैं, ऐसा कोई मुनि नहीं जिसका मत भिन्न न हो अर्थात् मतवैभिन्य तो अत्यधिक है, पर उस मतभेद के अन्दर से सभी मतवाद एक सत्यरूपी संगम की ओर जाते हुए दिखाई पड़ते हैं। चाहे जितना मतवैभिन्य हो, वह भारतीय संस्कृति में एकात्म एवं एकरूप हो जाता है। भारतीय संस्कृति अपने इस सर्वसमावेशी रूप के कारण ही विराट् है, शाश्वत है, महान् है।



आलेख

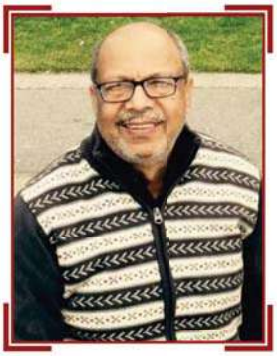

सर्वसमावेशी भारतीय संस्कृति : कुम्भ पर्व के परिप्रेक्ष्य में

प्रो. एस.पी. गुप्ता
सेवानिवृत्त निदेशक, शिक्षा विद्याशाखा,
उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

भारत की विविधता अपने आप में अनूठी व अद्भुत है। अनेकानेक समान सूत्र होने के बावजूद रंग-रूप, शारीरिक गठन, खान-पान, रीति-रिवाज, पहनावे तथा भाषा आदि की दृष्टि से भारतवासियों में तमाम विभिन्नताएँ स्पष्ट रूप से नजर आती हैं। प्राचीन मिथकों, दन्तकथाओं, स्मारकों, भित्ति-चित्रों, भग्नावशेषों आदि के अवलोकनों से भारत के इतिहास की एक लम्बी झाँकी तमाम उतार-चढ़ावों के साथ धीरे-धीरे सामने आ जाती है। निश्चय ही हजारों वर्षों की शाश्वत सांस्कृतिक परम्परा की अस्पष्ट व अनोखी निरन्तरता स्वयं में विलक्षण प्रतीत होती है एवं इतिहास के अनगिनत पहलुओं की बरबस याद दिलाती रहती है। भारत की गंगा, यमुना व वर्तमान अदृश्य सरस्वती नदियों ने इतिहास के प्रारम्भ से ही भारत के हृदय पर शासन किया है एवं इन नदियों की गाथा भारत की सभ्यता व संस्कृति की कहानी कही जा सकती है। हिमालय के पहाड़ों के बीच पड़ी गहरी दरारों के बीच से अपना मार्ग बनाती ये नदियाँ मैदानी क्षेत्र में रमणीय धारा के रूप में धीरे-धीरे प्रवाहित होने लगती हैं। इन नदियों से जुड़ी हुई न जाने कितनी पौराणिक कथाएँ आज भी सुनने को मिलती हैं। अतीत और विरासत व्यक्ति को कई तरह से अभिभूत करते हैं। कभी-कभी अतीत हमें सहजता का सुखद अनुभव कराता है जबकि कभी-कभी अतीत का दबाव कुछ दमघोंटू होता है। जब अतीत सफलताओं, विजयों, उल्लासों, हैरत-अंगेज साहसिक कार्यों, वैचारिक

तेजस्विता, आर्थिक समृद्धि, सामाजिक उन्नति व सांस्कृतिक विकास का दिग्दर्शन कराता है तब वह सुखद अनुभूति कराकर सन्तुष्टकारी भूमिका अदा करता प्रतीत होता है परन्तु जब अतीत विगत में भग्न सभ्यताओं, विकृत पराजयों, भयंकर गरीबी, अभावों, दुर्दशा व तबाही, असफलताओं व कमजोरियों, विपत्तियों, भ्रष्टाचारों, धोखाधड़ियों, भयानक कष्टों, अनैतिकताओं, अनाचार आदि से सम्बन्धित घटनाओं की जानकारी प्रदान करता है तब मन तरह-तरह की निराशाओं व अवसादों से ग्रसित होकर भयभीत होने लगता है। परन्तु इस सबके बावजूद भारत के निवासियों का अपनी विविधताओं व विलक्षणताओं के साथ एक अटूट निश्चयात्मक समावेशित अस्तित्व है, जिसे झुठलाया नहीं जा सकता है। यह समावेशित अस्तित्व भारत के नागरिकों में विद्यमान दृढ़ता, इच्छा-शक्ति व जिजिविषा की अविच्छिन्न सांस्कृतिक परम्परा को प्रतिबिम्बित करता है। इसी समावेशिक चेतना के कारण हमारे यहाँ आने वाले अधिकांश विदेशी प्रभाव हमारी संस्कृति को जरा-बहुत प्रभावित करते हुए इसी में समाविष्ट होते रहे हैं। विघटनकारी तत्वों के उभरने से पहले ही सामंजस्य बनाने के प्रयासों ने भारतीय मानस में एकता के स्वप्न की अभेद स्थिति बनाने में सदैव ही महत्वपूर्ण सहायता की है। सभी प्रकार के रीति-रिवाजों, विश्वासों, परम्पराओं व विचारों आदि के प्रति अपार सहिष्णुता का पालन करने की शाश्वत परम्परा ने विविधता व समावेशिक दृष्टिकोण की मान्यता को प्रोत्साहन देकर राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। वस्तुतः आम जनता के जीवन पर लोक प्रचलित साहित्य, परम्परा, इतिहास, दर्शन, मिथक, पुरा-कथा आदि का सारगर्भित व गहरा प्रभाव पड़ता है। आम जनता की जीवन-शैली को इनसे अलग करके देखना कदापि संभव नहीं होता है। वस्तुतः इतिहास गवाह है कि बार-बार ह्रास तथा विघटन के दौर आने के बावजूद अपनी समावेशिक प्रकृति के कारण भारतवासियों को हर बार नये सिरे से अपना कायाकल्प करने में सफलता प्राप्त है। परम्परावादी होने के बावजूद भारतीयों के विचारों में सदैव ही नवीनता को ग्रहण करने का भाव रहा है। भारतीय समाज व्यवस्था में आई कट्टरता, क्षेत्रीयता की बढ़ती प्रवृत्ति एवं सामन्तवाद व गिरोह बन्दी ने भारत की अखण्डता को चुनौती तो अवश्य दी परन्तु लचीलापन, ढालने की क्षमता, अद्भुत दृढ़ता, रचनात्मकता व जीवनी शक्ति के कारण भारत ध्वस्त होने से बचते हुए नवीन सम्पर्कों, विचारधाराओं व अनुभवों आदि का लाभ उठाकर समावेशी प्रगति की राह पर पुनः चलने में सफल हो सका है। निःसन्देह समावेशी मनन चिन्तन की दार्शनिक प्रवृत्ति ने भारत को एक सुदृढ़ निरन्तरता, वैचारिक समरसता तथा स्वाभाविक स्थायित्व प्रदान करने में बारम्बार एक अप्रतिम योगदान प्रदान किया है। प्रस्तुत आलेख में वर्ष 2019 में आयोजित दिव्य कुम्भ पर्व के परिप्रेक्ष्य में सर्वसमावेशी भारतीय संस्कृति में रची-बसी समावेशिकता की प्रवृत्ति की कुछ चर्चा समसामयिक है। इस आलेख को चार भागों कुम्भ पर्व की शाश्वतता, समावेशन की अवधारणा, सांस्कृतिक विरासत का स्वरूप, संस्कृति व शिक्षा एवं कुम्भपर्व के परिप्रेक्ष्य में सर्व-समावेशी भारतीय संस्कृति की विहंगम दृष्टि में बाँटकर प्रस्तुत किया जा रहा है।

कुम्भ पर्व की शाश्वतता

कुम्भ पर्व को विश्व का सर्वाधिक विलक्षण मेला कहा जा सकता है। अवधि, आकार, प्रतिभाग व परम्पराओं की दृष्टि से इसे एक अद्वितीय मेला कहा जा सकता है। सैकड़ों, हजारों व लाखों की संख्या में लोग बिना किसी निमंत्रण या विज्ञापन के हजारों वर्षों से भारत के सभी कोनों से आते रहे हैं। वस्तुतः एक हैरत-अंगेज प्रबल आस्था अनगिनत पीढ़ियों तथा हजारों वर्षों से पावन गंगा, सलिल यमुना व अदृश्य सरस्वती के अनूठे संगम में स्नान करने की ओर खींचती रही है। यद्यपि कुम्भ पर्व व मेले की परम्परा अनादि कही जाती है एवं वेद, उपनिषद्, पुराण, रामायण,महाभारत आदि पुरातन ग्रन्थों में भी इसकी प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष चर्चा मिलती है, फिर भी लगभग चौदह सौ वर्ष पूर्व चीनी यात्रियों तथा कुछ अन्य लोगों के द्वारा कुम्भ पर्व के वृत्तान्तों को याद करके सभी के शरीर व मन में एक रोमांच-सा आ जाता है तथा अतीत के महान स्नान पर्व के सजीव चित्र उनके सामने धुँधले रूप में लहराने लगते हैं। वस्तुतः इतिहास के कालक्रमिक अवलोकन से स्पष्ट हो जाता है कि सहस्राब्दियों के इतिहास में भारतीय संस्कृति ने जिन सामाजिक, दार्शनिक व सांस्कृतिक मूल्यों व परम्पराओं को जन्म दिया है, जिन जीवन मूल्यों व शैलियों की रचना की है एवं जिस वैचारिक समरसता व सह-अस्तित्व की भावना को पुष्ट व पल्लवित किया है, उन सभी का एक समावेशी स्वरूप कुम्भ पर्व में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। लगभग चालीस दिनों के लिए तीर्थराज की पावन धरती पर अनन्त रहस्यों से परिपूर्ण सम्पूर्ण विश्व के विभिन्न सामाजिक, आध्यात्मिक, धार्मिक व सांस्कृतिक आयामों व पक्षों की जीवन्तता साकार हो उठती है। कभी-कभी लगता है कि प्राचीन भारतीय विचारकों व मनीषियों ने राष्ट्रीय एकता व अखण्डता को अक्षुण्ण रखने के लिए जिन तरह-तरह के उपायों व व्यवस्थाओं की अबूझ शृंखला संजोयी थी, उनमें कुम्भपर्व का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। मनीषियों, विद्वानों व सन्तों के द्वारा कुम्भपर्व के दौरान गहन विचार मंथन करके ज्ञान व विवेक को परिपूर्ण बनाने का प्रयास करते हुए अभ्युदय व शाश्वत कल्याण की सम्भावनाओं को प्रशस्त किया जाता है। प्राचीन काल से ही कुम्भ अमृत महोत्सव निःसन्देह सन्तों व सत्यान्वेषियों के प्रबुद्ध वर्ग का एक ऐसा परम्परागत मिलन स्थल रहा है जहाँ सत् व असत् के बीच होने वाले संघर्ष व वैचारिक मंथन से प्राप्त अनुभवों को समेटकर परम चेतना, सत्य ज्योति व मानव-मूल्यों का आवाह्न किया जाता रहा है। यह मानव के अहंकारों, उन्मादों, पूर्वाग्रहों तथा विषम ताकतों के विरुद्ध क्रान्ति का उद्घोष करने का साक्षी भी रहा है। 'कुम्भ' शब्द को अनेकानेक अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है। कुम्भ पर्व के तात्कालिक संदर्भ में 'कुम्भ' शब्द को मृत्तिका निर्मित जल कलश, ग्रहों की विशेष स्थिति अथवा पृथ्वी को दीक्षित करने के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है। घट, कलश, कूप, सरोवर, नदी, सागर आदि कुम्भ के प्रतीक कहे जा सकते हैं। कुम्भ को संस्कृतियों का संगम, आध्यात्मिक चेतना, मानवता का प्रवाह, जीवनधारा, ऊर्जा स्रोत, जीवन रस के रूप में भी समझा जा सकता है। प्रतीकात्मक रूप में कुम्भ को ब्रह्माण्ड का प्रतीक भी कहा जा सकता है। भारतीयता की आध्यात्मिक विचारधारा में कुम्भ रूपी कलश के मुँह में विष्णु, कण्ठ में रुद्र, मूल में ब्रह्मा, मध्य में मातृगण तथा कुक्षि में सागर, सप्तद्वीप, वसुन्धरा व चारों

वेद समाहित रहते हैं। 'कुम्भ' शब्द का उल्लेख चारों वेदों तथा अनेक पुराणों में मिलता है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, वायु पुराण व बृहन्नारदीय पुराण आदि में **'कुम्भ'** शब्द का उल्लेख मिलता है जबकि रामायण व महाभारत की गाथाओं में तथा स्कन्द व गरुड़ आदि पुराणों में समुद्र मंथन तथा अमृतकलश की चर्चाएँ नजर आती हैं। वैदिक काल में जल से परिपूर्ण घट या कलश को सर्वोत्तम मंगल प्रतीक माना जाता था। वस्तुतः वैदिक काल में कुम्भ आध्यात्मिकता का प्रतीक था। कालान्तर में समुद्रमंथन से निकले अमृत का कुम्भ के साथ सम्बन्ध स्थापित करके अनेक दन्तकथाएँ कुम्भ पर्व के साथ जुड़ती चली गयी थीं। यद्यपि किसी भी आदि धार्मिक ग्रन्थ में कुम्भ पर्व के आयोजन के स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलते हैं फिर भी वर्तमान समय में कुम्भ पर्व के आयोजन के पीछे तीन विभिन्न आधार क्रमशः (1) पौराणिक समुद्र मन्थन व अमृत कलश की दन्तकथा सम्बन्धी आधार, (2) ग्रहों से सम्बन्धित ज्योतिष्चक्रीय आधार तथा (3) आधिदैहिक प्रतीकात्मकता सम्बन्धी आधार कहे जा सकते हैं।

पौराणिक काल में समुद्र मन्थन से निकले अमृत कलश से जुड़ी हुई दन्तकथाओं का कथानक विभिन्न ग्रन्थों में किंचित भिन्न-भिन्न रूप में वर्णित पाया जाता है। एक आख्यान के अनुसार देवों तथा असुरों के द्वारा मंदराचल की मधानी व नागवासुकी की डोरी बनाकर किये गये समुद्र मंथन से उद्भूत अमृत कलश को मोहनी रूपधारी विष्णु ने ले लिया एवं वे पहले देवताओं को अमृत पान कराने लगे थे। परन्तु दैत्य राहु ने देवता का रूप धारण करके अमृत पान कर लिया अभी अमृत उसके कण्ठ तक पहुँचा ही था कि सूर्य व चन्द्रमा ने इस बात को विष्णु को बता दिया और उन्होंने चक्र से उसका सिर काट दिया। इससे राहु का सूर्य व चन्द्र के साथ स्थायी वैमनस्य हो गया परन्तु अमृत पान करने के कारण राहु के सिर व धड़ के दोनों टुकड़े अमर हो गये। संघर्ष के दौरान अमृत की कुछ बूदें छलककर चार स्थानों पर गिरीं, जहाँ पर कुम्भ का आयोजन किया जाने लगा। दूसरी कथा के अनुसार जब देवों तथा दानवों ने दैवी-रत्नों की प्राप्ति के लिए क्षीरसागर का मंथन किया तब चौदह रत्नों के उपरान्त अमृत कलश प्राप्त हुआ जिसे इन्द्र के पुत्र जयन्त ने ले लिया तथा स्वर्ग की ओर चल दिया। परन्तु दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य के संकेत पर दैत्यों ने जयन्त का पीछा करके, अमृत कलश को उससे छीनने का प्रयास किया। माना जाता है कि तब सूर्य ने अमृत कलश को टूटने से तथा चन्द्र ने अमृत कलश को विध्वंस से बचाया तथा बृहस्पति ने दैत्यों के आक्रमण को रोकने में सहायता की एवं शनि ने भयभीत जयन्त को ढाँढस दिया। परन्तु इन चारों की सहायता के बावजूद अमृत कलश की कुछ बूंदें छलककर हरिद्वार, प्रयाग, नासिक व उज्जैन में गिर गयीं एवं इसके फलस्वरूप ये स्थान अत्यन्त पवित्र व मोक्षदायी कहे जाने लगे एवं कालान्तर में जिन-जिन तिथियों व काल में अमृत इन स्थानों पर छलका था, उन्हीं तिथियों व कालों में इन स्थानों पर कुम्भ पर्व मनाया जाने लगा। तभी से इन पुण्यकालों में इन चारों स्थलों पर विद्यमान नदी-तटों पर स्नान करने की परम्परा प्रारम्भ हो गयी, जो आज भी चली आ रही है। एक अन्य कथा के अनुसार अपनी माता विनता को सर्पों की माता कद्रू की कैद से छुड़ाने के लिए पक्षीराज गरुड़ ने स्वर्गलोक से अमृत कलश लाकर अपनी माता को मुक्त कराया था,

जिसे बाद में पुनः स्वर्ग ले जाया गया था।इस दौरान हुए संघर्ष के कारण अमृत की कुछ बूँदें छलककर जिन चार स्थानों पर गिरी थी, उन्हीं चार स्थानों पर कालान्तर में कुम्भ पर्व मनाया जाने लगा था। यह भी आख्यान मिलता है कि अमृत कलश को लाते समय गरुड़ को जिन चार स्थानों पर रखना पड़ा था वहीं कुम्भ पर्व के सांस्कृतिक केन्द्र बन गये। वस्तुतः समुद्रमन्थन की कथा महाभारत, रामायण आदि विभिन्न पुराणों में अलग-अलग ढंग से मिलती है तथा कालान्तर में कुम्भ से अमृत गिरने व तदनुसार कुम्भपर्व का आयोजन होने की दन्तकथाएँ इसके साथ जुड़ गयीं। क्योंकि जयन्त को अमृत कलश को स्वर्ग ले जाने या गरुड़ को अमृतकलश को लाने या वापस पहुँचाने में बारह दिन लगे थे एवं देवताओं का एक दिन मनुष्यों के एक वर्ष के बराबर होता है। इसलिए इन चारों स्थानों पर प्रत्येक बारह वर्ष के उपरान्त कुम्भ पर्व का आयोजन होता है। स्पष्ट है कि प्रत्येक तीन वर्ष बाद किसी एक स्थान पर कुम्भ स्नान का आयोजन होता है जिसका क्रम हरिद्वार, प्रयाग, नासिक व उज्जैन रहता है। इसके अलावा छह वर्षों के अन्तराल पर अर्द्धकुम्भ पर्व का आयोजन भी किया जाता है। यद्यपि अर्द्धकुम्भ का कोई विशेष धार्मिक आधार नहीं है तथा नासिक व उज्जैन में इसको महत्वपूर्ण नहीं माना जाता है फिर भी हरिद्वार व प्रयाग में अर्द्धकुम्भ का आयोजन करने की परम्परा काफी प्राचीन है। अब अर्द्धकुम्भ का कुम्भ व पूर्ण कुम्भ को महाकुम्भ भी कहा जाने लगा है। कुछ भी क्यों न हो फिर भी अमृत तुल्य ज्ञान की प्राप्ति के इन चार स्थलों का अपना-अपना विशेष महत्व आज भी माना जाता है। नासिक में गोदावरी का तट देवत्व ज्ञान की प्राप्ति का, उज्जैन में क्षिप्रा का तट क्षिप्र ज्ञान प्राप्ति का, हरिद्वार में गंगा का तट बौद्धिक ज्ञान की प्राप्ति का एवं प्रयाग में संगम का तट त्रिविध ज्ञान प्राप्ति का प्रतीक कहा जा सकता है।

कुम्भ पर्व की ज्योतिष परम्परा जटिल तथा विभिन्न आकाशी ग्रहों की खगोलीय स्थिति पर आधारित है। पुराणों में विशेष अवसरों पर पवित्र नदियों व सरोवरों में स्नान करने, दान देने व विभिन्न धार्मिक क्रियाकलापों को सम्पन्न करने को अधिक पुण्यदायी माना गया है। वस्तुतः पौराणिक काल में ग्रहों तथा नक्षत्रों की स्थितियों के महत्व के आधार पर पावन नदियों में स्नान करने की महत्ता को लोक स्वीकृति मिल चुकी तथा इसी के फलस्वरूप हरिद्वार, उज्जैन, नासिक व प्रयाग में विशिष्ट राशि के समन्वित अवसरों पर नदी स्नान करने की धार्मिकता को जन प्रश्रय मिलता रहा था एवं कालान्तर में ये कुम्भ पर्व के नाम से प्रचलित हो गये। ज्योतिषीय आधार की एक मान्यता के अनुसार जब सूर्य व चन्द्रमा मेष राशि में तथा बृहस्पति कुम्भ राशि में होता है तब हरिद्वार में, जब सूर्य व चन्द्रमा मकर राशि में तथा बृहस्पति वृष राशि में होता है तब प्रयाग में, जब सूर्य, चन्द्रमा व बृहस्पति तीनों कर्क राशि में होते हैं तब नासिक में एवं जब ये तीनों ग्रह सिंह राशि में होते हैं तब उज्जैन में कुम्भ पर्व का आयोजन किया जाता है। स्पष्ट है कि नासिक के कुम्भ योग में तीनों ग्रह कर्क (चन्द्र की स्वराशि) में तथा उज्जैन में कुम्भ योग में तीनों ग्रह सिंह (सूर्य की स्वराशि) में रहते हैं जबकि प्रयाग व हरिद्वार के कुम्भ योगों में यह स्थिति कुछ भिन्न रहती है, इसमें सूर्य व चन्द्रमा की युति तो होती है परन्तु बृहस्पति एक विशिष्ट स्थान पर स्थित रहकर अपना मंगलमय प्रभाव संक्रमित करता है। मान्यता है कि सूर्य व चन्द्रमा मकर राशि में तथा बृहस्पति वृष राशि में

होता है तब अमावस्या, जिसे मौनी अमावस्या कहा जाता है, के दिन प्रयाग में कुम्भ पर्व का मुख्य स्नान पर्व मनाया जाता है। कहा जाता है कि सूर्य तथा चन्द्रमा मकरस्थ होने पर जहाँ अमृतकणों की वर्षा करते हैं वहीं सूर्य के मकरस्थ होने पर अमावस्या के दिन चन्द्रमा की शीतल किरणें सूर्य की ऊष्म किरणों से टकराकर त्रिवेणी के जल में एक विशेष जीवनबर्द्धक उर्जा को उत्पन्न करती हैं एवं श्रद्धालु उसका लाभ लेने के लिए लालायित रहते हैं। इसके अलावा मकर संक्रान्ति, पौषपूर्णिमा, बसन्त पंचमी, माघी पूर्णिमा व महाशिवरात्रि भी कुम्भ पर्व के अन्य महत्वपूर्ण स्नान माने जाते हैं। मकर संक्रान्ति, मौनी अमावस्या व बसंत पंचमी को अखाड़ों के साधु-संन्यासियों के द्वारा वैदिक मंत्रों के वाचन व धार्मिक रीति-रिवाजों के साथ शाही स्नान करने की परम्परा रहती है। अपनी भव्यता, दिव्यता व ओजस्विता के कारण शाही स्नानों के लिए जाते अखाड़ों के जुलूसों को देखने के लिए देश-विदेश से आये दर्शनार्थियों की भीड़-सी लग जाती है। परन्तु यहाँ यह इंगित करना उचित व आवश्यक होगा कि कुम्भ पर्व के सम्बन्ध में वैकल्पिक ज्योतिषीय परम्पराएँ भी प्रचलित हैं। स्थानाभाव के कारण उनकी चर्चा नहीं की जा रही है। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान ने स्पष्ट रूप से सिद्ध कर दिया है कि हमारी आकाश गंगा तथा ब्रह्माण्ड में विचरण कर रहे विभिन्न ग्रह-उपग्रह व नक्षत्र न केवल एक दूसरे को प्रभावित करते रहते हैं वरन् पृथ्वी पर उत्पन्न होने वाली विभिन्न परिस्थितियाँ भी इनके प्रभाव से वंचित नहीं रह पाती हैं। वस्तुतः खगोलीय स्थितियाँ मानव जीवन को प्रत्यक्ष अथवा प्रकारान्तर से अनेक प्रकार से स्पर्श करती हैं। कुम्भ के दौरान सूर्य कलंकों की चरमोत्कर्षिता, अमावस्या के दिन चन्द्रमा की क्षीणावस्था, बृहस्पति में जीवनवर्द्धक तत्वों की बहुलता तथा शनि की जीवन संहारक तत्वों से युक्तता जैसी बातों को अब प्रचुरता से स्वीकार किया जाता है एवं भारतीय परम्पराओं को अन्धविश्वास मानने वाले आधुनिक मत के तथाकथित प्रबुद्ध वर्ग को भी इस सत्यता को स्वीकार करना पड़ रहा है। वस्तुतः कुम्भ पर्व में ग्रहों की स्थिति जीवनवर्द्धक तत्वों को आप्लावित करती है जो कुम्भपर्व के आकर्षण व सम्प्रेषण की सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि की रचना करती है।

कुम्भ पर्व के आयोजन के पीछे निहित आधिदैहिक प्रतीकात्मकता सम्बन्धी आधार को भी अत्यन्त सारगर्भित कहा जा सकता है। मानव शरीर में मन व बुद्धि के अलावा पाँच कामेन्द्रियों हाथ, पैर, मुँह, गुदा व जननांग तथा पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ आँख, नाक, कान,जिह्वा तथा त्वचा होती हैं; जिनका कुल योग बारह हो जाता है। मानव प्राणी को शुद्ध अमृत्व तक पहुँचाने के लिए इन बारह तत्वों पर विजय प्राप्त करने की जरूरत होती है। इन बारह तत्वों पर विजय प्राप्त करने के उपरान्त ही प्रत्येक मानव भौतिकता के गहन गहवर से बाहर आकर स्वयं को स्थितप्रज्ञ अवस्था में लाकर मोक्ष का द्वार खोलने का प्रयास करता है। इन बारह तत्वों पर नियंत्रण पाने के कारण ही सम्भवतः कुम्भपर्व का आयोजन प्रत्येक 12 वर्षों के अन्तराल पर किया जाता है। वस्तुतः विवेक तथा अविवेक का संघर्ष ही देव-असुर संग्राम को जन्म देता है एवं इसकी परिणति मानव समाज के कल्याण व अभ्युदय के रूप में सामने आती है। इस प्रकार से मानव जीवन का वास्तविक कुम्भ उपरोक्त बारह तत्वों या शक्तियों पर नियंत्रण करके आसुरी प्रवृत्तियों को समाप्त करना है। इसके लिए मन को केन्द्रित करके ज्ञान

के आलोक में ऊर्जा की अनुभूति को आगे बढ़ाना होगा। यही कुम्भ पर्व में त्रिवेणी-मन, ज्ञान व ऊर्जा का अवगाहन है। कुम्भपर्व की अविचल सनातन सांस्कृतिक विरासत की ऊर्जा मनुष्य में प्राणशक्ति का संचार करके अमृतबल को प्रबल करना कहा जा सकता है जबकि इसी अमृत का पान करना कुम्भ तीर्थयात्रा का पाथेय कहा जा सकता है। कुम्भ दर्शन के तीन प्रमुख पक्ष क्रमशः जल, खगोलीय योग व भौगोलिक स्थिति माने जा सकते हैं। जल शुद्धता, निर्मलता व निरन्तरता का प्रतीक है। जल स्नान न केवल शरीर को शुद्ध करता है वरन अन्तःकरण को भी शुद्ध करके आध्यात्मिक शुद्धि का कारण बन जाता है। जल का चंचल रूप नदियों के रूप में सामने आता है। इतिहास गवाह है कि संसार की सभी प्रमुख संस्कृतियों का जन्म नदियों के तट पर हुआ था। कुम्भ का जीवन्त स्वरूप नदी संस्कृति के प्रवाह को परिलक्षित करने का प्रयास करता है। कुम्भ की संस्कृति निःसन्देह पौराणिक गाथाओं से अठखेलियाँ करती हुई, सनातन परम्पराओं को सहेजती हुई तथा मानव मेधा की वैज्ञानिकता को नवीन ऊर्जा से पल्लवित करती हुई, सामाजिक ताने-बाने को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने में कोई कसर नहीं छोड़ती है। कुम्भ पर्व की पावनता, धार्मिकता, आध्यात्मिकता, सह-अस्तित्वता व जीवन्तता अनादि काल से अनुगुंजित रही है। वस्तुतः यह भारतीय जनमानस का एक ऐसा गहरा विश्वास है जो उन्हें व उनकी अनगिनत पीढ़ियों को कुम्भ मेले में आने के लिए प्रेरित करता रहा है। निःसन्देह अमृत की उपलब्धि मन्थन के बिना कदापि सम्भव नहीं है। परस्पर विरोधी विचारों, परिस्थितियों या संस्कृतियों का वैचारिक मन्थन ही योजक की भूमिका अदा करते हुए जीवन की अज्ञानताओं, गुत्थियों, कुंठाओं व विडम्बनाओं से मुक्त करा सकता है। अमृत की खोज या अमरत्व की प्राप्ति की ओर किये जाने वाले प्रयास को मानव जीवन के चरम पुरुषार्थ की प्राप्ति या मुक्ति की तलाश करना भी कहा जा सकता है। कुम्भ में आनेवाले संतों, साधुओं, साधकों, तपस्वियों, आराधकों, मनीषियों, विद्वानों या अप्रतिम व्यक्तियों के संसर्ग से व्यक्ति अपने जीवन की गुत्थियों को सुलझाने में सफल सिद्ध हो सकते हैं। इन महानुभावों के सानिध्य में होने वाला विचारमन्थन प्रत्यक्ष या परोक्षतः ज्ञानमृत का हेतु बन जाता है। यही कुम्भ पर्व का आधिदैहिक प्रतीकात्मकता सम्बन्धी आधार कहा जा सकता है। कुम्भ पर्व का प्रचलन कब से प्रारम्भ हुआ, इस प्रश्न का निर्णायक उत्तर पाना किंचित कठिन ही नही वरन असम्भव-सा कार्य है। वस्तुतः इस सम्बन्ध में विद्वानों की राय भिन्न-भिन्न है। फिर भी कन्नौज के सम्राट हर्षवर्धन के शासन के दौरान सन् 629 में भारत आये चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृत्तान्त में प्रयाग के कुम्भ मेले तथा हर्षवर्धन के महादान की विस्तार से चर्चा मिलती है। नौवीं शताब्दी में कुम्भ पर्व को व्यवस्थित रूप देने का श्रेय आदि शंकराचार्य को दिया जाता है। कहा जाता है कि हिन्दू संस्कृति को सुदृढ़ करने तथा जनकल्याण को पुष्ट करने की दृष्टि से उन्होंने कुम्भ परम्परा को आगे बढ़ाया था। कुछ लोगों का यह भी मानना है कि बौद्धों की धर्मपरिषदों की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप कुम्भ मेलों के आयोजन का सिलसिला प्रारम्भ हुआ था। प्रत्येक बारह वर्ष पर साधु, सन्त व योगी आदि के साथ भारी संख्या में हिन्दू धर्मावलम्बी एकत्रित होकर धार्मिक, आध्यात्मिक व यौगिक क्रियाकलाप करते थे जिसके फलस्वरूप कुम्भ पर्व का श्रीगणेश हुआ। स्पष्ट प्रमाणों की

अनुपलब्धता के कारण इतिहासकारों का अनुमान है कि कुम्भ पर्व का वर्तमान स्वरूप बारहवीं से सोलहवीं शताब्दी के बीच निर्धारित हुआ होगा। सन् 1253 के हरिद्वार कुम्भ में नागा संन्यासियों के द्वारा वैष्णव वैरागियों की निर्णायक विजय सन् 1398 के हरिद्वार कुम्भ के दौरान तैमूर के द्वारा भारी संख्या में हिन्दू धर्मावलम्बियों का कत्लेआम कराना, सन् 1514 के प्रयाग कुम्भ में महाप्रभु चैतन्य के द्वारा उपस्थित होकर प्रतिभाग कराना, सन् 1640 में हरिद्वार कुम्भ में वैरागियों व नागाओं के बीच हुए संघर्ष में काफी वैरागियों का मराा जाना, सन् 1690 में नासिक में भारी संख्या में बैरागियों का मनाा जाना, सन् 1760 में हरिद्वार के कुम्भ में शैव संन्यासियों व वैष्णव वैरागियों के बीच भीषण संघर्ष होना, सन् 1796 में हरिद्वार कुम्भ में शैवों व सिक्खों के बीच संघर्ष होना एवं सन् 1906 में प्रयाग में निर्मोही व दिगम्बरी संन्यासियों के बीच झगड़ा होने आदि के स्पष्ट उदाहरण इतिहास के झरोखों में दृष्टिगोचित होते हैं। इसके अलावा पन्द्रहवीं शताब्दी में मराठी भाषा की पुस्तक 'गुरुचरित्र' में सत्रहवीं शताब्दी में लिखी **'दबिस्तान-ए-मुजाहिद'** नामक पारसी धार्मिक पुस्तक में तथा सन् 1695 में लिखित **'खुलासतुत-तवारिख'** नामक पुस्तक में कुम्भ पर्व के आयोजन का संदर्भ आया है। इसके अलावा अठारहवीं तथा उन्नीसवीं शताब्दी में भी अनेक विदेशी यात्रियों व लेखकों ने अपने यात्रावृत्तान्तों में कुम्भ मेलों का उल्लेख किया है। इन सबसे स्पष्ट हो जाता है कि कुम्भ पर्व के आयोजन की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है जिसे बारहवीं शताब्दी के लगभग अधिक व्यापक, विशिष्ट व संगठित स्वरूप प्रदान करने के प्रयास किये गये थे। ऐसा लगता है कि प्रारम्भ में कुम्भ पर्व प्रमुखतः केवल नागा संन्यासियों तक सीमित था लेकिन कालान्तर में अन्य सम्प्रदायों के साधु भी इससे जुड़ते गये थे एवं भक्ति आंदोलन के समय में धार्मिक व सामाजिक पुनरुत्थान में कुम्भ पर्व ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की तथा धीरे-धीरे साधु, संन्यासी व गृहस्थ बड़ी संख्या में कुम्भ मेले में इकट्ठा होने लगे। स्पष्ट है कि पवित्र नदियों के तटों पर एक निश्चित अन्तराल पर साधु, संन्यासी व गृहस्थ एकत्रित होकर सामाजिक विकास व सौहार्द्र के लिए परस्पर समझ की पृष्ठभूमि का ताना-बाना बुनकर विभिन्न विचारों के प्रवाह को शाश्वत काल से प्रोत्साहित अवश्य करते थे, तभी यह कुम्भ का आधार या जनक बना था।

समावेशन की अवधारणा

समावेशन को समग्रता भी कहा जाता है। यद्यपि समावेशन की अवधारणा एक अत्यन्त प्राचीन अवधारणा है एवं भारतीय साहित्य में यह व्यापकता से परिलक्षित होती है परन्तु वैश्विक स्तर पर इसे विगत कुछ समय से अंगीकृत किये जाने के कारण इसे अपेक्षाकृत एक नवीन अवधारणा माना जाता है। वस्तुतः पाश्चात्य परिप्रेक्ष्य में समावेशन को विविधता (Diversity) से जोड़कर देखा जाता है और उसके अन्तर्गत विविध प्रकार, पृष्ठभूमि, योग्यता, वंशमूल, जरूरतों, विविधता आदि से आये लोगों को समाज की मुख्यधारा में बिना किसी विभेद के सम्मिलित करने पर जोर दिया जाता है। इस संदर्भ में समावेशन शब्द से अभिप्राय सभी सामाजिक विचारधाराओं को साथ लेकर चलने से लगाया जाता है। वर्तमान समय में समाज की मुख्य धारा में उपलब्ध सुविधाओं, अवसरों या सम्भावनाओं का सही

प्रकार से लाभ नहीं उठा पाने वाले व्यक्तियों अर्थात् विशिष्ट जरूरत वाले बालक-बालिकाओं, दलित, पिछड़े व अल्पसंख्यक वर्गों के बालक-बालिकाओं अथवा शिक्षा व रोजगार से वंचित नागरिकों आदि को अधिगम, प्रतिभाग व रोजगार की अनुकूल परिस्थितियाँ उपलब्ध कराना ही समावेशन प्रक्रिया का लक्ष्य माना जाता है। वस्तुतः समावेशन की अवधारणा में जाति, धर्म, वर्ग, वंश, निर्धनता, क्षेत्र, राष्ट्र जैसे कृत्रिम रूप से मानव निर्मित विभेदकों व विषमताओं को समाप्त करने का भाव निहित रहता है। निःसन्देह लोकतंत्र की भावना तथा समाजवाद की परिकल्पना को सहजता के साथ साकार रूप देने के लिए समावेशन की अवधारणा को सिद्धान्त व व्यवहार दोनों दृष्टियों से आगे बढ़ाना होगा। किसी भी समाज व राष्ट्र के सभी संसाधनों को बिना किसी भेदभाव, पक्षपात या लाग-लपेट के, सभी नागरिकों को उपलब्ध कराकर, संसाधनों का अनुकूलतम् उपभोग करना व लाभ उठाना उनका जन्मसिद्ध अधिकार है ऐसा मानते हुए उन्हें उपयुक्त माहौल उपलब्ध कराने में समावेशन की आवश्यकता, महत्ता व सार्थकता स्वयंसिद्ध हो जाती है। समावेशन को वस्तुतः एक प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए। यह एक ऐसी प्रक्रिया कही जा सकती है, जिसमें भागेदारी व प्रतिभाग, समन्वय व एकीकरण तथा बदलाव व सुधार की रणनीति को अपनाना व्यक्ति, समाज व राष्ट्र के अधिकतम विकास की मूलभूत मान्यता स्वनिहित रहती है। समावेशन प्रक्रिया की सफलता के लिए उचित आधारभूत संरचनाओं के साथ-साथ संवेदनशीलता, पहल, समझदारी, सहयोग व क्षमता-निर्माण जैसे कुछ महत्वपूर्ण पक्षों पर ध्यान देना आवश्यक होता है। समावेशन से समाज के बीच सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्धों को विकसित, पल्लवित व पोषित करके जनकल्याण की भावना को प्रभावी, सहज व सफलतापूर्वक आगे बढ़ाया जा सकता है। इससे न केवल एक समावेशित समाज का निर्माण सुलभ हो सकेगा, वरन समाज की मुख्य धारा में आने से वंचित रह गये सभी नागरिकों, हाशिये पर चले गये समूहों के लोगों, अल्पसंख्यक समुदाय व वंचित वर्गों के व्यक्तियों को सर्वकल्याण के मार्ग पर प्रशस्त किया जा सकता है जो समावेशन की अपरिमित सामर्थ्य को व्यवहार रूप में प्रकट कर सकेगा। निःसन्देह इस दिशा में नूतन सिरे से सार्थक पहल व सक्रिय प्रयास समय की माँग है।

प्रत्येक राष्ट्र में प्रायः अनेक सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के व्यक्ति रहते हैं। नौकरी, व्यवसाय, आपदा, निवास स्थान बदलने के कारण उन्हें कभी-कभी लम्बे समय तक साथ-साथ रहना पड़ता है। इसके फलस्वरूप भिन्न-भिन्न पृष्ठभूमि के लोग एक दूसरे के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व सांस्कृतिक तत्वों की जानकारी प्राप्त करते रहते हैं एवं एक दूसरे की अच्छी बातों को समझते व ग्रहण करते रहते हैं। दो सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले लोगों के बीच सांस्कृतिक तत्वों के इस प्रकार होने वाले आदान-प्रदान को सांस्कृतिक फैलाव या सांस्कृतिक समावेशन कहा जाता है। स्पष्ट है कि इस प्रकार की स्थिति में लोग अपनी संस्कृति में दूसरी संस्कृति के कुछ तत्वों का समायोजन कर लेते हैं। साहचर्य के फलस्वरूप होने वाली सांस्कृतिक समावेशन की यह प्रक्रिया सनातन काल से चली आ रही है। इतिहास की पड़ताल से भारत में तो सांस्कृतिक समावेशन के अनेकानेक उदाहरण स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं तथा यही समावेशन की प्रक्रिया भारतीय चरित्र के

आधुनिक स्वरूप का निर्धारण करती हैं। निःसन्देह वर्तमान अतीत की परिणति होता है जबकि भविष्य वर्तमान का चरितार्थ कहा जा सकता है। भारतीयों की विशेषता है कि वे अतीत, वर्तमान व भविष्य को एक साथ जीते हैं। वे अतीत की सद् परम्पराओं का आदर करते हुए वर्तमान को साकार करते हैं तथा भविष्य का ताना-बाना बुनते हैं। भारत की बहुविध समृद्ध संस्कृति का विकास इस राष्ट्र के गौरवशाली अतीत, आध्यात्मिक परम्पराओं तथा सामाजिक समावेशन का एक विलक्षण उदाहरण कहा जा सकता है। मोहनजोदड़ो की सिन्धुघाटी सभ्यता से लेकर आधुनिक काल तक भारतीय संस्कृति कभी भी अलग-थलग नहीं रही है वरन् ईरानियों, यूनानियों, चीनी, मध्य एशियाई तुर्कों, अफगानों, अरबों, मंगोलों, यूरोपियों तथा अन्य लोगों से उसका सम्पर्क लगातार बना रहा था एवं यदि गौर से देखें तो सांस्कृतिक विकास का अटूट सिलसिला अपने आप में अदभुत नजर आता है। निश्चय ही सांस्कृतिक समावेशन की यह एक अनोखी प्रथा कही जा सकती है। समावेशन के फलस्वरूप विचारों में, राजनीति में, दार्शनिक चिन्तन में, सामाजिक सोच में, तथा बाह्य सम्पर्कों में अकल्पनीय परिवर्तन आया है। अपने को ढालने की क्षमता तथा लचीलेपन की प्रवृत्ति के कारण गिरोहबन्दी की संकुचित विचारधारा ध्वस्त होती है तथा जीवनी शक्ति व दृढ़ता में बढ़ोत्तरी होती है। भारत में आने वाले आक्रमणकारी यद्यपि प्रारम्भ में अजनबी लोग थे परन्तु वे बड़ी तेजी से भारतीय ढाँचे में समा गये थे एवं उन्होंने यहाँ पर समन्वय व मिली-जुली संस्कृति का विकास किया। विदेशी तत्वों के भारत में आत्मसात होने में आम लोगों की भाषा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान माना जा सकता है। निःसन्देह सभी भारतीयों को जाति, धर्म, वर्ग या स्थिति से अलग अपनी जन्मभूमि, अपने देशवासियों, अपनी सांस्कृतिक धरोहरों तथा अपनी समृद्ध परम्पराओं पर गर्व है। परन्तु इस रोमांचक, ओजस्वी व विविधतापूर्ण अतीत का मतलब उससे चिपककर अपने से भिन्न दूसरों के तौर-तरीकों को नहीं समझने से या अपनी कमजोरियाँ व असफलताओं को भूलने से या वैश्विक स्तर पर हो रही प्रगति को अस्वीकार करने से नहीं है वरन् मानवीय कल्याण व प्रगति को शीघ्रता के साथ **'सभी का साथ, सभी का विकास'** की भावना से आगे बढ़ाना है। भारत में हड़प्पा संस्कृति, आर्य-संस्कृति, वैदिक संस्कृति, सूत्र संस्कृति तथा महाकाव्यकालीन संस्कृति के साथ-साथ शैव धर्म, वैष्णव धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, सिख धर्म, पारसी धर्म, इस्लाम धर्म व क्रिश्चियन धर्म का प्रादुर्भाव रहा है। हमारा देश अनेक सामाजिक पुनरुत्थानों, दार्शनिक विचारधाराओं, भक्ति आन्दोलन, ब्रह्म समाज, आर्यसमाज, रामकृष्ण मिशन, देवबन्दी आन्दोलन तथा सूफीवाद आदि का गवाह रहा है। इन सभी विविधतापूर्ण विचारों को समन्वित करके हमने सह-अस्तित्व की संस्कृति विकसित करके **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** के ध्येय वाक्य को चरितार्थ किया है। सभी स्वीकार करते हैं कि विश्वबन्धुत्व का प्रथम नारा हजारों वर्ष पूर्व भारतीय मनीषा के द्वारा लगाया गया था। हिन्दुस्तान में हर धर्म, सम्प्रदाय या वैचारिक पृष्ठभूमि वाले लोग रह सकते हैं। जो नये लोग भी यहाँ दाखिल होते हैं, वे यहाँ पर घुलमिल जाते हैं क्योंकि इस मुल्क में दूसरे लोगों का समावेश करने का गुण है। वस्तुतः अतीत में भारतवासियों ने अनेक बार दूसरी संस्कृतियों का स्वागत करके उन्हें आत्मसात् किया है।

इस भावना को आज भी पुष्पित व पल्लवित करने की जरूरत है। हमें समझदारी, ज्ञान व विवेक, मित्रता तथा सहयोग के साथ विभिन्न संस्कृतियों व उपसंस्कृतियों के बीच समन्वय व समावेशन को बढ़ाकर एक वैश्विक संस्कृति का निर्माण करना होगा। यही संस्कृतिक समावेशन का सही अर्थ व निहितार्थ है।

समावेशन या समग्रता से तात्पर्य विविधतापूर्ण व्यक्तियों को किसी आबादी, शिक्षा संस्था, कार्य स्थल या उद्योग आदि में पूरी तरह से तथा सफलतापूर्वक एकीकृत करने से लगाया जाता है। वस्तुतः यह स्थिति विविधतापूर्ण परिस्थितियों, जरूरतों या विचारधाराओं के व्यक्तियों की मात्र सांकेतिक उपस्थिति या प्रतिभाग तक सीमित नहीं होती है वरन् विविधता को सम्मान व सकारात्मक स्वीकृति प्रदान करके सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक विभेदों के प्रति व्यावहारिक सहमति का माहौल व प्रतिबद्धता का इजहार करती है। समावेशन का स्वरूप निश्चय ही किसी समाज, संगठन, संस्था की औपचारिक व अनौपचारिक नीतियों, अभ्यासों व क्रियाकलापों तक विस्तारित रहता है तथा उनके कोर मूल्यों से परिलक्षित होता है। स्पष्ट है कि समावेशन सम्बन्धित संस्था में प्रतिनिधित्वता, स्वीकार्यता व उपयुक्तता के दर्शन से प्रतिबिम्बित होता है। प्रतिनिधित्वता से तात्पर्य संस्था के प्रत्येक स्तर पर विविधतापूर्ण पृष्ठभूमि वाले व्यक्तियों की उपस्थिति से लगाया जाता है। स्वीकार्यता का अभिप्राय विभेदों को ध्यान में रखने तथा योग्यता के सापेक्ष बोधनीयता को स्वीकार करने से होता है। उपयुक्तता के अन्तर्गत सभी संसाधनों, अवसरों, संजालों तथा निर्णय-निर्धारण प्रक्रियाओं में सभी की समतापरक पहुँच को सुनिश्चित किया जाना अपेक्षित रहता है। निश्चय ही समावेशन की संस्कृति या समग्र संस्कृति में सभी को लाभ उठाने व सन्तुष्ट होने के अधिक अवसर मिलते हैं। इसमें सभी की प्रतिभा का अधिकाधिक लाभ उठा पाना अधिक सहज होता है। बौद्धिक क्रियाकलापों व विचार-विमर्श में समावेशन से नवाचारों को अधिक जीवन्त तथा समावेशी ढंग से प्रोत्साहित किया जा सकता है। समावेशी संस्कृति सभी पृष्ठभूमियों व जीवन क्षेत्रों के नागरिकों के विभेदों का सम्मान करती है, महत्व देती है तथा सुदृढ़ता के रूप में स्वीकार करती है। समावेशन से लक्ष्यों के प्रति समर्पण की भावना बढ़ती है, बदलाव लाने की सम्भावनाएँ बलवती होती हैं। नेतृत्व क्षमता में निखार आता है, कमियों को स्वीकार किया जाता है तथा चुनौतियों के रूप में विभेदों को ग्रहण करने की प्रवृत्ति बढ़ती है। समावेशन मात्र एक प्रक्रिया ही नहीं है वरन हिन्दुस्तान की प्राचीन जीवन शैली भी है। पूर्वाग्रहों से बचकर मानवता को बढ़ाना इस जीवन शैली का प्रमुख लक्ष्य रहा है तथा भविष्य में भी बना रहेगा। आधुनिकता व विज्ञान की अंधी दौड़ में अपने अतीत की व्यापक, विशाल, उत्तुंग व अगाध निधि को छोड़ना कदापि उचित नहीं है। समावेशन की अवधारणा का हमारे अतीत से अत्यन्त गहरा नाता है। समावेशन की अवधारणा का व्यक्ति की आन्तरिक व बाह्य दोनों प्रकार की गतिविधियों से स्पष्ट व प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। वस्तुतः समावेशन इन दोनों प्रकार की गतिविधियों में सामंजस्य स्थापित करता है तथा आनन्द, उल्लास व अपनत्व की भावना की अनुभूति कराते हुए सर्वकल्याण के मार्ग को प्रशस्त करता है। इससे व्यक्तियों में आत्म-अनुभूति, वचनबद्धता, स्व-बन्धन, सह-अस्तित्व, सहनशीलता जैसी बातों का

प्रस्फुटन होता है जो अन्ततः आदर्शों, आस्थाओं व सदाचारों पर आधारित सर्वव्यापी प्रवृत्ति, अभिवृत्ति व अभिरुचि को परिलक्षित व संचालित करता है। वस्तुतः विश्व के सभी धर्म व संस्कृति मानवीय गरिमा का संरक्षण करते हैं, सनातन मूल्यों को प्रतिष्ठित करते हैं। निःसन्देह किंचित विविधताओं, विभिन्नताओं या विभेदों के बावजूद सभी धर्म व संस्कृतियाँ सार्वभौमिक मान्यताओं, विश्वासों, आदर्शों, मूल्यों या दृष्टिकोणों पर आधारित रहते हुए सर्वकल्याणकारी सन्देश को प्रदान करती हैं। आधुनिक प्रजातांत्रिक परिवेश तथा वैश्विक युग में मानव निर्मित विभेदों, उन्मादों या संघर्षों को समाप्त करन में समावेशन की अवधारणा महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। इससे गलत मानसिकता, नकारात्मक दृष्टिकोण तथा निहित स्वार्थपरता का समापन करके सर्व-स्वीकृति की संस्कृति को पुष्ट बनाया जा सकता है।

संस्कृति की अवधारणा व तत्त्व

किसी भी समाज व राष्ट्र की भौतिक, सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, बौद्धिक तथा शैक्षिक जैसी विशेषताएँ ही मिलकर उसकी संस्कृति का निर्माण करती हैं। किसी राष्ट्र की संस्कृति एक प्रकार से उसकी आत्मा होती है जो उस राष्ट्र के नागरिकों के आन्तरिक मंतव्यों का ज्ञान कराती है। व्यक्ति अपने राष्ट्र की संस्कृति से आबद्ध होकर तरह-तरह के क्रियाकलापों को सम्पादित करता है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति सुशिक्षित, नैतिक तथा विद्वान व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित होता है। अतएव स्पष्ट है कि मनुष्य की समस्त क्रियाओं, व्यवहारों, उत्पादन परिष्कार एवं उन्नति का समन्वित स्वरूप ही संस्कृति है। संस्कृति के द्वारा **'सत्यं', 'शिवं', 'सुन्दरम्'** के लिए मानव मस्तिष्क में आकर्षण उत्पन्न होता है और उसकी अभिव्यक्ति होती है। यहाँ पर सभ्यता तथा संस्कृति के विभेद को भी समझना होगा। सभ्यता समाज व राष्ट्र का परिधान कही जा सकती है जबकि संस्कृति उसकी आत्मा होती है। सभ्यता भौतिकता की द्योतक होती है जबकि संस्कृति भौतिकता से ऊपर उठकर वैचारिक व आध्यात्मिक स्तर की ओर प्रवृत्त होती जाती है। निःसन्देह सभ्यता व संस्कृति मानव विकास के दो पहलू हैं, सभ्यता विकास की स्थूल प्रकृति की तथा संस्कृति विकास के सूक्ष्म तत्वों की ओर संकेत करती है।

हिन्दी शब्द संस्कृति का उद्भव संस्कृत की सम् उपसर्गपूर्वक **'कृ'** धातु से माना जाता है, जिसका अर्थ सजाना, संवारना, सुशिक्षित करना, पवित्र करना, माँजना आदि से होता है। इसके अलावा **'संस्कृति'** शब्द का विच्छेद करने पर सम् कृति नामक दो शब्द प्राप्त होते हैं जो सम्यक् प्रकार या भली प्रकार किया जाने वाला व्यवहार अथवा क्रिया अंको इंगित करते हैं। यह परिष्कृत अथवा परिमार्जित करने के भाव का सूचक है। आंग्ल भाषा में संस्कृति को **'कल्चर'** कहते हैं। यह शब्द यूनानी भाषा के 'कल्चुरा' शब्द से बना है जिसका अर्थ उत्पादन या परिष्कार से होता है। अतः शाब्दिक अर्थ के रूप में कहा जा सकता है कि, ''संस्कृति किसी राष्ट्र के मानव समुदाय की वह संचित निधि है जो परिष्कार द्वारा गतिशील रहकर पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्थानान्तरित होती रहती है तथा अक्षुण्ण बनी रहती है। इसमें ज्ञान, आदर्श

अभिवृत्ति, जीवनशैली, विश्वास, नियम, रीति-रिवाज, मान्यतायें, आस्थायें, मूल्य, प्रथायें, वेशभूषा आदि बातें सम्मिलित रहती हैं। **जे. रोसेक** के अनुसार, "किसी विशेष समय तथा स्थान में निवास करने वाले व्यक्तियों के जीवन जीने के सामूहिक ढंग को संस्कृति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।" **इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइन्सेज** में मैलिनोव्सकी ने संस्कृति की परिभाषा देते हुए कहा है कि "संस्कृति में उन उपयोगी वस्तुओं, साधनों, प्रथाओं तथा शारीरिक व मानसिक आदतों का समावेश रहता है जो मानव की आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से कार्य करती हैं।" किसी भी समाज या राष्ट्र की संस्कृति में प्रायः निम्न प्रमुख विशेषतायें परिलक्षित होते हैं-

1. संस्कृति जन्मजात न होकर रचितर्, अजित तथा उत्पादित होती है।
2. संस्कृति का हस्तान्तरण नागरिकों की एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी होता रहता है।
3. समाज की संरचना के आधार पर संस्कृति प्रत्यक्षतः अथवा परोक्षतः उत्पादित होती है।
4. संस्कृति सर्वकल्याणमयी तथा आदर्शवादी मान्यताओं तथा परम्पराओं पर आधारित होती है।
5. संस्कृति राष्ट्र के नागरिकों की उत्कंठाओं, इच्छाओं व जरूरतों को तृप्त करने वाली होती है।
6. संस्कृति राष्ट्र के नागरिकों को अपने परिवेश से समायोजित तथा अभिसिंचित करने में सहायक सिद्ध होती है।
7. संस्कृति से समाज का विकास, उन्नयन व संवर्धन होता है जो सामाजिक व्यवस्था तथा संगठन को सुदृढ़ता व स्थायित्व प्रदान करता है।
8. संस्कृति में उसके समाज व नागरिकों के विचार एवं व्यवहार दोनों में दृढ़ता तथा व्यावहारिकता का समावेश होता है।
9. संस्कृति में समाज में प्रचलित रहन-सहन, वेशभूषा, खानपान, आदर्श, मूल्य, ज्ञान, बोध, कौशल, विश्वास व मान्यतायें आदि समाहित रहती हैं।

क्योंकि किसी भी संस्कृति में अनेक तत्व या अवयव होते हैं इसलिए इसे तत्वों का एक दीप्तिमान पुंज भी कहा जा सकता है। विभिन्न समाजशास्त्रियों ने संस्कृति के तत्वों को अपने-अपने ढंग से क्रमबद्ध किया है। क्यूबर के द्वारा संस्कृति में भाषा, ज्ञान, विश्वास, प्रथायें, कलायें, प्रौद्योगिकी, आदर्श तथा नियम नामक आठ प्रमुख तत्वों को समाहित माना गया है। जबकि मैकाइवर तथा पेज ने व्यवहार प्रतिमान, विचारधारा, कला, साहित्य, धर्म, तथा मनोरंजन को संस्कृति के छह प्रमुख तत्व कहा है। मानव जीवन की सम्पन्नता, जीवन्तता तथा आस्ता उसकी संस्कृति से निर्धारित होती है। संस्कृति ही व्यक्ति के अपने परिवेश से अनुकूलन करने, सामाजिक सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाने, मानव व्यक्तित्व का निर्माण करने तथा सद्चरित्रता एवं नैतिकता का विकास

करने के कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

कभी-कभी संस्कृति को दो मुख्य भागों-- भौतिक संस्कृति तथा अभौतिक संस्कृति में बाँटा जाता है। जिन साधनों का प्रयोग मनुष्य अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए करता है, जो मूर्त रूप में प्रतिबिम्बित होती हैं तथा जिनकी रचना में मनुष्य का योगदान निहित होता है वे सभी बातें भौतिक संस्कृति के अन्तर्गत आ जाती है। जैसे-- सड़क, घर, शहर, मशीन, कपड़ा, रेडियो, दूरदर्शन, कार, बस, ट्रेन, आभूषण आदि भौतिक संस्कृति के तत्व हैं। इसे सभ्यता भी कह सकते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में अभौतिक संस्कृति को ही वास्तविक **'संस्कृति'** माना जा सकता है। मानव द्वारा सामूहिक जीवन व्यतीत करने हेतु सुव्यवस्था के रूप में निर्धारित बातें इसके अंतर्गत आती हैं। निःसन्देह इनका स्वरूप अमूर्त प्रकार का होता है। जैसे-- साहित्य, संगीत, ललितकला, भाषा, धर्म, प्रथा, मूल्य, आदर्श, विश्वास, आचार, विचार, वेश-भूषा, मान्यतायें आदि भौतिक संस्कृति के तत्व हैं। स्पष्ट है कि मनुष्य के जीवन-यापन की शैली ही उसकी संस्कृति होती है। विभिन्न व्यक्तियों के विश्वास, मूल्य, मान्यतायें, विचारधारायें, प्रथायें आदि अलग-अलग होने के कारण समाज में अनेक समुदायों या समूहों का निर्माण हो गया है। प्रत्येक समुदाय के अपने-अपने रीति-रिवाज, मान्यतायें, प्रथायें आदि होती हैं एवं वे उनके अनुरूप अपना जीवन-यापन करते हैं। इस प्रकार से राष्ट्र की एक व्यापक संस्कृति के अन्तर्गत विविध समुदायों द्वारा अलग-अलग ढंग से संस्कृतिक तत्वों, जिन्हें उपसंस्कृतियाँ कहा जा सकता है, को आत्मसात् माना जा सकता है। स्थानगत, धर्मगत या जातिगत जैसी भिन्नता के कारण उपसंस्कृतियाँ विभिन्न स्वरूपों में परिलक्षित होती हैं। जैसे उत्तर-भारत की वेशभूषा, खानपान, विवाह, रीति-रिवाज, तीज-त्यौहार आदि दक्षिण भारत से काफी भिन्न होते हैं। अतः किसी राष्ट्र के विभिन्न भूभागों, धर्मों या समुदायों आदि की विविधतायुक्त जीवनशैली, मान्यताओं, प्रथाओं, रहन-सहन, रीति-रिवाज, खान-पान ही उनकी अपनी-अपनी उपसंस्कृतियाँ हैं। उपसंस्कृतियाँ तत्सम्बन्धी समूहों की सामाजिक जीवन-शैली, धार्मिक विश्वास, विवाह की रस्म, भोजन, वेशभूषा इत्यादि से निर्धारित होती हैं।

परन्तु आधुनिक परिप्रेक्ष्य में कोई भी राष्ट्र अपनी भौगोलिक सीमाओं तक सीमित रहकर अपना विकास नहीं कर सकता है। अपने नागरिकों के सर्वांगीण समृद्धिशाली जीवन के लिए प्रत्येक राष्ट्र को विश्व के अन्य राष्ट्रों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रखना तथा उनका सहयोग प्राप्त करना आवश्यक होता है। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू का कथन है कि "प्राचीन संसार बदल गया है और प्राचीन बाधायें समाप्त होती जा रही हैं, जीवन अधिक अन्तर्राष्ट्रीय होता जा रहा है। हमें आने वाली अन्तर्राष्ट्रीयता में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करना है। इस कार्य के लिए विश्व-स्तर पर सम्पर्क रखना आवश्यक है।" ऐसी स्थिति में वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक सद्भाव व समावेशन एक ऐसी संकल्पना है जो सभी राष्ट्रों के नागरिकों को अपनी संकुचित राष्ट्रीयता की भावना को त्यागकर वैश्विक परिप्रेक्ष्य में मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध व सहयोग रखने का संदेश देती है।

प्रत्येक राष्ट्र के नागरिकों का अपनी सभ्यता, संस्कृति, रीति-व्यवहार, नीति तथा धर्म के प्रति लगाव होना स्वाभाविक ही है। कभी-कभी किसी राष्ट्र विशेष में रहने वाले नागरिक अपने राष्ट्र की कार्य प्रणाली आदि के इतने अन्ध-भक्त हो जाते हैं कि वे अपने सामने दूसरों को महत्व नहीं देते हैं। इस प्रकार की संकुचित राष्ट्रीयता उस राष्ट्र की प्रगति के मार्ग को अवरुद्ध कर देती है। इससे विभिन्न राष्ट्रों के मध्य परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, कलह तथा युद्ध की विभीषिका उत्पन्न हो जाती है। इस प्रकार की विषम परिस्थिति से मुक्ति हेतु वैश्विक स्तर पर सद्भाव की नितान्त आवश्यकता प्रतीत होती है। सांस्कृतिक सद्भाव व समावेशन समस्त राष्ट्रों को अपनी समझदारी से रहने तथा विपदाओं का मिल-जुलकर मुकाबला करने का तानाबाना प्रदान करता है। इससे विश्व के सभी राष्ट्रों को एक दूसरे की अच्छाइयों को अपनाने तथा दुर्गुणों को त्यागने की प्रेरणा मिलती है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का सद्भाव शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करने तथा वैश्विक परिप्रेक्ष्य में व्यापार व वाणिज्य के द्वारा सभी राष्ट्रों के बहुमुखी विकास को भी प्रोत्साहित करता है। यह सभी नागरिकों को प्रजातांत्रिक परिवेश एवं समान अधिकार तथा समान अवसर उपलब्ध कराकर मानवाधिकारों तथा मानवता के प्रति विश्वास बढ़ाता है।

स्पष्ट है कि वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक सद्भाव व समावेशन सभी राष्ट्रों को अपनी संकुचित राष्ट्रीय भावना की परिधि से ऊपर उठकर परस्पर वैश्विक मैत्री व सहयोग बढ़ाने का मन्तव्य देता है एवं प्रत्येक राष्ट्र के नागरिकों को विश्व का नागरिक बनने की प्रेरणा प्रदान करता है। विभिन्न देशों के बीच अनावश्यक रूप से उत्पन्न होने वाले मनोमालिन्य, कलह, अशान्ति व युद्ध के विषम तथा नकारात्मक प्रभावों से मानव जाति को बचाने के लिए वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक सद्भाव व समावेशन को बढ़ाना अत्यन्त आवश्यक है।

सांस्कृतिक समावेशन व शिक्षा

संस्कृति तथा शिक्षा मानव जीवन के दो जीवन्त पक्ष कहे जा सकते हैं। संस्कृति परिष्कृत परिवेश तथा व्यवस्था प्रदान करती है जबकि शिक्षा मानव का विकास करती है। यदि व्यक्ति का सही ढंग से विकास नहीं होता तो वह संस्कृति के अवयवों को सही परिप्रेक्ष्य में ग्रहण नहीं कर सकता है। व्यक्ति को अपनी संस्कृति का ज्ञान शिक्षा से ही होता है एवं दूसरे शब्दों में शिक्षा को संस्कृति का संवाहक कहा जा सकता है। शिक्षा और संस्कृति में सदैव अटूट सम्बन्ध रहता है। इसी कारण व्यक्ति का सांस्कृतिक विकास करना भी शिक्षा का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण उद्देश्य माना गया है। वस्तुतः संस्कृति तथा शिक्षा एक-दूसरे के पूरक हैं एवं दोनों का समन्वय होने पर ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास सम्भव होता है। **ए.के.सी. ओटावे** ने ठीक ही कहा है कि "शिक्षा किसी समाज की पूरी संस्कृति पर आधारित होती है।" **थ्योडोर ब्रामेल्ड** ने शिक्षा तथा संस्कृति के सम्बन्ध को स्पष्ट करते हुए कहा है कि, "संस्कृति के अवयवों से ही शिक्षा के सृजन होता है और यही अवयव शिक्षा के न केवल स्वयं के यंत्रों, अपितु उसके अस्तित्व के कारणों का निर्धारण भी करते हैं।" स्पष्ट है कि संस्कृति तथा शिक्षा में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। शिक्षा के बिना संस्कृति का विकास तथा हस्तान्तरण नहीं हो सकता है एवं संस्कृति विहीन शिक्षा स्वयं में निस्तेज, निष्प्राण तथा

निरर्थक होती है। इसी कारण से प्रत्येक समाज अपनी संस्कृति के अनुरूप अपने नागरिकों की शिक्षा व्यवस्था करता है।

निःसन्देह शिक्षा का प्रमुख कार्य बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है तथा इसे सम्पन्न करने के लिए शिक्षा संस्कृति का सहारा लेती है। शिक्षा संस्कृति से प्राप्त तत्वों का उपयोग करके बालक का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक विकास करके उसे पूर्ण मानव बनाती है। इस प्रकार से संस्कृति शिक्षा व्यवस्था के सभी पक्षों यथा- शिक्षा के सम्प्रत्यय व अर्थ को, शिक्षा के उद्देश्यों को, पाठ्यक्रम को, शिक्षण-विधियों को एवं शिक्षक-शिक्षार्थी व शिक्षा संस्था को सार्थक रूप से प्रभावित करती है।

एक ओर जहाँ संस्कृति शिक्षा के विभिन्न पक्षों को प्रभावित करती है, वहीं दूसरी ओर शिक्षा का भी संस्कृति पर सार्थक ढंग से प्रभाव पड़ता है। वस्तुतः सभ्यता तथा संस्कृति में समय-समय पर हो रहे परिवर्तन व विकास को शिक्षा ही प्रोत्साहन व गति प्रदान करती है। आधुनिक समाज में व्यक्ति आध्यात्मिकता से अलग होकर वैज्ञानिक व व्यावसायिक गतिविधियों को आत्मसात कर रहा है, नये-नये आविष्कार जीवन की सुख-सुविधाओं हेतु संसाधन जुटा रहे हैं तथा नवीन मूल्यों का अभ्युदय करके संस्कृति को उससे सम्पृक्त किया जा रहा है। वस्तुतः यह शैक्षिक प्रयासों का ही प्रतिफल है। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संस्कृति के अवयवों को शिक्षा के द्वारा ही हस्तान्तरित किया जाता है। शिक्षा से संस्कृति का सकारात्मक विकास ही नहीं होता वरन् वह कुत्सित मंतव्यों, कुरीतियों, द्वेष भावना जैसी नकारात्मक प्रवृत्तियों से व्यक्ति को मुक्ति दिलाकर उसे कुशल नागरिक के रूप में भी प्रतिष्ठित करती है। इस प्रकार संस्कृति के विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। शिक्षा अपनी समीक्षात्मक, चिन्तनात्मक, आलोचनात्मक, तार्किक व बौद्धिक विशिष्टताओं से संस्कृति को निरन्तर प्रगतिशील व प्रासंगिक बनाकर उसका अनुरक्षण, संवर्धन व अन्तरण करती है। निःसन्देह शिक्षा के द्वारा मानव संस्कृति के विभिन्न अवयवों का मूल्यांकन किया जाता है जो संस्कृति की विवेचना करके उसको अधिक परिपुष्ट व सम्पन्न बनाती है। शिक्षा के द्वारा समाज अर्थहीन, महत्वहीन तथा मूल्यहीन परम्पराओं, रीति-रिवाजों का परित्याग करके नूतन आदर्शों, प्रासंगिक रीति-रिवाजों व नवीन परम्पराओं की ओर अग्रसर होते हैं। किसी भी विद्यमान संस्कृति में नवीन विशिष्टताओं के समन्वित हो जाने पर तत्कालीन संस्कृति अधिक समृद्ध, सम्पन्न तथा पल्लवित हो जाती है।

स्पष्ट है कि संस्कृति को पुष्पित व पल्लवित बनाने में तथा सांस्कृतिक विरासत के सृजन, संरक्षण, विकास, परिशोधन, हस्तान्तरण व आत्मसातीकरण की प्रक्रिया में शिक्षा अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षा संस्कृति को निम्न ढंग से प्रभावित करती है--

1. शिक्षा के द्वारा नवीन सांस्कृतिक प्रतिमानों का सृजन करके संस्कृति को नवीनता प्रदान की जाती है।
2. शिक्षा अनुपयोगी, निरर्थक तथा दूषित परम्पराओं के प्रति समाज के सदस्यों का ध्यान

आकर्षित करके उन्हें त्याज्य बनाती है।

3. शिक्षा प्रचलित सांस्कृतिक प्रतिमानों में समय-सापेक्ष परिशोधन करके संस्कृति को युग-सापेक्ष बनाती है।
4. शिक्षा सांस्कृतिक विरासत का हस्तान्तरण करके संस्कृति की निरन्तरता व अक्षुण्ता बनाये रखने में सहायता करती है।
5. शिक्षा संस्कृति के अनुरूप व्यक्ति के व्यक्तित्व व व्यवहार को बनाकर भद्र नागरिकों को तैयार करती है।
6. शिक्षा सांस्कृतिक परम्पराओं के आत्मसातीकरण की ओर व्यक्ति को उन्मुख करके उनमें संस्कारबद्धता का संचार करती है।

स्पष्ट है कि सांस्कृतिक समृद्धि, फैलाव तथा समावेशन के महत्वपूर्ण कार्य में शिक्षा महती भूमिका अदा करती है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति को अपने राष्ट्र की संस्कृति के विभिन्न अवयवों की जानकारी मिलती है तथा वह तदनुरूप व्यवहार करना सीखता है। दूसरी ओर राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था उसकी संस्कृति को प्रत्यक्ष व परोक्ष दोनों ढंग से प्रभावित करती है। स्पष्ट हो जाता है कि सांस्कृतिक समावेशन व सद्भाव के निर्माण तथा विकास में शिक्षा एक अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकती है। विद्यार्थियों में सांस्कृतिक सद्भाव व समावेशन को विकसित करने के लिए राष्ट्र की शिक्षा व शासन व्यवस्था में- (1) सहृदयता व स्वतंत्र चिंतन शक्ति का विकास करने, (2) सह-अस्तित्व के साथ जीने, (3) अन्तर्सम्बन्ध बनाने, (4) अभय का माहौल बनाने, (5) देशभक्ति को सही रूप में ग्रहण करने, (6) प्रजातांत्रिक आदर्शों एवं मूल्यों का विकास करने, तथा (7) व्यावहारिकता को आत्मसात करने के सिद्धान्तों को न केवल समाहित करना होगा वरन् उन्हें व्यवहार में उतारना भी होगा। तभी सांस्कृतिक सद्भाव व समावेशन के विकास में शिक्षा एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा सार्थक भूमिका अदा कर सकती है। वस्तुतः शिक्षा एक ऐसा सशक्त साधन है जो व्यक्तियों के मन में हो रही शंकाओं, संदेहों व मलिनता को दूर करके तरह-तरह की भ्रान्तियों व तनावों का निवारण करती है। शिक्षा से ही व्यक्ति को अपनी त्रुटियों व भूलों का एहसास होता है एवं वह दूसरों की संस्कृति की अच्छाइयों को इज्जत एवं महत्व देने लगता है। अतएव शिक्षा को इस प्रकार से व्यवस्थित किया जाना चाहिए कि वह विद्यार्थियों में सांस्कृतिक सद्भाव व समावेशन विकसित कर सकें।

प्रायः नागरिकों को प्रारम्भ से ही सिखाया जाता है कि अपने देश से प्रेम करो व अपने देश को महान समझो, इससे प्रकारान्तर में बालक के अन्दर संकीर्ण दृष्टिकोण उत्पन्न होने लगता है। यह संकुचित राष्ट्रवादी विचारधारा ही किसी न किसी रूप में विश्व की विभिन्न समस्याओं, विडम्बनाओं, जटिलताओं व विषमताओं के लिए उत्तरदायी कही जा सकती है। शिक्षा इसके निराकरण में सार्थक भूमिका अदा कर सकती है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के द्वारा संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन अर्थात् यूनेस्को का गठन अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शैक्षक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक सद्भाव कायम

करने हेतु किया गया है। यूनेस्को का उद्देश्य विश्व शान्ति तथा सुरक्षा को कायम रखना है एवं विश्व के सभी व्यक्तियों को बिना जाति, धर्म, रंग, भाषा के भेदभाव के समता व स्वतंत्रता का अधिकार प्राप्त कराना है। इसके अलावा यह संगठन सभी राष्ट्रों के नागरिकों को मानवाधिकार तथा न्याय से परिपूर्ण जीवन व्यतीत करने का अधिकार प्रदान करने के संकल्प को पूरा करने में योगदान करता है। यूनेस्को इसके लिए विज्ञान, कला, शिक्षा तथा संस्कृति का सहयोग लेने पर विशेष जोर देता है। इस कार्य हेतु यूनेस्को ने अपने तीन कार्यक्षेत्र क्रमशः (I) सभी देश आपस में एक दूसरे को समझने के लिए संचार साधनों का प्रयोग करें एवं विचारों का आदान-प्रदान सुलभ बनाये, (II) सभी देश शिक्षा तथा संस्कृति के प्रचार व विकास का कार्य प्रमुखता के साथ करें, (III) सभी देशों में सहयोग स्थापित करने हेतु विभिन्न स्रोतों से जानकारी प्राप्त करेंदृ को निर्धारित किया है।

वस्तुतः विविध क्षेत्रों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव की जरूरत को रेखांकित करते हुए यूनेस्को की भूमिका में कहा गया है- ''चूँकि युद्ध मनुष्यों के मस्तिष्क से आरम्भ होते हैं, इसलिए शान्ति की रक्षा के साधन भी मनुष्य के मस्तिष्क से ही निर्मित किये जाने चाहिए, न्याय तथा शान्ति बनाये रखने के लिए मानवता की रक्षा तथा संस्कृति का व्यापक प्रसार करना मानव की महत्ता के लिए आवश्यक है। यह एक ऐसा पवित्र कर्त्तव्य है कि जो प्रत्येक देश को आपसी सहयोग की भावना के आधार पर पूरा करना चाहिए। केवल संस्कारों के राजनीतिक तथा आर्थिक समझौतों तथा बन्धनों द्वारा स्थापित की हुई शान्ति को ऐसी शान्ति कहा जा सकता है जिसे संसार के सभी लोग एकमत होकर स्वीकार कर लें। इस दृष्टि से यदि शान्ति को कभी असफल नहीं होना है तो उसे मानव जाति की बौद्धिक तथा नैतिक अखण्डता पर आधारित होना चाहिए।''

कुम्भ पर्व एवं समावेशी भारतीय संस्कृति

विद्वानों के द्वारा आम सम्मति से कुम्भ पर्व को विश्व का सबसे बड़ा तीर्थ या विश्व के सबसे बड़े जादुई धार्मिक मेले के रूप में देखा, बताया व स्वीकार किया जाता है। वस्तुतः सम्पूर्ण भारत में अत्यन्त प्राचीन काल से ही मेलों व उत्सवों को समूह जीवन की एक महत्वपूर्ण विशेषता के रूप में माना जाता रहा है एवं विभिन्न पावन अवसरों पर इन्हें सांस्कृतिक आयोजनों के रूप में उत्साह व उल्लास के साथ मनाया जाता रहा है। कुम्भ पर्व जन स्नान का एक ऐसा ही पर्व है जिसमें लाखों-करोड़ों की संख्या में जन सैलाब उमड़कर निर्धारित तिथियों पर नदियों के जल में स्नान ध्यान करता है, पूजा-अर्चना करता है तथा दान-दक्षिणा देकर धर्म लाभ अर्जित करता है। निःसन्देह हिन्दुत्व के धार्मिक, सामाजिक, आध्यात्मिक व सांस्कृतिक आधारों को सुदृढ़ करने में कुम्भ पर्व ने एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। कुम्भ पर्व के प्रारम्भ होने के सम्बन्ध में कोई स्पष्ट, पुष्ट या मान्य प्रमाण का अभाव तो है ही, साथ ही इसके प्रारम्भ के सही निर्धारण के प्रयास विभिन्न पौराणिक गाथाओं में उलझकर विलुप्त से हो गये हैं एवं इसे अब हिन्दुओं के एक अत्यन्त प्राचीन काल से चले आ रहे तथा मुख्य तिथियों पर आधारित धार्मिक, आध्यात्मिक व सामाजिक स्नान पर्व

आयोजन के रूप में बहुधा से स्वीकार किया जाता है। कुम्भ की पहचान अखाड़ों के जुलूसों व शाही स्नानों, साधुओं व सन्त महात्माओं के डेरों, मठाधीशों व महामण्डलेश्वरों के समागम एवं स्नानार्थियों व कल्पवासियों से की जा सकती है। निःसन्देह कुम्भ का प्रतीकात्मक तात्पर्य देव व असुर, सत् व असत, पक्ष व विपक्ष तथा सहयोग व प्रतिरोध की संक्रान्ति से भी लगाया जा सकता है, एक ऐसी संक्रान्ति जो सामूहिक प्रयासों से प्रकृति में अनुकूलता व सन्तुलन लाने का प्रयास करती है। इसमें सर्वाधिक महत्व सामूहिकता का है जो सामूहिक चेतना, सामूहिक उत्कर्ष, सामूहिक संयोग, सामूहिक अनुभूति, सामूहिक आत्मबोध, सामूहिक कृत्य आदि के रूप में प्रस्फुटित होती है। इसमें भारतीय चिन्तन, साधना तथा ज्ञान-परम्परा को मथकर अमृत रूपी समावेशिता को विवेचित किया जाता है तथा इसी अमृत का पान करना, कुम्भ तीर्थयात्रा का पाथेय माना जाता है। आस्था का अपना एक अलग विज्ञान होता है। पर्यावरण संरक्षण, सह-अस्तित्व की भावना, आकाशीय ग्रहीय चलन के जैविक प्रभाव, सामंजस्यता की चेतना, अनुकूलन प्रवृत्ति, सद्विचारों की गवेषणा आदि को गतिमान करने वाली कुम्भ परम्परा विराट जनप्रवाह को पावन जलधारा में अवगाहन का निमंत्रण देती आयी है। सार रूप में कहा जा सकता है कि रचनात्मक विचार-विमर्श, ज्ञान-समागम, विवेक-शक्ति के माध्यम से नकारात्मक शक्तियों के प्रभाव को न्यून करने की कोशिश करना तथा इस पावन उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एकजुट होने की परिपाटी ही कुम्भ है।

यद्यपि कुम्भ पर्व लगभग एक माह तक चलता है परन्तु जन स्नान के लिए कुछ तिथियाँ अधिक महत्वपूर्ण या उपयुक्त मानी जाती हैं। सामान्यतः हरिद्वार कुम्भ में हर की पैड़ी पर चैत्र माह की पूर्णिमा को तथा उज्जैन कुम्भ में रामघाट पर वैशाख माह की पूर्णिमा को पवित्र स्नान दिवस माना जाता है जबकि प्रयाग कुम्भ में संगम तट पर माघ माह की अमावस्या को व नासिक कुम्भ में रामघाट पर भाद्रपद की अमावस्या को पवित्र स्नान का मुख्य दिन माना जाता है।

कुम्भ पर्व के दौरान मुख्य स्नानपर्वों पर तीर्थयात्रियों, साधुओं व ज्ञानियों के महासंगम से लघुभारत की संकल्पना सहज ही जीवन्त हो उठती है। तमाम तकनीकी क्रान्ति के बावजूद तथा काल के थपेड़ों से अविचलित रहते हुए ये पर्व धार्मिक आस्थाओं की रंगीनियाँ सजाकर भारत की विराट् सांस्कृतिक विरासत व परम्पराओं की अलबेली कहानियों से विश्व समुदाय को रिझाते हैं, अध्यात्म के गूढ़ दार्शनिक तत्वों की विवेचना करते हैं एवं असंयमित जीवनशैली की विसंगतियों को दूर करने का आग्रह करते हैं। धर्म के माध्यम से पर्यावरण को संरक्षित करने की अवधारणा को अक्षुण्ण व अवबोधित रखना भी कुम्भ पर्व की जीवन्तता का प्रतीक कहा जा सकता है जो मासपर्यन्त कल्पवास के रूप में संयमित दिनचर्या, पर्यावरण प्रेम, अनुशासन, दान द्वारा सम्पत्ति का समवितरण, मनन-चिन्तन, आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्ति व पूजा-पाठ जैसे इन्द्रधनुषी रंगों से रंगी परम्परा के स्रोतों के साथ दीर्घ काल से नदी संस्कृति के रूप में लोकप्रिय रहा है। कुम्भ का परिवेश वस्तुतः आस्था व चिन्तन का मिलन कराकर जीवन मूल्यों को संवर्धित करने का अवसर प्रदान करता है। प्रयाग कुम्भ की अपार महिमा में तीन तत्व-खगोलीय ग्रहों का योग, तीर्थराज प्रयाग की धारा तथा त्रिवेणी का संगम तट-

सम्मिलित रहते हैं। यहाँ आने वाले तीर्थयात्री उत्तम खगोलिक योग-नक्षत्र में इस पवित्र स्थान का अवगाहन करके, मनीषियों की ओजस्वी वाणी का श्रवण करके तथा वैचारिक मंथन में प्रतिभाग करके परम चेतना का आवाहन करते हैं। वस्तुतः यहाँ होने वाले व्यापक वैचारिक मंथन का जब व्यक्ति के अपने आन्तरिक विवेक के साथ संघर्ष होता है तब उसे अनुसंधान करके सत्य की पहचान करने में अप्रतिम सहायता मिलती है। व्यक्ति-निष्ठता को कम करना तथा पूर्वग्रहों से बचना ही आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के दो प्रमुख लक्षण हैं एवं कुम्भ पर्व इन दोनों लक्षणों को अपने आप में समाविष्ट करके विज्ञान तथा अध्यात्म के बीच सेतु निर्माण का कार्य करता रहा है। निःसन्देह विज्ञान आधारित आधुनिकता का अपना महत्व है परन्तु आधुनिकता की दौड़ में हम अपने अतीत की समृद्ध विरासत कदापि नहीं भूल सकते हैं। आध्यात्मिक व भौतिक मूल्यों के संश्लेषण, ज्ञान, विवेक व चेतना के परस्पर सामंजस्य, गंभीर व गहन विचारों के लिए मन की उन्मुक्तता, समस्याओं व चुनौतियों के प्रति तत्परता, सदाशयता व आत्मबलिदान की प्रवृत्ति, भावशून्यता व पथभ्रष्टता का उन्मूलन, सामाजिक विभेदों व कुरीतियों का निराकरण; समरसता व सशक्तीकरण का माहौल; बेरोजगारी व अशान्ति का उन्मूलन तथा लोकहित व परिष्कार के संकल्प के द्वारा निश्चय ही एक क्रान्ति लाने की आवश्यकता है एवं कुम्भ पर्व इस वैचारिक आध्यात्मिक क्रान्ति की पृष्ठभूमि तैयार करके सर्व समावेशी भारतीय संस्कृति का उद्घोष करते हैं। एक कुम्भ से दूसरे कुम्भ के बीच की कालावधि अपने साथ अनेक प्रकार के प्रश्नों, गुत्थियों व चुनौतियों को लेकर आती हैं। संचार क्रान्ति, ज्ञान के विस्फोट व प्रौद्योगिकी विरक्त के बावजूद भी भारतीय साधकों, तपस्वियों, मनीषियों व आराधकों के द्वारा अर्जित, विकसित व पोषित ज्ञान, अवबोध तथा विवेक की उपलब्धता व इसका लाभ जनसामान्य तक पहुँचाना अत्यन्त कठिन कार्य है। कुम्भ के दौरान इन विभूतियों के असीम ज्ञान, वैचारिक वैभव तथा सांस्कृतिक परम्परा के सानिध्य, संवाद, संसर्ग, संगति व संरक्षण से होने वाले विमर्श, विचारमंथन व शास्त्रार्थ आदि से जन समुदाय अत्यधिक लाभान्वित होता है तथा ज्ञानामृत का पान करता है। यह आज का एक यथार्थ परन्तु कटु सत्य है कि विशेषज्ञता के नाम पर अपने-अपने ज्ञान के आइवरी टावर में बन्द इस तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग के द्वारा संवादहीनता के कारण प्रगति, विकास व सफलता की सम्भावनाओं को सीमित करके तरह-तरह की चुनौतियों को प्रस्तुत किया जा रहा है। जनहित, समाजहित व राष्ट्रहित के नाम पर स्व-हित, परिवार-हित व वर्ग-हित का प्रोत्साहन कर रहे सामाजिक व राजनैतिक नेतागण भी सामाजिक जन-जागरण, पुनर्रचना व पुनर्निर्माण की आवश्यकता को परोक्षतः रेखांकित करते रहते हैं। अहमन्यता के इस दौर में व्यापकता, उदारता, सहनशीलता, औदात्य, सह-अस्तित्व व सामंजस्य जैसे शब्द अर्थहीन, भावहीन व प्राणहीन हो गये हैं। ऐसी विषम स्थिति में कुम्भ पर्व जैसे दीर्घकालीन अवधि वाले आयोजन सभी नागरिकों को आत्म-विश्लेषण, सम्यक चेतना, निरन्तर परिष्कार तथा समावेशी पुनर्निमाण के विविध अवसर, आधार व पृष्ठभूमि प्रदान करते हैं।

स्पष्ट है कि खगोलीय योग का अनुकूल संयोग घटित होने पर ही कुम्भ का आयोजन होता है। सूर्य प्राण का, चन्द्र मन का तथा बृहस्पति बुद्धि का प्रतीक माना जाता है एवं इन

तीनों के संयोग के बिना प्रयाग का कुम्भ सम्भव नहीं होता है। वस्तुतः बुद्धि के साथ मन व प्राण का साथ ही मानव उपलब्धियों के अवगाहन का सार बन सकता है। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान ने भलीभाँति सिद्ध कर दिया है कि आकाश गंगा व ब्रह्माण्ड में विद्यमान विभिन्न ग्रह-नक्षत्र न केवल एक दूसरे को प्रभावित करते हैं वरन् पृथ्वी पर उत्पन्न होने वाली विभिन्न परिस्थितियाँ भी इनके प्रभाव से अछूती नहीं रहती हैं। इसके फलस्वरूप प्राचीन भारतीय परम्पराओं की थाती को अंध-विश्वास मानने वाले अनेक तथाकथित आधुनिक मत के व्यक्तियों को धीरे-धीरे उन परम्पराओं में निहित ज्ञान-विज्ञान के तत्वों को स्वीकार करने पर विवश होना पड़ रहा है। यही कारण है कि अब भारतीय परम्परा में सदियों से विद्यमान धार्मिक विश्वास को इंद्रियों का दमन करने, मन का शमन करने तथा दैवीय सम्पदा का अर्जन करने के त्रि-आयामी प्रयासों के रूप में देखा जा सकता है। परन्तु कुम्भ मेले को केवल एक धार्मिक आयोजन के रूप में मानना, देखना व समझना निःसन्देह इसके महत्व को कम करके आंकना होगा। कुम्भ मेले के सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक तथा समावेशिक आयामों की ओर भी ध्यान देना महत्वपूर्ण है। भारत के विभिन्न-भूभागों से आये हुए विविध प्रकृति के अनेकानेक जनसमूह भारत की एक समन्वयकारी संस्कृति की छवि प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार देश-विदेश से यहाँ कुम्भ में आने वाले लोगों को एक **लघु-कुम्भ** भारत का दर्शन कराता है। कुम्भ में पधारे साधु-संन्यासियों, संतों-मनीषियों तथा प्रातिभ-प्रबुद्ध वर्ग की जमात भारतीय समाज की गरिमापूर्ण उदात्त मनीषा का दिग्दर्शन कराती है। कुम्भ के अवसर पर विभिन्न समुदायों, संस्कृतियों व समाजों का एक अनुपम संगम होता है एवं वे एक दूसरे को जानने, समझने व अपनाने का अवसर पाते हैं। इस सामाजिक व सांस्कृतिक अंर्तक्रिया व समावेशन से अन्य समुदायों के बारे में सकारात्मक जानकारी मिलती है तथा लाखों-करोड़ों लोग जाति, धर्म, वर्ग, प्रान्त, राष्ट्र तथा भाषा की दीवारों को पीछे छोड़ कर संगम के पवित्र जल में एकाकार भाव से स्नान, ध्यान व तपस्या करते हुए एक दूसरे से जुड़ जाते हैं। महान विभूतियों, ज्ञानीजनों तथा साधु-संतों के दर्शन, सान्निध्य व सत्संग का सौभाग्य सामान्य जन को भारतीय धर्म व संस्कृति से जोड़ने में एक महत्वपूर्ण कार्य करता है। वस्तुतः कुम्भ पर्व को अनन्त सत्य की खोज एवं शान्ति प्राप्ति की दिशा में एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में स्वीकार करना ही समसामयिक कहा जा सकता है। कुम्भ मेले के कुछ प्रमुख आयामों म- (I) भारत के इतिहास, दर्शन व कला के साथ-साथ उसकी सांस्कृतिक विरासत का भावी पीढ़ियों तक हस्तान्तरण करना, (II) सामाजिक, सांस्कृतिक व वैचारिक एकता, विश्वबन्धुत्व, समग्रता तथा समावेशन की सद्भावना को बढ़ाना, (III) पर्यावरणीय शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा तथा मूल्य शिक्षा को प्रोत्साहित करना, (IV) योग, अध्यात्म तथा कल्पवास के वैज्ञानिक पक्ष को जानना, (V) विशिष्ट समागम प्रबन्धन, आपदा प्रबन्धन व पर्यावरण संरक्षण के प्रति संचेतना को बढ़ाना तथा इनके प्रशिक्षण की तैयारी सुनिश्चित करना एवं (VI) भौगोलिक ज्ञान, परिवहन व यातायात सम्बन्धी ज्ञान तथा सुरक्षा व सतर्कता की व्यूहरचनाओं को प्रोत्साहित करना आदि आते हैं। इन सबसे मानवीय,

राष्ट्रीय व सामाजिक एकीकरण को बढ़ावा मिलता है तथा विघटन प्रदूषण, विलोपन, कुंठा, अज्ञान व आतंकवाद जैसी दुष्प्रवृत्तियों का निराकरण करके मानव को सच्चे सामाजिक सरोकारों से जोड़ने में सहायता मिलती है।

कुम्भ पर्व न केवल इसमें प्रतिभाग करने वाले जनसमुदाय वरन् सम्पूर्ण विश्व को भारत की विविध प्रकृति की सांस्कृतिक धरोहरों, रीति-रिवाजों, परम्पराओं, आचार-विचारों, धार्मिक क्रिया-कलापों आदि की मनोहारी झाँकी का दर्शन कराता है। इससे लोगों के मन में भारत की उच्चस्तरीय विचार-पद्धति, मत-परम्पराओं, रीति-रिवाजों, शाश्वत मूल्यों, आस्था-उपासना आदि के प्रति सम्मान का भाव जाग्रत होता है जो भारत को वैश्विक पटल पर एक उच्च स्थान प्रदान करता है। अनपढ़, अधेड़ों व बुजुर्गों तथा महिलाओं को साक्षर बनाने, शिक्षा प्राप्ति के लाभों से अवगत कराने तथा लैंगिक पक्षपात, पर्यावरण प्रदूषण, दलित उत्पीड़न, बाल-अपराध, दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या जैसी विभिन्न कुरीतियों के प्रति संचेतना जगाने वाले तरह-तरह अभियान भी इस अवसर पर विभिन्न सरकारी, सहकारी व स्वयं सेवी संस्थाओं एवं वैयक्तिक उद्यमों के द्वारा किये जाते हैं। प्रयाग की पुण्य भूमि पर देश-विदेश से आये लोगों का संगम उन्हें दूसरे देश, प्रदेशों की वेश-भूषा, खान-पान, व्यवहार से परिचित कराता है, इससे सामंजस्यता, विश्व बन्धुत्व तथा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना जाग्रत होती है। कुम्भ क्षेत्र में पधारे विद्वान, मनीषी साधु, सन्त, संन्यासी आदि आकर्षण के विशेष केन्द्र होते हैं। इनके शिविरों में निरन्तर आलोचना, संवाद, प्रवचन, सलाह व संगति का सिलसिला जारी रहता है जो प्रायः प्रसिद्ध धार्मिक ग्रन्थों के गहन विश्लेषण के आलोक में किये जाते हैं तथा भारी भीड़ उनके उद्गारों को सुनने के लिये लालायित रहती है। यहाँ न सिर्फ हिन्दू वरन् विभिन्न जाति, धर्म, आयु, विश्वास, सामर्थ्य के लाखों-करोड़ों लोग अपने संकीर्ण भेदभावों समस्त दुर्भावनाओं व मनो-मालिन्यों को मिटाकर एक साथ पतित पावनी गंगा, यमुना व उनके संगम में स्नान करके भारत को एकता के सूत्र में बाँधने में सहायक होते हैं। वास्तव में नैतिक एवं मूल्य शिक्षा को व्यावहारिक ढंग से सहजता के साथ प्रदान करने एवं प्राप्त करने का यह अद्भुत स्थल होता है। कुम्भ का प्रसंग सभी को निरन्तर परिष्कार की प्रेरणा देकर उन्नयन, विकास व प्रसार के महाकार्य का हेतु बन जाता है। इससे संतुलित, समर्थ व समावेशी व्यक्तित्व, सम्पन्न नागरिकों के निर्माण में अभूतपूर्व सहायता मिलती है।

निःसन्देह कुम्भ पर्व के इस विशाल आयोजन का केवल धार्मिक, सांस्कृतिक या पारमार्थिक उद्देश्य ही नहीं है, वरन् जीवन के हर पहलू के संदर्भ में यहाँ ज्ञान की अथाह सामग्री विद्यमान रहती है। यह मेला भारत की गौरवशाली ऐतिहासिक, दार्शनिक व सांस्कृतिक विरासत व परम्परा को उजागर करता है जिसका अध्ययन, मनन व शोध करने के लिए विदेशी विद्वान भी बड़ी संख्या में यहाँ आते हैं। भारत जैसे बहुजातीय, बहुल सांस्कृतिक, बहुभाषायी और बहुर्धार्मिक देश की अनेकता में एकता के जैसे दर्शन कुम्भ पर्व में हो जाते हैं, वैसे दर्शन अन्यत्र कदापि सम्भव नहीं हो सकते हैं। इसलिए राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, सामाजिक एकता तथा समावेशीय दृष्टि से इस आयोजन के महत्व को कम

करके नहीं आंका जा सकता है। देश-विदेश, जाति-धर्म, ऊँच-नीच, छोटे-बड़े, गरीब-अमीर अनपढ़-शिष्ट आदि के भेदभाव को भुलाकर इतना अपार जनसमूह यहाँ उमड़ता है, इसलिए इस पर्व के आकर्षण भी विविध प्रकार के है। वस्तुतः आत्महीनता तथा आत्म-मुग्धता दोनों ही सम्यक व्यक्तित्व के निर्माण की दृष्टि से हानिकारक होती है। ऐसे में आत्मविश्लेषण से कमियों की जानकारी व नये मार्गों का संधान ही व्यक्ति को सफलता की ओर अग्रसर कर सकता है। इसी क्रम में कहा जा सकता है कि ज्ञानहीन कर्म तथा कर्महीन ज्ञान दोनों ही अन्ततः निष्फल सिद्ध होते हैं। कुम्भ पर्व के दौरान संवाद, शास्त्रार्थ व परिष्कार की सम्भावनाएँ एक महत्वपूर्ण सन्देश प्रदान करती है। विभिन्न धर्म-सम्प्रदायों के साधु-सन्तों का पवित्र संगम मानवता को भले-बुरे का विवेक प्रदान करने में सक्षम है। कहा भी गया है कि **'बिनु सत्संग विवेक न होई'।** केवल भारत ही नहीं, विश्व के कोने-कोने से आए हुए श्रद्धालुओं को संगम पर एकत्र देखकर अपने देश के प्रति हमारे मानस में ऐसी पवित्र समर्पण की भावना उद्वेलित होती है कि उस परिशुद्धता में हमारे विकार दूर होने लगते हैं। यहाँ नैतिक मूल्यों के सवंर्धन का अप्रतिम वातावरण उपस्थित होता है जो बहुत सीमा तक तनाव प्रबन्धन एवं मानसिक स्वास्थ्य की अनुकूलता की दिशा में अतीव योगदानकारक है। **'कल्पवास'** की अवधि में श्रद्धालुओं को अमरत्व के भाव की प्राप्ति होती है, ऐसा कहा जाता है। यह **'अमरत्व'** ऐसा नहीं है कि बाहर से कोई अमृत की बूँदें भौतिक रूप में बरसती हैं तथा व्यक्ति उन्हें ग्रहण करता है, बल्कि ये अमृतबिन्दु ज्ञान, विवेक के यही मुक्ताफल हैं जो इस पर्व में विभिन्न जानकारियों तथा सत्संग के माध्यम से अन्तर्मन के साक्षात् अनुभव होते हैं तथा व्यक्ति का मन उनमें निष्णात हो जाता है। गंगा-यमुना व अदृश्य सरस्वती की पवित्रता तथा महिमा के कारण ही इसका अपार वैभव जन-जन को आकर्षित करता है। वैज्ञानिक, भौगोलिक, खगोलीय, ज्योतिषीय, पर्यावरणीय, प्रशासनिक तथा व्यापारिक अनेक दृष्टियों से कुम्भ पर्व का समावेशिक महत्व बहुत अधिक है। कुम्भ पर्व जैसे विराट् आयोजन के लिए प्रशासनिक स्तर पर नियोजन, तैयारी व व्यवस्था एक अत्यन्त चुनौतीपूर्ण कार्य है जो अनेक माह पूर्व से प्रारम्भ हो जाता है। प्रशासन के प्रशिक्षुओं के लिए भी मेला-प्रबन्धन का क्षेत्र ज्ञान का महत्वपूर्ण क्षेत्र है। देश के भिन्न-भिन्न भागो से आये हुए व्यापारी, शिल्पी, कारीगर, कलाकार तथा संगीतज्ञ अपने कौशल का यहाँ प्रदर्शन करते हैं, इसलिए जन-सामान्य को इस मेले में हर प्रकार की सामग्री, ज्ञान-विज्ञान तथा कला का अनूठा समागम एक जगह उपलब्ध हो जाता है। शिक्षाशास्त्रियों, राजनेताओं, समाजवेत्ताओं, मनोवैज्ञानिकों व औद्योगिक घरानों के साथ-साथ प्रशासन व प्रबन्धन के जिज्ञासुओं तथा शोधार्थियों को यहाँ बृहद् ज्ञान के अनेकानेक आयाम तथा तत्सम्बन्धी कौशल एक साथ देखने को मिल जायेंगे।

निःसन्देह कुम्भ मेले में आने वाले पर्यटकों, जिज्ञासुओं एवं श्रद्धालुओं में भौगोलिक, पर्यावरणीय एवं यातायात व परिवहन सम्बन्धी ज्ञान में स्वभावतः वृद्धि हो जाती है। तीर्थराज प्रयाग में गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती नदी के पवित्र संगम तट पर लाखों-करोड़ों की संख्या में देश के कोने-कोने से व विदेशों से श्रद्धालु एवं पर्यटक आकर अपना मनोरंजन करते

हैं और साथ ही साथ विभिन्न प्रकार के ज्ञान-विज्ञान एवं सांस्कृतिक-धार्मिक एकता की अमूल्य धरोहर का लाभ उठाते हैं एवं समावेशी संस्कृति का व्यापक प्रचार-प्रसार करके वैयक्तिक स्तर पर मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

सन्दर्भ

1. *अग्रवाल, मीनू (2013)*: *कुम्भ पर्व प्रयाग, इलाहाबादः राजपाल एंड कम्पनी।*
2. *क्रासा, मिलोस्लाव (1965) ; 'कुम्भ मेलाः द ग्रेटेस्ट पिलग्रीमेज इन दा वर्ल्ड', न्यू ओरिन्ट*
3. *गुप्ता, एस.पी. एवं अलका गुप्ता (2019) : भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।*
4. *गुप्ता, मोतीलाल(2013) : भारत में समाज, जयपुरः राजस्थान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।*
5. *दिनकर, रामधारी सिंह (2009) : संस्कृति के चार अध्याय, इलाहाबादः लोकभारती प्रकाशन*
6. *दूबे, देवी प्रसाद (2009) : कुम्भपर्व प्रयाग, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन*
7. *दूबे, डी.पी. (सं.) (2013) : कुम्भ मेला, पिलग्रीमेज टू द ग्रेटेस्ट कॉस्मिक फेयर इलाहाबादः सोसाइटी ऑफ पिल्ग्रीमेज स्टडीज।*
8. *दूबे, एच. एन. (2012) : भारतीय संस्कृति, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।*
9. *नेहरू, जवाहरलाल (1961) : दा डिस्कवरी ऑफ इंण्डिया, न्यू देल्हीः नेहरू मेमोरियल फण्ड।*
10. *महात्मा गाँधी (2010) : हिन्द स्वराज, इलाहाबादः कस्तूरबा गाँधी केन्द्रः प्रभात प्रकाशन*
11. *बनर्जी, एन.एन. (1977) : पूर्ण कुम्भ ऐट प्रयाग, हिन्दुत्व, 9-10*



आलेख



वैदिक वाङ्मय में प्रतिच्छवित समावेशी प्रवृत्ति

डॉ. विनोद कुमार गुप्त

उपनिदेशक/एसो0 प्रोफेसर संस्कृत (मानविकी विद्याशाखा)
उ0प्र0राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

''एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति'', **''आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्''** की भव्यभावना से आप्लावित भारतीय संस्कृति में समावेशी प्रवृत्ति अर्थात् सामाजिक समरसता, एकता एवं साम्प्रदायिक सद्भाव के दो पक्ष हमारे सामने उपस्थित होते हैं- व्यावहारिक एवं सैद्धान्तिक। भारतीय गाँव-गिराँव, शहर, नदीतट आदि स्थलों पर आयोजित किये जाने वाले पर्व, मेले हमारी वैविध्यपूर्ण संस्कृति के संवाहक हुआ करते हैं। सामाजिक, राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक पर्वों के आयोजन पर विना किसी भेद-भाव के विभिन्न जाति वर्ग के लोग एकत्रित होकर बड़े उत्साह के साथ पर्व/मेले में प्रतिभाग करते हैं। इन पर्वों में कुम्भ पर्व अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, जो सनातन संस्कृति का प्रतीक है। पुरातन मान्यताओं को संरक्षित करने वाला कुम्भ पर्व एक अद्भुत स्वतः स्फूर्त जन आयोजन है, जिसमें विना किसी आमन्त्रण के केवल ग्रहों की स्थिति के आधार पर विविध मत, पंथ, सम्प्रदाय के अनुयायी एवं आस्थासम्पन्न करोड़ों लोग देश-विदेश से आकर परस्पर सद्भाव एवं साम्मनस्य के साथ स्नान कर पुण्यार्जन करते हैं एवं एक-दूसरे की संस्कृति से परिचित होते हैं। अन्य शब्दों में यह कहा जा सकता है कि भारत की सनातन सांस्कृतिक परम्परा को अक्षुण्ण रखने के लिये सनातन हितचिन्तन में सतत संलग्न तत्त्वदर्शी ऋषि तथा सन्त परम्परा ने कुम्भ पर्व जैसे सामाजिक, साम्प्रदायिक सद्भाव के प्रतीक मेले को एक ऐसे धार्मिक अनुष्ठान का स्वरूप प्रदान किया, जहाँ विविध मत-मतान्तरों के अनुयायी, पूज्य सन्तगण आदि विविध

सम्प्रदायों, मानवीय मूल्यों, राष्ट्रीय समस्याओं, परब्रह्म के चिन्तन आदि के विषय में विमर्श हुआ करता है तथा राष्ट्र ही नहीं, अपितु विश्व के प्रत्येक अंचल से लोग आकर इस पर्व पर एकत्रित होते हैं तथा अपनी सामर्थ्य के अनुसार अत्यन्त प्रेमपूर्वक सद्भाव के साथ यहाँ निवास करते हैं एवं पूर्व में किये गये पापकर्मों का प्रायश्चित्त कर पुण्य की गठरी अपने साथ लेकर समरसता के भाव से वापस लौट जाते हैं। इस दौरान लोगों के मन में भारत की उदात्त परम्पराओं, रीति-रिवाजों के प्रति सम्मान का भाव प्रादुर्भूत होता है। यही भाव भारतीय संस्कृति को वैश्विक पटल पर पहुँचा देता है। अतः कुम्भ पर्व को यदि भारतीय संस्कृति की समावेशी-प्रवृत्ति का मुक्त विश्वविद्यालय कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

भारतीय संस्कृति में समावेशिता का भाव भरने में वैदिक वाङ्मय का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। समावेशी-प्रवृत्ति का सैद्धान्तिक पक्ष इसमें समुपलब्ध होता है, जिसमें ऋषियों ने मानवमात्र के कल्याण की बात करते हुए समस्त संसार को एक परिवार माना और कहा कि हमारे मार्ग भिन्न-भिन्न हो सकते हैं, किन्तु लक्ष्य सबका एक ही है। जैसे नदियाँ अनेक हैं, किन्तु वे सभी नदियाँ समुद्र में जाकर विलीन हो जाती हैं। ऋषियों ने न केवल राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव को बनाये रखने के लिये निर्देश दिया, अपितु सामाजिक एवं पारिवारिक समरसता तथा सद्भाव पर बल दिया। वस्तुतः जब सामाजिक एवं पारिवारिक समरसता होती है तभी वैश्विक समरसता का भाव हमारे मन में प्रस्फुटित होता है और यही हमारी समावेशी संस्कृति का आधार है।

समावेशी की आधारभूमि के रूप में जिस तत्त्व की सबसे बड़ी भूमिका है, वह है- विश्वबन्धुत्व प्रवृत्ति की भावना। वैदिक वाङ्मय का परिशीलन करने पर हमें यह बोध होता है कि इसमें **''वसुधैव कुटुम्बकम्''**, **''सर्वे भवन्तु सुखिनः''** की भावना पदे-पदे परिलक्षित होती है। आज पृथक्तावाद का कृष्णसर्प सिर उठा रहा है जिसके परिणामस्वरूप कहीं क्षेत्रीयता के आधार पर, कहीं साम्प्रदायिकता के आधार पर, कहीं भाषा के आधार पर तो कहीं जातिवर्ग के आधार पर पृथकतावाद का विष हमारी संस्कृति की जड़ों को खोखला करने में लगा हुआ है। भीषण रक्तपात कर अहिंसावादी संस्कृति को रक्तरंजित करने पर तुला हुआ है। अतः इन विकृतियों के समाधान के लिये हम वेदमुखापेक्षी होते हैं। वेद में विश्वबन्धुत्व एवं मैत्रीपूर्ण सद्भाव के निर्देश प्राप्त होते हैं, जो समावेशी-प्रवृत्ति की ओर हमें उन्मुख करते हैं। यजुर्वेद में परस्पर एक-दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखे जाने एवं समझे जाने का निर्देश है। वस्तुतः मित्रता वह सद्गुण है, जिसके द्वारा विश्वबन्धुत्व की भावना जागृत होती है तथा मानव मात्र के प्रति सद्भाव एवं सौहार्द्र अभिव्यक्त होता है। फलतः मन में एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या-भाव एवं साम्प्रदायिक मलिनता नहीं आ पाती-

मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।

(यजुर्वेद 36/98)

एक-दूसरे के प्रति समरसता का सशक्त माध्यम है- समरसता भोज, जिसमें सभी मत, पंथ के लोग एक साथ बैठकर भोजन करते हैं। परिणामतः परस्पर साम्मनस्य उत्पन्न होता है एवं राष्ट्रीय भावना विकसित होती है। विश्वबन्धुत्व की भावना के बीज रूप में संगठन की चर्चा करते हुए ऋषि कहता है कि हम सभी एक साथ भोजन एवं जलपान करें-

''सग्धिश्च मे सपीतिश्च मे''

(यजुर्वेद 18/9)

एक साथ भोजन करने को 'सग्धि' (सहभोज) तथा एक साथ जलपान को 'सपीति' कहा जाता है। विश्वबन्धुत्व का ही पोषक है समदृष्टि या समतामूलक भाव। आज का व्यक्ति समतामूलक न होकर स्वार्थमूलक हो गया है, जिस कारण हर स्तर पर अनेक विसंगतियाँ उत्पन्न हो गयी हैं। अतः ऋग्वेद का वह मन्त्र, जिसमें ऋषि ने साथ-साथ बोलने, चलने आदि का आदेश दिया है, ध्यातव्य है-

''सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवाभागं यथापूर्वे संजानाना उपासते।।''

अथर्ववेद में एक स्थल पर कहा गया है कि हमारी भाषायें तथा पूजापद्धति आदि अलग-अलग हो सकते हैं, किन्तु ये विवाद का कारण नहीं बनना चाहिए। हमें एक परिवार की तरह उपलब्ध साधनों एवं प्राकृतिक सम्पदा का मिलकर उसी प्रकार उपभोग करना चाहिए, जिस प्रकार गाय सबको समान रूप से दूध देती है-

''जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं
नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसं
सहस्रधारा द्रविणस्य मे दुहां
ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती।'' **(अथर्ववेद 12-1-45)**

ऋग्वेद में मेढक का उदाहरण देकर एकता का पोषण किया गया है। ऋषि कहता है कि एक ही तालाब में अनेक रंगों के मेढक होते हैं और वे अलग-अलग आवाज में टर्र-टर्र करते हैं अर्थात् उनकी भाषा अलग-अलग होती है, फिर भी वे सभी मेढक हैं, अतः रंग एवं भाषा के आधार पर एक-दूसरे में भेद नहीं होता-

''गोमायुरेको अजमायुरेको पृश्निरेको हरित एक एषाम्।
समानं नाम विभ्रतो विरूपाः पुरुत्रा वाचं पिपिशुर्वदन्तः।।'' (ऋग्वेद 07-103-06)

समावेशी प्रवृत्ति पर बल देते हुए वैदिक ऋषि कहता है कि हममें से न कोई बड़ा है, न कोई छोटा, हम एक ही मातृभूमि की सन्तान हैं तथा भाई-भाई हैं, अतः हमें छोटे-बड़े का भेद-भाव भूलकर उत्थान के लिए सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिए-

''अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते
सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय।'' **(ऋग्वेद 05-60-05)**

वेद समस्त विश्व को एक घोंसला मानता है, जिसमें सभी लोग एक साथ रहें। अतः वेद

को देश में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व में पृथकत्व स्वीकार्य नहीं है-

''यत्र विश्वं भवत्येक नीडम्'' - यजुर्वेद 32/8
''यत्र विश्वं भवत्येकरूपम्'' - अथर्ववेद 2/11
''एकं वा इदं वि बभूव सर्वम्'' - 5/58/2

कतिपय षड्यन्त्रकारी शक्तियाँ पूजा पद्धति को आधार बनाकर सभी मत, पन्थ को अलग-अलग करने की चेष्टा करती हैं। इस सम्बन्ध में वेद का स्पष्ट उद्घोष है कि सभी मिल-जुलकर पूजा-पाठ, हवन, यज्ञादि करें, जिस प्रकार रथ के पहिये की पंखुड़ियाँ धुरी के चारों ओर समान रूप से घूमती हैं-

सम्यंचोग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः'' - (अथर्ववेद 3-3-6)

वैदिक ऋषि का कथन है कि हमारी मन्त्रणाये, स्वभाव, समितियाँ एक विचार वाली होवें। हमारे मन एवं चित्त समान हों। हम समान विचार, सर्वसम्मति से निर्णय लें। हमारे मन, हृदय एवं विचार सह अस्तित्व की भावना से आप्लावित हों-

''समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानो मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।। - (ऋग्वेद 10/191/3-4)

समावेशी प्रवृत्ति की ओर प्रवृत्त कराने वाली प्राथमिक पाठशाला परिवार है। बालक सर्वप्रथम वहीं सामाजिक सौहार्द्र, पारस्परिक सद्भाव, समरसता आदि सीखता है। अतः पारिवारिक सदस्यों के बीच में कैसा सम्बन्ध, व्यवहार होना चाहिए, इस विषय में हमें वैदिक वाङ्मय से निर्देश प्राप्त होते हैं। अथर्ववेद के 'साम्मनस्य सूक्त' के प्रथम मन्त्र में हृदय, मन एवं द्वेषराहित्य की जो शिक्षा दी गयी है, वह अद्भुत है-

''सहृदयं साम्मनस्यमविद्विषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाध्न्या''-(अथर्ववेद 03/30/01)

अर्थात् मैं तुम्हारे प्रति हृदय एवं साम्मनस्य के द्वारा विद्वेषराहित्य से उपलक्षित गुणों का बोध कराता हूँ, जैसे बछड़े के साथ गाय स्नेह रखती है। बछड़े का थोड़ा भी कष्ट उसका अपना कष्ट होता है। यह हार्दिक एवं मानसिक ऐक्य की भावना पारिवारिक सदस्यों में हों। इसी सूक्त में आगे माता-पिता, भाई-बहिन एवं पति-पत्नी के बीच परस्पर सौहार्द्र एवं सामंजस्य की भावना कितनी अनुकरणीय है-

''अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु सम्मनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवाम्।।
मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यंचः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया।। -(अथर्ववेद- 3/30/2-3)

प्रकृत मन्त्रद्वय में यह आदेश दिया गया है कि पुत्र पिता की आज्ञानुसार कार्य करे। माता

के साथ एक मन से रहें। पति-पत्नी एक-दूसरे के प्रति मधुर एवं सुखद वाणी ही बोलें। कभी भी कटु वचन न बोलें। भाई-भाई के प्रति भी द्वेष न करें। बहिन के प्रति भी बहिन द्वेष न करें। इस प्रकार कुटुम्ब के प्रत्येक सदस्य को एक-दूसरे से प्रेम एवं सद्भाव के साथ प्रशस्त आचरण करने का आदेश देते हुए कहा गया है कि-

''स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु'' -(अथर्ववेद 1/31/4)

पारस्परिक सौहार्द्र की कितनी सुन्दर कामना ऋषि के द्वारा की गयी है, जिसमें वह चतुर्वर्णों में प्रिय होने की कामना करता है-

''प्रियं मा कृणु देवेषु प्रियं राजसु मा कृणु।
प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्र उतार्ये।। -(अथर्ववेद 19/62/1)

अर्थात् मुझे ब्राह्मणों, क्षत्रियों, वैश्यों, शूद्रों एवं जितने देखने वाले हैं, उन सब में प्रिय बनाओ। आशय यह है कि अपने पवित्र आचरणों द्वारा सबका शुभ करें। यह वही व्यक्ति कर सकता है, जिसमें नैतिक मूल्य तथा परोपकार, प्रेम, सौहार्द्र आदि गुण विद्यमान हों। सम्प्रति जो भी नैतिक मूल्य हमारे बीच में हैं, वे सब तपःपूत ऋषियों की साधना के प्रतिफल हैं। इन मूल्यों का उपदेश वैदिक ऋषियों ने किसी व्यक्ति विशेष अथवा सम्प्रदाय विशेष के लिये नहीं, अपितु मानव-मात्र के कल्याण की भावना से किया है।

अन्ततः समावेशी प्रवृत्ति से सम्बन्धित उक्त परिशीलन से हम यह कह सकते हैं कि वैदिक वाङ्मय में विश्वबन्धुत्व की भावना, साम्प्रदायिक सद्भाव, पारस्परिक सौहार्द्र, समरसता आदि के विषय में स्पष्टतः निर्देश प्राप्त होते हैं, जो भारतीय संस्कृति के अन्तस्तत्त्व हैं, अतः यह संस्कृति सबको साथ लेकर **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** तथा **'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति'** की उक्ति को चरितार्थ करती हुई सबका समावेश कर लेती है, चाहे वह व्यष्टि हो, चाहे समष्टि।



आलेख



डॉ0 रुचि बाजपेई
एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी,
उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज

भारतीय संस्कृति तथा हिन्दी साहित्य में सर्वसमावेशिकता और समन्वय की भावना

समावेशिकता और समन्वय ऐसे निर्माणकारी तत्त्व हैं जो समस्त भौतिक और आध्यात्मिक जगत् में शिवत्व की अवधारणा को समाहित करते हैं। विभिन्न प्राकृतिक उपादानों की एक निश्चित अनुपात में उपस्थिति और उनमें एक लयबद्धता या संतुलन की चेतना ही सृष्टि का सौन्दर्य है। इस सम्पूर्ण सृष्टि में पंच महाभूतों की जो लयात्मक स्थिति है, उसी से संसार परिचालित हो रहा है। पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु में से किसी एक का भी असंतुलन प्रलय का कारण बन सकता है। मानव शरीर भी इन्हीं पंचतत्त्वों से निर्मित है तथा उनके समन्वय और आनुपातिक समावेश से ही सही ढंग से कार्य कर सकता है। भारतीय पौराणिक चिन्तन में त्रिदेवों और उनकी शक्तियों की कल्पना की गई है। ब्रह्मा, विष्णु और महेश की समन्वित शक्ति से ही विश्व परिचालित हो रहा है। त्रिदेवियों रूपी शक्तियाँ ही संसार में विद्या, धन और आत्मिक शक्ति का विस्तार करके उसे पूर्णता प्रदान करती हैं। इन त्रिदेवों और इनकी शक्तियों में से एक की भी अनुपस्थिति से पूरी सृष्टि में बहुत बड़ा असंतुलन उत्पन्न हो सकता है। ये देव प्रतीक भारतीय मनीषा में व्याप्त सर्वसमावेशिकता और समन्वय भावना के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इसी तरह समाज के भीतर कार्य करने वाली विभिन्न शक्तियाँ, राजव्यवस्था, सामाजिक और नैतिक मूल्य चिन्तन, विभिन्न धार्मिक चिन्तन पद्धतियाँ और आस्थाएँ, सामाजिक संस्थाएँ, न्याय व्यवस्था, जनसंचार और सम्प्रेषण, विविध वाङ्मय विमर्श, साहित्यिक रचना-कर्म आदि हैं, जिनमें यदि एक-दूसरे का चिन्तन व्याप्त हो और समन्वय की भावना हो तो ये सभी समस्त मानव जाति के लिए कल्याणकारी सिद्ध होते हैं।

मानव जीवन के विविध क्षेत्रों को, उसके रीति-रिवाज, परम्पराओं और धार्मिक साधनाओं को अगर हम देखें तो पाएँगे कि समन्वय की भावना हर जगह है। भारतीय संस्कृति तो अपने मूलरूप में समन्वयकारी है। **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'**; **'वसुधैव कुटुम्बकम्'**

'मा विद्विषावहै' आदि उद्घोष हमारी संस्कृति की सर्वसमावेशिकता के प्रमाण हैं। हमने विरोधों और असामंजस्य को सर्वत्र एक शिवत्वमय एकात्म भावना से संपृक्त करके अपने में विलय करने की सदा कोशिश की है ताकि पूरे विश्व का कल्याण हो सके। शक, हूण, सीथियन, कुषाण, तुर्क, मंगोल आदि अनेक संस्कृतियों से हमारा सम्पर्क हुआ, लेकिन अपनी भारतीय संस्कृति की विशेषताओं के अनुकूल उनके कल्याणकारी तत्त्वों को लेकर हमने एक सांझी संस्कृति का निर्माण किया जिसमें सदैव सत्य, शिव और सुन्दर की भावना निहित है, जो सभी को लेकर चलने वाली और समन्वयकारी है। संघर्ष की अपेक्षा समन्वय हमारी संस्कृति का आधार बिन्दु सदैव से रहा है, इसलिए ये संस्कृति चिरजीवी है, महान है, विश्ववन्द्य है।

विभिन्न धर्मों और दार्शनिक चिन्तन पद्धतियों में भी यहाँ कुछ ऐसी मूलभूत विशेषताएँ विद्यमान हैं जिनसे हमें समन्वय और सर्वसमावेशिकता के सूत्र मिलते हैं। हमारे यहाँ आस्तिक दर्शनों में वेदान्त, मीमांसा, सांख्य, योग, न्याय और वैशेषिक तथा नास्तिक दर्शनों में जैन, बौद्ध और लोकायत दर्शन विद्यमान हैं। परन्तु जब इन दार्शनिक पद्धतियों के आधार पर हम जीवन के परिचालन की प्रेरणा ग्रहण करते हैं, तो अन्ततः एक कल्याणमयी समन्वयकारी भावना जो मानव मात्र के भौतिक और आध्यात्मिक हित से जुड़ी हुई है, सबमें समान रूप से देखाई देती है। धर्म यहाँ मानव धर्म है, हमारे यहाँ कहा गया-

'अविरोधी तु यो धर्मः एष धर्मः सनातनः।

अर्थात् सच्चा धर्म अविरोधी होता है, समन्वयवादी होता है, सर्वसमावेशी होता है। उसका दूसरे धर्मों से कोई विरोध नहीं होता, उसका मूल उद्देश्य मानव कल्याण होता है।

इसीलिए कुम्भ के घट की परिकल्पना भी सर्वसमावेशी है। कुम्भ सम्पूर्णता और समष्टि का प्रतीक माना जाता है, इसलिए हमारे हर तीज-त्यौहार, पूजा, व्रत, अनुष्ठान-सभी धार्मिक कार्यों में कलश को प्रतीक रूप में स्थापित करने का विधान है। कुम्भ वस्तुतः ब्रह्माण्ड या घट का प्रतीक है जो अपने में पूर्ण है। ईशावस्योपनिषद् में कहा गया है-

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

(अर्थात् वह परमब्रह्म परमात्मा पूर्ण है और इसलिए उससे उत्पन्न यह जगत् भी पूर्ण है। उस पूर्ण से यह पूर्ण उत्पन्न हुआ है। पूर्ण से पूर्ण को निकाल लेने पर भी पूर्ण ही शेष रहता है)

हमारी संस्कृति का यह परिपूर्णात्मक चिन्तन ही उसकी सर्वसमावेशिकता और समन्वय भावना का मूल स्रोत है। यह हमें संदेश देता है कि भौतिक और आध्यात्मिक, लौकिक और पारलौकिक सभी दृष्टियों से हम स्वयं में परिपूर्ण बनें, अपना सर्वांगीण विकास करें और व्यष्टि के साथ-साथ समष्टि के विकास हेतु उपयोगी कार्य करें ताकि हमारे साथ-साथ हमारे देश और समाज का, सम्पूर्ण विश्व का कल्याण हो सके। जब हम स्वयं परिपूर्ण होंगे तभी जगत् परिपूर्ण होगा। इसीलिए हमारे यहाँ जीवन को सुव्यस्थित ढंग से चलाने के लिए

वर्णाश्रम धर्म की व्यवस्था की गई। वर्ण व्यवस्था के भीतर यह विचार विद्यमान था कि अपनी-अपनी क्षमताओं के अनुसार लोग समाज-हित में सहयोग करें और अपने व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करें। इसमें कहीं विरोध, संघर्ष और प्रतिस्पर्धा नहीं थी बल्कि समन्वय और सर्वसमावेशिकता की कल्याणकारी भावना व्याप्त थी। जीवन को चार कालखण्डों में बाँटकर उनके अन्तर्गत व्यवस्थित ढंग से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष रूप चतुर्वर्ग पुरुषार्थ की सिद्धि का व्यावहारिक मार्ग निर्देशन भारतीय संस्कृति की अप्रतिम विशेषता है, जो व्यक्ति के साथ-साथ समाज का कल्याण करने की मूल भावना से जुड़ी हुई है।

यह सबको लेकर चलने वाली भावना ही हमारी संस्कृति को गौरवमयी बनाती है। **'शुनिचैव श्वपाके च पंडिताः समदर्शिनः'** स्वभाव से समदर्शी होना एक आदर्श व्यक्तित्व की पहचान है। हमारे पाशुपति शिव इस समदर्शिता और सर्वसमावेशिकता के सबसे बड़े प्रतीक हैं। देह में भस्मांबर लपेटे, मृगछाल को धारण किए, सर्प को माला रूप में पहने हुए, दूज के चन्द्रमा को सिर पर धारण करने वाले चन्द्रशेखर हैं। जगत पावनी, पवित्र गंगा उनकी जटाओं से प्रवाहित होकर ही जनकल्याणकारिणी बन सकी हैं। जगत् के कल्याण के लिए अपने निजी स्वार्थ को तिलांजलि देकर किसी भी चुनौतीपूर्ण कार्य को कर डालने की महान प्रेरणा भगवान शिव के व्यक्तित्व से हमें मिलती है। समुद्र मंथन के समय निकले कालकूट विष की विध्वंसकारिता से बचाने वाले यही नीलकण्ठ हैं। अपने गणों में अनेक पशुओं, भूतप्रेतों और क्षुद्र माने जाने वाले जन्तुओं को शरण देने वाले महान् शिव हमारी समन्वयकारी और सर्वसमावेशी संस्कृति के सबसे बड़े उदाहरण हैं। शिव संचय नहीं करता, सदा मुक्तहस्त लुटाता है, जगत् को समृद्ध करता है, फिर भी काल उसकी मुट्ठी में है, महाकाल है वह। वही आशुतोष शिव क्रुद्ध होने पर महारुद्र हैं। वह आक और धतूरे के फूल चढ़ाने से प्रसन्न हो जाता है, जो तीनों लोकों का स्वामी है-

आक धतूरे फूल चढ़ाए तें रीझत हैं तिहुँ लोक के स्वामी।

यानी हमारे यहाँ भावना का बड़ा महत्व है। मन की भावना जिसकी सकारात्मक है, कल्याणकारी है, तो शिव उसके वश में हैं। श्रावण मास में हम देखते हैं कि अनेक काँवरिए विभिन्न नगरों से गंगाजल संचित करके मार्ग की अनेक कठिनाइयों को सहन करते हुए काशी विश्वनाथ जी का उस समन्वित जल से अभिषेक करते हैं। यहाँ भी वही कुम्भ की सर्वसमावेशिकता और समन्वय की भावना विद्यमान है जो शिव के प्रति, जो कल्याण का देवता है, उसके प्रति समर्पित की जाती है। इस रूप में पाप-ताप, दुःख, विरोध, वैषम्य, विविधताओं, समस्त गुणों, पवित्रताओं सबको शिव को समर्पित कर एकरूप समन्वय और कल्याण की कामना का वरण करना इस प्रकार के अनुष्ठानों का प्रतीकार्थ माना जा सकता है।

सामान्य दृष्टि से यदि हम जीवन और समाज में देखें तो समन्वय कहाँ नहीं है? हर जगह है। भक्ति में भक्त और भगवान का समन्वय है, प्रेम में नारी और पुरुष का समन्वय है, जीवन में कर्म और भोग का समन्वय है, समुद्र में नदियों का समन्वय है, भोजन में षड्रस का

समन्वय है, भाषा में शब्द, अर्थ, ध्वनि और लिपि का समन्वय है, साहित्यिक रसों में जो कि मानव के विभिन्न भावों को परिपुष्ट करते हैं, उनमें स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी भावों का समन्वय है, कविता में भाव और कला का समन्वय है, गद्य में विचार और शैली का समन्वय है, समाज में जाति, धर्म, संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान और परम्पराओं का समन्वय है। संगीत में सप्त स्वरों का समन्वय है, कला में रेखाओं और रंगों का समन्वय है, नृत्य में लय, ताल और भंगिमाओं का समन्वय है, आदि-आदि। इसी तरह ब्रह्माण्ड में ग्रहों-नक्षत्रों और उनकी गतियों का समन्वय है। समय में भूत, भविष्य और वर्तमान का समन्वय है।

सामाजिक शक्तियों या कारक तत्त्वों में साहित्य का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि **'सहितेः भावः साहित्यम्'** कहा जाता है, यानी साहित्य के मूल में ही समावेशिकता की भावना व्याप्त है। साहित्य सबको साथ लेकर चलता है, समन्वयकारी है। यहाँ सबको से तात्पर्य मनुष्य मात्र से है, चाहे वह विश्व के किसी भी भूभाग का निवासी हो, उसका धर्म, संप्रदाय, नागरिकता, आचार-व्यवहार, संस्कृति कोई भी हो जहाँ कहीं भी मनुष्यता है, वहाँ साहित्य भी है, क्योंकि दरअसल साहित्य मनुष्य के पीढ़ी-दर-पीढ़ी चले आते हुए चिन्तन तथा भविष्य के स्वप्नों और आशाओं का आगार होता है। उसमें आदर्श और यथार्थ, भावना और कल्पना, इतिहास और पुराण, सृष्टि और मानव, भलाई और बुराई, सबका समन्वय होता है। सच्चे साहित्य में यह सर्वसमावेशिकता मानव कल्याण की दिशा में निरन्तर प्रयासरत रहती है। वहाँ प्रकृति के विविध उपादान मनुष्य को निरन्तर कर्तव्य कर्म की प्रेरणा देते हुए दिखाई देते हैं-

वृक्ष कबहुँ नहि फल भखै नदी न संचै नीर।
परमारथ के कारनै साधुन धरा सरीर।।

सूर, तुलसी, मीरा, रहीम, रसखान जैसे कवि भक्तिकाल की ही देन हैं। गोस्वामी तुलसीदास का तो समस्त काव्य समन्वय की विराट् चेष्टा है। राजा और प्रजा का समन्वय, अद्वैत और विशिष्टाद्वैत का समन्वय, शैव और वैष्णव का समन्वय, भक्ति, ज्ञान और कर्म का समन्वय, समाज और परिवार में समन्वय आदि अनेक रूपों में समन्वय के महान आदर्शों को रामकाव्य के माध्यम से तुलसी ने जनता के सामने रखा।

हमारे यहाँ त्याग और तपस्या की भावना को महत्वपूर्ण माना गया है क्योंकि इन्हीं से लोक कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है। भारत के सभी साहित्यों में यह सर्वसमावेशी जीवन-दर्शन प्रमुखता से विद्यमान है। यदि हम हिन्दी भाषा के साहित्य पर दृष्टि डालें तो हमें समन्वय और सर्वसमावेशिकता के परिपूर्ण उदाहरण मिलते हैं। चाहे साहित्य हो या काव्यशास्त्र, सर्वत्र हम संस्कृत साहित्य की परम्परा से शुरू करके, अपनी देशज परम्पराओं को सँजोते हुए, आधुनिक यूरोपीय परम्पराओं, चिन्तन और विचारधाराओं का समावेश करते हुए एक अनुकूल और समन्वयवादी निष्कर्ष या विचार-परम्परा का निर्माण करते हैं जो मानव-मात्र को जोड़नेवाली हो, सत्य शिव और सुन्दर की उद्घोषिका हो और अपने में सम्पूर्ण हो, कुम्भ की परिपूर्णता के समान परिपूरण हो।

वैष्णव भक्ति में निहित अवतार भावना को हिन्दी साहित्य में बहुत महत्व मिला है। इसके अन्तर्गत ईश्वर और जीव का समन्वय है। जो ईश्वर अजन्मा और अविनाशी है, वह भक्तों के कल्याण के लिए सगुण रूप धारण करता है और अपने जीवन के माध्यम से उन्हें प्रेरणा देता है-

जब-जब होहि धरम कै हानी। बाढ़हिं अधम असुर अभिमानी।।
तब-तब प्रभु धरि विविध सरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।।

हिन्दी साहित्य के आदि काल में उन विभिन्न साहित्यक प्रवृत्तियों का समन्वय मिलता है, जिनका विकास आगे के युगों में हुआ। हिन्दी के सम्पूर्ण भक्ति साहित्य में सगुण काव्यधारा के अन्तर्गत भगवान के लोकरक्षक तथा लोकरंजक अर्थात् राम एवं कृष्ण रूपों का मनोहर गुणगान करते हुए समाज को सम्बल देने का प्रयास किया गया है। सूरदास जी ने अपने कृष्ण भक्तिकाव्य द्वारा भक्ति और प्रेम के समन्वय का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हुए सगुण भक्तिमार्ग की श्रेष्ठता और सर्वसमावेशिकता को हमारे सामने रखा।

निर्गुण ब्रह्म के अनेक उपासकों ने भी भक्तिकाल में रचनाएँ लिखीं, जिनमें निर्गुण ज्ञानाश्रयी सन्तकाव्यधारा और निर्गुण प्रेमाश्रयी सूफी काव्यधारा के कवियों ने ईश्वर को निर्गुण माना है। उनके अनुसार ईश्वर का कोई नाम व रूप नहीं है फिर भी वह सारे संसार में व्याप्त है, घट-घटवासी है। सम्पूर्ण संसार उसी की प्रेरणा से संचालित हो रहा है। कबीर उसे ज्ञान के माध्यम से और जायसी प्रेम के माध्यम से प्राप्त करने का मार्ग बताते हैं। लेकिन गंतव्य सभी का एक है- **एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।'** कबीर के साधनात्मक रहस्यवाद और जायसी के भावात्मक रहस्यवाद- दोनों में आत्मा और परमात्मा का समन्वय मिलता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल में निर्गुण-सगुण, राम-कृष्ण, ज्ञान-प्रेम, आत्मा-परमात्मा सभी का समन्वय विद्यमान है और इस समन्वय का एक ही लक्ष्य है- मानव जाति का कल्याण। इसीलिए हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल को स्वर्णयुग कहा गया है।

हिन्दी साहित्य के रीतिकाल में यद्यपि राज्याश्रय का प्रभुत्व होने के कारण कविता की एक धारा अभिजात वर्ग की प्रशस्तियों और उनके मनोरंजन के लिए सृजित रचनाओं से परिपूर्ण है तथापि कवित्व की मर्यादा का उल्लंघन नहीं हो सका है। रीतिबद्ध कवियों के काव्य में भी जन-चेतना अनेक स्थानों पर अपने सबल रूप में दिखाई देती है। मानव हित में काव्य रचना करने वाले, अपनी शुद्ध बुद्धि से मानव मनोभावों की विभिन्न लहरियों को तरंगायित करते हुए जीवन रूपी घट को परिपूरण कुम्भ की गरिमा प्रदान करने वाले रीतिमुक्त स्वच्छन्द प्रेमकाव्य धारा के कवियों घनानन्द, आलम, बोधा तथा रीतिकालीन अन्य श्रृंगारेतर काव्यधाराओं जैसे रामभक्ति, कृष्णभक्ति, हास्य व्यंग्य काव्यधारा, नीतिकाव्यधारा आदि के कवियों का भी इस काल में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मानव जीवन में समावेशिकता और समन्वय लाने का वैचारिक प्रयास इन लोगों ने किया।

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में भी एक से एक बढ़कर रचनाकार हमें दिखाई देते हैं, जिन्होंने भारतीय संस्कृति में व्याप्त सर्वसमावेशिकता और समन्वय भावना को अपने

लेखन के माध्यम से चरितार्थ किया है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा, सुमित्रानन्दन पन्त, नागार्जुन, फणीश्वरनाथ रेणु, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामधारी सिंह दिनकर, विद्यानिवास मिश्र, धर्मवीर भारती, उषा प्रियंवदा, शिवानी, मोहन राकेश अदि अनेकानेक रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के द्वारा मानव जीवन को सर्वसमावेशिकता और समन्वय की विराट् भावना से जोड़ने का महनीय प्रयास किया है। निश्चय ही ये सब हिन्दी साहित्य के गौरव हैं और हमें अपनी साहित्यिक परम्परा पर गर्व है।

साथ ही एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें वर्तमान वैश्विक परिवेश में, भूमण्डलीकरण के इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में अपनी विचारशील परम्पराओं के इस गौरव बोध को जगाए रखना है और मानव मात्र के कल्याण की समीक्षा दृष्टि को सामने रखते हुए एक आधुनिक, परिष्कृत, समन्वित, सर्वसमावेशी मानव संस्कृति के निर्माण के विषय में सोचना है ताकि समयानुसार नवीन, उपयोगी, कल्याणकारी और सार्थक जीवन मूल्यों का विकास होता रहे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *भारतीय संस्कृति, नरेन्द्र मोहन, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली*
2. *वैदिक साहित्य और संस्कृति, वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली-7*
3. *हिन्दू दर्शनः एक समकालीन दृष्टि, डॉ. कर्णसिंह, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली*
4. *भारतीय समाज व संस्कृति, रवीन्द्रनाथ मुकर्जी, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली -7*

कुंभ मेळा २०१९

'सर्व समावेशी संस्कृति कुंभ'

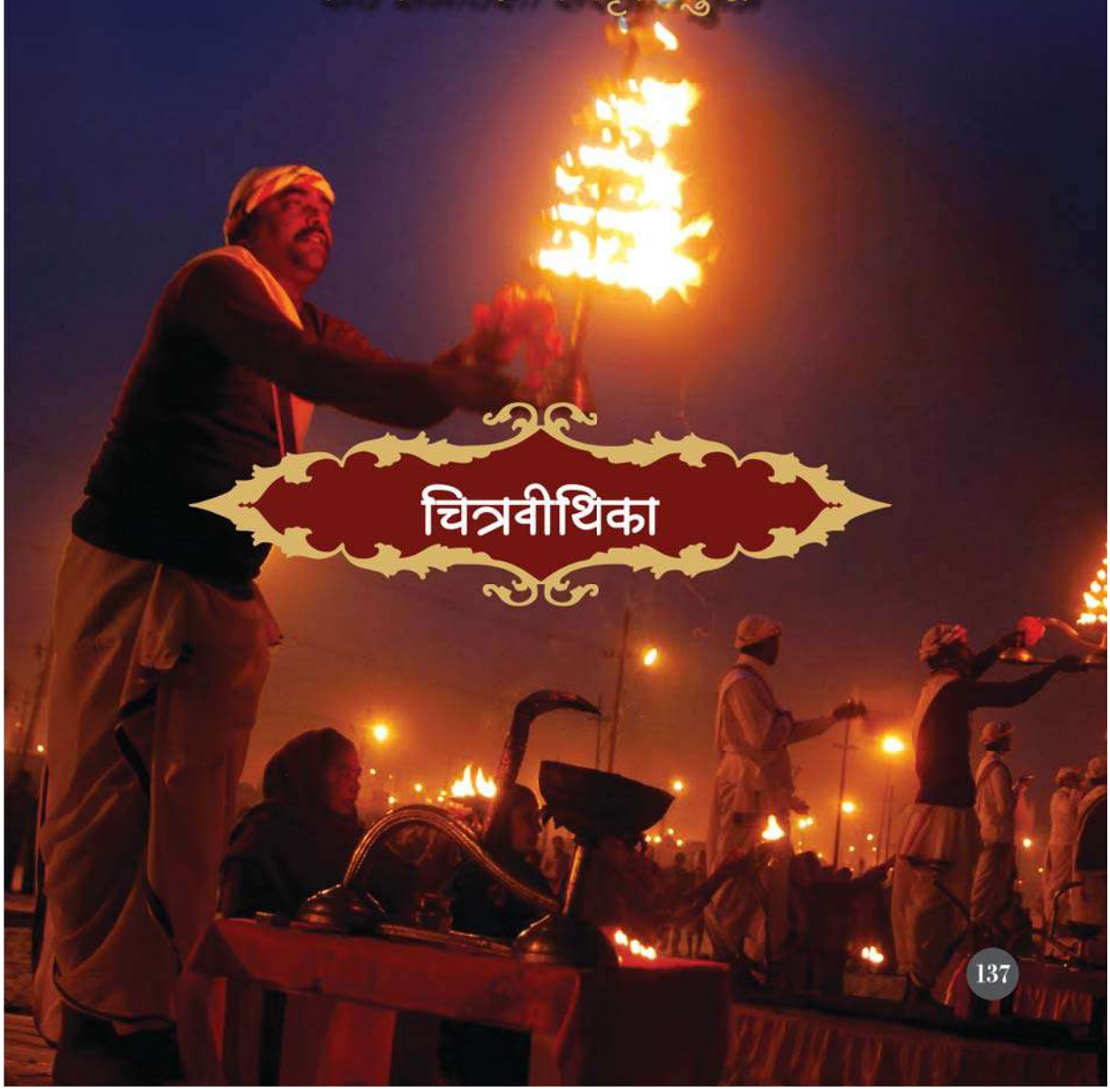

चित्रवीथिका


GENERAL ENTRY


गंगा मंच



कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए आये पूजनीय संतगण



पूजनीय संतगण कार्यक्रम के लिए पंजीकरण कराते हुए



पूज्यनीय साधु-संतों का स्वागत् एवं माल्यार्पण करते डॉ.,
आर.पी.एस. यादव, सुखराम मथुरिया व अन्य



माल्यार्पण के उपरान्त पूज्यनीय साधु-संतों का कार्यक्रम में आगमन



कार्यक्रम व्यवस्था का निरीक्षण करते हुए
कुलपति प्रो० के० एन० सिंह, सुरेन्द्र जैन, डॉ0 चन्द्र प्रकाश सिंह व अन्य



कार्यक्रम व्यवस्था के निरीक्षण के दौरान पूज्यनीय संतों से
संवाद करते हुए कुलपति प्रो० के० एन० सिंह, व अन्य



कार्यक्रम में आ रहे संतों का अभिवादन करते हुए
भैय्या जी जोशी, सुरेन्द्र जैन, प्रो. के.एन. सिंह



स्वास्थ्य एवं शिक्षा चिकित्सा मंत्री मा. सिद्धार्थ नाथ सिंह का
स्वागत करते हुए प्रो. के.एन. सिंह

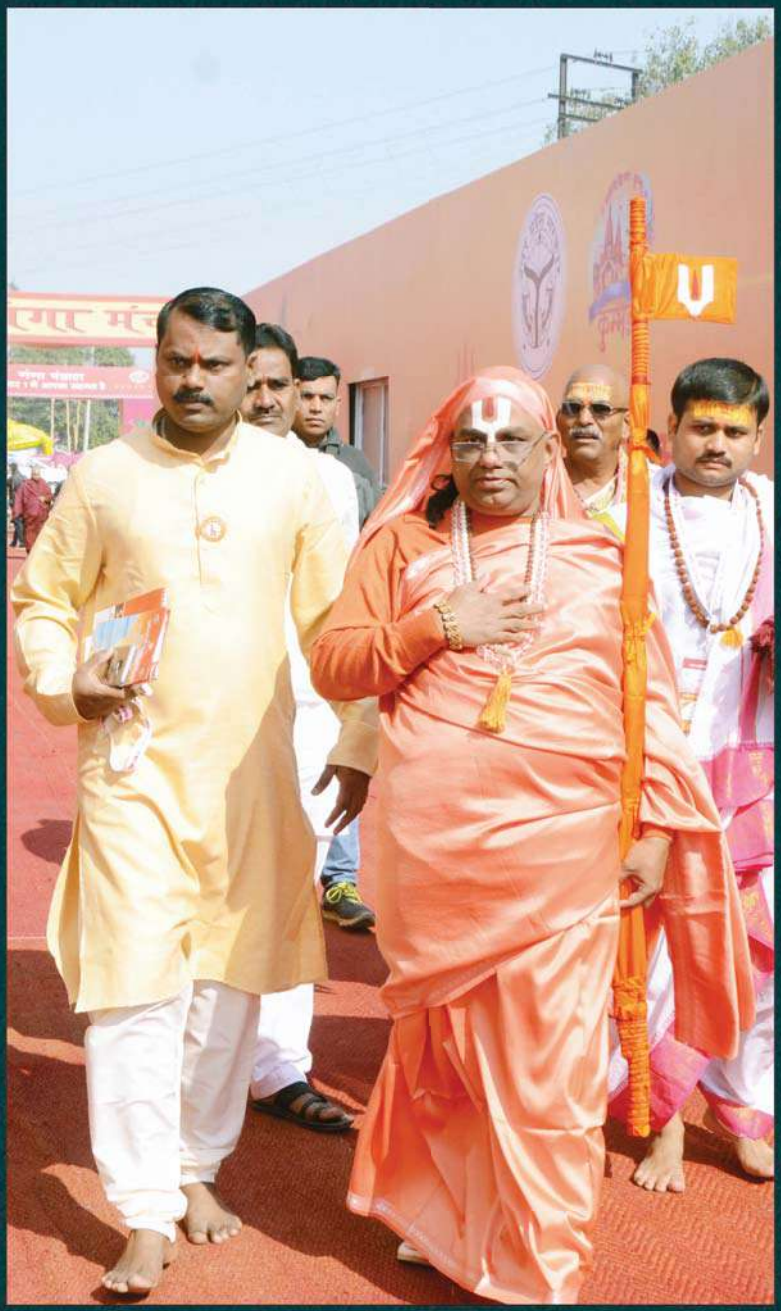

कार्यक्रम में जाते हुए पूज्य संत

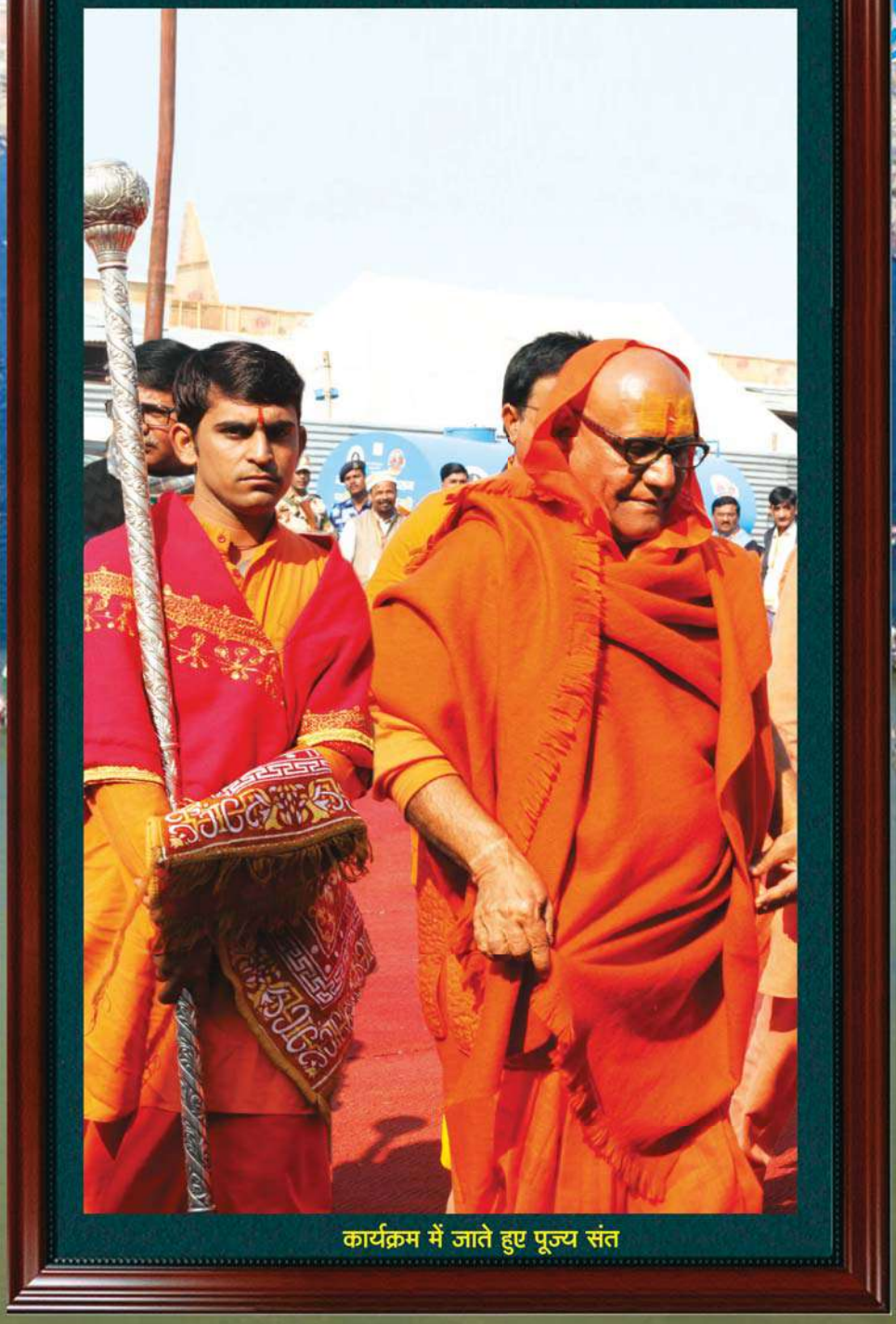

कार्यक्रम में जाते हुए पूज्य संत



हंसदेवाचार्य जी महराज के साथ सुरेश भैय्या जी जोशी व डॉ. सुरेन्द्र जैन



हंसदेवाचार्य जी महाराज का स्वागत करते हुए प्रो. के.एन. सिंह एवं डॉ. सुरेन्द्र जैन



कार्यक्रम स्थल पर पधारे पूजनीय संतगण



कार्यक्रम स्थल पर पधारे पूजनीय संतगण



सतपाल जी महाराज व सुरेश भैय्या जी जोशी एक दूसरे का अभिवादन करते हुए



पूज्य स्वामी श्री वासुदेवानन्द सरस्वती जी महाराज का कार्यक्रम में आगमन



प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए कुलपति प्रो. के.एन. सिंह,
सुरेश भैय्या जी जोशी, सुरेन्द्र जैन



विभिन्न पंथों व सम्प्रदायों से सम्बन्धित चित्र-प्रदर्शनी



कार्यक्रम में पधारे सुरेश भैय्या जी जोशी एवं पूजनीय संतगण



कार्यक्रम में पधारे पूजनीय संतों के साथ कुलपति प्रो. के.एन. सिंह एवं श्री जीवेश्वर मिश्र



कार्यक्रम में राष्ट्रगान की प्रस्तुति करते हुए भरत-शत्रुघ्न



राष्ट्रगान में सम्मिलित मंचासीन पूजनीय संतगण एवं प्रो. के.एन. सिंह,
संयोजक, सर्वसमावेशी संस्कृत कुम्भ



राष्ट्रगान में सम्मिलित मंचासीन पूजनीय संतगण



कार्यक्रम में मंचासीन पूजनीय संतगण



कार्यक्रम में उपस्थित सम्मानित अतिथिगण



कार्यक्रम में मंचासीन पूजनीय संतगण



मंच पर आसीन पूज्य संतगण



प्रसन्न मुद्रा में संतगण



कुलगीत की प्रस्तुति देते हुए भरत-शत्रुघ्न



मंच पर आसीन पूज्य संतगण

सर्वसमावेशी संस्कृति कुंभ पर अपना मत रखते हुए



श्री सुरेश भैय्या जी जोशी, सरकार्यवाह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ



जगद्गुरु रामानन्दाचार्य हंसदेवाचार्य जी महाराज के साथ प्रो. के.एन. सिंह



डॉ. नीलकण्ठ शिवाचार्य धारेश्वर जी महाराज

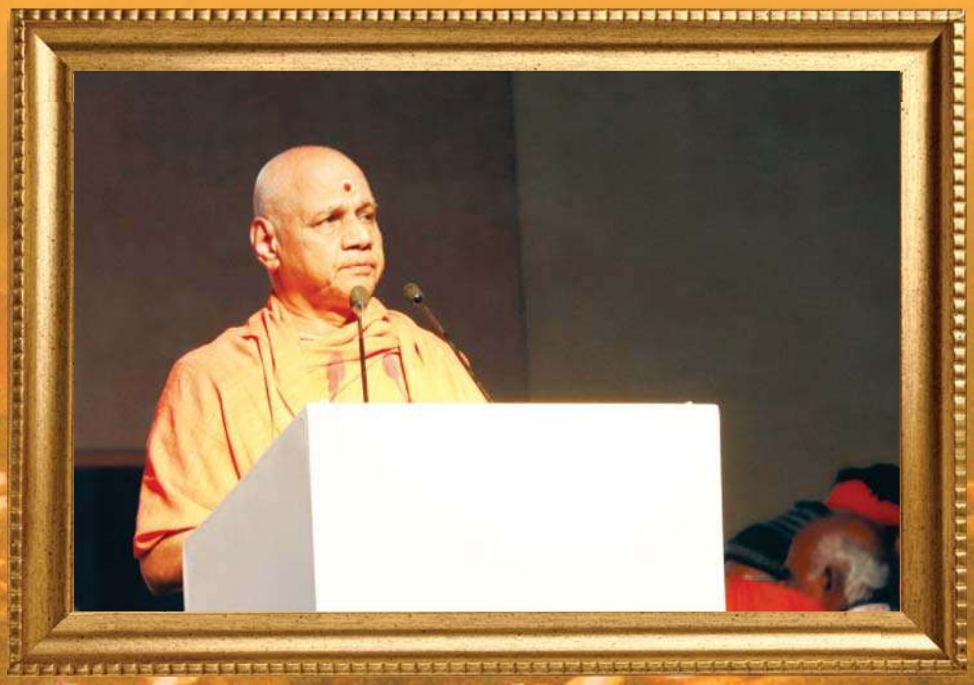

श्री गोविन्द देव गिरी जी महाराज



साध्वी प्रीति प्रियम्वदा

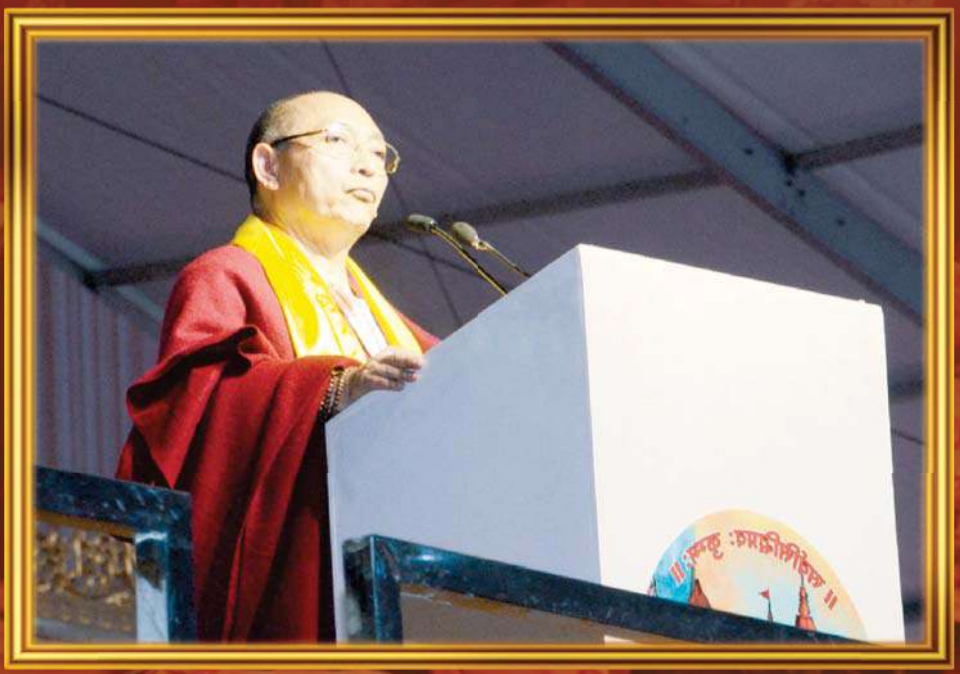

प्रो. नवांग सामतेन



श्री राहुल बोधि जी



जैनमुनि कमलमुनि कमलेश जी महाराज



बालयोगी उमेश नाथ जी महाराज



श्री पुलडोल बिहारीदास जी महाराज



डॉ. विजय रामानुजपुरी



श्री स्वामी जगद्गुरु रामानुजाचार्य जी आनन्दाचार्य



श्री प्रभाकर दास जी महाराज



साध्वी प्रज्ञा भारती जी, दिव्य ज्योति जागृति संस्थान



श्री रामेश्वर वैष्णव जी महाराज



चिदानंद जी महाराज, परमाध्यक्ष-परमार्थ निकेतन



श्री कन्हैया जी महाराज



श्री जितेन्द्र नाथ जी महाराज



श्री विशोकानन्द जी महाराज



श्री तेजसानन्द जी महाराज



स्वामी बाबा रामदेव जी महाराज



श्री जनार्दन देव गोस्वामी सत्राधिकार



स्वामी अवधेशानन्द गिरि जी महाराज



श्री सतपाल जी महाराज



श्री भास्कर गिरिजी महाराज



श्री श्याम सुन्दर जी महाराज का उद्बोधन

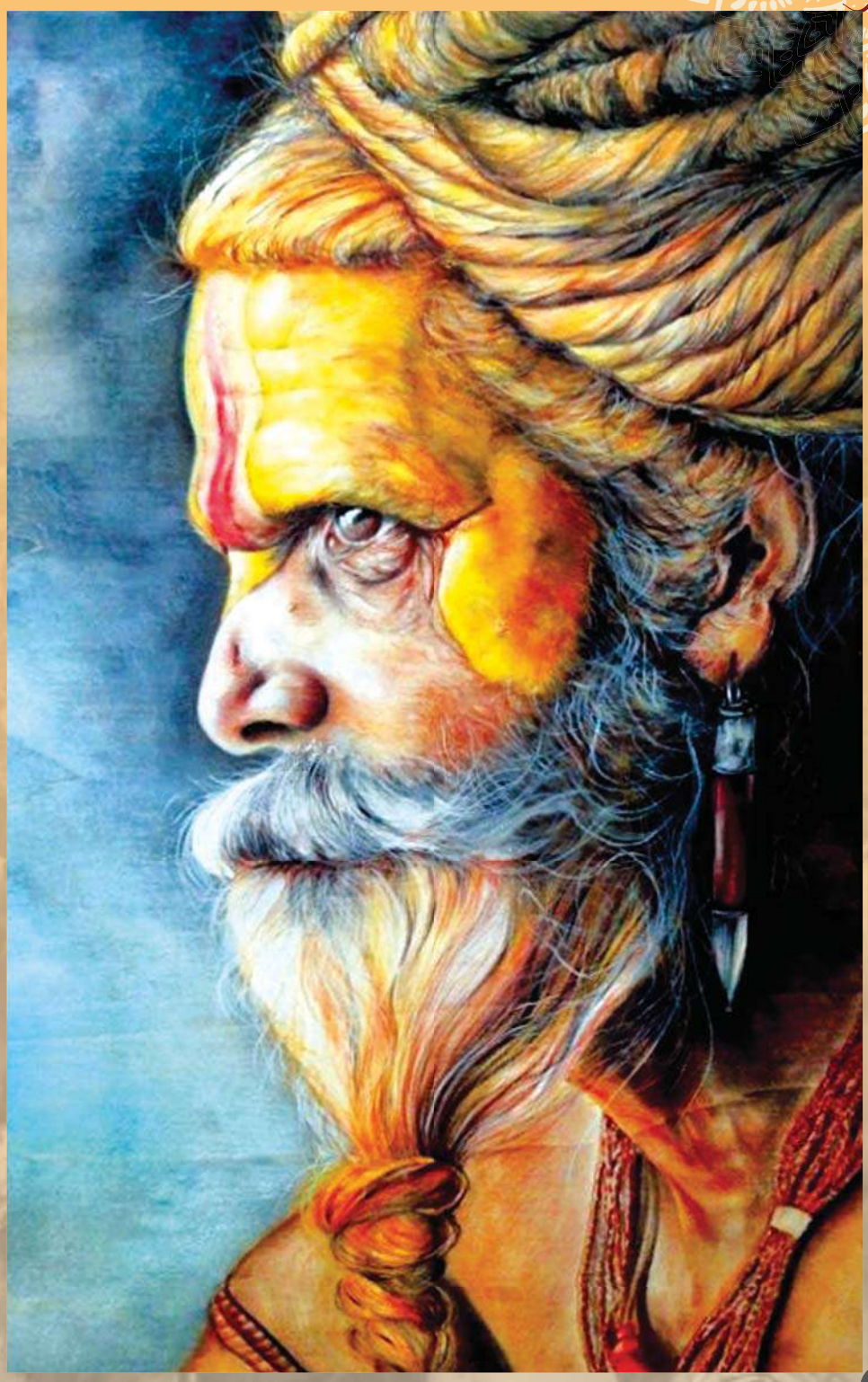



कार्यक्रम में उपस्थित पूज्य संतगण



मंच पर विराजमान पूज्य संतगण



मंच पर उपस्थित पूज्य संतगण



कार्यक्रम में उपस्थित सम्मानित अतिथिगण



दीप प्रज्वलित करते हुए हंसदेवाचार्य जी, सुरेश भैय्याजी जोशी एवं अन्य संतगण



कार्यक्रम में प्रसन्न मुद्रा में संतगण



सभा में उपस्थित डॉ. नरेन्द्र कुमार सिंह गौर एवं प्रो. डी.पी. सिंह, पूर्व कुलपति



कार्यक्रम में उपस्थित संत समाज



प्रदर्शनी में दीप प्रज्वलित करते हुए हंसदेवाचार्य जी, सुरेश भैय्याजी जोशी



कार्यक्रम में प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए माननीय कुलपतिप्रो. के.एन. सिंह जी, सुरेश भैया जी जोशी, डॉ. सुरेन्द्र जैन एवं अन्य अतिथिगण



कार्यक्रम में प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए

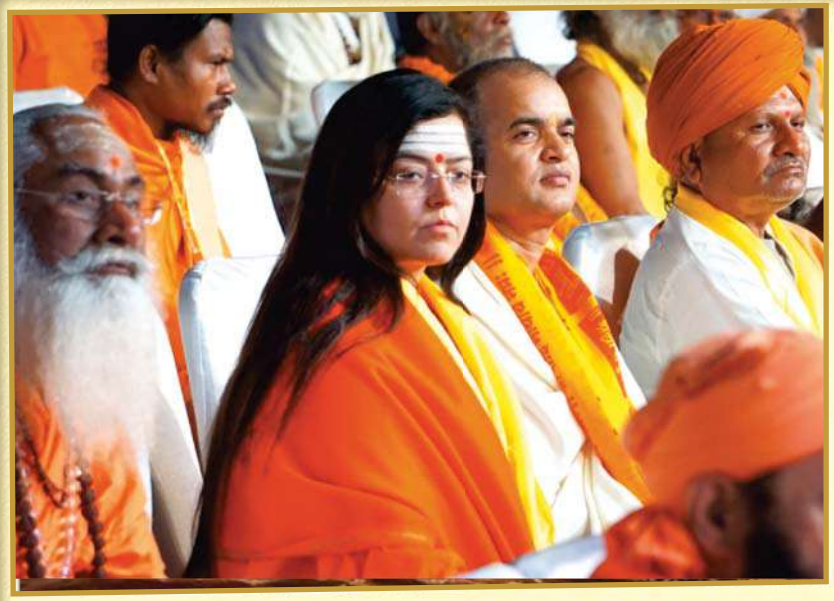

कार्यक्रम में उपस्थित सम्मानित अतिथिगण



पूज्य हंसदेवाचार्य जी का कार्यक्रम में अध्यक्षीय उद्‌बोधन



कार्यक्रम में उपस्थित पूर्व न्यायमूर्ति श्री सुधीर अग्रवाल जी,
पूर्व न्यायपूर्ति श्री रणविजय सिंह एवं पूर्व न्यायमूर्ति श्री शम्भूनाथ श्रीवास्तव



कार्यक्रम में उपस्थित विभिन्न मत व संप्रदाय के संतगण





कार्यक्रम की अन्य झलकियाँ



कार्यक्रम स्थल पर आते हुए कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वामी हंसदेवाचार्यजी महाराज



कार्यक्रम स्थल पर आते हुए सन्तगण



आपस में वार्तालाप करते पूज्य सन्तगण



पूज्य सन्तों के साथ बातचीत करते हुए श्री सुरेश भैय्या जी जोशी



कार्यक्रम में उपस्थित पूजनीय संतगण



कार्यक्रम में उपस्थित पूजनीय संतगण



पूज्य संतों के साथ विचार-विमर्श करते हुए श्री सुरेश भैया जी जोशी



श्री अशोक तिवारी जी, केन्द्रीय मंत्री, अखिल भारतीय धर्माचार्य सम्पर्क प्रमुख
एवं डॉ. सुरेन्द्र जैन जी, राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री, वि.हि.प.



पूज्य संतों से बात करते हुए श्री आशीष कुमार गोयल जी (आई.ए.एस.)
मण्डलायुक्त, प्रयागराज मण्डल



संतों का अभिवादन करते हुए सतपाल जी महाराज

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति'

विशेष सहयोग

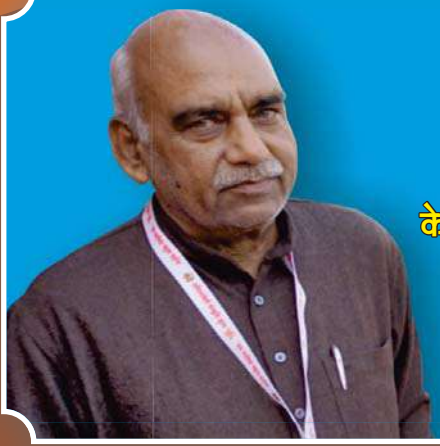

श्री अशोक तिवारी जी

केन्द्रीय मंत्री, अखिल भारतीय धर्माचार्य सम्पर्क प्रमुख

डॉ. सुरेन्द्र जैन

राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री, वि.हि.प.





डॉ. चन्द्र प्रकाश

संयोजक, अरुन्धती वशिष्ठ अनुसंधान पीठ
प्रयागराज



श्री आशीष कुमार गोयल, आई.ए.एस.
मण्डलायुक्त, प्रयागराज मण्डल



श्री विजय किरन आनन्द, आई.ए.एस.
मेलाधिकारी, कुम्भ मेला-2019
प्रयागराज



श्री के.पी. सिंह, आई.पी.एस.
एस.एस.पी., कुम्भ मेला-2019 प्रयागराज

कार्यक्रम में संयोजित प्रदर्शनी

साभार- डॉ. चन्द्रप्रकाश सिंह, संयोजक-अरुंधती वशिष्ठ अनुसंधानपीठ, प्रयागराज



वल्लभाचार्य

रुद्र संप्रदाय (पुष्टिमार्ग या बल्लभ मत)

इस संप्रदाय के मूल प्रवर्तक विष्णु स्वामी माने जाते हैं। आचार्य वल्लभ ने उच्छिन्न हो चुकी इस परंपरा को पुनः संवर्धित करने का कार्य किया। वल्लभाचार्य के समय में देश की सत्ता मुसलमानों के हाथ में थी। इस्लाम के आक्रमण के साथ-साथ अनेक कुरीतियाँ व्याप्त हो गयी थी। वल्लभाचार्य ने घोषित किया कि वर्ण, जाति या देश के भेद से रहित होने के कारण पुष्टि मार्ग ही इस कलिकाल के जीवों के लिए एकमात्र सुलभ व सुगम मार्ग है। बल्लभ संप्रदाय के अंतर्गत अष्टछाप के कवियों कुंभनदास, सूरदास, कृष्णदास आदि ने तत्कालीन परिस्थितियों में समाज रक्षा एवं राष्ट्रीय एकता के लिए अपनी काव्यधारा के माध्यम से महनीय कार्य किया है।



चैतन्य महाप्रभु

गौड़ीय वैष्णव संप्रदाय या चैतन्य मत

चैतन्य महाप्रभु द्वारा चलाये गए गौड़ीय वैष्णव संप्रदाय में सामाजिक एवं व्यावहारिक उदारता और सर्वसामान्य द्वारा ग्राह्य भक्ति का उपदेश निहित है। महाप्रभु के अनुसार अभिमान भक्ति मार्ग के प्रतिकूल है, इसलिए साधक अपने आप को तिनके से भी तुच्छ जानकर और वृक्ष के समान सहिष्णु होकर निरंतर हरि नाम का कीर्तन करे। यदि श्वपच भी श्री श्रीभगवन्नाम श्रवण, कीर्तन या स्मरण इनमें से कोई भी एक बार कर ले तो उसी क्षण उसे सोमयज्ञ करने की योग्यता प्राप्त हो जाती है। चैतन्य महाप्रभु के भक्तों में सभी वर्णों के साथ यवन हरिदास जैसे संत भी थे।



हितहरिवंश जी

राधा वल्लभ संप्रदाय

राधावल्लभ संप्रदाय के प्रवर्तक हितहरिवंश जी ने प्रेम तत्व को सर्वोपरि माना है। उन्होंने परमात्मा को रस कहकर संबोधित किया है। **'रसो वै सः'** उनका ध्येय वाक्य है। राधा उनकी प्रमख उपास्य हैं। राधा की उपासना से ही कृष्ण की प्राप्ति संभव है।





स्वामी हरिदास

टटिया संप्रदाय

प्राचीन भारत के संगीत शास्त्र में हरिदास स्वामी का नाम प्रसिद्ध है। उन्होंने निम्बार्क सम्प्रदाय के अन्तर्गत टटिया सम्प्रदाय के नाम से एक उपशाखा का प्रवर्तन किया था। ये प्रसिद्ध संगीतज्ञ तानसेन के गुरु थे।



समर्थ रामदास

रामदासी संप्रदाय

रामदासी संप्रदाय की स्थापना छत्रपति शिवाजी के गुरु समर्थ रामदास ने की था समर्थ रामदास उन विशिष्ट महापुरुषों में थे, जिन्होंने पारमार्थिक मुक्ति के साथ-साथ लोकव्यवहार, सामाजिक मर्यादा की शिक्षा, दुराचारी विधर्मियों से मुक्ति की सामाजिक चेतना को जागृत करने में अभूतपूर्व योगदान दिया। उनके द्वारा लिखी गयी पुस्तक **'दासबोध'** सामाजिक एवं धार्मिक शिक्षण की अमूल्य निधि है। समर्थ रामदास के अनुसार चारों वर्णों के लोगों को राम स्मरण का अधिकार है। उत्तम पुरुष का निरूपण करते हुए वे कहते हैं कि अनेक को उनके कार्य में मदद करनी चाहिए, पराये लोगों को अपना बना लेना चाहिए, जितना आवश्यक हो उतना ही बोलना चाहिए। समर्थ रामदास ने संपूर्ण देश में सोलह सौ स्थानों पर बजरंगबली का मंदिर और व्यायामशाला की स्थापना कर युवाओं में शक्ति उपासना को बल प्रदान किया।

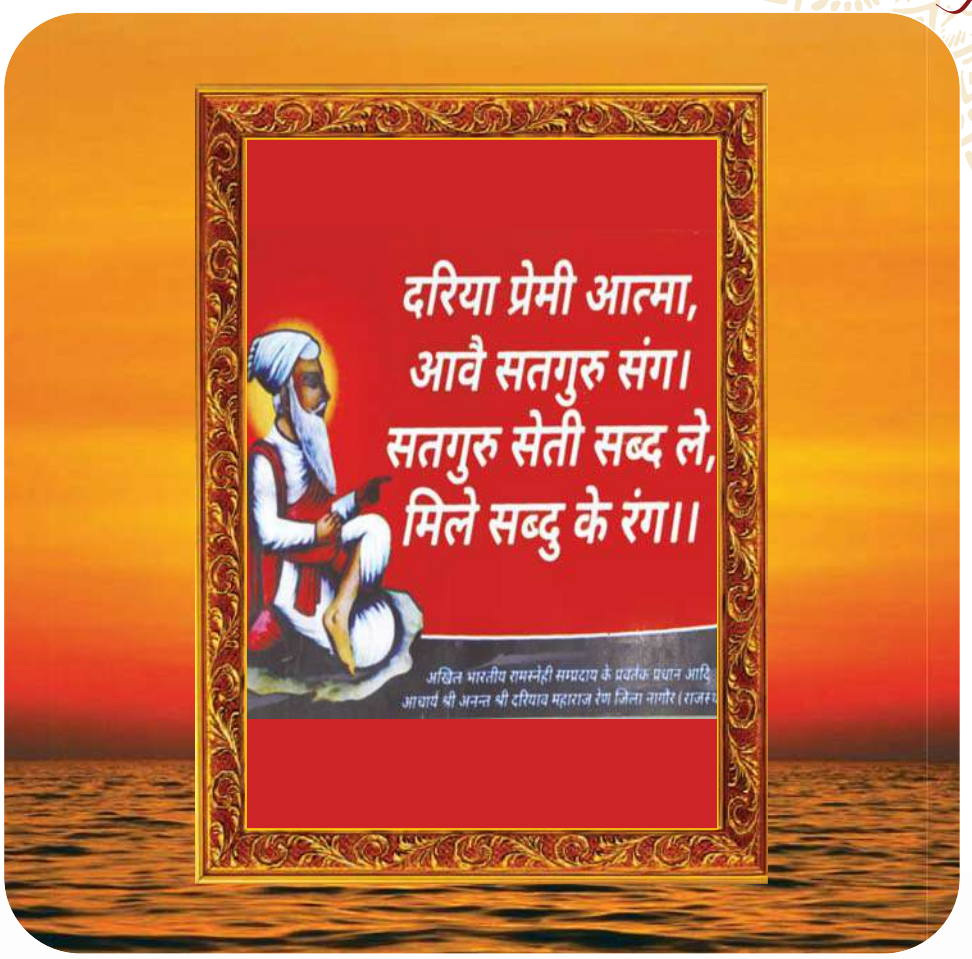

रामसनेही संप्रदाय

रामसनेही संप्रदाय के तीन प्रमुख संत-दरिया साहब (रेण-नागौर), संत हरिराम दास (सिंहथल-बीकानेर), संत रामचरण (शाहपुरा-मेवाड़) हैं। राजस्थान की धरती पर प्रवाहित इन तीनों धाराओं का संगम रामोपासना बनी। रामसनेही संतों ने सामाजिक विषमताओं को दूर करने के लिए ऐसी साधना पद्धति का उपदेश दिया, जिसमें न कोई ऊँचा था, न नीचा, न कोई कुलीन था, न अन्त्यज। उन्होंने अपने विचारों के माध्यम से शांति, एकता, भ्रातृत्व, प्रेम व ईश्वर के प्रति अनुराग की भावना का प्रचार-प्रसार किया। रामसनेही संतों ने वाह्य आडंबर को निरर्थक मानते हुए केवल आतंरिक शुचिता एवं सत्यता को ही अपनी साधना का अवलंबन बनाया है। **'दरिया प्रेमी आत्मा आवै सतगुरु संग।'**



स्वामी सहजानंद

स्वामीनारायण संप्रदाय

सतगुरु सेती सब्द ले, मिले सब्दु के रंग।
स्वामीनारायण संप्रदाय, स्वामी सहजानंद।।

स्वामीनारायण संप्रदाय के प्रवर्तक स्वामी सहजानंद का जन्म उत्तर-प्रदेश के गोण्डा जनपद में हुआ थ। हिमालय में साधना करने के उपरांत भ्रमण करते हुए वे गुजरात पहुँच गए। वहीं पर स्वामी रामानंद के शिष्य स्वामी मुक्तानंद से दीक्षा लेकर उन्होंने धर्म प्रचार का कार्य प्रारम्भ किया। यज्ञ में हिंसा, बलि, प्रथा, सतीप्रथा, कन्या-हत्या और भूतबाधा जैसी सामाजिक कुरीतियों को बंद कराने के लिए उन्होंने व्यापक कार्य किया। उनके द्वारा लिखी गयी एकमात्र पुस्तक **'शिक्षापत्री'** है। स्वामी नारायण सम्प्रदाय अपने भव्य एवं विशाल मन्दिरों के लिए प्रसिद्ध है।



स्वामी दयानंद सरस्वती

ब्रह्म समाज

स्वामी दयानंद ने हिन्दुओं को उनकी समृद्ध विरासत की शिक्षा देने ओर भारत की सामाजिक संरचना में सुधार के लिए 1875 ई. में आर्य समाज की स्थापना की। स्वामी दयानंद बहुत ही उच्च क्षमता के समाज सुधारक और धार्मिक नेता थे। उन्होंने सती प्रथा, बाल विवाह, दहेज, छुआ-छूत को समाप्त करने एवं स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये। एक ही परम सत्य को विद्वान बहुत प्रकार से कहते हैं।



पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

गायत्री परिवार

गायत्री परिवार के संस्थापक आचार्य श्रीराम शर्मा थे। उन्होंने अखिल भारतीय गायत्री परिवार के माध्यम से समाज के सांस्कृतिक एवं चारित्रिक उत्थान के लिए अनेक कार्य किए। आचार्य जी ने गायत्री मंत्र को आधार बनाकर संपूर्ण समाज में धार्मिक जागरण का एक अनूठा आंदोलन प्रारंभ किया। गायत्री परिवार के माध्यम से यज्ञ-अनुष्ठान, शोध एवं साहित्य के द्वारा हिन्दू समाज को जागृत करने का कार्य व्यापक स्तर पर किया गया। जाति-पाँत, छुआ-छूत जैसी विसंगतियों से समाज को मुक्त कर सद्गुण की दिशा में प्रवृत्त करने का कार्य गायत्री परिवार द्वारा सतत रूप से किया जा रहा है।

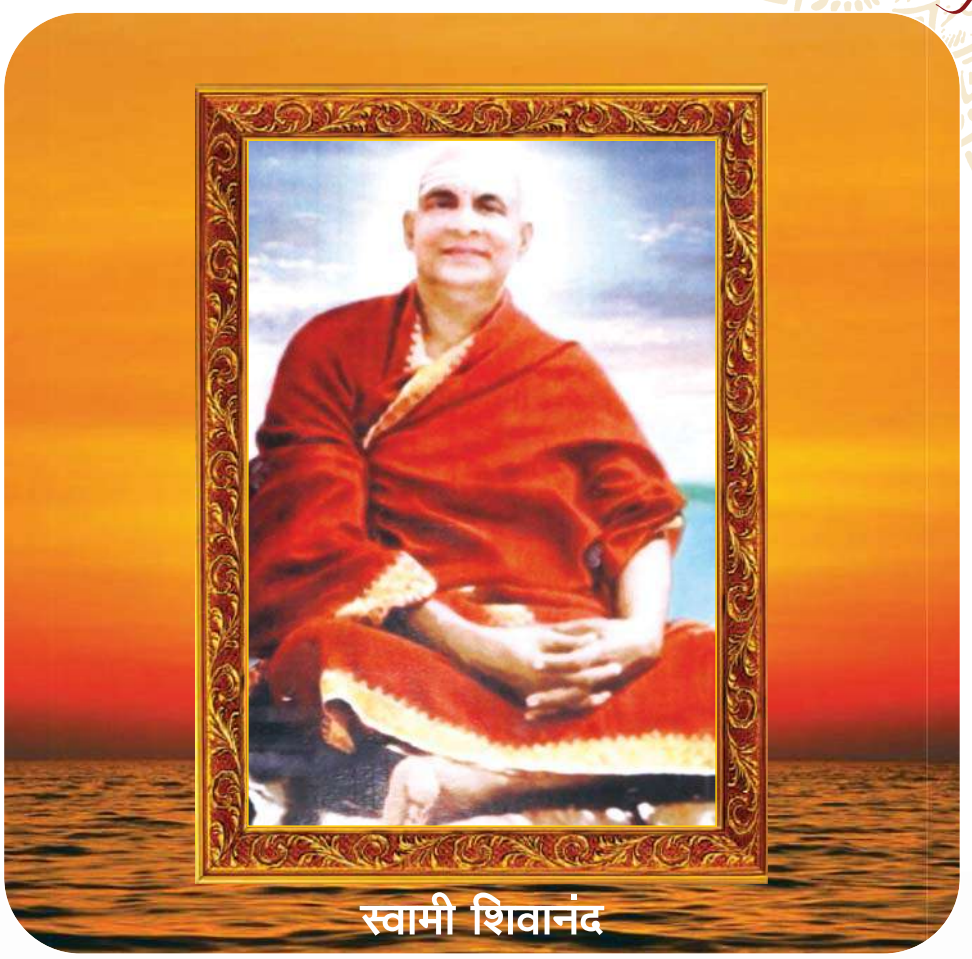

स्वामी शिवानंद

डिवाइन लाइफ सोसाइटी

स्वामी शिवानंद ने सन् 1936 ई. में डिवाइन लाइफ सोसाइटी की स्थापना ऋषिकेश में की थी। वे आजीवन वेदांत के प्रचार-प्रसार के साथ साधु-संतों एवं दीन-दुखियों की सेवा में लगे रहे। यह संस्था आज भी वैश्विक स्तर पर इस कार्य में संलग्न है।

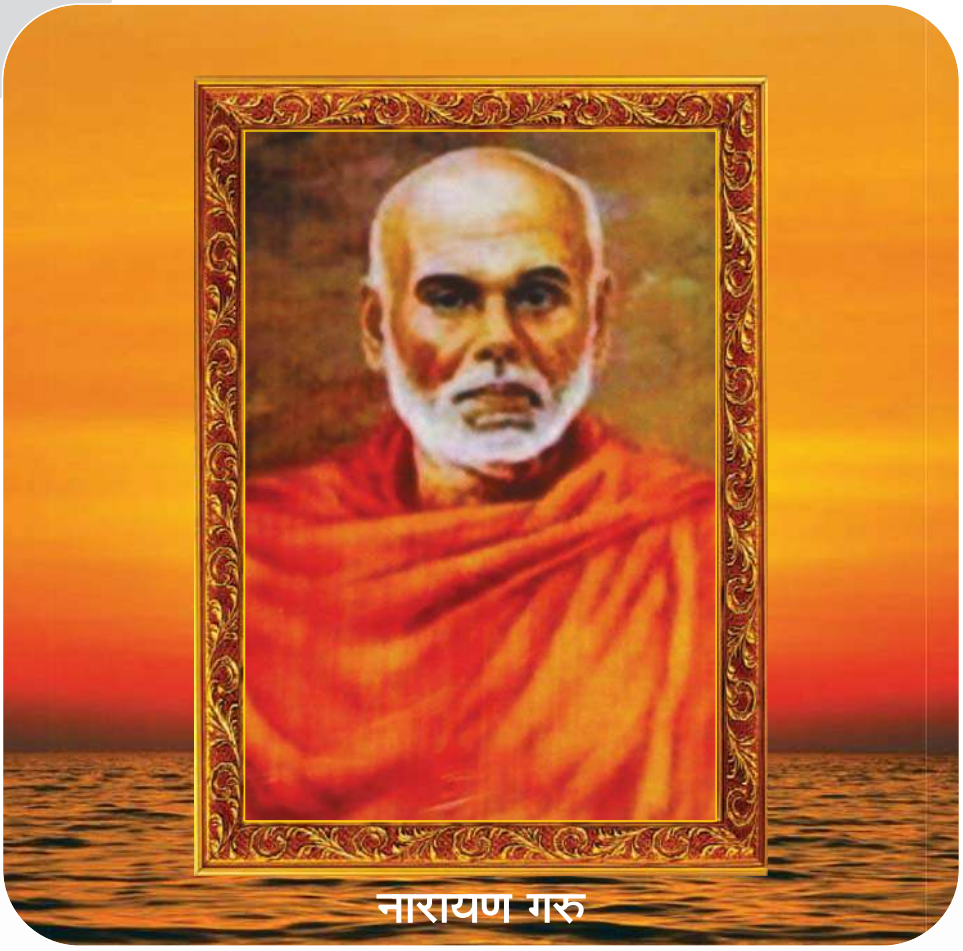

नारायण गुरु

भारत के महान संत एवं समाज सुधारक नारायण गुरु का जन्म केरल में 26 अगस्त, 1854 को हुआ था। कन्याकुमारी जिले में मारूतवन पहाड़ों की एक गुफा में उन्होंने तपस्या की, जहाँ उन्हें आत्मबोध प्राप्त हुआ। नारायण गुरू ने जाति-पाँत और ऊँच-नीच के भेद को दूर कर ऐसे धर्म मार्ग की स्थापना की बात कहीं, जिसमें सभी के लिए समान स्थान हो। वे महान समाज सुधारक थे।



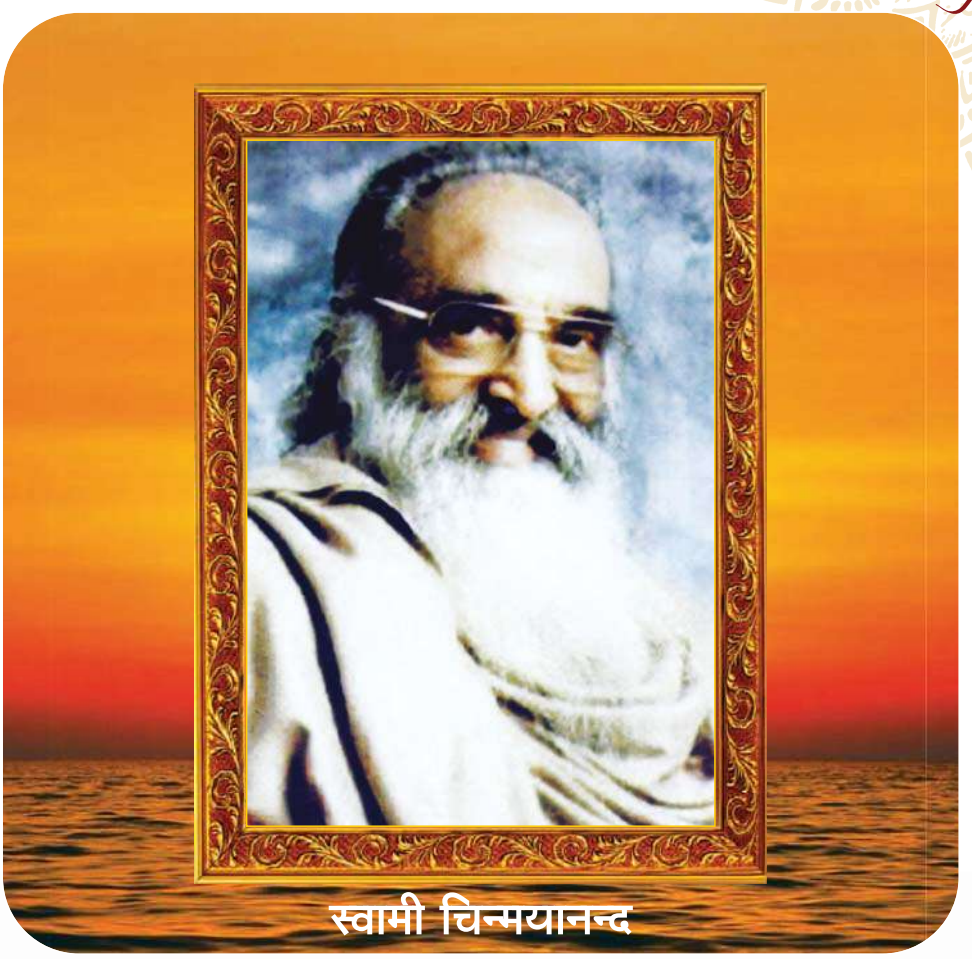

स्वामी चिन्मयानन्द

चिन्मय मिशन

चिन्मय मिशन की स्थापना स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती ने की। आध्यात्मिक जगत् के प्रख्यात संत स्वामी शिवानन्द से संन्यास दीक्षा लेकर वेदांत की शिक्षा उन्होनें संत तपोवन जी से प्राप्त की। स्वामी चिन्मयानन्द ने अपने ज्ञान यज्ञों के माध्यम से न केवल भारत में अपितु दुनिया के अनेक देशों में वेदांत का प्रचार-प्रसार किया। वर्तमान में उनके द्वारा स्थापित संस्था के माध्यम से उनके अनुयायी इस कार्य में संलग्न है।

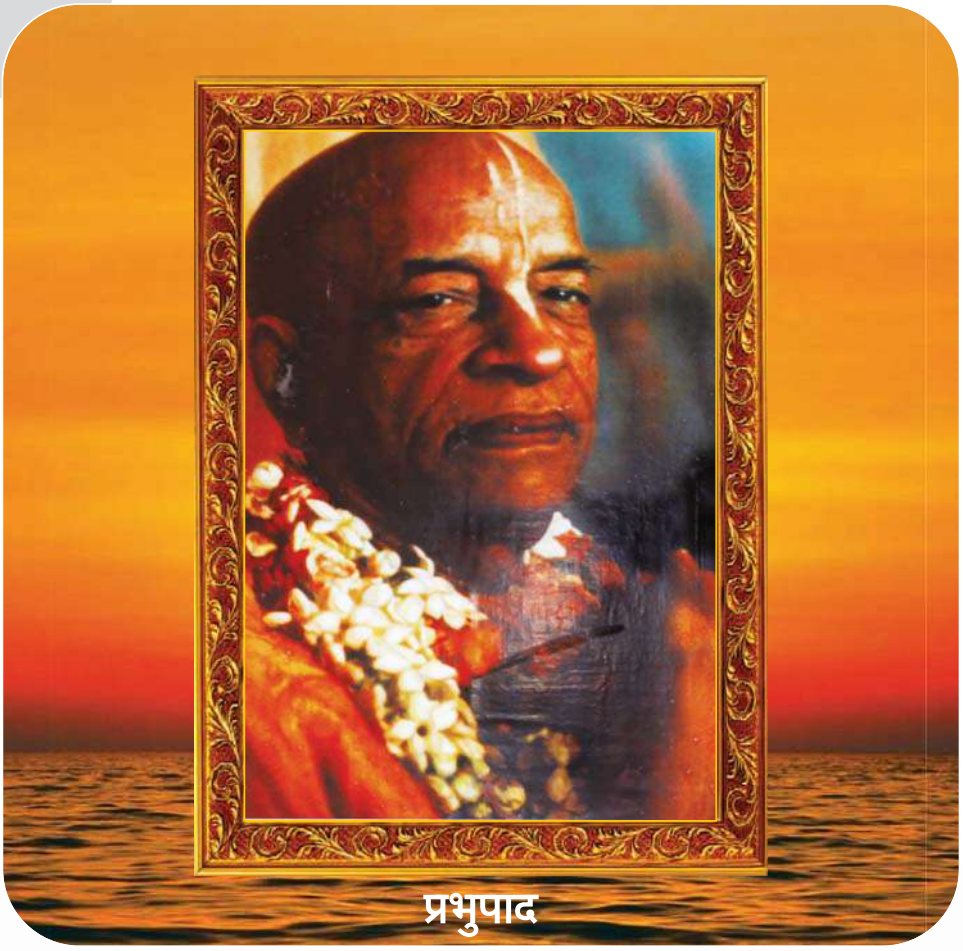

प्रभुपाद

अन्तर्राष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ

अन्तर्राष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ की स्थापना सन् 1966 ई. में स्वामी प्रभुपाद भक्ति वेदांत द्वारा की गयी। चैतन्य महाप्रभु के सन्देश को संपूर्ण विश्व में प्रचारित एवं प्रसारित करने के लिए भक्ति वेदांत स्वामी ने अपने शिष्यों को दुनिया के अनेक देशों में भेजा। उन्होंने श्रीमद्भगवद्गीता का अनेक खण्डों में आंग्लभाषा में व्याख्या की। प्रभुपाद ने चैतन्य चरितामृत एवं ईशोपनिषद् आदि ग्रंथों की भी आंग्ल भाषा में व्याख्या की। 1977 में उन्होंने इस संसार को छोड़ दिया।



परमहंस योगानंद

योगदा सत्संग सोसाइटी

योगदा सत्संग सोसाइटी की स्थापना परमहंस योगानंद ने सन् 1920 में की। वे क्रिया योग के महान सन्त महावतार बाबा तथा श्यामाचरण लाहड़ी की परम्परा के स्वामी मुक्तेश्वर गिरि के शिष्य थे। ये संस्था योग एवं वेदांत के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ दीन-दुखियों की सेवा एवं समाज में संस्कार निर्माण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रही है।



श्री वैष्णव संप्रदाय रामनुज मत

महिमा सम्प्रदाय

महिमा सम्प्रदाय की स्थापना 1833 ई. में महिमा स्वामी द्वारा उड़ीसा ढेन्कालल जनपद में सन् 1833 में की गयी। उन्होंने अपने 64 शिष्य बनाये, जिन्हें चौसठ सिद्ध के नाम से जाना जाता है। महिमा सम्प्रदाय अद्वैत निराकार ईश्वर का उपासक है। इसमें मूर्तिपूजा का विधान नहीं है। उड़ीसा में धर्मान्तरण रोकने में महिमा सम्प्रदाय का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

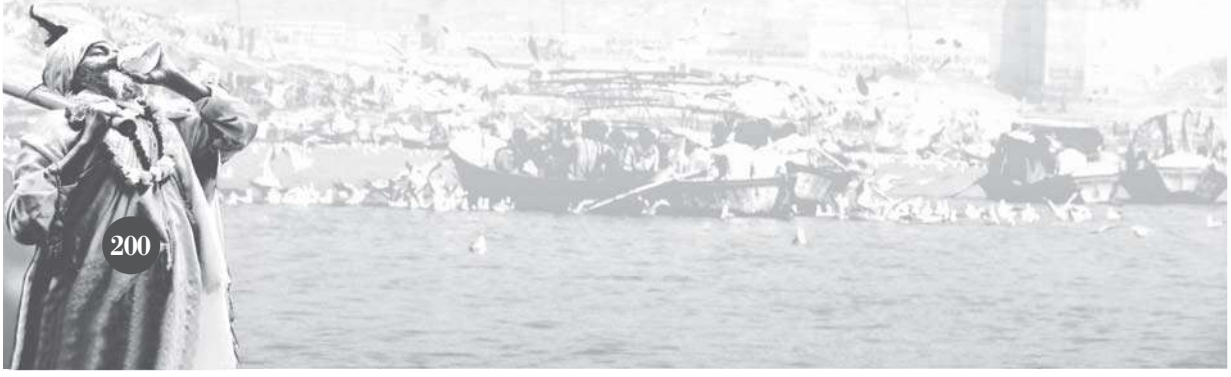



स्वामी प्रणवानंद

डिवाइन लाइफ सोसाइटी

स्वामी प्रणवानंद ने भारत सेवाश्रम संघ की स्थापना सन् 1917 ई. में की थी। संघ का उद्देश्य सनातन धर्म के सार्वलौकिक आदर्शों के आधार पर राष्ट्रीय जीवन का पुनः संगठन करना है। इसमें सन्यासी और निःस्वार्थी कार्यकर्ता भातृभाव से कार्य करते हैं। संघ के प्रमुख कार्य मनुष्य को ऊँचा उठाने वाली शिक्षा का प्रसार, पवित्र तीर्थ स्थानों का सुधार, पाप और अपराध निवारण का प्रयत्न, हिन्दू समाज का पुनर्निर्माण तथा सुधार, भारतीय संस्कृति के सार्वलौकिक आदर्शों का भारत तथा विश्व में प्रचार-प्रसार करना है।



शंकरदेव

महापुरुषिया सम्प्रदाय

महापुरुषिया संप्रदाय के प्रवर्तक शंकरदेव ने भारत का व्यापक भ्रमण कर सांस्कृतिक एकात्मता की अनुभूति की। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि भारत की राष्ट्रीय जीवन की एकात्मता राजनीतिक न हाकर सांस्कृतिक है और इस सांस्कृतिक एकता को उन्होंने भक्ति के आधार पर स्थापित करने का प्रयास किया। उन्होंने घोषणा की कि यवन, कंक, तुर्क, मलेच्छ, चंडाल चाहे जो कोई भी हो वह कृष्ण का नाम लेते ही पवित्र हो जाता है। वे भारतवर्ष में जन्म, मनुष्य का तन और हरि का नाम प्राप्त होना जीवन का महाभाग्य मानते हैं। उन्होंने पूर्वोत्तर भारत विशेष रूप से असम में सामाजिक और सांस्कृतिक एकता स्थापित करने का महान कार्य किया। असम में सन्तों के माध्यम से आज भी यह भक्ति भावना प्रवाहित हो रही है।

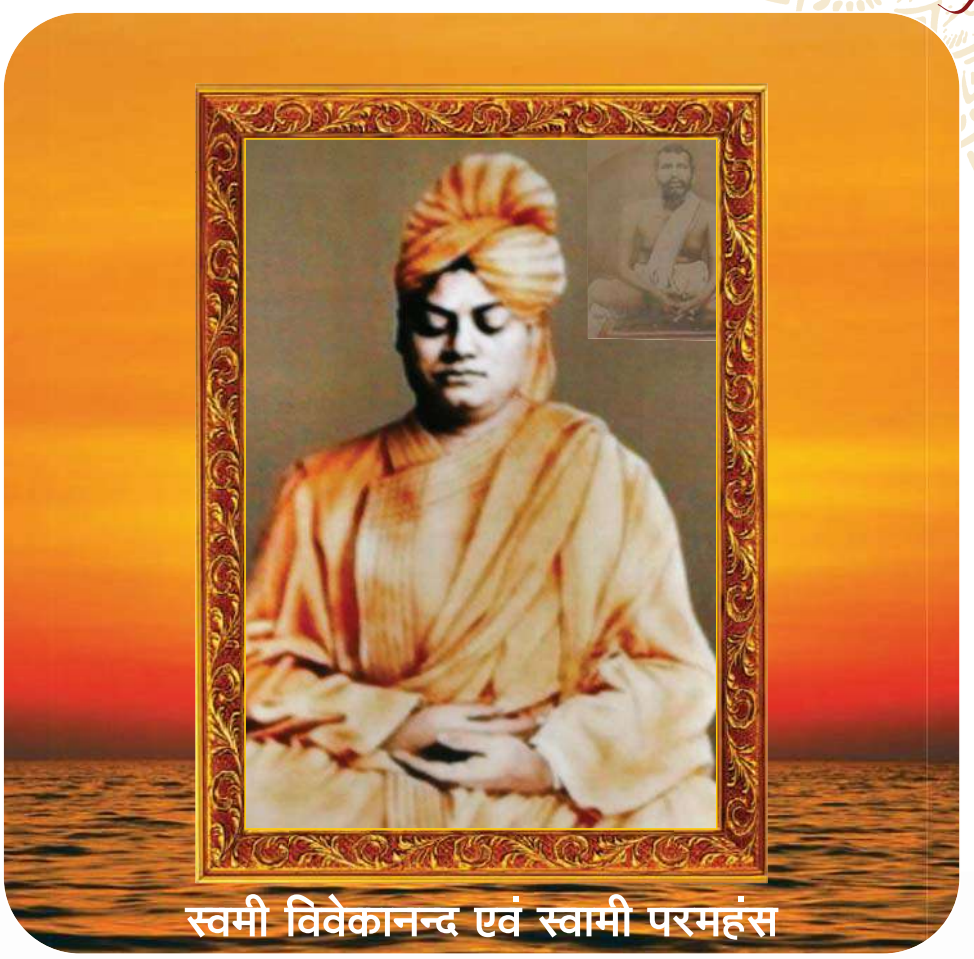

स्वमी विवेकानन्द एवं स्वामी परमहंस

रामकृष्ण मठ

रामकृष्ण मठ के संस्थापक रामकृष्ण परमहंस के प्रख्यात शिष्य स्वामी विवेकानंद थे। स्वामी विवेकानंद के जीवन की सबसे महत्वूपर्ण घटना सन् 1893 ई. में अमेरिका के शिकागो शहर में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेकर भारतीय तत्व-ज्ञान एवं संस्कृति का वैश्विक स्तर पर सम्मानवर्धन करना है। उन्होंने अपने व्याख्यानों के माध्यम से अमेरिका एवं यूरोप में भारतीय संस्कृति की धर्म ध्वजा फहरायी। समाज की सेवा तथा आध्यात्म के प्रयार-प्रसार हेतु स्वामी विवेकानंद ने अपने गुरु भाइयों के साथ मिलकर एक मई, 1897 ई. को रामकृष्ण मठ की स्थापना की, जिसका ध्येय वाक्य 'आत्मनो मोक्षार्थं जगत् हिताय च' है। स्वामी विवेकानंद का प्रसिद्ध उद्घोष हैं- **'गर्व से कहो हम हिन्दू हैं।'**



बाबा गरीबदास

गरीबदासी पंथ

गरीबदासी पंथ के संस्थापक संत गरीबदास का जन्म हरियाणा के झज्जर जिले के संपन्न जाट परिवार में सन् 1717 में हुआ था। संत गरीबदास जी के उपदेशों में संत कबीर के विचारों का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। बाबा गरीबदास की वाणी के नाम से प्रसिद्ध ग्रन्थ में संत कबीर की सात सौ और गरीबदास जी की सत्रह सौ वाणियाँ संग्रहीत हैं। वेदान्त की शिक्षाओं का सरल एवं सहज रूप में सामान्य समाज में प्रचार-प्रसार करने के कार्य में गरीबदासी पंथ निरंतर लगा हुआ है।



संत घीसादास

घीसा पंथ

घीसा पंथ के संस्थापक संत घीसादास जी का जन्म दिल्ली के निकट खेकड़ा नामक ग्राम में हुआ था। इनके माता-पिता संत कबीर के अनुयायी थे। संत घीसादास जी की वाणियों में भी कबीर की निर्गुण ईश्वरोपासना की स्पष्ट छाप दिखाई पड़ता है।



बाबा दयाल खत्री

निरंकारी पंथ

निरंकारी पंथ की स्थापना सहजधारी सिख मल्होत्रा खत्री बाबा दयाल के द्वारा की गयी। बाबा दयाल निरंकार के उपासक थे। उनका गुरु मंत्र **'धन निंरकार'** है।



बाबा दयाल



संत दादू दयाल

दादू पंथ

दादू पंथ के संस्थापक संत दादूदयाल के गुरु कौन थे, इस संबंध में उन्होंने स्वयं कुछ नहीं कहा है, परंतु उनकी साधना पद्धति संत कबीर के इतने समरूप है कि दादू पंथ को कबीर पंथ की ही एक शाखा माना जाता है। संत दादू दयाल ने अपने पंथ का नाम ब्रह्म संप्रदाय रखा था, लेकिन बाद में यह **'दादू पंथ'** के नाम से जाना गया। इनके प्रमुख बावन शिष्य थे, जिनमें निश्चलदास, गरीबदास, सुन्दरदास, जगन्नाथदास और रज्जबदास अत्यंत प्रसिद्ध हैं। दादू पंथ के मंदिरों को दादू द्वारा कहा जाता है।



लकुलीश

पाशुपत लकुलीश मत

शिव पुराण के कारवण महात्म्य के अनुसार पाशुपत मत के संस्थापक का नाम नकुलीश या लकुलीश था। लुगड़ (लाठी) धारण करने के कारण इन्हें लकुलीश कहा जाता है। पाशुपत शब्द पशुपति (शिव) से बना है। पशुपतों का मूल ग्रंथ महेश्वर रचित पाशुपत सूत्र है।

कापालिक तथा कालमुख

कालपालिक मत शैव संप्रदाय के पाशुपत मत की शाखा है। कापालिकों की साधना में बौद्ध मत के वज्रयानियों से समानता है। इसमें शिव को जीव से अभिन्न माना गया है और योगाभ्यास द्वारा शिव को प्राप्त किया जा सकता है।



अभिनवगुप्त

कश्मीर शैव मत या प्रत्यभिज्ञा दर्शन

कश्मीर शैव मत के प्रमुख आचार्यों में आचार्य वसुगुप्त, सोमानंद और अभिनवगुप्त का नाम प्रमुख रूप से आता है। कश्मीर शैव मत अद्वैतवादी होने के कारण दार्शनिक दृष्टिकोण से समानतावादी है। प्रत्यभिज्ञा का द्वार जनसाधारण के लिए खुला है। प्रत्यभिज्ञा दर्शन में वाह्य क्रियाकलापों अथवा लौकिक कर्मकांड के स्थान पर केवल अपने शुद्ध स्वरूप के ज्ञान मात्र को परम अवस्था की प्राप्ति का साधना माना गया है।



गुरु रामसिंह कूका

नामधारी पंथ

नामधारी पंथ के संस्थापक राम सिंह कूका का जन्म लुधियाना के भैणी साहब में हुआ था। उन्होंने भक्ति एवं वीर भाव को जागृत कर देश में प्रेम, आपसी भाईचारा, सहनशीलता व मिल-बाँटकर रहने की प्रेरणा दी। गुरु राम सिंह कूका ने गोरक्षा, स्वदेशी, नारी उद्धार आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किया। कूका विद्रोह के बाद अंग्रेजों द्वारा उन्हें बर्मा के मांडले जेल भेज दिया गया।

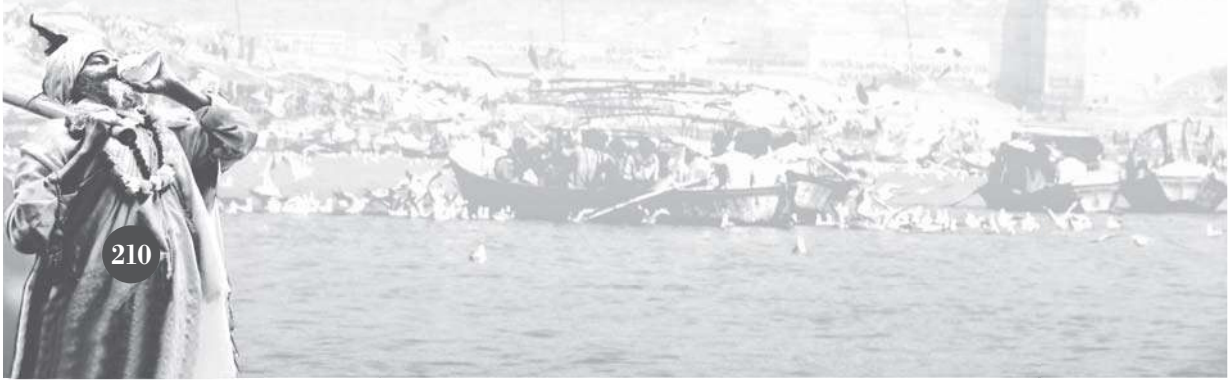

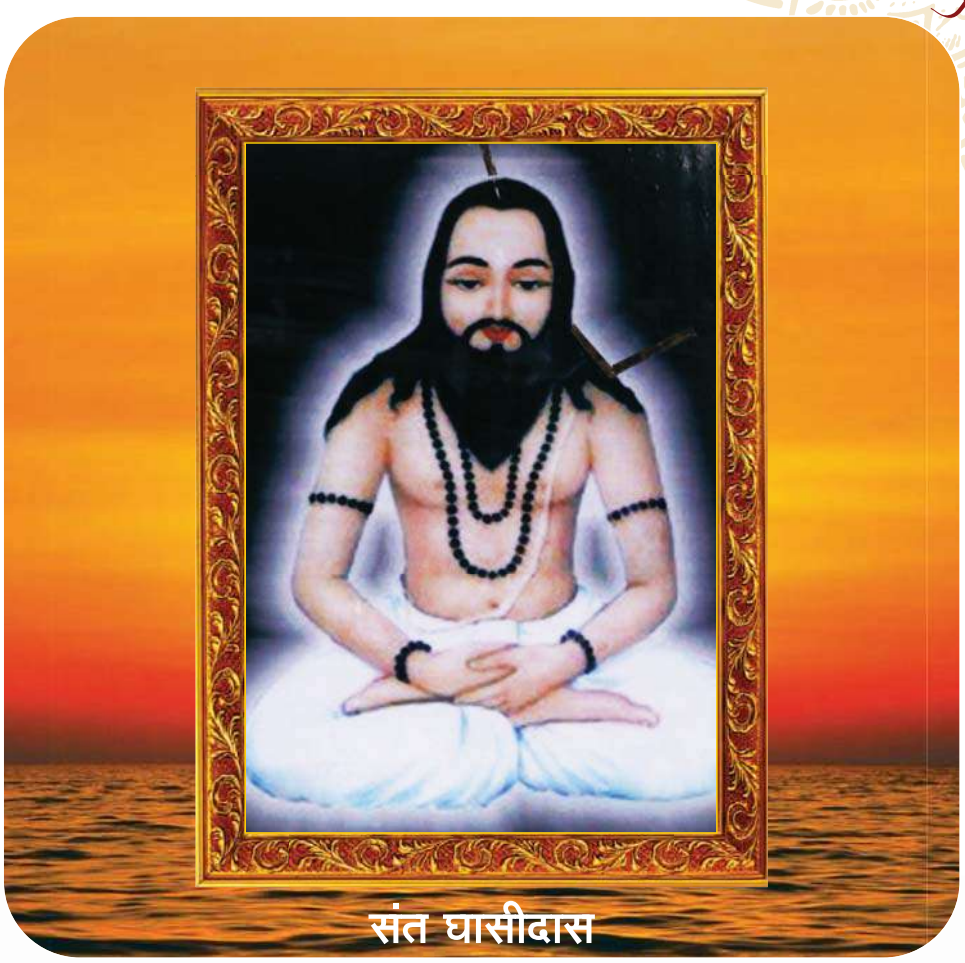

संत घासीदास

निर्गुण धारा

नाम की महिमा या रामोपासना पर आधारित इस निर्गुण धारा के प्रवर्तक कौन हैं इस संबंध में कोई ऐतिहासिक जानकारी नहीं है। इसके पुनरुद्धारक संतों में जगजीवन दास (बाराबंकी), इलनदास (रायबरेली) और घासीदास (छत्तीसगढ़) प्रसिद्ध हैं। कबीर के नाम महिमा की अद्वैत परंपरा को लेकर सोलहंवी सदी में यह पंथ प्रचलित हो गया था। दिल्ली के निकट नरनौला नामक स्थान पर मुगल बादशाह औरगंजेब की सेना और सतनामियों के मध्य संघर्ष में बहुत बड़ी संख्या में सतनामियों को मार दिया गया था।



भगवान गौतम बुद्ध

बौद्ध धर्म

बौद्ध धर्म भारत की श्रमण परंपरा का एक आध्यात्मिक मार्ग है। बौद्ध धर्म का प्रवर्तन ईसा पूर्व छठवीं शताब्दी में महात्मा बुद्ध ने किया था। बौद्ध धर्म की दो प्रमुख शाखाएँ थेरवाद (हीनयान) और महायान हैं। बौद्ध धर्म में बुद्ध, धम्म और संघ को त्रिरत्न के रूप में स्वीकार किया गया है। भगवान बुद्ध ने चार आर्य सत्य का उपदेश दिया। 1) दुःख, 2) दुःख समुदय, 3) दुःख निरोध, 4) दुःख निरोध-गामिनी प्रतिपदा। बौद्ध साधना को अष्टांगिक मार्ग के नाम से जाना जाता है। यह आठ अंग हैं- 1) सम्यक दृष्टि, 2) सम्यक संकल्प, 3) सम्यक वाणी, 4) सम्यक कर्मांत, 5) सम्यक आजीव, 6) सम्यक व्यायाम, 7) सम्यक स्मृति, 8) सम्यक समाधि। बौद्ध धर्म में कर्म एवं पुनर्जन्म को महत्व दिया गया है। सम्पूर्ण विश्व में बौद्ध धर्म का व्यापक प्रचार-प्रसार है।



गुरुनानक

सिख पंथ

पंजाब की धरती पर निर्गुणोपासना की ज्योति जलाने वाले गुरु नानक देव ने सिख पंथ की आधारशिला रखी। सिख पंथ में गुरु नानक देव, गुरु अंगद देव, गुरु अमरदास, गुरु रामदास, गुरु अर्जुन देव, गुरु हरगोविन्द, गुरु हरि राय, गुरु हरिकृष्ण, गुरु तेगबहादुर और गुरु गोविन्द सिंह। इनके बाद पवित्र ग्रंथ गुरुग्रंथ साहब को गुरु की पदवी प्रदान कर दी गयी, जिसमें छः गुरुओं की वाणियों सहित देश के विभिन्न भागों के संतों की वाणियाँ संग्रहीत है। सिख पंथ का मूलाधार सादगी, सच्चरित्र, सद्भावना, एकता एवं उदारता है। मुस्लिम शासकों ने सिख गुरुओं को तरह-तरह से प्रताड़ित किया, परन्तु वे विचलित नहीं हुए। दो गुरुओं गुरु अर्जुनदेव और तेगबहादुर को अपना बलिदान भी देना पड़ा।

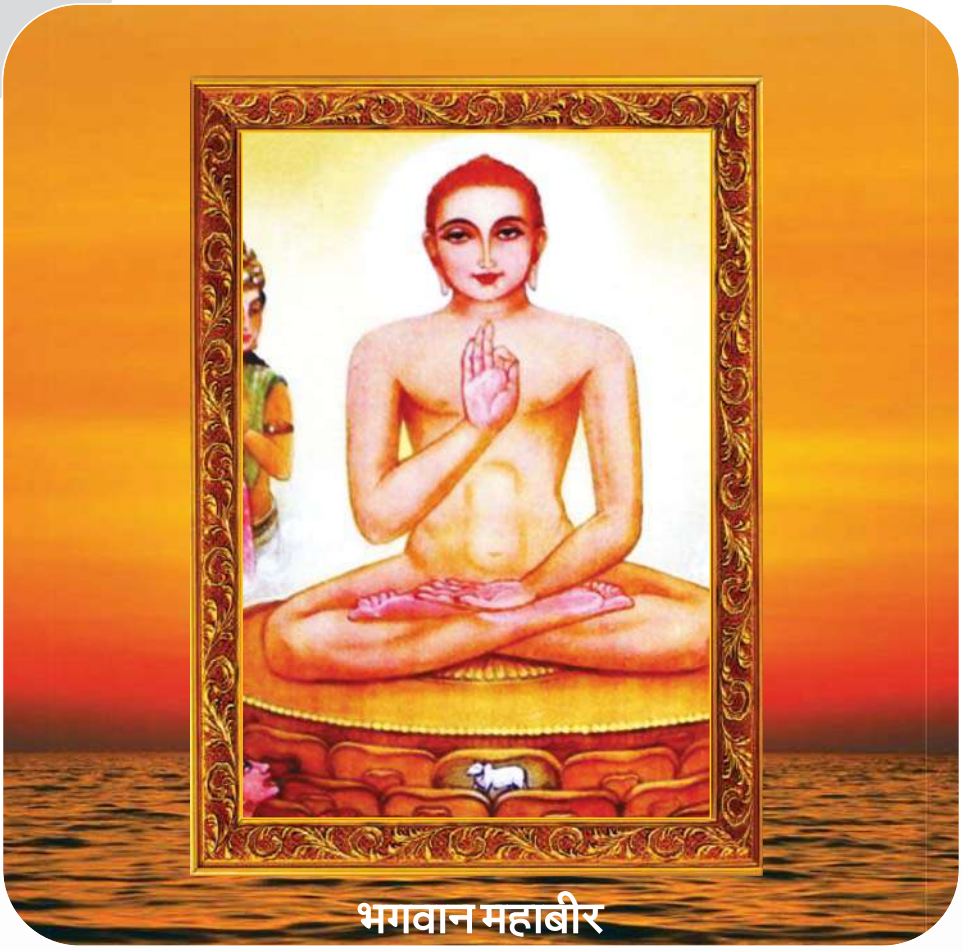

भगवान महाबीर

जैन पंथ

जैन धर्म भी भारत में उद्भूत श्रमण परंपरा का प्राचीनतम धर्म है। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का उल्लेख वेदों में भी प्राप्त होता है। जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म ई. पू. 599 ई. में माना जाता है। उन्होंने ही जैन धर्म में संघ व्यवस्था का निर्माण किया। मुनि, आर्यिका, श्रावक और श्राविका यह चतुर्विध संघ कहलाया। भगवान महावीर के काल में ही इस श्रमण परंपरा का नाम जिन (जैन) पड़ा। बाद में जैन धर्म दो मुख्य शाखाओं श्वेताम्बर और दिगंबर में विभक्त हो गया। दोनों सम्प्रदायों में मतभेद दार्शनिक सिद्धांतों से ज्यादा चरित्र को लेकर है। दिगम्बरों की तीन शाखाएँ हैं - मंदिरमार्गी, मूर्तिपूजक और तेरापंथी। श्वेताम्बरों की दो शाखाएं हैं - मंदिर मार्गी और स्थानकवासी। जैन धर्म का प्रमुख दर्शन स्यादवाद और अनेकांतवाद है। जैन दर्शन में सात तत्वों को महत्त्व दिया गया है - जीव, अजीव, आस्रव, संवर, निर्जरा, बंध और मोक्ष। जैन साधना के पांच व्रत हैं - अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और आपरिग्रह।



निर्मल पंथ

निर्मल पंथ सिख विद्वानों का पंथ है। निर्मल पंथ की स्थापना गंडा सिंह, कर्म सिंह, सेन सिंह, वीर सिंह और राम सिंह नाम के पाँच सिखों ने की, जिन्हें गुरु गोविन्द सिंह ने संस्कृत की शिक्षा के लिए सन् 1688 ई. में पाउन्टा साहब से बनारस भेजा था। गुरु गोविन्द सिंह ने इन लोगों को बिना किसी भेदभाव के अनपढ़ लोगों को शिक्षित करने एवं एक निरंकार ईश्वर के प्रचार का दायित्व दिया। वर्तमान में यह विरक्त सन्यासियों की एक शाखा है।



आकाली निहंग सिंह खालसा

अकाली निहंग खालसा

अकाली निहंग खालसा सिख योद्धाओं का संगठन है, जिसकी ऐतिहासिक उत्पत्ति सत्रहवीं शताब्दी में हुई। अकाली निहंगों के अनुसार चंडी महाकाल की प्राथमिक शक्ति हैं, जो दुष्टों से युद्ध करती हैं। चंडी की उपासना तेगा (तलवार) के रूप में की जाती है। अकाली निहंगों को गुरुजी की लाडली फौज के नाम से जाना जाता है।





मत्स्येन्द्रनाथ

नाथ संप्रदाय

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में नाथ संप्रदाय कितना प्राचीन है, यह निश्चित कर पाना अत्यंत दुष्कर है। इसके संस्थापक मत्स्येन्द्र नाथ माने जाते हैं। उनके शिष्य गोरक्षनाथ ने नाथ सम्प्रदाय का परिष्कार कर वर्तमान स्वरूप प्रदान किया। वर्तमान नाथ संप्रदाय के प्रवर्तक गुरू गोरक्षनाथ का स्थितिकाल 9वीं शताब्दी के आस-पास माना जाता है। गुरु गोरक्षनाथ ने विभिन्न मतों की श्रेष्ठ परम्पराओं को अंगीकार कर अपने मत का प्रवर्तन किया। गोरक्षनाथ ने जाति, भाषा, वर्ण के भेद-भाव से ऊपर उठकर संपूर्ण समाज को एकता के सूत्र में पिरोने का महान कार्य किया। संप्रदाय प्रवर्तकों में गोरक्षनाथ उन महापुरुषों में हैं जिनका व्यापक प्रभाव संपूर्ण भारतवर्ष में है।



भाई कन्हैया

सेवा पंथ

सेवा पंथ के संस्थापक भाई कन्हैया का जन्म 1648 ई. में हुआ था। वे नवें गुरू तेगबहादुर के शिष्य थे। गुरु तेगबहादुर ने इन्हें मानवता की सेवा का निर्देश दिया था। आनंदपुर साहब के युद्ध में उन्होंने गुरु गोविन्द सिंह की सेना और शत्रु सेना की समान रूप से सेवा की। लोगों के शिकायत करने पर जब गुरु गोविन्द सिंह ने उनसे पूछा तब उन्होंने कहा कि **'मैं शत्रु और मित्र में भेद नहीं कर सकता, क्योंकि मुझे सभी में आपके ही दर्शन होते है।'** इनकी मृत्यु के पश्चात् इनके अनुयायियों को सेवा पंथी के नाम से जाना जाने लगा।

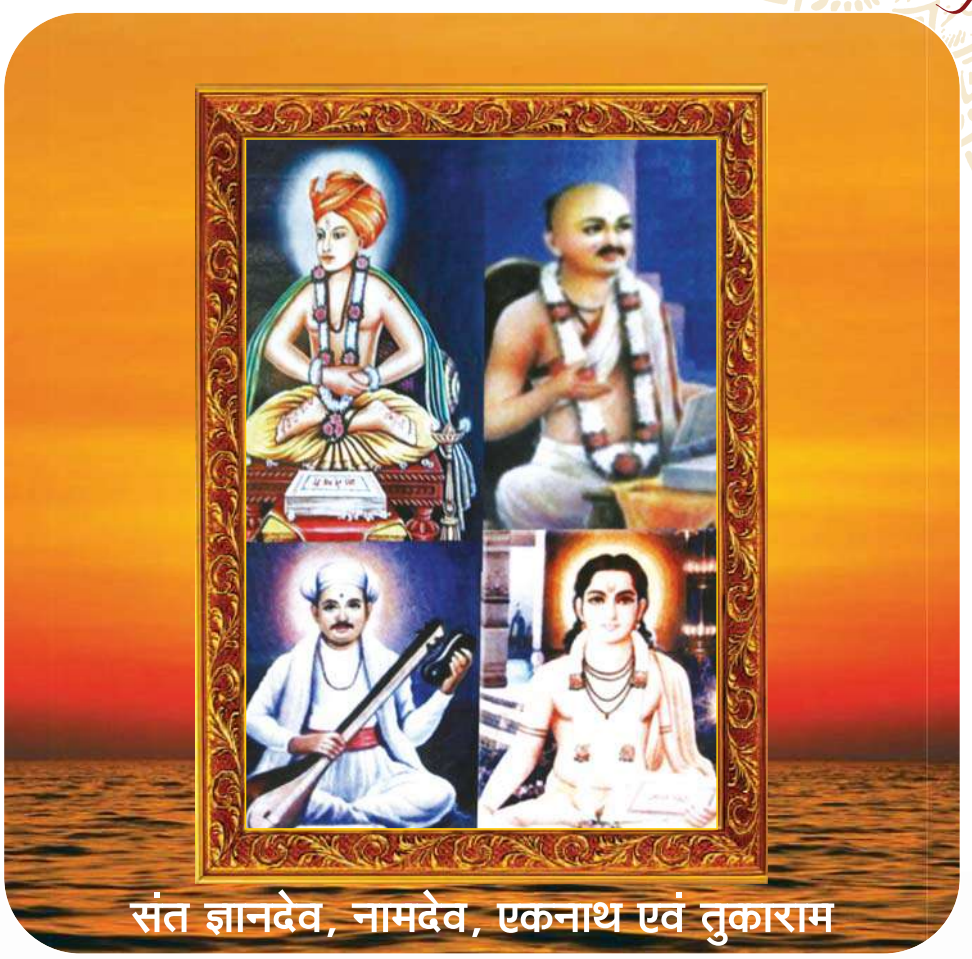

वारकरी संप्रदाय

वारकरी संतों ने साधना के क्षेत्र में जाति, वर्ण, कुल, गोत्र आदि किसी भी चीज को महत्व नहीं दिया। वारकरी संप्रदाय के मूल प्रवर्तक पुंडरीक माने जाते हैं। उनकी मान्यता है कि भगवान की प्राप्ति के लिए मात्र भक्तिभाव का होना ही पर्याप्त है। संत ज्ञानेश्वर कहते हैं कि भगवान को प्राप्त करने के लिए न शुद्ध कुल की आवश्यकता है, न प्रसिद्धि की जरूरत है, न मिथ्या ज्ञान के अभिमान की और न ही संपत्ति की, केवल भक्ति से ही भगवान प्रसन्न होते हैं। इन संतों के अतिरिक्त ज्ञानेश्वर के भाई बहन निवृत्तिनाथ, स्वपान देव और मुक्ताबाई का वारकरी संप्रदाय में विशेष योगदान है।

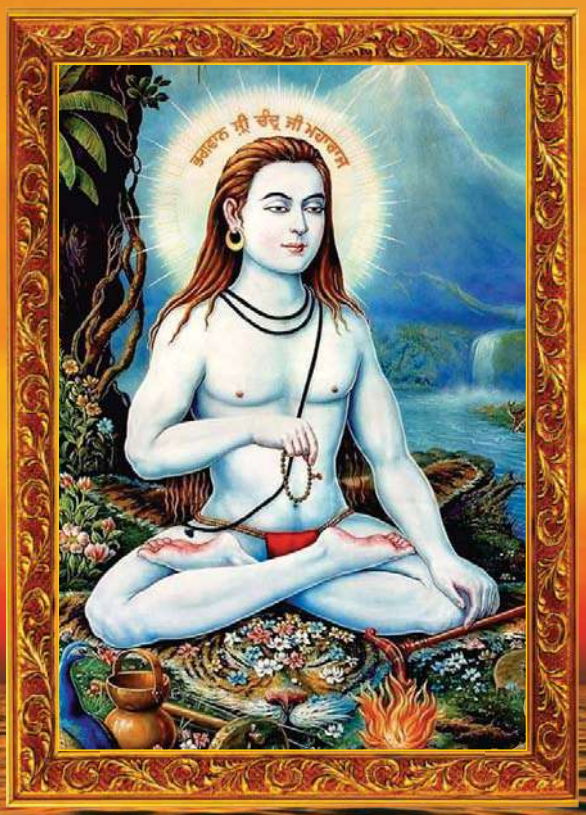

गुरु नानक देव के पुत्र श्री चन्द्र

उदासीन पंथ

उदासीन पंथ के संस्थापक गुरु नानक देव के पुत्र श्री चन्द्र जी थे, जिन्होंने अविनाशी मुनि से शिक्षा प्राप्त कर वैदिक धर्म के उद्धार का सकल्प लिया। विरक्त होते हुए भी वे पञ्चदेवोपासना में दृढ़ विश्वास रखते थे। उन्होंने शैव, शाक्त, वैष्णव, गाणपत्य तथा सौर मतावलंबियों को एक सूत्र में गूंथने का कार्य किया। श्री चन्द्र जी ने धर्म के प्रचार के लिए तिब्बत, भूटान, नेपाल, कंधार, काबुल सहित भारत के सभी महत्वपूर्ण स्थानों का भ्रमण किया। उनका उद्घोष था -

चेतहु नगरी, तारहु गाँव,
अलख पुरुष का सिमरहु नाँव।





भगवान श्रीकृष्ण विश्व रूप

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।।

गीता 4/11

जो मुझे जिस प्रकार भजते हैं, मैं भी उनको उसी प्रकार भजता हूँ, क्योंकि सभी मनुष्य सब प्रकार से मेरे ही मार्ग का अनुसरण करते हैं।



प्रणामी संप्रदाय

प्रणामी संप्रदाय एक वैष्णव संप्रदाय है, जिसके प्रवर्तक देवचन्द्र महाराज थे। बुंदलेखंड के प्रतापी राजा छत्रसाल के गुरु प्राणनाथ स्वामी ने इसका व्यापक प्रचार-प्रसार किया, उन्हीं के नाम पर यह प्रणामी सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस संप्रदाय में भगवान श्रीकृष्ण को बालरूप में पूजा जाता है। प्रणामी सम्प्रदाय एक समन्वयवादी सम्प्रदाय है।





रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिल नानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव।

शिवमहिम्नस्तोत्रम्।

अलग-अलग स्रोतों से निकली नदियाँ अंत में समुद्र में जाकर मिल जाती हैं, उसी तरह मनुष्य अपनी इच्छा के अनुरूप अलग-अलग मार्ग चुनता है, जो देखने में भले ही सीधे या टेढ़े-मेढ़े लगें लेकिन सब आप (भगवान) तक ही जाते है।

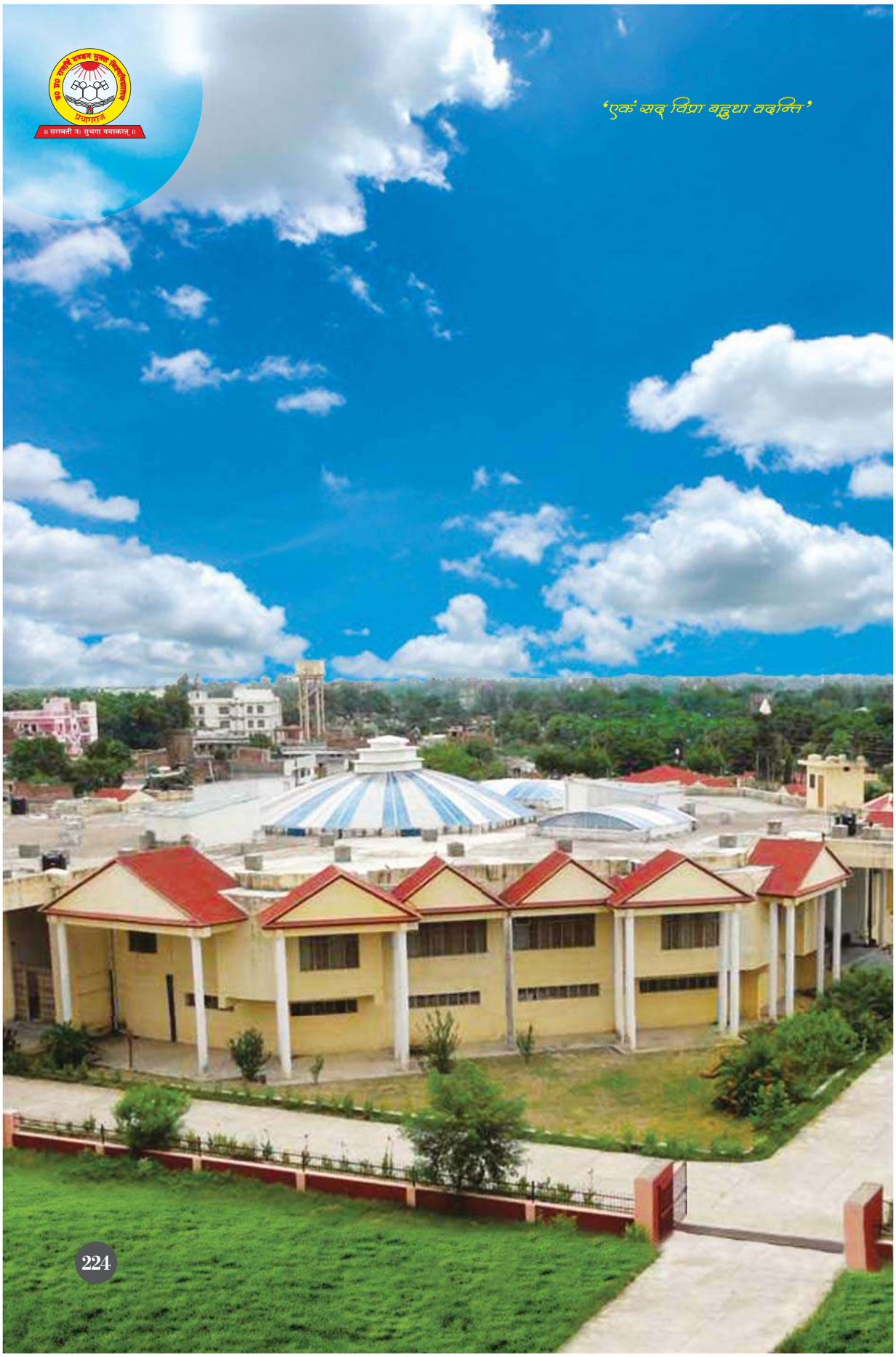
॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥
'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति'

Report

Of

National Seminar

On

"Applications of Scientific and Statistical Software in Research"

30-31 March, 2017

Organized by

School of Sciences, U. P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad

National Seminar
On
Applications of Scientific and Statistical Software in Research

30-31 March, 2017

Funded by U.P. State Government

Organized by

School of Sciences
U. P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad

Patron
Prof. M. P. Dube
Hon'ble Vice Chancellor, U.P.R.T.O.U., Allahabad

Dr. Ashutosh Gupta
Seminar Director

Dr. G. K. Dwivedi
Convener

Mr. M. K. Balwant
Co-Convener

Dr. Shruti
Organizing Secretary

Dr. D. K. Gupta
Co- Organizing Secretary

Ms. Marisha
Coordinator

Venue
Saraswati Parisar (Academic Block)
U. P. Rajarshi Tandon Open University, Shantipuram, Sector – F, Phafamau, Allahabad
www.uprtou.ac.in

Report
on
National Seminar
On
Applications of Scientific and Statistical Software in Research

The national Seminar on Applications of Scientific and Statistical Software in Research was organized by the School of Science on 30-31 March 2017 at U.P. Rajarshi Tandon Open University Allahabad.

Science and Technology has tremendous impact upon the higher studies. Today Scientific and Statistical softwares are very much used in the study of research. These are the innovative area in science and social area of education. In the present scenario where daily new challenges are being faced by researchers, the use of technology in research and introduction of various softwares are necessary. It is very important to focus on these areas and facilitate research work with proper implementation of statistical tools and also some of the softwares should demonstrate how they use in the research of different subject. Statistical and scientific software are programs which are used for the statistical analysis of the collection, organization, analysis, interpretation and presentation of data. The authenticity of any research work can be validated by analyzing its statistical tools. In the present scenario where daily new challenges are being faced by researchers, use of technology in research, introduction of various software for data analysis. It is very important to focus on these areas.

This seminar aims to promote exchange of information and ideas related with the use of scientific and statistical softwares in different subjects. The base of research is the quality of any type of data and its analysis. In which statistics and different softwares are playing more imperative role in all areas of research, whether it is scientific or social. With the help of these a researchers validates its findings and formulate conclusions and suggestions and also emphasized the learners and researchers to create a professional quality, typeset publication for their doctoral thesis and writing scientific and technical papers. It also aims to bring together the applied & theoretical statisticians, researchers & students on one platform to

understand the application of Statistics in the above stated fields. It is also aim to understand & develop their skills for statistical consulting, analysis & applied research.

In the above alleged seminar, total numbers of Registered Participants are more than hundred; under the area different areas and belongs to different states of India and two from ***Nepal.***

Report of Inaugural Session

National Seminar
On
Applications of Scientific and Statistical Software in Research

30-31 March, 2017

Funded by U.P. State Government

Organized by

School of Science
U.P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad

You are cordially invited in the

Inaugural Session

30th March, 2017 at 10:30 a.m.
Tilak Shshtrarth Sabhagar, Academic Block, UPRTOU, Allahabad

Chief Guest

Prof. G. C. Nandi
Director, IIIT, Allahabad

Key Note Speaker

Prof. Anup Chaturvedi
Head, Department of Statistics, University of Allahabad, Allahabad

President

Prof. M. P. Dube
Vice-Chancellor, U. P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad

Regards

Dr. Ashutosh Gupta
Seminar Director

Dr. G. K. Dwivedi
Convener

Dr. Shruti
Organizing Secretary

Schedule of Inaugural Session (30th March, 2017)

National Seminar
On
Applications of Scientific and Statistical Software in Research

30-31 March, 2017

Funded by U. P. State Government

Introduction and Welcome of Guests (By Dr. Shruti, Organizing Secretary) 1-Chief Guest 2- Key Note Speaker 3- President	:	10:30 AM
Lighting of the Lamp & Floral Tribute to Maa Sarswati	:	10:35 AM
About University (By Dr. Girish Kumar Dwivedi, Convener)	:	10:40 AM
About Seminar (By Mr. Manoj Balwant, Co-Convener)	:	10:45 AM
Ceremonial Greetings of the Guests	:	10:50 AM
Address by Key Note Speaker	:	10:55 AM
Address by Chief Guest	:	11:05 AM
Presidential Address	:	11:15 AM
Vote of Thanks (By Dr. Ashutosh Gupta, Seminar Director)	:	11:30 AM
National Anthem	:	11:35 AM

Tea Break

Report of Inaugural Session

Under the Umbrella of Indian culture, the Inaugural Session began through the warm Indian welcome of distinguish guests.

After the Indian welcome, program took its speed with 'Welcome Address' by Dr Shruti, Organizing Secretary. On the continuation she also introduce all distinguish guests on the dais. Under this process all dais persons were florid by the bouquet.

Now program took its first step with the lightening of Lamp of Knowledge and Flowery Tribute to Portraits of Maa Saraswati by all respected dais persons.

Dr. Girish Kumar Dwivedi, Convener, told about the university, its work culture, its expansion and vision.

Mr. M. K. Balwant, Co-Convener, conferred the objectives and aim of said Seminar in 'About the Seminar'. He told about the aim and utility of held seminar. In this He explained that Statistics plays an important role in the field of modern - era research. He also told that with the help of different accurate Statistical Tools & Statistical Softwares, any researcher may get more accurate scientific result from the data.

On the moment of 'Ceremonial Greetings', the 'Angwastram' and 'Smrati-chinhha' was presented by the hon'ble Vice-Chancellor of UPRTOU to all respected guests who was chaired on the dais.

The Key Note Speaker Prof. Anup Chaturvedi, Department of Statistics, University of Allahabad, Allahabad, discuss about the statistical techniques, utility of softwares and also the applications of both in any research.

Chief Guest of this session, Prof. G. C. Nandi, Director, IIIT, Allahabad; told about use of softwares in researches and further studies. He also told any research is useful, when it will be used for human beings.

Prof. M. P. Dubey, Hon'ble Vice-chancellor, U. P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad; delivered his Presidential Address. He told researcher choose their topic with his own choice and interest. In his speech he told about the research problem, research design, and different variables. He also told about the data collection, its calculation and also different Statistical Techniques and Statistical Tools as well as Statistical Software. He also told without the knowledge of Statistics, researcher can't find appropriate result and interpretation of result. He told the knowledge of Statistics is much useful of the modern researches, so that present workshop will be useful for the participants and learners.

The 'Vote of Thanks' was given by Dr. Ashutosh Gupta, Seminar Director. In this he thanked to all persons who were involved in said national seminar directly and indirectly.

The inaugural session was finished with the National Anthem & announcement of high tea.

National Seminar

On

Applications of Scientific and Statistical Software in Research

30-31 March, 2017

(Funded by U.P. State Government)

Inaugural Session

30th March, 2017 at 10:30 a.m.

Organized by

School of Science

U.P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad

Chief Guest
Prof. G. C. Nandi
Director, IIIT, Allahabad

President
Prof. M. P. Dube
Vice-Chancellor, U. P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad

Key Note Speaker
Prof. Anup Chaturvedi
Head, Department of Statistics, University of Allahabad, Allahabad

Day-Wise Report

Schedule

National Seminar
on
Apllications of Scientific and Statistical Softwares in Research

30th March, 2017

Date	*Time*	*Programme*	*Venue*
30.03.17 (Thuresday)	9:00 am - 10:30 am	Registration	Saraswati Parisar
	10:30 am - 11:30 am	Inaugural Session	Tilak Shashtrath Sabhagar
	11:30 am- 12:00 noon	***Tea***	
	12.00 noon - 01:30 pm	Technical Session – I	Tilak Shashtrath Sabhagar
	01:30 pm - 02:00 pm	***Lunch***	
	02:00 pm - 03:30 pm	Technical Session – II	Tilak Shashtrath Sabhagar
	03:30 pm - 03:45pm	***Tea***	
	03:45 pm - 05:00 pm	Technical Session – III	Tilak Shashtrath Sabhagar

31th March, 2017

Date	*Time*	*Programme*	*Venue*
31.03.17 (Friday)	10:30 am - 11:45 am	Technical Session – IV	Tilak Shashtrath Sabhagar
	11:45 am - 12:00 noon	***Tea***	
	12.00 noon - 01:30 pm	Technical Session – V	Tilak Shashtrath Sabhagar
	01:30 pm - 02:15 pm	***Lunch***	
	02:15 pm - 03:30 pm	Technical Session – VI	Tilak Shashtrath Sabhagar
	03:30 pm - 04:30 pm	Veledictory Session	Tilak Shashtrath Sabhagar
	04:30 pm - 05:00 pm	***Tea***	

Schedule (NSSR - 2017)

S.No	Speaker	Paper Title
1.	***Prof. Anup Chaturvedi**, Deptt. Of Statistics, University of Allahabad, Allahabad.*	Data Mining With **R Software**
2.	***Prof. S. K. Pandey**, Deptt. Of Statistics, Lucknow University Lucknow.*	Modeling under Nutrition among under-five Children of Uttar Pradesh using **SPSS** and **STATA**
3.	***Prof. S. S. Mishra**, Deptt. Of Maths & Stats, Dr. R. M. L. Awadh University, Faizabad.*	Optimization of Supply Chain Model using Fuzzy Approach using **R Software**
4.	***Prof. S. N. Shukla**, Deptt. of Physics & Electronics, Dr. R. M. L. Awadh University, Faizabad.*	Study of Small-Signal Sziklai Pair Amplifiers using PSpice Circuit **Simulation Software**
5.	***Dr. Surendra Kumar**, Head, Deptt. Of Applied Statistics, Dr. B .B. Ambedkar Central University, Lucknow.*	On Estimating the Reliability Function of Exponential Distribution under Type 1st , Type 2nd and Progressive Type Second Censoring Through Various new Approaches
6.	***Dr. Shashi Bhushan**, Associate Professor, Deptt. Of Statistics, Dr. Shakuntla Misra National Rehabilitation University, Lucknow.*	Optimal Imputation of Missing Data Using **R Software**
7.	***Prof. Manu Pratap**, Deptt. Of Computer Sc. & Applications, Institute of Engineering & Technology, Dr. B. R. A. University, Agra.*	Applications of **MATLAB** Environment for Mathematics
8.	***Dr. P. C. Gupta**, Associate Professor, Deptt. of Computer Science & Information University of Kota, Kota, Rajasthan.*	Multitier Biometric Temple Security Using Cryptographic Salt and Personal Image Identification.
9.	***Dr. Vinay Mishra**, Director, IERT, Allahabad.*	Research Opportunities and Challenges in Cloud Computing
10.	***Dr. Rajesh Tailor**, Associate Professor, Deptt. of Statistics, Vikram university, Ujjain, M. P.*	Estimation of Population Mean Using Parameters of Auxiliary Variates using **MS-Excel** and **SPSS** Software
11.	***Prof. Shushma Tripathi**, Head, Department of Statistics, MMV, B.H.U. Varanasi.*	Importance of Statistics and Softwares in Reaseach
12.	***Dr. Neetu Mishra**, Associate Prof., Centre of Food Technology, University of Allahabad, Allahabad.*	**Graph Pad Prism**: Features and Applications

Technical Session Wise Presentation List		
Technical Session - I	***Prof. Anup Chaturvedi**, Deptt. Of Statistics, University of Allahabad, Allahabad.*	5,8,10,12,15,16,19,29,32, 33,36,37, 38,39, 42
	***Prof. S. K. Pandey**, Deptt. Of Statistics, Lucknow University Lucknow.*	
Technical Session - II	***Prof. S. S. Mishra**, Deptt. Of Maths & Stats, Dr. R. M. L. Awadh University, Faizabad.*	44,45,48,50,52,53,54,57, 58, 59,60,63,65,66,67
	***Prof. S. N. Shukla**, Deptt. of Physics, Dr. R. M. L. Awadh University, Faizabad.*	
Technical Session - III	***Dr. Surendra Kumar**, Head, Deptt. Of Applied Statistics, Dr. B. B. Ambedkar Central University, Lucknow.*	69,70,71,72,73,74, 75,76,77,78,79,80,81,89,93,19
	***Dr. Shashi Bhushan**, Associate Professor, Deptt. Of Statistics, Dr. Shakuntla MisraNational Rehabilitation University, Lucknow.*	
Technical Session - IV	***Prof. Manu Pratap**, Deptt. Of Computer Sc. & Applications, Institute of Engineering & Technology, Dr. B. R. A. University, Agra.*	6,7,8,9,10,11,14,15,16,17,18,19, 20,21,22, 23,24,25,26,27,28
	***Dr. P. C. Gupta**, Associate Professor, Deptt. of Computer Science & Information University of Kota, Kota, Rajasthan.*	
Technical Session - V	***Dr. Vinay Mishra**, Director, IERT, Allahabad.*	30,31,34,35,40,41,43,46,47,49, 51,55,56,61,62,64,68,
	***Dr. Rajesh Tailor**, Associate Professor, Deptt. of Statistics, Vikram university, Ujjain, M. P.*	
Technical Session - VI	***Prof. Shushma Tripathi**, Head, Department of Statistics, MMV, B.H.U. Varanasi.*	82,83,84,85,86,87,88,90,92,94,95
	***Dr. Neetu Mishra**, Associate Prof., Centre of Food Technology, University of Allahabad, Allahabad.*	

The technical session- I was started with the lecture of Prof. Anup Chaturvedi, Department of Statistics, Allahabad University, Allahabad; on his topic, "Data Mining with R software". He delivered his lecture on data mining, under this he explained principal component analysis, artificial neural network, support vector machine and classification. After that Prof. S. K. Pandey, Department of Statistics, Lucknow University, Lucknow, delivered his talk on "Modeling under nutrition among under five children of UP using SPSS and STATA". After that both chaired the session and participants presented their papers.

The technical session- II was started with the lecture of Prof. S. S. Mishra, Department of Statistics, Dr. R. M. L. Awadh University, Faizabad; with his topic, "Optimization of Supply chain Model using Fuzzy Approach using R Software". After that Prof. S. N. Shukla, Department of Physics and Electronics, Dr. R. M. L. Awadh University, Faizabad, delivered his talk on "Study of small –Signal Sziklai Pair Amplifiers using PSpice circuit Simulation Software". After that both chaired the session and participants presented their papers.

After lunch some more speaker/ participants give their views on given topics.

The technical session- III was started with the lecture of Dr. Surendar Kumar, Department of Statistics, Dr. B. B. Ambedkar Central University, Lucknow; with his topic, "On Estimating the Reliability Function of Exponential Distribution under Type 1st , Type 2nd and Progressive Type Second Censoring Through Various new Approaches". After that Prof. S. K. Pandey, chaired and Dr. surendar kumar, co-chaired the session and participants presented their papers.

After completing the lectures and presentations of first day, the Seminar director, Dr. Ashutoh Gupta, give thanks to all speakers and participants and also media persons.

The technical session- IV was started with the lecture of Prof. Vijay Kumar, Department of Statistics, DDU, Gorakhpur; with his topic, "Statistics, Research and Software". After that Dr. Vinay Mishra, Director, IERT, Allahabad, delivered his talk on "Research Opportunities and Challenges in Cloud Computing". After that both chaired the session and participants presented their papers.

The technical session- V was started with the lecture of Prof. Vijay Kumar, Department of Statistics, DDU, Gorakhpur; with his topic, "Statistics, Research and Software". After that Dr.

Vinay Mishra, Director, IERT, Allahabad, delivered his talk on "Research Opportunities and Challenges in Cloud Computing". After that both chaired the session and participants presented their papers.

The technical session- VI was started with the lecture of Dr. Rajesh Tailor, Associate Professor, Deptt. of Statistics, Vikram university, Ujjain, M. P. and delivered his talk "Estimation of Population Mean Using Parameters of Auxiliary Variates using MS-Excel and SPSS Software" and Dr Neetu Mishra, Associate Prof., Centre of Food Technology, University of Allahabad, Allahabad, delivered her talk on "Graph Pad Prism: Features and Applications". After that both chaired the session and participants presented their papers.

After completing the lectures and presentations of second day, the Seminar director, Dr. Ashutoh Gupta, give thanks to all speakers and participants and also media persons.

After lunch valedictory session was started.

Report of Valedictory Session

National Seminar
On
Applications of Scientific and Statistical Software in Research

30-31 March, 2017

Funded by U.P. State Government

Organized by

School of Science
U.P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad

You are cordially invited in the

Valedictory Session

31st March, 2017 at 03:00 p.m.
Tilak Shshtrarth Sabhagar, Academic Block, UPRTOU, Allahabad

Chief Guest

Prof. Anup Chaturvedi
Head, Department of Statistics, University of Allahabad, Allahabad

President

Prof. M. P. Dube
Vice-Chancellor, U. P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad

Regards

Dr. Ashutosh Gupta
Seminar Director

Dr. G. K. Dwivedi
Convener

Dr. Shruti
Organizing Secretary

Schedule of Valedictory Session (31st March, 2017)

National Seminar
On
Applications of Scientific and Statistical Software in Research

30-31 March, 2017

Funded by U. P. State Government

Welcome Address (By Dr G. K. Dwivedi, Convener)	:	3:00 pm
Ceremonials Greetings of the Guest	:	3:10 pm
Report of Seminar (By Dr. Shruti, Organizing Secretary)	:	3:20 pm
Address by Chief Guest	:	3:30 pm
Presidential Address	:	3:45 pm
Vote of Thanks (By Dr Ashutosh Gupta, Seminar Director)	:	4:00 pm
National Anthem	:	4:10 pm

Certificate Distribution and Tea

Report of valedictory Session

The valedictory Session began through the warm Indian welcome of distinguish guests.

After the Indian welcome, program took its speed with 'Welcome Address' by Dr. Girish Kumar Dwivedi, Convener. On the continuation she also introduce all distinguish guests on the dais. Under this process all dais persons were florid by the bouquet.

Dr. Shruti, Organizing Secretary, narrate the report of said Seminar. She told about the aim and utility of held seminar and explained that Statistics plays an important role in the field of research.

On the moment of 'Ceremonial Greetings', the 'Angwastram' and 'Smrati-chinhha' was presented by the hon'ble Vice-Chancellor of UPRTOU to all respected guests who was chaired on the dais.

The Chief Guest of this session Prof. Anup Chaturvedi, Department of Statistics, University of Allahabad, Allahabad, discuss about the statistical techniques, utility of softwares and also the applications of both in any research.

Prof. M. P. Dubey, Hon'ble Vice-chancellor, U. P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad; delivered his Presidential Address. He gives his blessings to all organizers and participants.

The 'Vote of Thanks' was given by Dr. Ashutosh Gupta, Seminar Director. In this he thanked to all persons who were involved in said national seminar directly and indirectly.

This session was finished with the National Anthem & announcement of high tea and certificate distribution.

UPRTOU

NEWS FROM THE WEEK:

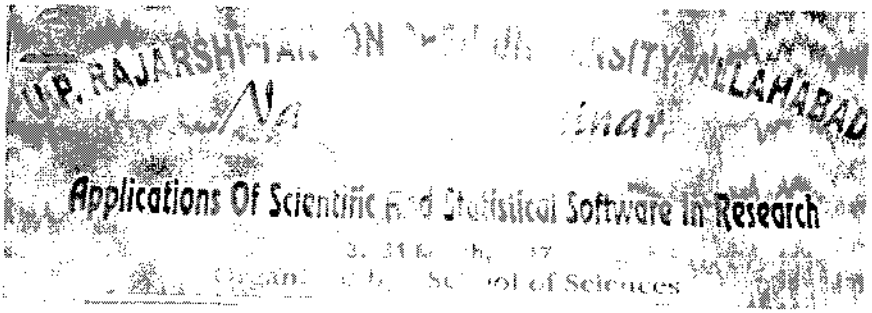

मुविवि में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

दिनांक 31 मार्च, 2017

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय की विज्ञान विद्याशाखा के तत्वावधान में दिनांक 31 मार्च, 2017 को सरसस्वती परिसर के लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में "शोध में वैज्ञानिक एवं सांख्यिकीय साफ्टवेयर का अनुप्रयोग" विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन हुआ। राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र में डॉ0 राजेश टेलर, सांख्यिकीय विभाग, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, सेमिनार निदेशक डॉ0 आशुतोष गुप्ता, डॉ0 पी0पी0 दुबे, निदेशक, कृषि विज्ञान विद्याशाखा ने महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किए।

अतिथियों का स्वागत, संचालन एवं सेमिनार की रिपोर्ट आयोजन सचिव डॉ0 श्रुति ने प्रस्तुत की। धन्यवाद ज्ञापन संयोजक डॉ0 गिरीश कुमार द्विवेदी ने किया।

विभिन्न तकनीकी सत्रों में प्रो0 अनुप चतुर्वेदी, इलाहाबाद, प्रो0 एस0के0 पाण्डेय, लखनऊ, प्रो0 एस0एस0 मिश्र, फैजाबाद, प्रो0 एस0एन0 मिश्र, प्रो0 सुरेन्द्र कुमार, लखनऊ प्रो0 विनय कुमार, गोरखपुर, डॉ0 विमल मिश्रा, निदेशक, आई.ई. आर.टी., इलाहाबाद ने व्याख्यान दिया। संगोष्ठी में देशभर के 10 राज्यों के साथ–साथ नेपाल से भी कुल लगभग 90 प्रतिभागियों ने शोधपत्र प्रस्तुत किए संगोष्ठी का समापन शुक्रवार 3.00 बजे हुआ।



अतिथियों का स्वागत, संचालन एवं सेमिनार की रिपोर्ट प्रस्तुत करती हुई आयोजन सचिव डॉ0 श्रुति



राष्ट्रीय संगोष्ठी में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए सेमिनार निदेशक डॉ0 आशुतोष गुप्ता



राष्ट्रीय संगोष्ठी में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए डॉ0 पी0पी0 दुबे, निदेशक, कृषि विज्ञान विद्याशाखा



डॉ0 राजेश टेलर, सांख्यिकीय विभाग, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए सेमिनार निदेशक डॉ0 आशुतोष गुप्ता

डॉ0 राजेश टेलर, सांख्यिकीय विभाग, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि किसी भी विषय के शोध में सांख्यिकी प्रवृत्तियों की महत्वपूर्ण भूमिका है। साथ ही साथ शोध में सांख्यिकीय विधियों और साफ्टवेयर की उपयोगिता बताते हुए कहा कि इस युग के हर विद्यार्थी को साफ्टवेयर का उपयोग करना चाहिए तथा उसके विश्लेषण हेतु सांख्यिकी का ज्ञान भी आवश्यक है। उन्होंने कहा कि नई तकनीक और नए–2 साफ्टवेयर से शोध की गुणवत्ता बढ़ रही है। हम समाज के लिए अच्छे प्रयोग कर सकते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि हमें साफ्टवेयर और सांख्यिकीय विश्लेषण का ज्ञान अच्छी तरह हो।





धन्यवाद

ज्ञापन

करते

हुए

संयोजक डॉ0 गिरीश कुमार द्विवेदी

National Seminar
On
Applications of Scientific and Statistical Software in Research
(30-31 March, 2017)
(Funded by U. P. State Government)

Offline

S.N.	Name of Participate	Receipt No.	Amount
1.	Poonam Shakya	B-28/39	400
2.	Keerti Singh	B-28/40	400
3.	Dr. Shailesh Keshaorao Kawale	B-28/41	600
4.	Dr.Sachin Kumar Pandey	B-28/42	600
5.	Ashok Kumar	B-28/43	600
6.	Dr. Pramendra Siwan Pundir	B-28/44	600
7.	Dr. Vipin Kumar Singh	B-28 /45	600
8.	Swatntra Kumar	B-28/46	400
9.	Ankita Kar	B-28/47	400
10.	Nivedita Kar	B28/48	400
11.	Shakti Dixit	B28/50	400
12.	Lav Kush Singh	B28/53	400
13.	Arpit Mohan Srivastava	B28/49	400
14.	Mohd Janeyalam Khan	B28/51	400
15.	Dileep Kumar Varma	B28/52	400
16.	Dr. Shinjita Agrawal	B28/58	600
17.	Vikas Kumar Mishra	B28/55	400
18.	Abhishek Kumar Tiwari	B28/54	400
19.	Suryabhan Pandey	B28/56	400
20.	Dr. Rajendra Singh Rajput	B28/59	600
21.	Tania Ghosh	B28/57	400
22.	Dr. Niraj Kumar Sing	B28/69	600
23.	Rakesh Ranjjan	B28/68	600
24.	Srinivasarous Thota	B28/71	400
25.	Pradeep Kumar Vishkarma	B28/70	400
26.	Dr. Ashok Kumar Pathak	B28/67	600
27.	Ankita Gupta	B28/85	400
28.	Reema Sharma	B28/84	400
29.	Rahul Kr. Mishra	B28/83	400
30.	Vikash Singh	B28/82	400
31.	Praveen Kr. Tripathi	B28/81	400
32.	Shweta Tripathi	B28/80	400
33.	Utkarsh	B28/78	400
34.	Pawan Kumar	B28/77	400
35.	Mritunjay Pal Singh	B28/76	400
36.	Supriya Khare	B28/75	400
37.	Padip Kumar	B28/74	400
38.	Saumya Asthana	B28/73	400
39.	Ashutosh	B28/72	400
40.	Dr. Shiv Kumar Lal	B28/60	600

41.	Shambhvi Mishra	B28/61	600
42.	Anupama Singh	B28/62	600
43.	Prem Lata Gautam	B28/65	400
44.	Vaidehi Singh	B28/66	400
45.	Atul Gurtu	B28/63	600
46.	Dr. Rajesh Kumar Pandey	B28/64	600
47.	Dr. Manju Srivastava	B28/79	600
48.	Dr. Maghna Srivastava	B28/86	600
49.	Dr. Amit kumar Srivastava	B28/87	600
50.	Dilip	B28/90	400
51.	Dharmendra Kumar Yadava	B28/89	400
52.	Rasha Rani Singh	B28/91	400
53.	Payal Agrawal	B28/88	400
54.	Pratik Upadhayay	B28/93	600
55.	Ruchi Dubey	B28/94	600
56.	Vidhu Shekahar Pandey	B28/95	400
57.	Anamika Tiwari	B28/92	400
58.	Dharma Raj	B28/98	400
59.	Priyanka Mishra	B28/96	400
60.	Dinesh Yadava	B28/97	400
61.	Rohit Patawa	B28/99	400
62.	Dr. Anil Kumar	B28/100	600
63.	Dr. Naresh Kumar Chaudhary	B37/01	600
64.	Sandeep Rawat	B37/02	400
65.	Geeta Yadava	B37/03	400
66.	Kuldeep Kaur	B37/04	400
67.	Ramesh Kr. Joshi	B37/05	600
68.	Nurul Azeez Khan	B37/06	400
69.	J.S. Singh	B37/07	600
70.	Km. Akansha Singh	B37/08	400
71.	Dr. Rajiv Saksent	B37/09	600
72.	Dr. S.S. Mishra	B37/10	600
73.	Dr. Surindra Kumar	B37/11	600
74.	Kriti Mishra	B37/12	400
75.	Swati Singh	B37/13	400
76.	Poonam Singh	B37/14	600
77.	Madhulika Mishra	B37/15	400
78.	Nitesh Kumar Adichwal	B37/16	400
79.	Vikas Sagar	B37/17	400
80.	Sanjeev Kumar	B37/18	400
81.	Dr. Yashodhara Sharma	B37/19	600
Total			**38,200/-** **(Thirty Eight Thousands Two Hundred Rupees)**

National Seminar
On
Applications of Scientific and Statistical Software in Research
(30-31 March, 2017)
(Funded by U. P. State Government)

Online

S.N.	Name & Designation Of Participate	Payment Mode (Online)	Transaction ID
1.	Dr. Anjali	600	6050554443
2.	Parul Parihar	400	6060982810
3.	Dr Ravendra Singh	600	6052335406
4.	Rachana Singh	400	6061007026
5.	Madhulika Singh	400	6052712219
6.	Amey Ajit Bhojane	400	6052686834
7.	Shipra Srivastava	400	6052782468
8.	Sonesh Poonia	400	6052928615
9.	Priti	400	6052931434
10.	Ajeet Singh	400	6053167113
11.	Dinesh Chandra Yadav	400	6053274793
12.	Mukesh Kumar	400	6053344928
13.	Arshi Ayub Ansari	400	6053713768
14.	Sudarshan Singh	400	6053889088
15.	Pratima Vishwakarma	400	6054854064
16.	Sanjesh Tiwari	400	6061015388
17.	Anuradha Patel	400	6060998558
18.	Sanjeeva Kumar Singh	400	6055472671
19.	Ajay kumar Dubey	400	6056892618
20.	ShauftaYasmeen	400	6058397497
21.	Sartaj Ahamad	400	6059765048
22.	Santwana Tiwari	400	6061174118
Total		**9200/-** **(Nine Thousands Two Hundred)**	

Grand Total = 38200+9200= 47400 /-

National Seminar
On
Applications of Scientific and Statistical Software in Research
(30-31 March, 2017)
(Funded by U. P. State Government)

Offline

S.N.	Name of Participate	Receipt No.	Amount
1.	Poonam Shakya	B-28/39	400
2.	Keerti Singh	B-28/40	400
3.	Dr. Shailesh Keshaorao Kawale	B-28/41	600
4.	Dr.Sachin Kumar Pandey	B-28/42	600
5.	Ashok Kumar	B-28/43	600
6.	Dr. Pramendra Siwan Pundir	B-28/44	600
7.	Dr. Vipin Kumar Singh	B-28 /45	600
8.	Swatntra Kumar	B-28/46	400
9.	Ankita Kar	B-28/47	400
10.	Nivedita Kar	B28/48	400
11.	Shakti Dixit	B28/50	400
12.	Lav Kush Singh	B28/53	400
13.	Arpit Mohan Srivastava	B28/49	400
14.	Mohd Janeyalam Khan	B28/51	400
15.	Dileep Kumar Varma	B28/52	400
16.	Dr. Shinjita Agrawal	B28/58	600
17.	Vikas Kumar Mishra	B28/55	400
18.	Abhishek Kumar Tiwari	B28/54	400
19.	Suryabhan Pandey	B28/56	400
20.	Dr. Rajendra Singh Rajput	B28/59	600
21.	Tania Ghosh	B28/57	400
22.	Dr. Niraj Kumar Sing	B28/69	600
23.	Rakesh Ranjjan	B28/68	600
24.	Srinivasarous Thota	B28/71	400
25.	Pradeep Kumar Vishkarma	B28/70	400
26.	Dr. Ashok Kumar Pathak	B28/67	600
27.	Ankita Gupta	B28/85	400
28.	Reema Sharma	B28/84	400
29.	Rahul Kr. Mishra	B28/83	400
30.	Vikash Singh	B28/82	400
31.	Praveen Kr. Tripathi	B28/81	400
32.	Shweta Tripathi	B28/80	400
33.	Utkarsh	B28/78	400
34.	Pawan Kumar	B28/77	400
35.	Mritunjay Pal Singh	B28/76	400
36.	Supriya Khare	B28/75	400
37.	Padip Kumar	B28/74	400
38.	Saumya Asthana	B28/73	400
39.	Ashutosh	B28/72	400
40.	Dr. Shiv Kumar Lal	B28/60	600

41.	Shambhvi Mishra	B28/61	600
42.	Anupama Singh	B28/62	600
43.	Prem Lata Gautam	B28/65	400
44.	Vaidehi Singh	B28/66	400
45.	Atul Gurtu	B28/63	600
46.	Dr. Rajesh Kumar Pandey	B28/64	600
47.	Dr. Manju Srivastava	B28/79	600
48.	Dr. Maghna Srivastava	B28/86	600
49.	Dr. Amit kumar Srivastava	B28/87	600
50.	Dilip	B28/90	400
51.	Dharmendra Kumar Yadava	B28/89	400
52.	Rasha Rani Singh	B28/91	400
53.	Payal Agrawal	B28/88	400
54.	Pratik Upadhayay	B28/93	600
55.	Ruchi Dubey	B28/94	600
56.	Vidhu Shekahar Pandey	B28/95	400
57.	Anamika Tiwari	B28/92	400
58.	Dharma Raj	B28/98	400
59.	Priyanka Mishra	B28/96	400
60.	Dinesh Yadava	B28/97	400
61.	Rohit Patawa	B28/99	400
62.	Dr. Anil Kumar	B28/100	600
63.	Dr. Naresh Kumar Chaudhary	B37/01	600
64.	Sandeep Rawat	B37/02	400
65.	Geeta Yadava	B37/03	400
66.	Kuldeep Kaur	B37/04	400
67.	Ramesh Kr. Joshi	B37/05	600
68.	Nurul Azeez Khan	B37/06	400
69.	J.S. Singh	B37/07	600
70.	Km. Akansha Singh	B37/08	400
71.	Dr. Rajiv Saksent	B37/09	600
72.	Dr. S.S. Mishra	B37/10	600
73.	Dr. Surindra Kumar	B37/11	600
74.	Kriti Mishra	B37/12	400
75.	Swati Singh	B37/13	400
76.	Poonam Singh	B37/14	600
77.	Madhulika Mishra	B37/15	400
78.	Nitesh Kumar Adichwal	B37/16	400
79.	Vikas Sagar	B37/17	400
80.	Sanjeev Kumar	B37/18	400
81.	Dr. Yashodhara Sharma	B37/19	600
Total	**38,200/-** **(Thirty Eight Thousands Two Hundred Rupees)**		

National Seminar
On
Applications of Scientific and Statistical Software in Research
(30-31 March, 2017)
(Funded by U. P. State Government)

Online

S.N.	Name & Designation Of Participate	Payment Mode (Online)	Transaction ID
1.	Dr. Anjali	600	6050554443
2.	Parul Parihar	400	6060982810
3.	Dr Ravendra Singh	600	6052335406
4.	Rachana Singh	400	6061007026
5.	Madhulika Singh	400	6052712219
6.	Amey Ajit Bhojane	400	6052686834
7.	Shipra Srivastava	400	6052782468
8.	Sonesh Poonia	400	6052928615
9.	Priti	400	6052931434
10.	Ajeet Singh	400	6053167113
11.	Dinesh Chandra Yadav	400	6053274793
12.	Mukesh Kumar	400	6053344928
13.	Arshi Ayub Ansari	400	6053713768
14.	Sudarshan Singh	400	6053889088
15.	Pratima Vishwakarma	400	6054854064
16.	Sanjesh Tiwari	400	6061015388
17.	Anuradha Patel	400	6060998558
18.	Sanjeeva Kumar Singh	400	6055472671
19.	Ajay kumar Dubey	400	6056892618
20.	ShauftaYasmeen	400	6058397497
21.	Sartaj Ahamad	400	6059765048
22.	Santwana Tiwari	400	6061174118
Total		**9200/-** **(Nine Thousands Two Hundred)**	

Grand Total = 38200+9200= 47400 /-